Bachelor of Arts

(B.A.I SemI)

HISTORY SEMESTER- 1

HIST-101

ANCIENT INDIA (FROM EARLIEST TIMES TO GUPTA AGE)

Directorate of Distance Education

Guru Jambheshwar University of Science & Technology

HISAR-125001

CONTENTS

HIST 101

Sr. No	Title Name	Author & Updated	Pages
1	UNIT-1çkphu Hkkjr d: ,frgkfld L=kr ,o: ik"kk.k dky **(HISTORICAL SOURCES AND STONE ANCIENT INDIA)**	Sh. Mohan Singh Baloda	2-29
2	gMIik lH;rk **(THE HARAPPAN CIVILIZATION)**	Sh. Mohan Singh Baloda	30-63
3	UNIT-2वैदिक संस्कृति (**1500 ई०पू०–600 ई०पू०**) **VEDIC CULTURE (1500 BC-600 BC)**	Sh. Mohan Singh Baloda	64-100
4	Ekgktuin ,o: ex/k lkekT; **(MAHAJANAPADAS & MAGADHA EMPIRE)**	Sh. Mohan Singh Baloda	101-136
5	UNIT-3 ek;l lkekT; **(MAURYAN EMPIRE)**	Sh. Mohan Singh Baloda	137-172
6	xlr lkekT; **(GUPTA EMPIRE)**	Sh. Mohan Singh Baloda	173-200
7	UNIT-4 **(MAPS-INDIA)**gMIik lH;rk d: LFky **(SITES OF HARAPPAN CIVILIAZTION)**	Sh. Mohan Singh Baloda	201-226
8	ek;l ,o: ek;Ùkj lkekT; **(MAURYAN AND POST MAURYAN EMPIRE**	Sh. Mohan Singh Baloda	227-247
9	leæxlr ,o: cnjxkg vkj çkphu Hkkjr dk 'kgjh dæ **(SAMUDRAGUPT AND PORTS AND URBAN CENTRE OF ANCENT INDIA)**	Sh. Mohan Singh Baloda	248-277

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : HIST. - 101	**AUTHOR & UPTATED:**
LESSON NO : 1	**MR. MOHAN SINGH BALODA**
çkphu Hkkjr dk ,frgkfld L=ksr ,oa ik"kk.k dky	
(HISTORICAL SOURCES AND STONE ANCIENT INDIA)	

v/;k; lajpuk & **(Lesson Structure)**

1.1 अधिगम उद्दे”य (Learning Objective)

1.2 परिचय (Introduction)

1.3 आध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

1.3.1 इतिहास का अर्थ (Meaning of History)

1.3.2 इतिहास का क्षेत्र (Scope of History)

1.3.3 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Ancian Indian History)

1.4 आध्याय का आगे का मुख्य भाग (Further main body of the text)

1.4.1 प्राक् इतिहास या प्रागैतिहासिक काल (Pre-History Age)

1.4.2 पाषाण काल (Pre-History Age)

1.4.3 पुरापाषाण काल/प्रारंभिक पत्थर युग/पैलिओलिथिक काल (Paleolithic Age)

1.4.4 पुरापाषाण कालीन संस्कृति की विशेषताएँ (Features of Old Age-Culture)

1.4.5 मध्यपाषाण/मीसोलिथिक काल (Mesolithic Age)

1.4.6 पुरापाषाण और मध्यपाषाण काल के औजार (Palaeolitichic and Mesolithic Age of Tool)

1.4.7 कृषि प्रणाली की उत्पत्ति (उद्‌गम) (Origin of the Agriculture System)

अर्थात् नवपाषाण युग की विशेषताएँ (Characteristics of Neolithic)

1.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

1.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

1.7 संकेत सूचक (Key Words)

1.8 स्व मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self-Assessment Test) (SAT)

1.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

1.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ एवं अध्ययन सामग्री (References/Suggested Readings)

1-1 vf/kxe mís'; **(Learning Objectives)** %&

bl v/;k; ds v/;;u ds i'pkr~ fo|kFkhZ ;kX; gksxs %

- अधिगमकर्ताओं को इतिहास के अर्थ से परिचित करवाना।
- हमारा अतीत किस प्रकार पाठकों को प्रभावित करता है।
- इतिहास सिर्फ इतिहास नहीं है। यह वर्तमान को भी प्रतिबिम्बित करता है। इससे छात्रों को रूबरू करवाना।
- इतिहास के क्षेत्र से शिक्षार्थियों को अवगत करवाना।
- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों पर विद्यार्थियों से परिचर्चा करना।
- पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक के गमन से मानव जीवन में होने वाले परिवर्तनों पर पाठको से गोष्ठी करना।
- वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता पर जिज्ञासु पाठकों से चर्चा करना।
- अपने अतीत में शिक्षार्थियों की रुचि विकसित करना।
- वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर अधिगमकर्ताओं के मतों को जानना।
- इस अध्याय के माध्यम से छात्रों में सूझ व सृजनात्मकता को विकसित करना।

1-2 ifjp; **(Introduction) :-**

इतिहास ज्ञान प्राप्त करने की एक प्रथम अवस्था है। इतिहास से हम अतीत की जानकारी लेकर एवं वर्तमान से तुलना करके भविष्य की योजना तैयार कर सकते हैं। इतिहास को विश्व की जननी की संज्ञा दी जा सकती है। प्रत्येक, समाज, देश, राष्ट्र, व्यक्ति का एक इतिहास होता है। उसका इतिहास ही उसके बारे में जानकारी देता है। इसी प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहास का भी एक इतिहास है। इस अध्याय में इतिहास के अर्थ की जानकारी उसके विस्तार क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करेंगे। पाषाण काल–पुरापाषाण काल (20 लाख ई० पूर्व से 12000 ई० पूर्व) मध्य पाषाण काल (12000 ई० – 10000 ई० पूर्व) नवपाषाण काल (10000 ई० पूर्व – 4000 ई० पूर्व) इन प्रत्येक युग में किस प्रकार की संस्कृति रही और मानव ने किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत किया। इन तीनों में किस प्रकार बदलाव

आए इसकी चर्चा क्रमबद्ध रूप से इस अध्याय में प्रस्तुत की जाएगी। इस अध्याय का अध्ययन करके अधिगमकर्त्ता लाभान्वित होंगे कि इतिहास क्या है और प्राचीन भारतीय इतिहास किस प्रकार ज्ञान का सागर है आदि मानव से लेकर मनुष्य किस प्रकार एक युग से दूसरे युग में प्रवेश करता चला गया और चारों तरफ विज्ञान की क्रान्ति लायी। इस प्रकार से इस अध्याय को विभिन्न रूपों में शिक्षार्थियों को ज्ञान के भण्डार की तरफ आकर्षित किया जाएगा।

1-3 vk/;k; d: e|[; fcUn| **(Main Body of Text) :-**

1-3-1 bfrgkl dk vFk **(History of Meaning) :-**

इतिहास के लिए अंग्रेजी में History शब्द प्रयोग किया जाता है जो ग्रीक शब्द 'Histo' (हिस्टो) से बना है जिसका अर्थ है इसे जानों। ('Know this') किसी व्यक्ति समूह, समाज या देश, स्थान, क्षेत्र से संबंधी विशेष घटनाओं व तथ्यों आदि का कालक्रमिक विवरण (Chronological description) या घटनाओं का समयबद्ध क्रम में सजाया हुआ दस्तावेज है। वह इतिहास कहलाता है।

इतिहास किसी समाज विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति तथा इन स्थितियों में समय के साथ–2 क्या बदलाव हुए इसका विवरण क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है। अर्थात् साधारण शब्दों में अतीत की घटनाओं की जानकारी देना ही इतिहास है।

सबसे पहले इतिहास शब्द का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। इतिहास के जनक हेराडोटस है। (484 ई० पू० – 425 ई० पू०) ये यूनानी इतिहासकार थे जिन्होंने सर्वप्रथम तथ्यों को सिलसिलेवार ढंग से प्रस्तुत किया तथा उनकी सच्चाई को जाना। इस इतिहासकार ने "हिस्टोरिका" नामक पुस्तक की रचना की जिसमें भारत–ईरान (फारस) के बीच संबंध का वर्णन है। कुछ विद्वानों का मानना है कि 'हिस्ट्री' यूनानी संबा लोरोप्ला (Loropla) से लिया गया है जिसका अर्थ होता है 'सीखना'। कुछ विद्वान 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति जर्मन शब्द (Geschichte) से मानते है। जिसका अर्थ है – 'घटित होना'।

E.H. Car के अनुसार, "इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच का अनवरत' संवाद है।" (प्राचीन भारत–सौरभ चौबे पृ० सं० 7)

डॉ० के०एस० लाल के अनुसार, "इतिहास मानव जीवन के महान कार्यों का अध्ययन है। यह मानव जाति की महान और असाधारण सफलताओं का संकलन है।"

उपरोक्त तथ्यों एवं परिभाषाओं के आधार पर हम साधारण भाषा में कह सकते है कि इतिहास वह है जो अतीत की जानकारी देता है।

1-3-2 bfrgkl dk {k= **(Scope History) :-**

इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। प्रत्येक विषय, व्यक्ति, खोज, आंदोलन आदि सभी का अपना इतिहास होता है। कहा तो यह भी जाता है कि इतिहास का भी इतिहास होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि

दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि दृष्टिकोणों की तरह ऐतिहासिक दृष्टिकोण की भी अपनी विशेषता है। 17वीं शताब्दी से सभ्य संसार में यह बात व्याप्त हो गई है कि इतिहास एक विचार शैली है। जो पुरातन काल से चली आ रही है। वर्तमान में इसका प्रयोग राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में अधिक हुआ है। इतिहास के निम्न विविध क्षेत्र हैं :–

1- lSU; bfrgkl **(Military History)** & युद्ध, रणनीतियों, हथियार, युद्ध के मनोविज्ञान से संबंधित है। 1970 के दशक के बाद नए सैन्य इतिहास जो जनशक्ति से अधिक सैनिकों के साथ रणनीति से अधिक मनोविज्ञान के साथ समाज और संस्कृति पर युद्ध के व्यापक प्रभाव से संबंधित है।

2- /keZ dk bfrgkl **(History Religion)** & यह इतिहास दुनिया के सभी क्षेत्रों और जगहों में धर्मों का अध्ययन करता है जहाँ मनुष्य रहते हैं।

3- lkekftd bfrgkl **(Social History)**& यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें सामान्य जन के इतिहास और जीवन के साथ सामना करने की रणनीतियाँ सम्मिलित हैं।

4- lkaLd`frd bfrgkl **(Cultural History)** & 1989–90 के दशक में सांस्कृतिक इतिहास ने सामाजिक इतिहास की जगह ले ली। यह पिछले ज्ञान, रीति रिवाजों और लोगों के समूह के कला के अभिलेखों और वर्णनात्मक विवरणों की जांच करता है।

5- jktuhfrd bfrgkl **(Political History)** & यह राष्ट्रों के बीच संबंधों पर केन्द्रित है यह मुख्यतः कूटनीति और युद्ध के कारणों का अध्ययन करता है।

6- vkfFkZd bfrgkl **(Economic History)** & 19वीं सदी के उत्तरार्ध से ही आर्थिक इतिहास अच्छी तरह से स्थापित है। हाल के वर्षों में यह पारंपरिक इतिहास विभागों से स्थानान्तरित होकर अर्थशास्त्र विभाग की तरफ चला गया है।

7- i;kZoj.k bfrgkl **(Environmental History)** & यह इतिहास का एक नया क्षेत्र है जो 1980 के दशक में पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव को लेकर उभरा है।

8- fo'o bfrgkl **(World History)** & विश्व इतिहास वास्तव में अनुसंधान की बजाय शिक्षण क्षेत्र है। इसे 1980 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान आदि देशों में लोकप्रियता मिली।

1-3-3 Ákphu Hkkjrh; bfrgkl dk Lkksr **(Sources of Ancien Indian History) :-**

प्राचीन भारत के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक ढांचे को जानने के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत का क्रमबद्ध अध्ययन करना अतिआवश्यक है। इसके बारे में जानकारी प्रमुख रूप से चार स्रोत से प्राप्त होती है।

1. धार्मिक ग्रंथ 2. ऐतिहासिक एवं सामाजिक ग्रंथ (धर्मोत्तर साहित्य) 3. विदेशियों के वृत्तांत 4. पुरातत्व–संबंधित साक्ष्य

1- /kkfe:d x:Fk (Religious Texts) & भारत की धरा (धरती) पर प्राचीन काल में मुख्य रूप से तीन धर्मों की जानकारी मिलती है – (क) वैदिक धर्म (ख) जैन धर्म (ग) बौद्ध धर्म

(क) वैदिक ग्रंथ – वैदिक ग्रंथों को समझने के लिए हमें वेद, वेदांग, पुराण, महाकाव्य, उपनिषद और स्मृतियों आदि का अध्ययन करना होगा।

(i) वेद (Ved) (वेद शब्द 'विद्' धातु से निकला है जिसका) अर्थ है 'ज्ञान'। वेदों की संख्या चार है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। पहले तीन वेदों को 'त्रिवेद' कहते है और चारों वेदों को संहिता भी कहते है।

¼d½ _Xo:n **(Rjgved)** & यह सबसे प्राचीन वेद है। ऋचाओं के क्रमबद्ध ज्ञान के संग्रह को ऋग्वेद कहते हे। इससे आर्यों की राजनीतिक जानकारी मिलती है। इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त है और 10,642 ऋचाएँ है। इस वेद की रचनाओं को पढ़ने वाले ऋषि को होतृ कहते है। सबसे पुराना सूक्त दूसरे से नौवें मंडल में है। प्रथम और दसवां मंडल बाद में जोड़ा गया है। दूसरा एवं सातवां मंडल सर्वाधिक प्राचीन है। तीसरे मंडल में गायत्री मंत्र है। आठवें मंडल की हस्तलिखित ऋचाओं को खिल कहा जाता है। दसवें मंडल में पुरूष–सूक्त है जिसके अनुसार चार वर्ण है – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र।

¼[k½ ; t|o:n **(Yajurved)** & 'यजुष' का अर्थ है यज्ञ। यह एक ऐसा वेद है जो गद्य एवं पद्य दोनों में है। इस वेद में यज्ञ संबंधी विधि–विधान का वर्णन है। यजुर्वेद की पाँच शाखाएँ है। (i) काठक (ii) कपिण्ठत (iii) मैत्रायणी (iv) तैत्तरी (v) वाजसनेयी इसके पाठककर्त्ता को अध्वर्यु कहते हैं।

¼x½ lkeo:n **(Samved)** & साम का अर्थ है गान। यानी गायी जा सकने वाली ऋचाओं का संकलन है। इसमें 1549 ऋचायें है जिनमें से केवल 75 नई है बाकी सारी ऋग्वेद से ली गई है। इसके अधिगमकर्त्ता को उद्रातृ कहते हैं। इसे भारतीय संगीत का जनक माना जाता है।

¼?k½ vFkolo:n **(Atharvaved)** & अथर्वा ऋषि द्वारा रचित इस वेद में 731 सूक्त और बीस अध्याय शामिल है। इसमें रोग निवारण, जादू–टोना, विवाह, प्रेम, आशीर्वाद, स्तुतिगीत औषधि, अनुसंधान, तंत्र मंत्र, अंधविश्वास आदि मंत्र उल्लेखित है।

(i) mio:n **(Upveda)**& इनकी संख्या 4 है – आयुर्वेद – चिकित्सा से संबंधित, धनुर्वेद– युद्धकौशल से संबंधित, गंधर्व वेद – संगीत कला से संबंधित, शिल्पवेद – निर्माण कला से संबंधित।

(ii) o:nkx**(Vedanga)** & वेदों के अर्थ को समझने व सूक्तों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना की गई। इनकी संख्या 6 है – ध्वनिशास्त्र (शिक्षा), अनुष्ठान (कल्प), व्याकरण, व्युत्पत्ति (निरूक्त), छंद, खगोलशास्त्र (ज्योतिष) साथ ही इन सभी विषयों के इर्द–गिर्द बहुत सारे साहित्य की रचना की गई।

(iii) egkHkkjr (Mahabharat) & महाकाव्यों में महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित महाभारत बहुत पुराना है और इसमें लगभग ई० पू० 10 वीं शताब्दी से ईसा की चौथी शताब्दी तक का वर्णन मिलता है। इसमें प्रारंभ में 8800 श्लोक थे तब इसे जय संहिता का नाम दिया गया। फिर इसमें श्लोकों की संख्या बढ़कर 24 हजार हो गई तब इसे भारत कहा जाने लगा। जब इसकी संख्या एक लाख हो गई तब शतसाहस्री संहिता या महाभारत का नाम दिया गया। महाभारत में कुल 18 पर्व (अध्याय) यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

(iv) i|jk.k (Puran) & मुख्य पुराण 18 हैं। पुराणों के रचयिता लोम हर्ष अथवा इनके पु,त्र उग्रश्रवां माने जाते हैं। 1. ब्रह्मपुराण 2. पद्म पुराण 3. विष्णु पुराण 4. मार्कण्डेय पुराण 5. अग्नि पुराण 6. वायु पुराण 7. भागवत पुराण 8. नारदीय पुराण 9. भविष्य पुराण 10. ब्रह्मवैवर्त पुराण 11. शिव पुराण 12. लिंग पुराण 13. वराह पुराण 14. स्कन्द

पुराण 15. गरूड़ पुराण 16. वामन पुराण 17. मत्स्य पुराण 18. कूर्म पुराण इनमें मार्कण्डेय, ब्रहाण्ड, वायु, विष्णु, भागवत और मत्स्य ये प्राचीन पुराण है। इन में राजवंशो का वर्णन मिलता है।

(v) jkek;.k (Ramayana) & रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। इसमें मूल रूप से 600 श्लोक थे, फिर इनकी संख्या 12 हजार और अन्तः तक यह संख्या बढ़ कर 24 हजार तक हो गई। रामायण की रचना ई० पू० 5वीं शताब्दी से प्रारम्भ होकर 5 चरणों से होकर गुजरा तब तक 12वीं शताब्दी का काल हो चुका था।

(vi) cká.k (Brahman)& ब्रह्म (यज्ञ) + यण् (व्याख्या) अर्थात् जो यज्ञ की व्याख्या करें वही ब्राह्मण है। ऋषियों ने इसकी रचना गद्य शैली में की है और जो वेदों की व्याख्या करते है।

(vii) vkj.;d (Arnayak) & अरण्य (जंगल) + यक् (ज्ञान)। यह वनों में रहने वाले संयासियों के प्रयोग तथा मार्गदर्शन हेतु ब्राह्मण से अलग कर दिया।

(viii) mifu"kn (Upnishad) & उपनिषद का अर्थ है गुरु के पास बैठना (उप + नि + 'ाद) अर्थात् गुरू के समीप बैठकर विद्या ग्रहण करना। उपनिषदों की संख्या 108 है। उपनिषद वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग है इसलिए इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है।

(ix) Lefr;k (Smartiya)& इन्हें धर्म शास्त्र भी कहते है। सबसे प्रसिद्ध एवं प्रथम स्मृति मनुस्मृति है। स्मृतियाँ –

मनुस्मृति | याज्ञवल्क्य स्मृति | नारद स्मृति | पराशर स्मृति | बृहस्पति स्मृति | विष्णु स्मृति

¼[k½ tSu /keZ ¼tSu lkfgR;½ **(Jainism Literature)** & प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में अनेक ऐसे तथ्यों का वर्णन प्राकृत भाषा में लिखित जैन साहित्य में मिलता है, जिनका वर्णन ब्राह्मण एवं बौद्ध साहित्य में या तो किया ही नहीं गया है या फिर बहुत कम किया गया है। जैन साहित्य में 'जैन आगम' का स्थान सर्वोपरि है इसमें

12 अंग, 12 उपांग, 10 पकीर्ण, 6 छंदसूत्र, नन्दिसूत्र, अनुयोगद्वार और मूल सूत्र सम्मलित हैं, इनकी रचना किसी एक व्यक्ति द्वारा तथा किसी एक काल में नहीं हुई। इन ग्रन्थों को वर्तमान स्वरूप वल्लभी में 513 ई० अथवा 526 ई० में आयोजित एक सभा में प्रदान किया गया था। जैन साहित्य के आचारांग सूत्र में जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का 'भगवती सूत्र' में महावीर स्वामी के जीवन के विषय में तथा छठीं शताब्दी ई. पू. के उतर भारत के महाजनपदों का 'औपचारिक सूत्र' और 'आवश्यक सूत्र' में अजातशत्रु के धार्मिक विचारों का 'भद्रबाहु चरित्र' में चन्द्र गुप्त मौर्य के राज्यकाल की घटनाओं का वर्णन मिलता है।

जैन साहित्य में कुल 24 तीर्थंकर हुए जिनमें से प्रथम ऋषभदेव और 23 वे पार्श्वनाथ 24 वें महावीर स्वामी थे।

dYi l= (**Mythology**) & कल्प से आशय विधि अथवा नियम से है तथा सूत्र जिनमें विधि अथवा नियमों का प्रतिपादन किया गया है कल्प 6 वेदांगों में से एक है कल्प सूत्र के तीन भाग हैं :–

1- Jkr l= & यज्ञ सम्बन्धी विधि नियमों का उल्लेख करने वाले सूत्र 'श्रोत सूत्र' कहलाते हैं।

2- x`gk l= & मनुष्य की समस्त लौकिक और पारलौकिक कर्तव्यों का वर्णन करने वाले सूत्र 'गुप्त सूत्र' कहलाते हैं।

3- /ke l= & मनुष्य के विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कर्त्तव्य और अधिकारों का वर्णन करने वाले सूत्र 'धर्म सूत्र' कहलाते हैं।

(प्रतियोगिता दर्पण/प्राचीन भारत/उपकार प्रकाशन P.P. 11-12)

¼x½ ck) lkfgR; **(Boudh Literature)** & भारतीय इतिहास के रूप में बौद्ध साहित्य का विशेष महत्व है। सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक हैं इनके नाम है – 1. सुत्तपिटक 2. विनयपिटक 3. अभिधम्मपिटक। गौतम बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद इनकी रचना हुई। सुत्तपिटक में बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह है। विनयपटिक में बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख है और अभिधम्मपिटक में बौद्ध दर्शन का विवेचन है। त्रिपिटक में ईसा से पूर्व की शताब्दियों में भारत के सामाजिक व धार्मिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों की काल्पनिक कथाएं है। ईसा पूर्व पहली शताब्दी में जातकों की रचना आरंभ हो चुकी थी। जातकों में भी गद्यांशों की अपेक्षा पद्यांश अधिक प्राचीन हैं। गद्यांश भी संभवतः अपने वर्तमान रूप में ईसा की दूसरी शताब्दी में विद्यमान थे। दीपवंश की रचना संभवतः चौथी और महावंश की पांचवीं शताब्दी में हुई। ईसा की पहली दो शताब्दियों के उत्तर–पश्चिमी भारत के जीवन की झलक भी देखने को मिलती है। प्रारंभिक बौद्ध धार्मिक साहित्य से हमें प्राचीन भारत के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की जानकारी तो मिलती ही है, छठी शती ई० पू० की राजनीतिक दशा का भी पर्याप्त वर्णन उपलब्ध होता है।

(प्राचीन भारत का इतिहास – द्विजेन्द्रनारायण झा एवं कृष्ण मोहन श्रीमाली P-23)

2- ,sfrgkfld ,oa lkekftd xzzFk ¼/kekZsÙkj lkfgR;½ %& उपर्युक्त वर्णित साहित्य के अतिरिक्त धर्मेत्तर साहित्य भी प्राचीन भारतीय इतिहास पर समुचित प्रकाश डालता है। इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत कानून की पुस्तक जिन्हें धर्मसूत्र तथा स्मृतियाँ कहते हैं, रखा जा सकता है। स्मृतियों की रचना छठी शताब्दी ई.पू. में की गई थी। जिनका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। स्मृतियों के विषय में हम यहाँ समुचित प्रकाश डालता है। इस साहित्य को अनेक प्रबुद्ध कवियों द्वारा लिखा गया था। चूँकि लेखन कार्य साहित्यक सभाओं में किया जाता था और इन सभाओं को संगम कहा जाता था। अतः इस काल के साहित्य को संगम साहितय में 'नन्दिक्कलम्बकम' जिसमें पल्लव राजा नन्दिवर्मन तृतीय के विषय में तथा कलिंगतुप्परणि से कोलोतुंग द्वारा कलिंग राज्य पर किए गए आक्रमण के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, इसके अतिरिक्त ओट्टकृतन नामक प्रसिद्ध लेखक ने तीन चोलवंशी शासकों–विक्रम चोल, कुलोतृंग द्वितीय और राजराज द्वितीय पर तीन अलग–अलग ग्रन्थों की रचना की जिसमें इन शासकों की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है, किन्तु इन सभी लेखकों के वर्णन पूर्णतया ऐतिहासिक नहीं हैं।

(क) jktuhfrd ,oa 0;kdj.k lEcU/kh xzUFk & इस प्रकार के ग्रन्थों के अन्तर्गत कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामन्दक का नीतिशास्त्र, पाणिनी का अष्टाध्यायी, पंतजलि का महाभाष्य आदि ग्रन्थों को रखा जा सकता है।

कौटिल्य द्वारा लिखित 'अर्थ"ाास्त्र' जिसमें 15 खण्ड है कानून एवं शासन बन्ध की अत्यन्त ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। जिसमें मौर्य युग की सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक स्थिति का वर्णन किया गया है साथ ही इस ग्रन्थ में राजा के कर्त्तव्य, राजकुमारों की शिक्षा–दीक्षा, मंत्रियों की नियुक्ति व पद से हटाना, युद्ध शैली तथा तत्कालीन गुप्तचर विभाग के संगठन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य संस्कृत के व्याकरण ग्रन्थ होने के बावजूद भी तत्कालीन जनतन्त्र एवं राजनीतिक घटनाओं पर यथोचित प्रकाश डालते हैं, पाणिनी का अष्टाध्यायी मौर्यकाल से पूर्व के भारत की राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक दशा की जानकारी प्रदान करता है। पंतजलि के महाभाष्य से शुंगवंश के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि ये ग्रन्थ अत्यन्त ही महत्व के हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार राय चौधरी का मत है कि इन ग्रन्थों से प्राप्त सूचनाएं महाकाव्यों एवं पुराणों से प्राप्त सूचनाओं की तुलना में अधिक तर्कपूर्ण एवं विश्वसनीय हैं।

dqN egRoiw.kZ ,sfrgkfld xzUFk **(Some Important Historical Texts)**

1- vFkZ'kkL= **(Economics)** & चौथी शताब्दी ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य में प्रधानमंत्री कौटिल्य द्वारा रचित ग्रन्थ अर्थशास्त्र से मौर्यकाल की सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक स्थिति का यथोचित ज्ञान होता है।

2- uhfrlkj & कामन्दक द्वारा रचित इस ग्रन्थ से गुप्तकालीन राज्यतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

3- e|n|kjk{kl &विशाखदत्त द्वारा लगभग 600–700 ई. में रचित इस नाटक से चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा नंदवंश के विनाश के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

4- ekyfodkfXufe= & महाकवि कालिदास द्वारा रचित इस नाटक से पुष्यमित्र शुंग और यवनों के मध्य हुए युद्ध के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

5- g"kZpfjr & बाणभट्ट द्वारा रचित इस ग्रन्थ से हर्षवर्धन की उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

6- v"Vk/;k;h & पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी से मौर्यकाल से पहले के भारत की राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक दशा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

7- xkxhZ lafgrk & इसमें यवन आक्रमण का उल्लेख किया गया है।

8- egkHkk"; & पंतजलि द्वारा रचित महाभाष्य से शुंग वंश के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

9- o`gRdFkkeatjh & क्षेमेन्द्र द्वारा रचित वृहतकथामंजरी से मौर्य काल की कुछ घटनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

10- jktrjafx.kh & कल्हण द्वारा बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचित इस ग्रन्थ से कश्मीर के इतिहास के विषय में विस्तृत एवं पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

11- xkSMogks & वाकपति द्वारा रचित इस ग्रन्थ से कन्नौज के नरेश यशोवर्मा की उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

12- i`Fohjkt jklk & जयानक द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो से पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।

13- laxe lkfgR; & संगम साहित्य से हमें दक्षिण भारत के प्राचीन इतिहास की जानकारी मिलती है। यह तमिल भाषा में लिखा गया है। इससे चोल शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

14- ePN dfVde & शूद्रक रचित इस नाटक से गुप्तकालीन सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी मिलती है। (प्रतियोगिता दर्पण/प्राचीन भारत/उपकार प्रकाशन P.P. 12-18)

3- fonsf'k;ksa ds oÙkkar **(Accounts of Foreigners)** %& विदेशियों के वृत्तांत भी साहित्यिक साक्ष्य हैं। विदेशी लेखकों की धर्मेतर घटनाओं में विशेष रूचि थी, अतः उनके वर्णनों से राजनीतिक और सामाजिक दशा पर अधिक प्रकाश पड़ता है। यूनानी लेखक भारतीय परिस्थितियों तथा भाषा से अनभिज्ञ थे, अतः उनके सभी वर्णन पूर्णतया सही नहीं हैं। इसी प्रकार चीनी यात्रियों के वर्णन भी पूर्णतया ठीक नहीं हैं क्योंकि वे प्रत्येक घटना का वर्णन बौद्ध दृष्टिकोण से करते थे। अलबरूनी ने भी प्रायः उपलब्ध भारतीय साहित्य के आधार पर लिखा, अपने अनुभव के आधार पर नहीं।

विदेशियों के वृत्तांतों का विवेचन हम निम्न वर्गों में करेंगे : (i) यूनान और रोम के लेखक (ii) चीनी यात्रियों के वृत्तान्त (iii) अरब के यात्रियों के वृत्तान्त (iv) तिब्बतियों के वृत्तान्त (v) मुसलमान लेखक

(i) ;uku vkSj jkse ds ys[kd **(Writers of Greece & Rome)** % यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन हेरोडॉट्स और टीसियस के वृत्तांत हैं। संभवतः इन दोनों लेखकों ने भारत के विषय में अपना ज्ञान ईरान से प्राप्त किया था। हेरोडॉट्स के वर्णन में कुछ उपयोगी तथ्य मिलते हैं किंतु उसमें भी अनेक कल्पित कहानियां है। टीसियस के वर्णन में कल्पित कहानियां हैं जो पूर्णतया अविश्वसनीय हैं। इन दोनों लेखकों की अपेक्षा उन यूनानी लेखकों के वर्णन अधिक महत्वपूर्ण है जो सिंकदर के साथ भारत आए थे। यूनान और रोम के लेखकों ने इंडिका के आधार पर अपने वर्णन लिखे हैं। इन लेखकों के वर्णन बहुत उपयोगी हैं क्योंकि उन्होंने उन तथ्यों को लिखा है जिन्हें भारतीय लेखक कोई महत्त्व नहीं देते थे। इनसे प्राचीन भारत का सामाजिक तथा राजनीतिक इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिली है। उदाहरण के लिए सिकंदर के आक्रमण की तिथि पर ही मौर्य शासकों की तिथियां निश्चित की गई हैं। लेखकों के वर्णन चंद्रगुप्त के समय की राजनीतिक घटनाओं पर कम, सामाजिक रीति–रिवाजों और शासन प्रबंध पर अधिक प्रकाश डालते हैं। टॉलमी ने दूसरी शती ईसवी में भारत का भौगोलिक वर्णन लिखा। उसने अन्य लेखकों के वर्णन के आधार पर अपना वर्णन लिखा था, अतः उसके वर्णन में अनेक भूलें हैं। परंतु फिर भी उसके वर्णन से हमें अनेक महत्वपूर्ण बातें मालूम होती है। प्लिनी ने अपना वर्णन पहली शती ईसवी में लिखा। भारतीय पशुओं, पौधों और खनिज पदार्थों के बारे में उसका भी वर्णन बहुत उपयोगी है। इन लेखकों को दूरस्थ देशों के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जो लगन थी वह प्रशंसनीय है।

(ii) phuh ;kf=;ksa ds oÙkkar **(Accounts of Chinese Travellers)** % चीनी यात्रियों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण फा–ह्यान, युवान च्वांग और ई–चिंग के वर्णन हैं। इनके वर्णन चीनी भाषा में अभी तक उपलब्ध हैं और उनका अँगरेजी भाषा में अनुवाद भी कर दिया गया है। फा–ह्यान पांचवीं शती ईसवीं में भारत आया था और 14 वर्ष भारत में रहा। उसने विशेष रूप से भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति के विषय में लिखा। युवान च्वांग हर्ष के राज्यकाल में भारत आया था और वह 16 वर्ष भारत में रहा। उसने धार्मिक अवस्था के साथ–साथ तत्कालीन राजनीतिक दशा का भी वर्णन किया है। सातवीं शताब्दी के अंत में ई–चिंग भारत आया था। वह बहुत समय तक विक्रमशिला और नालंदा के विश्वविद्यालयों में रहा। उसने बौद्ध शिक्षा संस्थाओं और भारतीयों की वेशभूषा, खानपान आदि के विषय में भी लिखा है।

युवान च्वांग ने हर्ष, भास्करवर्मन् आदि के विषय में लिखा है। परंतु इन सभी चीनी यात्रियों की बौद्ध धर्म में अटूट श्रद्धा थी, अतः वे निष्पक्ष रूप से भारत का वर्णन लिखने में असफल रहे। हर्ष ने बुद्ध की प्रतिमा के साथ–साथ सूर्य और शिव की प्रतिमाओं का भी पूजन किया था। इस प्रकार की भूल का मुख्य कारण यही था कि चीनी यात्री प्रत्येक बात को बौद्ध दृष्टिकोण से देखते थे और वे विशेष रूप से भारतीय बौद्धों के ही संपर्क में आए।

(iii) vjc ;kf=;ksa ds oÙkkar **(Accounts of Arab Travellers)** % आठवीं शताब्दी से अरब लेखकों ने भारत के विषय में लिखना आरंभ कर दिया था। सुलैमान नवीं ईसवी के मध्य में भारत आया था। उसने पाल और प्रतीहार राजाओं के विषय में लिखा है। अल मसूदी 941 ई० से 943 ई० तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट राजाओं की महत्ता के विषय में लिखा है। किंतु अरब लेखकों में सबसे प्रसिद्ध अबूरिहान (अलबिरूनी) था। वह महमूद गजनवी का समकालीन था। उसने संस्कृत भाषा सीखी और भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को पूर्ण रूप से जानने का प्रयत्न किया। उसने बड़े धैर्य से भारतीय समाज और संस्कृति को जानने का प्रयत्न किया।

(प्राचीन भारत का इतिहास – झा एवं श्रीमाली (द्विजेन्द्रनारायण झा एवं कृष्णमोहन श्रीमाली P.P. 27-29)

(iv) frCcfr;k dk oÙkkr **(Stories of Tibetans)** % तिब्बत के लेखकों में लामा तारानाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखक है इनके द्वारा लिखित 'कग्युर' तथा 'तग्युर' ग्रन्थ में वर्णित वृत्तान्त प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुए है। चीनी व तिब्बती लेखकों के विवरण में मौर्यकाल के पश्चात् के प्राचीन भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

(v) eqlyeku ys[kd **(Muslim Writer)**% प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रस्तुतीकरण में मुसलमान लेखकों के विवरणों से बहुत सहायता मिलती है, प्रसिद्ध मुस्लिम इतिहासकार एवं लेखक अबूरहान मुहम्मद बिन अलबेरूनी, जोकि एक महान गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे, ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय भारत आए। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'तककीक–ए–हिन्द' में तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक दशा का विस्तृत वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त अन्य मुसलमान लेखक व इतिहासकारों यथा– अलबिलादुरी, सुलेमान, अलमसूदी आदि के लेखों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विदेशी लेख व यात्रियों के विवरण ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त ही उपयोगी हैं, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में उपर्युक्त वर्णित स्रोतों का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाए।

4- iqjkrkfÙod Lkzksr ¼iqjkrRo&lEcf/kr lk{;½ **(Archaeological Source/ Archaeological Evidence)** %& प्राचीन भारत के अध्ययन के पुरातात्त्विक सामग्रियों का विशेष महत्व है। अनेक स्थानों पर किया गया उत्खनन कार्य इसका प्रमाण है। भारतीय पुरातात्त्विक वस्तुओं के अध्ययन का कार्य विलियम जोन्स ने प्रारंभ किया। भारतीय ग्रंथों का रचना काल ठीक से ज्ञात नहीं है। इसलिए इन से किसी काल विशेष की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की वास्तविक जानकारी नहीं मिलती है। पुरातात्त्विक सामग्री अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक है। क्योंकि इसके काल निर्धारण बहुत कम सम्भावना होती है। इसलिए पुरातात्त्विक साक्ष्य अधिक विश्वसनीय होते है।

Nk= fØ;k dyki **(Student Activities) -**

(i) bfrgkl ds vFkZ ls vki D;k le>rs gks \ **(What do you mean by History ?)**

(ii) bfrgkl dk {ks= D;k gS \ **(What is scope of History ?)**

(i) vfHkys[k (Insciptions) & प्राचीन काल में भारत में स्तम्भों, शिलाओं और गुफाओं के साथ–साथ मुद्राओं, मूर्तियों, धातु–पत्रों, आदि पर भी लेख उत्कीर्ण करवाए जाते थे। अभिलेखों की दृष्टि से मौर्य सम्राट अशोक का शासनकाल सर्वाधिक उल्लेखनीय है। अशोक ने राजकीय अभिलेखों को खुदवाने की परम्परा प्रारम्भ कर भारतीय इतिहास को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अशोक के अभिलेखों को खुदवाने की परम्परा प्रारम्भ कर भारतीय इतिहास को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त कलिंगराज, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, चंद्रगुप्त द्वितीय का महरौली स्तम्भलेख, स्कंदगुप्त का भितरी स्तम्भ लेख तथा पुष्यमित्र शुंग, रूद्रदामन, पुलकेशिन द्वितीय, विजयसेन, भोज आदि शासकों के अभिलेख से भी भारतीय इतिहास के निर्माण में बहुत सहायता मिली है। कुछ ऐसे गैर–राजकीय अभिलेख भी हैं, जिनका पर्याप्त ऐतिहासिक महत्त्व है। गैर–राजकीय अभिलेख अधिकाशतः मंदिरों की दीवारों एवं मूर्तियों पर अंकित है।

(ii) flDd (Coins) & सिक्के के अध्ययन को न्यूमिसमैटिक्स कहते हैं। अर्थात् सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहा जाता है। आजकल की तरह, प्राचीन भारतीय मुद्रा कागज निर्मित नहीं थी बल्कि धातु के सिक्के के रूप में थी। प्राचीन सिक्के धातु से बनाए जाते थे। वे ताम्बे, चाँदी, सोने और सीसे से बनाए जाते थे।

प्राचीन समय में आधुनिक बैंकिंग प्रणाली की तरह कुछ भी नहीं था, लोग मिट्टी के बर्तन और पीतल के बर्तनों में धन इकट्ठा किया करते थे और उनको बहुमूल्य चीजों के रूप में रखते थे ताकि वे जरूरत के समय उसका इस्तेमाल कर सकें। भारत के विभिन्न हिस्सों में सिक्कों के ऐसे कई ढेर पाए गए हैं; जिनमें केवल भारतीय ही नहीं, रोमन साम्राज्य जैसे विदेशों में ढाले गए सिक्के भी थे। वे मुख्यतः कोलकाता, पटना, लखनऊ, दिल्ली, जयपुर, मुम्बई और चेन्नई के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। कई भारतीय सिक्के नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के संग्रहालयों में हैं। लम्बे समय तक भारत पर ब्रिटेन ने शासन किया; फलस्वरूप वे कई भारतीय सिक्कों को भारत से ब्रिटेन के निजी और सार्वजनिक संग्रहालयों में ले जाने में सफल रहे।

सिक्के राजाओं और देवताओं के आकार–प्रकार के साथ–साथ उनके नाम और तारीखों का भी उल्लेख करते हैं। जहाँ वे पाए जाते हैं, उससे उनके संचरण के क्षेत्र का संकेत मिलता है। सिक्कों का इस्तेमाल विभिन्न उद्देश्यों मसलन दान, भुगतान और विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाता था। ये उस वक्त के आर्थिक इतिहास के स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं। शासकों की अनुमति से व्यापारियों एवं सुनारों के समूह द्वारा कुछ सिक्के जारी किए गए थे। इससे पता चलता है कि उन दिनों शिल्प और वाणिज्य महत्वपूर्ण हो चुके थे। सर्वाधिक बड़ी संख्या में भारतीय सिक्के मौर्य काल के बाद के काल में मिलते हैं। ये शी”ा, पोटीन, ताम्बा, काँस्य, चाँदी और सोने के बने होते थे। गुप्त काल में सबसे ज्यादा सोने के सिक्के जारी किए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि मौर्यों के बाद खासकर गुप्त काल में व्यापार और वाणिज्य में बड़े पैमाने पर विकास हुआ। परन्तु, उत्तर–गुप्त काल के कुछ ही सिक्के पाए गए हैं, जो उस काल के व्यापार और वाणिज्य के पतन को दर्शाते हैं।

सिक्कों के रूप में कौड़ी का भी इस्तेमाल होता था, मगर उसकी क्रय–शक्ति कम थी। यह उत्तर–गुप्त काल में भारी मात्रा में पाई जाती थी। लेकिन हो सकता है इसका इस्तेमाल पहले भी होता रहा हो।

(भारत का प्राचीन इतिहास–राम शरण शर्मा P.P. 17-18)

(iii) Lekjd **(Building)** & प्राचीन भारत के इतिहास को जानने में खुदाइयों में प्राप्त स्मारकों के अवशेषों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। सैन्धंव सभ्यता के संबंध में तो जानकारी का एकमात्र स्रोत खुदाइयों में प्राप्त हुई। मौर्यकाल के संबंध में भी हमें अनेक प्रकार की जानकारियां भग्नावशेषों से प्राप्त होती है। विभिन्न स्थलों पर निर्मित स्तूप, गुफा, चैत्य एवं विहार इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। स्मारकों के रूप में अशोक के समय के सांची स्तूप, गुप्तकाल के देवगढ़ तथा भितरीगांव और तिगवां के मंदिर भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कनिष्क के शासन काल की तक्षशिला तथा उत्तरपश्चिमी प्रदेशों से प्राप्त मूर्तियां, गांधार कला के सौंदर्य के साथ–साथ कला पर यूनानी प्रभाव, कुषाण शासक की बौद्धों के महायान शाखा में आस्था आदि को भी प्रकट करती है। गुप्तकाल की वैष्णव, बौद्ध, जैन और शैव मूर्तियों से गुप्त शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की जानकारी मिलती है। मालवा में शिव, पार्वती, गणेश आदि की मूर्तियां आदि प्रमुख हैं। इन स्मारकों से ज्ञात होता है कि उस समय की भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार–प्रचार दूर–दूर देशों में हुआ था।

(iv) efr;k **(Sculptures)** & प्राचीन काल में कुषाणों, गुप्त शासकों और गुप्तोत्तर काल में जो मूर्तियां बनाई गईं उनसे जनसाधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला के विकास पर बहुत प्रकाश पड़ा है। कुषाण काल की मूर्तिकला में विदेशी प्रभाव अधिक है। प्राचीन भारत की मूर्तिकला से जनसाधारण के जीवन पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ा है। भारहुत, बोधगया, सांची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की अति सजीव झांकी मिलती है।

(v) fp=dyk **(Painting)** & इसी प्रकार अजंता के चित्रों में मनोभावों की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रकला ने 'माता और शिशु' या 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों में ऐसे मनोभावों का चित्रण किया है। जीवन और कला का अटूट संबंध है। चित्रकला से हमें तत्कालीन जीवन की झलक देखने को मिलती है।

(vi) vo'k"k & बस्तियों के स्थलों के उत्खनन से जो अवशेष मिले हैं उनसे प्रागितिहास और आद्य इतिहास पर बहुत प्रकाश पड़ा है। आदि मानव ने किस प्रकार उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का उपयोग करके अपने जीवन को सुखमय बनाने का प्रयत्न किया, इसकी जानकारी हमें उसकी बस्तियों से प्राप्त पत्थर और हड्‌डी के औजारों, मिट्‌टी के बर्तनों, मकानों के खंडहरों से ही होती है। भारत में आदि मानव ईसा से 4 लाख से 2 लाख वर्ष पूर्व रहता था। ईसा से 10 हजार से 6 हजार वर्ष पूर्व के काल में मानव के जीवन में बड़े क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। वह खेती करने लगा, पशु पालने लगा, मिट्‌टी के बर्तन बनाने लगा, पत्थर के चिकने औजार बनाने लगा। इस नवपाषाण युग की जानकारी हमें उसके अवशेषों से ही हुई है। किस प्रकार जंगली फसलों से उसने खेती करना सीखा और इसी के साथ पशुपालन का कार्य भी शुरू कर दिया। इस विकास–प्रक्रिया की पूरी जानकारी हमें नवपाषाण युग के अवशेषों से ही हुई है।

(vii) egj **(Seals)** & अवशेषों से जो मुहरें मिली हैं उनसे भी प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में बहुत सहायता मिली है। मोहन–जोदड़ों में 500 से अधिक मुहरें मिली थी। उन्हीं के आधार पर हड़प्पा संस्कृति के निवासियों के धार्मिक विश्वासों का अनुमान लगाया गया है। इसी प्रकार बसाड़ (प्राचीन वैशाली) में जो 274 मिट्‌टी

की मुहरें मिली थी। इन मुहरों से यह निष्कर्ष निकलता है कि गुप्तकालीन आर्थिक व्यवस्था में श्रेणियों का बहुत महत्व था।

अब पुरातत्ववेत्ता वैदिक साहित्य, महाभारत और रामायण में उल्लिखित स्थानों का उत्खनन करके उनकी भौतिक संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उदाहरण के लिए हस्तिनापुर की खुदाई के आधार पर डॉ वी० बी० लाल का मत है महाभारत में वर्णित कौरव–पांडवों का युद्ध लगभग ई० पू० 900 में हुआ। इस प्रकार साहित्यिक साक्ष्य यद्यपि घटना का पूरा विवरण देता है, फिर भी वह लेखक के विचारों से प्रभावित अवश्य होता है। पुरातात्विक साक्ष्य का साहित्यिक साक्ष्य के साथ तर्कसंगत संश्लेषण करके आधुनिक इतिहासकार सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। पुरातात्विक साक्ष्य से संस्कृतियों के क्रमिक विकास पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला जा सकता है।

पुरातात्विक साक्ष्यों ने मानव की आर्थिक प्रगति के एक अन्य चरण पर भी महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला है। यह चरण भारत में लौह युग के आगमन से संबंद्ध है। लोहे के प्रयोग का आरंभ एक महत्त्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि थी। लोहे के अवशेष भारत के बलूचिस्तान, उत्तर–पश्चिमी भारत, गंगा–यमुना के दोआब, पूर्वी भारत, मध्य भारत तथा दक्षिणी भारत में मिले हैं। इन छह केंद्रों में मध्य भारत का केंद्र सबसे प्राचीन प्रतीत होता है। मध्य और दक्षिण भारत में लोहे को पिघलाने की प्रक्रिया स्वतंत्र रूप से प्रारंभ हुई। लोहे के प्रयोग से कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए और जिन लोगों ने पहले लोहे के औजार और हथियारों का प्रयोग आरंभ किया वे लोहे का प्रयोग न करने वाले लोगों से अधिक शक्तिशाली हो गए।

इस प्रकार पुरातात्विक साक्ष्य की सहायता से हम प्राचीन भारत के इतिहास को पहले की अपेक्षा अधिक तर्कसंगत ढंग से समझ सके हैं क्योंकि पुरातात्विक साक्ष्य से हम लेखक के काल्पनिक पुट को अलग कर सके हैं।

(प्राचीन भारत का इतिहास– द्विजेन्द्रनारायण झा एवं कृष्णमोहन श्रीमाली P.P. 18-20)

1-4 fo"k; oLrq dk iqu% ÁLrqrhdj.k **(Further Main Body of the Text)**

1-4-1 Ákd~ bfrgkl dk ÁkxSfrgkfld dky **(Pre-historic Age) :-**

समस्त इतिहास को तीन वर्गों में बांटा गया है। 1. प्राक् इतिहास या प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Age) 2. ऐतिहासिक काल (Historic Age) 3. आद्य ऐतिहासिक काल (Protohistoric Age)

1- Ákd~ bfrgkl ;k ÁkxSfrgkfld dky **(Prehistoric Age)** & जिस काल में मानव ने घटनाओं का कोई लिखित विवरण उद्धत नहीं किया उसे प्रागैतिहासिक काल कहा जाता है। अर्थात् इस काल में मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित प्रमाण या विवरण नहीं रखा।

2- ,sfrgkfld dky **(Historic Age)** & मानव विकास के उस काल को इतिहास कहा जाता है जिसका विवरण लिखित रूप में उपलब्ध है।

3- vk|,frgkfld dky **(Proto-historic Age)** & उस काल को आद्यऐतिहासिक काल कहा जाता है जिस काल में लेखन कला के प्रचलन होने के बाद भी उपलब्ध लेख पढ़े नहीं जा सकते।

1-4-2 ik"kk.k dky **(Stone Age) :-**

पाषाण का शाब्दिक अर्थ है – पत्थर। पाषाण काल में मानव के हथियार पाषाण (पत्थर) से बने हुए थे। इसलिए विद्वानों ने इसे पाषाण काल की संज्ञा दी। यह काल मनुष्य की सभ्यता का प्रारम्भिक काल माना जाता है।

पाषाण काल

(Stone age)

पुरापाषाण काल
(Palarolithic age)
(बीस लाख से 12 हजार ई० पू०)

महापाषाण काल
(Mesolithic age)
(बारह हजार – दस हजार ई० पू०)

नवपाषाण काल
(Neolithic age)
(दस हजार–चार हजार ई० पू०)

निम्न–पूर्व पाषाण युग
(5 लाख ई0पू0 – 50 हजार ई0 पू0)

मध्य–पूर्ण पाषाण युग
(50 हजार ई0पू0 – 40 हजार ई0 पू0)

उच्च–पूर्व पाषाण युग
(40 हजार ई0पू0 – 10 हजार ई0 पू0)

चापर–चापिंग
(पेबल संस्कृति)

एश्यूलियन संस्कृति
(हैण्ड–एक्स संस्कृति)

1-4-3 i|jkik"kk.k dky ;k ÁkjfHkd iRFkj ;|x@ iSyvkfyfFkd dky **(Paloeolithic Age) :-**

पैलिओलिथिक शब्द दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना है। पैलिओ (Paleo) + लिथौस (Lithos) पैलिओ का अर्थ है – प्राचीन, लिथौस का अर्थ है – पत्थर। पाषाणकालीन सभ्यता एवं संस्कृति का अन्वेषण सर्वप्रथम ब्रूस फूट महोदय ने 1826 ई0 में किया था। यह काल आखेटक एवं खाद्य संग्राहक काल के रूप में भी जाना जाता है। भारत में जो कुछ अवशेष के रूप में मिला है। जो उस समय प्रयोग में लाए जाने वाले पत्थर के उपकरण के रूप में प्राप्त होता है। भारत में पुरापाषाणकालीन मनुष्य के अवशेष (जीवाश्म) कहीं से नहीं प्राप्त हुए है। इस कल में मानव का जीवन शिकार एवं खाद्य संग्रहपर निर्भर था।

पुरापाषाण युग के क्षेत्रों का वर्गीकरण

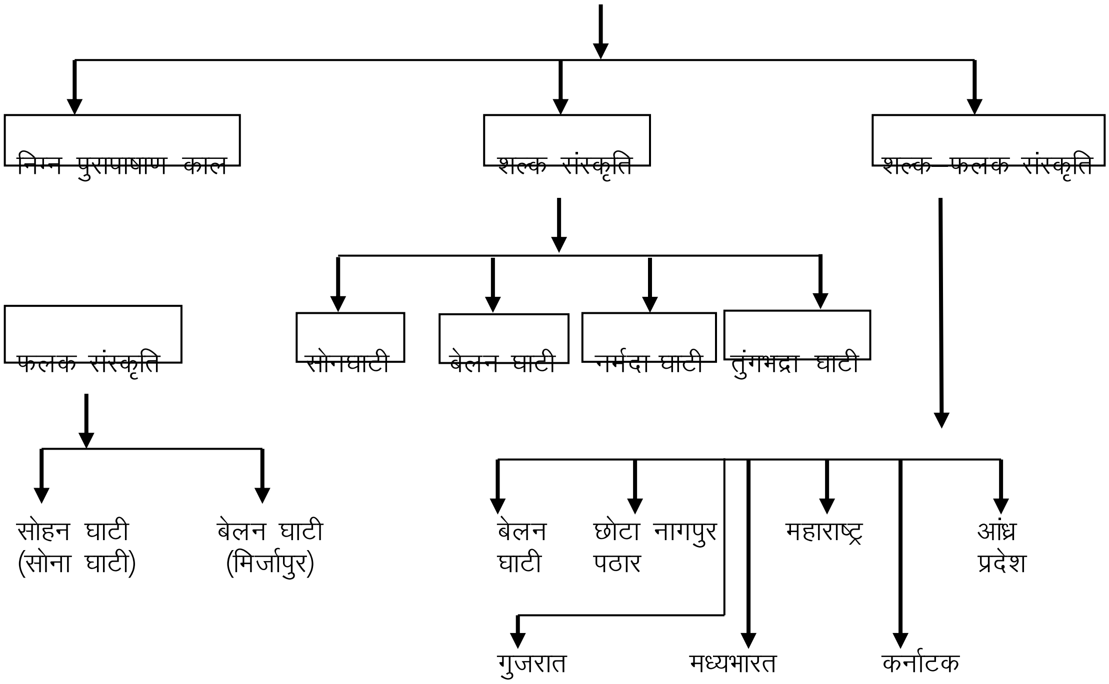

(संक्षिप्त इतिहास NCERT सार – महेश कुमार बर्णवाल P.12)

1-4-4 iqjkik"kk.kdkyhu dh fo'k"krk,¡ **(Features of Old Stone Age Culture)** ;k iqjkik"kk.kdkyhu laLdfr Øe vkj Hkkxkfyd iLkj:-

(i) भारत की पुरापाषाण की सभ्यता का विकास प्लाइस्टोसीन काल या हिम–युग में हुआ।

(ii) पुरापाषाण–कालीन निवासियों के संबंध में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है, क्योंकि इस काल के मनुष्य का किसी प्रकार का कोई अवशेष प्राप्त नहीं हुआ है।

(iii) कुछ विद्वानों के विचार है कि पुरापाषाण काल में भारत में निवास करने वाले लोग अण्डेमान द्वीप में निवास करने वाले वर्तमान मानवो की भांति हब्शी जाति के थे।

(iv) लोगों का रंग काला और कद छोटा होता था। इसकी पहचान चपटी नाक वालों के रूप में भी की जाती है।

(v) पुरापाषाण काल की जलवायु आजकल की जलवायु से भिन्नी थी।

(vi) पुरापाषाण कल एक ऐसा युग था, जब बहुत से परिवर्तन हुए जैसे– महाशीत, झंझावत (बिजली का कड़कना), अतिवृष्टि, प्लावन, तुषारपात आदि के प्रकोप से मनुष्य को रक्षा करना आवश्यक था।

(vii) पुरापाषाण काल के लोग वृक्षों की पत्तियों, छाल तथा पशुओं की चमड़ी (चर्म) से अपने शरीर को ढकते थे तथा गर्मी (धूप) वर्षा, सर्दी (शीत) से रक्षा करते थे।

(viii) पुरापाषाण काल में जनसंख्या बहुत कम थी और लोगों की आवश्यकताएं भी सीमित थी।

(ix) पुरापाषाण काल में मनुष्य का आहार (भोजन), फल, फुल, कच्चा मांस, कंदमूल आदि खाता था इसलिए इस काल को 'आखेटक एवं खाद्य संग्रहक' युग भी कहा जाता है।

(x) इस काल (पुरापाषाण काल) में शवों को जलाने की प्रथा नहीं थी। शवों को गाड़ दिया जाता था या फिर शवों को खुले मैदान में छोड़ दिया जाता था जिसे पशु या पक्षी खा लेते थे।

(xi) इस काल में सभी औजार पत्थर से ही बनते थे और पत्थरों की प्राप्ति कठोर चट्टानों से होती थी।

1-4-5 e/;ik"kk.k@ehlkfyfFkd dky **(Mesolithic Age) :-**

मध्यपाषाण युग को आखेटक और पशुपालक युग के नाम से भी जाना जाता है। मध्यपाषाण काल की शुरूआत लगभग 10 हजार से 8 हजार ई० पू०। यह काल पुरापाषाण काल तथा नवपाषाण काल दोनों का सम्मिश्रित है।

e/;ik"kk.k l:Ldfr i:lkj ¼forj.k½ **(Mesolithic Culture distribution)** & (i) मध्यपाषाण काल के अध्ययन के बाद पुरातत्वेत्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मनुष्य हब्शी थे। (ii) इस काल में मनुष्य की रोजी–रोटी का साधन आखेट ही था। (iii) मध्यपाषाण काल में कच्चा मांस और मछलियों का भी भोजन के रूप में प्रयोग किया जाता था। (iv) मध्यपाषाण काल में शवों की दाह संस्कार की प्रक्रिया शुरू कर दी थी और शवो से संबंधित अनुष्ठान भी करते थे। (v) मध्यपाषाण की संस्कृति कृषि प्रारंभ होने से पहले की है। (vi) मध्यपाषाण काल के लोगों के प्रमुख औजारों में सूक्ष्म–पाषाण (पत्थर) के बहुत छोटे औजार (माइक्रोलिथ) मिलते है। (vii) मध्यपाषाण काल के प्रमुख स्थल – मध्यप्रदेश में – आदमगढ़, भीमबेटका, बोछोर। (viii) राजस्थान में – बागोर (भीलवाड़ा) और उत्तरप्रदेश में – महदहा, सराय नाहर राय। बिहार में – पायसरा।

1-4-6 uoik"kk.k@fu;kfyfFkd dky **(Concept of Nelithic Age) :-**

निथोलिथिक ग्रीक भाषा के नियो शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को नवपाषाण काल कहा जाता है। अर्थात् पुरापाषाण काल के उपकरणों के निर्माण की तकनीक, शैली तथा विधि से भिन्नता एवं नवीनता होने के कारण इस कालखण्ड को नवपाषाण काल का नाम दिया जाता है। इस का समय काल 10000 वर्ष से 4000 ई० पू० तक माना गया है। इस को नवीन पत्थर युग (The New Stone Age) भी कहा जाता है। नवपाषाण में बड़े–बड़े परिवर्तन हुए जिनके फलस्वरूप मानव सभ्यता की नींव पड़ी। नवपाषाण युग को मानव जीवन के विकास में अत्यन्त ही क्रांतिकारी माना जाता है। इस युग में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन हुए कि इस युग के विकास के क्रम को 'नव पाषाण युगीन क्रांति' कहा जाता है। भारत में नवपाषाण काल से सम्बद्धित पुरातात्विक खोज प्रारंभ करने का श्रेय डॉ० प्राइमरोज को जाता है। जिन्होंने 1842 ई० कर्नाटक के लिंगसुगुर नामक स्थल से उपकरण खोजे थे। नवपाषाण काल में आकर जलवायु मानव के लिए अपेक्षाकृत अधिक अनुकूलन हो गई थी। मानव ने अपने विकास के लिए अपनी विवेकशीलता का उपयोग प्रारंभ कर दिया। इस काल में भी अधिकांश औजार पाषाणों के बने होते थे लेकिन औजारों का स्वरूप परिष्कृत होता था। इस काल में आजीविका में सहयोग देने वाली वस्तुओं का निर्माण लकड़ी, हाथी दांत तथा विभिन्न प्रकार के पशुओं की अस्थियों से भी होने लगा। इस काल में धनुष–बाण, पहिया, डोंगी, तकली, करघे आदि के निर्माण के प्रमाण मिले है।

1-4-7 d`f"k Á.kkyh dh mRifr@mn~xe (Origin of the Agriculture System) :-

¼1½ [ksrh dh 'kq:vkr ;k ÁkjaHk (Beginning of Farming) :-

(i) अतिरिक्त इस कालखण्ड में मक्का, पटसन, बाजरा, कपास विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नो का उत्पादन आरम्भ हो चुका था।

(ii) किसानों ने कृषि का प्रारंभ, नवपाषाण युग का सबसे बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन था।

(iii) उत्खनन में प्राप्त एक पाषाण–शिला पर दो बैलो से कृषक भूमि जोतते हुए चित्र प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय बैलो की सहायता से कृषि की जाती थी।

(iv) नवपाषाण बाशिन्दे सबसे प्राचीन कृषक समुदाय थे। वे पत्थर से बने फाबड़े और खुदाई योग्य लकड़ियों से सीमन खोदते थे।

(v) नवपाषाण युगीन लोगों ने एक स्थिर जीवन को अपनाया और रागी, कुल्थी और चावल उपजाया।

(vi) मेहरगढ़ के नवपाषाण लोग अधिक उन्नत थे। उन्होंने गेहूँ और जौ का उत्पादन किया। इसके फावड़ा और हल जैसे आसान औजारों का प्रयोग किया। वे चकमक पत्थर से बने हँसुए से खेती करते थे।

(vii) वास्तव में कृषि की खोज के कारण खाद्य संग्राहकों से खाद्य पैदा करने वाले बन गए इससे उनके जीवन में परिवर्तन हुआ।

1-4-8 uoik"kk.k ;qx dh fo'ks"krk,¡ (Characteristics of Neolithic) :-

(1) LFkk;h thou dh 'kq:vkr (Beginning of a Settled Life) :-

(i) कृषि के साथ–साथ स्थायी जीवन की शुरूआत हुई क्योंकि जो लोग फसल उपजाते थे उन्हें एक स्थान पर लम्बे समय तक रहना पड़ता था।

(ii) वे बीजो को मिट्टी में डालने के बाद उनकी देखभाल के लिए कई महीनों तक उसी स्थान पर रहना पड़ता।

(iii) पौधों की देखभाल के लिए पानी देना, पशु–पक्षियों से बचाना, घास साफ (खरपतवार हटाना)।

(iv) जब तक फसल पककर तैयार ना हो जाए तब तक उसी स्थान पर रहना।

(v) खाने और बीज के लिए उन्हें संभाल कर (भण्डारण) रखना इसलिए लोगों ने भ्रमणकारी जीवन का त्याग करके स्थायी जीवन को अपनाया।

(2) i'kqikyu dh 'kq:vkr (Beginning of Herding) :- नवपाषाण काल में कृषि के साथ–2 लोगो ने पशुपालन कार्य की शुरूआत की जिससे पशुओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई। मनुष्य नें सबसे पहले कुत्ते को पालतू बनाया ताकि वह अन्य जानवरों से अपनी रक्षा कर सके। धीरे–2 उसने गाय, बैल, भेड़–बकरी,

बिल्ली, सुअर, घोड़ा आदि को पालना शुरू कर दिया। इस प्रकार धीरे–2 पशुपालन के व्यवसाय में काफी तेजी से वृद्धि हुई।

(3) ?kj **(Houses) :-** नवपाषाण काल में मनुष्य के स्थायी रूप से रहने के लिए अपने घरों का निर्माण किया ताकि वर्षा के समय, गर्मी, सर्दी व हिंसात्मक पशुओं से बचा जा सके। नवपाषाण काल में मिट्‌टी के घर व झोपड़ियाँ बनाकर रहते थे। जैसे– बुर्जहोम के लोग गड्‌ढ़े वाले घर बनाते थे। ये घर मिट्टी को खोद कर बनाए जाते थे जिनमें अन्दर की ओर उतरने के लिए छोटी–2 सीढ़िया बनी होती थी। क्योंकि लोगो को सही जीवन जीने के लिए घर ही एक आश्रय था। फिर धीरे–2 मोहल्लें तथा गांव अस्तित्व में आने लगे।

(4) xkao dk mnxe **(Origin of Village) :-** नवपाषाण काल में लोगों ने छोटी–2 बस्तियाँ बनाई जिससे गाँव की उत्पति हुई। इन गाँवो के कारण लोगों की आपस में एक दूसरे से निरर्भरता बढ़ी। स्थायी रूप से खेती और पशुपालन, व्यापार, त्योहारों, धर्म आदि को बढ़ावा मिला। भारत में मेहरगढ़ नामक स्थान ग्रामीण बस्तियो के अवशेष मिले है।

(5) ifg, dh [kkst **(Discovery of the Wheel) :-** नवपाषाण युग में पहिए की खोज लोगो के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इससे लोगो का जीवन आसान एवं आरामदायक हो गया। इसका उपयोग मिट्टी के बर्तन बनाने और भारी चीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए आसान कार्य हो गया।

(6) Hkkstu **(Food) :-** नवपाषाण युग में मनुष्य के कच्चे कंदमूल के स्थान पर अच्छा भोजन शुरू कर दिया। लोग भोजन में गेहूँ की चपातियाँ, चना, मक्का, मटर, जौ, चावल, दाले, फल व विभिन्न सब्जियों के अतिरिक्त दूध, दही एवं मक्खन का भी प्रयोग करने लगे।

(7) oL= **(Clothing) :-** लोगों ने ऊन, रूई, पटसन आदि को अच्छे तरीके से बनुकर। अब ऊनी एवं सूती वस्त्रों का प्रयोग शुरू कर दिया और जानवरों की खाल व पेडों की छाल से बने वस्त्रों का प्रयोग समाप्त हो गया।

(8) df"k dk ÁkjEHk **(Starting of Agriculture) :-** 12 हजार वर्षों में वातावरण में घोर बदलाव आया। इससे कई क्षेत्रों में घास के मैदान विकसित हो गए। मनुष्य ने घास और बीजो को एकत्रित करना शुरू कर दिया। इनको सुरक्षित रखने के लिए मिट्‌टी में दबा दिया। कुछ दिनों के बाद ये अंकुरित हो गए। जब उन्होंने देखा कि बीज पौधों के रूप में बढ़ रहे है। तब उनको आश्चर्य हुआ और उनकी देखभाल शुरू कर दी। कुछ दिनों के बाद पौधों पर फल लगने लगे। यही से कृषि की शुरूआत हुई। गेहूँ और जौ पहले अनाज थे जिनकी खेती सबसे पहले शुरू हुई उसके बाद अन्य फसलों की। जैसे चावल, अलसी, मक्का, चना, कपास आदि।

(9) dyk **(Art) :-** नवपाषाण काल में कला का विकास बहुत हुआ। चाक की सहायता से बढ़िया बर्तनों का निर्माण करना तथा उन पर सुन्दर चित्रकारी करते थे। गुफाओं की चित्रकारी भी की जाती है। शिकार का

एक दृश्य पत्थर के टुकड़े पर बना हुआ मिला है इसमें दो शिकारियों को हाथ में लंबा भाला तथा तीर और धनुष लेकर हिरण का शिकार करते हुए दिखाया गया है।

(10) /kkfeZd fo'okl **(Reigious Belief) :-** नवपाषाण काल में प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान नहीं था जैसे – बिजली के चमकने, वज्रपात, वर्षा, बाढ़, भूकंप, ओलावृष्टि आदि के भय के कारण वे सूर्य, चंद्रमा, वर्षा, वज्र आदि की पूजा करने लगे और उनको खुश करने के लिए त्योहार मनाने लगे।

(11) jktuhfrd laxBu **(Political Organisation) :-** नवपाषाण युग में जब मनुष्य स्थायी निवासी बना तब गोत्र, परिवार, समाज आदि के विकास व उत्थान के लिए संगठन बनाकर अधिक आयु वाले लोगो को मुखिया चुना। इस प्रकार राजनैतिक संगठनो का तेजी से निर्माण हुआ।

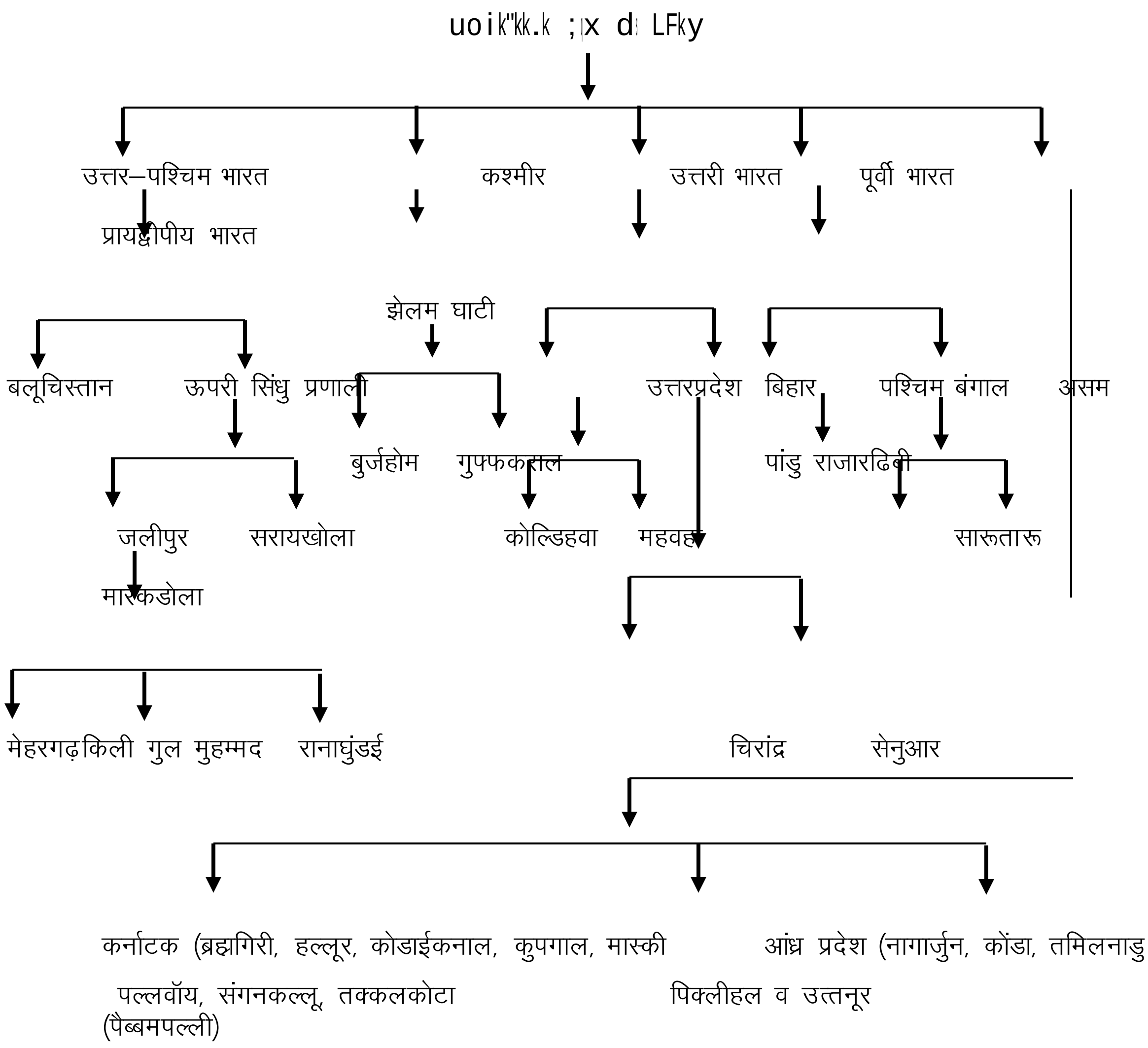

(संक्षिप्त इतिहास NCERT सार – महेश कुमार बर्णवाल P.14)

1-5 Áxfr leh{kk **(Check your Progress) :-**

¼d½ fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft, ¼& **(Filling the blanks)**

(i) इतिहास के जनक या पिता .... को कहा जाता है।

(ii) हिस्टो (Histo) का अर्थ .... है।

(iii) वेद शब्द .... धातु से निकला है जिसका अर्थ .... है।

(iv) वेदांगों की संख्या .... है और उपवेदों की संख्या .... है।

(v) पुराणों की संख्या .... है और संस्कारों की संख्या .... है।

(vi) जैन धर्म के........................... तीर्थंकर हुए।

(vii) अरब लेखकों में सबसे प्रसिद्ध........................... था।

(viii) युवान च्वांग हर्ष के राज्यकाल में .... आया था और वह .... वर्ष भारत में रहा।

(ix) मोहनजोदड़ों में .... अधिक मोहरें मिली थीं।

¼[k½ lR;@vlR; dFku ¼& **(True/False)**

(i) पाषाण काल का शाब्दिक अर्थ है पत्थर। (सत्य/असत्य)

(ii) पैलिओं (Palaeo) का अर्थ है पत्थर। (सत्य/असत्य)

(iii) समस्त इतिहास को तीन भागों में बांटा गया है। (सत्य/असत्य)

(iv) पहिए की खोज मध्यम पाषाण युग में हुई थी। (सत्य/असत्य)

(v) कृषि की शुरूआत नवपाषाण युग में हुई थी। (सत्य/असत्य)

(vi) BCE $\rightarrow$ BEFORE COMMONERA । (सत्य/असत्य)

(vii) यूनानी भाषा में नियो (Neo) शब्द नवीन के अर्थ में प्रयोग होता है। (सत्य/असत्य)

(viii) खुरचनी औजार मध्यम पाषाणकाल का औजार था। (सत्य/असत्य)

(ix) पूर्व पाषाण काल में मनुष्य भोजन में फल, फूल, कच्चा मांस, कन्दमूल आदि खाते थे। (सत्य/असत्य)

(x) सिक्कों के अध्ययन को मुद्रा शास्त्र कहा जाता है। (सत्य/असत्य)

1-6 lkjka'k ;k lf{kIrdk **(Summary) :-**

रेडियो कार्बन डेटिंग एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कोई वस्तु किस काल से संबंधित है। टीला धरती की सतह के उस उभरे भाग को कहते है; जिसके नीचे पुरानी बस्तियों के अवशेष विद्यमान होते हैं। प्राचीन टीलों अथवा स्मारकों का उत्खनन कर वहाँ से प्राप्त वस्तुओं व कलाकृतियों के आधार पर क्रमिक ऐतिहासिक विश्लेषण करना, पुरातत्व विज्ञान (आर्कियोलॉजी) कहलाता है। प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों को जानने के लिए इसे चार भागों में बाँटा गया है– 1. धार्मिक ग्रंथ 2. ऐतिहासिक एवं सामाजिक ग्रंथ (धर्मोत्तर साहित्य) 3.विदेशियों के वृत्तान्त 4. पुरातत्व संबंधी साक्ष्य।

- ईस्वी पूर्व / बी० सी० / ई (BC/ BCE) → BC → BEFORE COMMON / BCE → BEFORE COMMON ERA ईस्वी/सी ई० (AD/CE) → CE – COMMON ERA
- ईस्वी पूर्व (BC) इसका अर्थ है क्राइस्ट से पहले। ईसा के जन्म से पहले की सभी तारीखों को ईस्वी पूर्व के रूप में व्यक्त किया जाता है। इनकी गणना उलटी की जाती है। जैसे 280 ई० पू० इसका अर्थ हुआ। ईसा के जन्म से 280 वर्ष पहले और बी.सी.ई. का अर्थ होता है। सर्वमान्य समय से पहले।
- ईस्वी (AD) दो लैटिन शब्दों से मिलकर बना है 'एनो' + 'डोमिनी' से बना है। जिसका अर्थ होता है प्रभु अर्थात् क्राइस्ट के समय या युग में। जेसस क्राइस्ट के जन्म के बाद की सारी तिथियों और वर्षों को ईस्वी में प्रकट किया जाता है। इनकी गणना आगे की ओर की जाती है, जैसे– 2001 को 2001 ई० भी लिखा जा सकता है। इसका मतलब हुआ कि जेसस क्राइस्ट के जन्म 2001 वर्ष बाद।
- ई० पूर्व की दो तिथियों के बीच के अंतर को जानने के लिए हम छोटी संख्या को बड़ी संख्या में से घटाते हैं। जैसे – 2000 ई० पू० और 500 ई० पू० के बीच के समय का अंतर = 2000 ई० पू० – 500 ई० पू० = 1500 वर्षों की स्थिति में भी गणना ठीक ऐसे ही की जाती है। दूसरी ओर दो ऐसी तिथियों के बीच के समय के अंतराल को जानने के लिए जिनमें से एक ईस्वी पूर्व में है और दूसरी ई० में, इन्हें जोड़ दिया जाता है। जैसे 500 ई० पू० और 1500 ई० के बीच के समय का अंतराल = 500 + 1500 वर्ष = 2000 वर्ष

(NCERT VI कक्षा – इतिहास हमारे अतीत–1 P.7)

- इतिहास अतीत के लोगों, स्थलों और घटनाओं का समयवद्ध रूप से संकलित दस्तावेज है।
- वेद शब्द 'विद्' धातु से निकला है जिसका अर्थ है 'ज्ञान'। वेदों की संख्या चार है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अर्थववेद।
- उपवेदों की संख्या 4 है। वेदांगों की संख्या 6 है। वेदों का अर्थ समझने व सूक्तों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना की गई। हिन्दुओं के दो प्रसिद्ध प्राचीनतम महाकाव्य है 'रामायण' और 'महाभारत'।
- 18 पुराणो से हमें मौर्य पूर्व से लेकर गुप्तकाल तक अनेक प्रकार की महत्त्वपूर्ण जानकारियां मिलती हैं। बौद्धो के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ त्रिपिटक– सुत्तपिटक, विनयपिटक और अभिधम्मपिटक। त्रिपिटको, महावंश तथा दीपवंश को दक्षिणी बौद्धमत का ग्रंथ माना जाता है।
- प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ 'ललित विस्तार' की रचना नेपाल में हुई। 549 जातकों में मुख्य रूप से गौतम बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाओं का वर्णन है। जैनों के धार्मिक ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हेमचन्द्र रचित 'परिशिष्ट पर्व' है। ऐतिहासिक महत्व के प्रथम ग्रंथ की रचना हर्ष के दरबारी बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' के रूप में की। ऐतिहासिक ग्रंथों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 12वीं शताब्दी मे कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' है। रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद नामक तीन प्रसिद्ध नाटकों की रचना हर्ष ने की।
- संगम साहित्य के प्रमुख ग्रंथ है तोलकाटिपयम, शिलप्पायिकाराम एवं मणिमेखलै।
- हेरोडोटस (Herodatus) को इतिहास का पिता कहा जाता है। इन्होंने हिस्टोरिका नामक पुस्तक की रचना की थी।

- भारत में आदिमानव पत्थर के अनगढ़ और अपरिष्कृत औजारों का प्रयोग करता था। यह काल आखेटक एवं खाद्य संग्राहक काल के रूप में जाना जाता है।
- सर्वप्रथम आगका प्रयोग पुरापाषाण काल में चीन के चाऊ–जू–कोलियन गुफा से प्राप्त होता है।
- आरंभिक पुरापाषाण कालीन औजार उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में बेलन नहीं घाटी में पाए गए है। मध्यप्रदेश के पास भीम बेटिका की गुफाओं और शैलाश्रयों (चट्टानों से बने आश्रयों) में औजार मिले है। जो लगभग एक लाख ईसा पूर्व के है।
- मध्यपाषाण (मिसोलिथिक) युग आखेटक और पशुपालक। भारत में मध्यपाषाण युग के विषय में जानकारी सर्वप्रथम सी० एल० कालइिल द्वारा सन् 1867 ई० में विंध्य क्षेत्र से लघु पाषाण उपकरण खोजे जाने से हुई।
- मध्यपाषाण युग का मुख्य लक्षण बहुत छोटा औजार माइक्रोलिथ है जो प्रायः समस्त भारत में विशेषतः उत्तरी गुजरात में पाए गये है। इस युग में लघुपाषाण उपकरणों के अतिरिक्त कुत्ते, गाय, बैल, भैंस, जगली घोड़े, बैल, बकरी, मछली, घड़ियाल तथा नीग्रो जाति के मनुष्य के अवशेष भी मिले है।
- भारत में मानव अस्थिपंजर मध्यपाषाण काल से ही प्राप्त होने लगे थे। भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तटपर स्थित बागोर भारत का सबसे बड़ा मध्यपाषाणिक स्थल है। मध्यप्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, जिसका समय लगभग 5,000 ईसा पूर्व हो सकता है।
- पाषाणकालीन सभ्यता तथा संस्कृति का अन्वेषण सर्वप्रथम 1862 ई० में ब्रसफूट ने किया। पुरापाषाण काल में मानव केवल पत्थरों के औजारों का ही प्रयोग करता था। पुरापाषण काल में मानव केवल पत्थरों के औजारों का ही प्रयोग करता था। पुरापाषाण काल में शवाधान की दो पद्धतिया प्रचलित थी। शवों को गाड़ा जाता था और शवों को खुले मैदान में छोड़ दिया जाता था।
- मध्यपाषाणकाल में पशुओं के मास के अतिरिक्त मछलियां भी आहार बन गई। मध्यपाषाण काल में मानव–अस्थियों के साथ–2 कुत्ते के भी अस्थि–पंजर प्राप्त हुए है।
- यूनानी भाषा का नियो (Neo) शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को नवपाषाण काल कहा जाता है। भारत में नवपाषाण से संबंधित पुरातात्विक खोज प्रारंभ करने का श्रेय डॉ प्राइमरोज को जाता है, जिन्होंने 1842 ई० में कर्नाटक के लिंगसुगुर नामक स्थल से उपकरण खोजे थे।
- सर्वप्रथम 1860 ई० में लॉ मसूरिये ने इस काल के प्रथम प्रस्तर उपकरण उत्तरप्रदेश की टोंस नदी घाटी में प्राप्त किए। नवपाषाण काल की एक ऐसी बस्ती मिली है, जिसका समय लगभग 7000 ई० पू० बताया जाता है। नवपाषाण युगीन प्राचीनतम बस्ती पाकिस्तान में स्थित बलूचिस्तान प्रांत के मेहरगढ़ में है। मेहरगढ़ में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है।
- इलाहाबाद में स्थित कोल्डिहवा एकमात्र ऐसा नवपाषाणिक पुरास्थल है, जहाँ से चावल या धान के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए है। नवपाषाण युग के निवासी सबसे पुराने कृषक समुदाय थे। ये लोग स्थायी घर बनाकर रहते थे। मिट्टी के बर्तन सर्वप्रथम इसी काल में बने।
- इस काल में स्थायीघर, मिट्टी के बर्तन, कृषि व पहिये के आविष्कार। इस युग के लोग पत्थर के पॉलिशदार औजारों और हथियारों का प्रयोग करते थे, वे विशेष रूप से पत्थर की कुल्हाड़ियों का इस्तेमाल करते थे।

(संक्षिप्त इतिहास NCERT – रमेश कुमार बर्णवाल P-14)

1-7 l:d:r 'kCn **(Key-words) :-**

- इतिहासिक → इतिहास का विशेषज्ञ
- अभिलेख → किसी स्मारक या किसी पुस्तक में लिखी बाते।
- हस्तलेख → हस्तलिखित पुस्तक या दस्तावेज
- पाषाण → पत्थर
- वृत्तांत → विवरण, वर्णन
- शस्त्र → हाथ में पकड़ चलाए जाने वाला हथियार
- अस्त्र → हवा में फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार

1-8 Lo eY;kdu d: fy, ijh{kk **(Self-AssessmentTest)** %

Hkkx ¼d½ cgqfodYid i:'u **(Objective Types Questions)**

(इनके उत्तरदायी और कोष्ठक में देखिए)

(i) वेदांग की संख्या है।

(a) चार (b) पाँच (c) छः (d) सात उत्तर– C

(ii) इतिहास के जनक ने कौन सी पुस्तक लिखी ?

(a) अष्टाध्यायी (b) हिस्टोरिका (c) पृथ्वीराज रासो (d) नीतिसार उत्तर– B

(iii) आग की खोज हुई ?

(a) पुरापाषाण काल में (b) मध्यपाषाणकल में

(c) नवपाषाण काल में (d) ताम्रपाषाणकाल में उत्तर– A

(iv) पुरापाषाण काल को किस अन्य नाम से जानते है ?

(a) खाद्य–उत्पादक (b) आखेटक और पशुपालक

(c) आखेटक एवं खाद्य संग्राहक (d) उपर्युक्त सभी उत्तर– C

(v) अष्टाध्यायी किसने लिखी ?

(Who wrote Ashtadhyayi) ? (G.J.U. Hisar D.D.E,2019)

(vi) भारत के किस स्थल से नवपाषाणकाल की संस्कृति के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए है?

(a) चिरांद (b) बुर्जहोम (c) महदहा (d) मेहरगढ उत्तर– D

(vii) नवीन पत्थर युग

(a) 10,000 वर्ष से 4,000 ई० पू० (b) 12,000–10,000 ई० पू०

(c) 20,00,000 – 12,000 ई० पू० (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं उत्तर– A

(viii) बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख कौन से ग्रंथ में मिलता है।

(a) सुत्तपिटक (b) विनयपिटक (c) अभिधम्मपिटक (d) उपर्युक्त सभी उत्तर– B

(ix) महाभारत मूल रूप से किस भाषा में लिखी गई है?

(In which language Mahabharata is written originally?) (G.J.U. DDE 2019)

(x) रामायण में मूल रूप से कितने श्लोक थे ?

(a) 24000 (b) 12000 (c) 8800 (d) 600 उत्तर– D

(xi) अष्ठाध्यायी की रचना किसने की ?

(a) कल्हण ने (b) पाणिनी ने (c) महर्षि वाल्मीकि ने (d) कौटिल्य ने उत्तर– B

(xii) कृषि और पहिये का आविष्कार किस काल में हुआ था ?

(a) वैदिककाल में (b) पुरापाषाण काल में

(c) मध्यपाषाणकाल में (d) नवपाषाणकाल में उत्तर– D

(xiii) इतिहास का पिता कौन है ? (Who is Father of History) ?

Hkkx&[k fuc/kkRed Á'u **(Long Questions)**

प्र.1 इतिहास क्या है ? प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों का वर्णन कीजिए।

(What is History? Describe the Sources of Ancient Indian History).

प्र.2 प्रागैतिहासिक काल के बारे में आप क्या जानते है ? पुरापाषाण कालीन संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(What do you know about pre historic Age? Describe the main features of Palaeolithic Culture).

प्र.3 मध्यपाषाण काल से आप क्या समझते है ? मध्यपाषाण कालीन संस्कृति की व्याख्या कीजिए।

(What do you understand by Mesolithic Age? Explain the Characteristics of Mesolithic Culture).

प्र.4 नवपाषाण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

(Explain the concept of Neolithic)

प्र.5 नवपाषाण काल के बारे में आप क्या जानते है ? नवपाषाण काल की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(What do you know by Neolithic Age? Describe the characteristics of Nelithic Age.)

प्र.6 'नवपाषाण क्रांति' शब्द की व्याख्या कीजिए। नियोलिथिक समाज पुरापाषाण से अधिक जटिल कैसे था ?

(Explain the term'Neolithic Revolution'. How was the Neolithic Society more complex than the Paleolithic? (CBLU Bhiwani, Dec., 2019)

प्र.7 मध्यपाषाणकाल मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(Describe the main characteristics of the Mesolithic Age) (CBLU Bhiwani, Dec. 2019)

प्र.8 नवपाषाण काल की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(Give an account of main features of Neolithic Period.) (M.D.U. Rohtak DDE April, 2019)

प्र.9 'आखेट–संग्राहक' से क्या अभिप्राय है? भारत में इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(What is meant by the term 'Hunter-gatherer'? Explain the main features of Hunter-gatherer life in India?) (G.J.U. DDE Hisar, 2019)

¼x½ **लघु उत्तरीय प्रश्u ¼& (Short Answer Type Question)**

(i) कृषि प्रणाली की उत्पत्ति। (Origin of the Agriculture System)

(ii) इतिहास का क्षेत्र। (Scope of History)

(iii) जैन साहित्य । (Jainism Literature)

(iv) अभिलेख। (Inscriptions)

(v) चित्रकला (Painting)

(vi) इतिहास का अर्थ (Meaning of History)

(vii) बौद्ध साहित्य (Boudh Literature)

(viii) पुरापाषाण काल (Palaeolithic Age)

(ix) वेद के प्रकार (Types of Ved)

(x) प्रागैतिहासिककाल (Pre-Historic Age)

1-9 Áxfr leh{kk gsrq Á'ukÙkj (Answer to Check your Progress)

¼d½

(i) हेरोदोश

(ii) जानना

(iii) विद्, ज्ञान

(iv) छह, चार

(v) अठारह, सोलह

(vi) चौबीस

(vii) अलबरूनी एवं इब्नबतूता

(viii) भारत, सोलह

(ix) पांच सौ

¼Hkkx &[k½

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

(vi) सत्य

(vii) सत्य

(viii) असत्य

(ix) सत्य

(x) सत्य

1-10 lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d iqLrdsa (Reference and Suggested Readings)

- महे”ा कुमार बर्णवाल – संक्षिप्त इतिहास NCERT सार, कोसमोस पब्लिकेशन मुखर्जीनगर, दिल्ली जनवरी 2019।
- द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्णमोहन श्रीमाली – प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नवम्बर 2018
- डी०एन० झा प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय अक्तूबर 2016 पुनर्मुद्रण।
- Proof – Manjeet Singh Sodhi Themes in Indian History. Modern Publishers Jalandhar, 2009
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली
- यूनिक सामान्य अध्ययन – डा. विनय कुमार सिंह, यूनिक पब्लिकेशन्ज, नई दिल्ली
- रामशरण शर्मा– भारत का प्राचीन इतिहास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली द्वारा चौथा हिंदी संस्करण भारत में प्रकाशित।

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER -1	
COURSE CODE : HIST. - 101	**AUTHOR & UPTATED:**
LESSON NO : 2	**MR. MOHAN SINGH BALODA**
gMIik lH;rk **(THE HARAPPAN CIVILIZATION)**	

v/;k;&l:jpuk **(Lesson Structure)**

2.1 अधिगम उद्दे”य (Learning Objective)

2.2 परिचय (Introduction)

2.3 आध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

2.3.1 हड़प्पा सभ्यता की उत्त्पत्ति का उद्‌गम (Origins of Harappan Civilization)

2.3.2 हड़प्पा सभ्यता का विस्तार (प्रसार) या मुख्य केन्द्र (Extent of Harappan Civilization or Main Centres)

2.3.3 हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना (Town Planning of Harappan Civilization)

2.4 आध्याय का आगे का मुख्य भाग (Further main body of the text)

2.4.1 आर्थिक संगठन (Economy Organization)

2.4.2 छात्र क्रिया–कलाप (Student Activity)

2.4.3 सामाजिक संगठन (Society Organization)

2.4.4 हड़प्पा सभ्यता की कला (Arts of Harappan Civilization)

2.4.5 राजनैतिक संगठन (Political Organization)

2.4.6 हड़प्पा लिपि (Harappan Script)

2.4.7 हड़प्पा सभ्यता का पतन (Decline of the Harappan Civilization)

2.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

2.6 सारांश / संक्षिप्तिका (Summary)

2.7 संकेत सूचक (Key Words)

2.8 स्व मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self-Assessment Test) (SAT)

2.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

2.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक पुस्तकें / सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Readings)

2-1 vf/kxe mís'; **(Learning Objectives)** ¼&

जब आप इस अध्याय को समझ पाएँगे तो आप निम्न योग्य हो जाएँगे–

- हड़प्पा की सभ्यता से पाठकों को अवगत कराना।
- वर्तमान में हड़प्पा सभ्यता के महत्त्व से शिक्षार्थियों को परिचित करवाना।
- इतिहास के प्रति छात्रों में रुचि विकसित करना।
- हड़प्पा–सभ्यता–संस्कृति की प्रमुख कला विविधताओं से अधिगमकर्त्ताओं को रूबरू करवाना।
- सिंधु घाटी के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक संगठन पर विद्यार्थियों के बीच परिचर्चा करवाना।
- वर्तमान समय में इसकी क्या प्रासंगिकता है इसकी जानकारी शिक्षार्थियों को देना।
- हड़प्पा सभ्यता के विस्तार पर जिज्ञासुओं के बीच चर्चा करना।
- हमारा अतीत किस प्रकार शिक्षार्थियों को प्रभावित करता है।
- सैंधव सभ्यता के पतन में कौन–कौन से कारक उत्तरदायी रहे इससे छात्रों को परिचित कराना।

2-2 ifjp; **(Introduction)**

हड़प्पा सभ्यता भारत की बहुत प्राचीन सभ्यताओं में गिनी जाती है। इसका उद्गम ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग से हुआ। इसको सैंधव सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता, कांस्य युगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत की प्रथम नागरीय सभ्यता थी जो हमारे निष्कर्ष का विषय है। सिंधु घाटी सभ्यता की खोज ने भारत के इतिहास में नवीन इतिहास जोड़ने का काम किया। हड़प्पा सभ्यता कांस्ययुगीन एवं संस्कृति ताम्रपाषाणिक (प्राक् हड़प्पन) है। पाकिस्तान इलाके वाले पंजाब के हड़प्पा में काँस्य युग की शहरी संस्कृति एक अग्रणीय खोज थी। सन् 1853 ई० में एक महान उत्खननकर्ता और खोजी ब्रिटिश इंजीनियर ए० कनिंघम का ध्यान एक हड़प्पा मुहर पर गई। हालाँकि मुहर पर एक बैल और छह अक्षर अंकित थे लेकिन वह इसके महत्व से अनभिज्ञ रहा। हड़प्पा स्थलों की क्षमता की पहचान बहुत बाद में सन् 1921 में की गई, जब भारतीय पुरातत्वविद् दयाराम साहनी ने इसकी खुदाई शुरू की उसी समय एक इतिहासकार आर० डी० बनर्जी ने सिंध में मोहनजोदड़ो स्थल की खुदाई की। दोनों ने मिलकर एक विकसित सभ्यता का सूचक माने जाने वाले मिट्टी के बर्तनों और अन्य प्राचीन वस्तुओं की खोज को सम्भव बनाया। (भारत का प्राचीन इतिहास– रामशरण शर्मा P -72)

यह सभ्यता पहली बार सन् 1921 में पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित आधुनिक स्थल हड़प्पा में खोजी गई थी। भारत में हड़प्पा के स्थल संघोल, कालीबंगन, मिताथल, आलमगीर पुर और लोथल है। हड़प्पा के नगर काफी काफी सुन्दर व उच्चकोटि के थे। हड़प्पा सभ्यता के लोगों का जीवन काफी समृद्ध था। हड़प्पा के लोग देवी–देवताओं की बहुत पूजा करते थे। वे सूर्य, शिव, वृक्षों, पशु–पक्षियों की पूजा करते थे। सिंधु नदी के किनारे अवस्थित होने के कारण इसे 'हड़प्पा सभ्यता' और सिंधुघाटी सभ्यता अर्थात् 'सैंधव सभ्यता' का नाम दिया गया। पूरे उपमहाद्वीप में अभी तक लगभग 2800 हड़प्पा स्थलों की पहचान की गई है। अब हमारे पास हड़प्पा पर्याप्त समृद्ध सामग्री है। अभी भी उत्खनन और खोज अभी भी प्रगति पर विद्वानों की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इस सिंधु सभ्यता व कांस्य युगीन सभ्यता की बजाय इसे हड़प्पा सभ्यता कहा जाए। इस अध्याय में इस पर आगे चलकर विस्तृत परिचर्चा करेंगे।

2-3 fo"k; oLrq dk eq[; fcUnq (Main Body of Text)

2-3-1 gM+Iik lH;rk ¼fla/kq ?kkVh½ dh mRifÙk ;k mn~xe (Origins of Harappan Civiliztion) :-

ई.पू. 4000 के आस–पास पाकिस्तान में चोलिस्तानी रेगिस्तान के हकरा क्षेत्र में कई पूर्व– हड़प्पा कृषि बस्तियों का विकास हुआ। हालाँकि, ई. पू. 7000 के आस–पास कृषि बस्तियाँ पहले बलूचिस्तान के पूर्वी किनारे पर सिन्धु मैदानों की सीमा पर नवपाषाण–युग में चीनी मिट्टी के दौर से पहले बसी। तब से लोग बकरियाँ, भेड़ और अन्य पशु पालते थे। उन्होंने जौ और गेहूँ का भी उत्पादन किया। तब भण्डारण की स्थापना हुई। ई.पू. पाँचवीं और चौथी सहस्राब्दि में मिट्टी की ईंटों का उपयोग शुरू हो गया था। चित्रित मिट्टी के बर्तन और महिला मूर्तियाँ भी बनने लगीं। बलूचिस्तान के उत्तरी भाग में शुरूआती शहर के रूप में सुनियोजित सड़क और व्यवस्थित घर। यह स्थल

पश्चिम में हड़प्पा के लगभग समानान्तर स्थित था। यह स्पष्ट है कि बलूचिस्तान की बस्तियों से ही शुरूआती हड़प्पा और विकसित हड़प्पा संस्कृतियाँ विकसित हुईं।

कभी–कभी हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति का श्रेय मुख्य रूप से प्राकृतिक पर्यावरण को दिया जाता है। ई.पू. 3000–2000 में भारी बारिश और सिन्धु एवं इसकी सहायक नदी सरस्वती में सघन जल का प्रवाह इसके प्रमाण है। कभी–कभी सिन्धु संस्कृति को सरस्वती संस्कृति कहा जाता है, लेकिन हड़प्पन नदी हकरा में पानी के प्रवाह का आना यमुना और सतलुज के बदौलत था। हिमालय में विवर्तनिक (टेक्टोनिक) विकास के कारण ये दोनों नदियाँ कुछ सदियों बाद सरस्वती में शामिल हुईं। इसलिए हड़प्पा संस्कृति को मदद करने का श्रेय वास्तव में सिन्धु के साथ इन दोनों नदियों को मिलना चाहिए, अकेले सरस्वती को नहीं। इसके अलावा, सिन्धु क्षेत्र में भारी बारिश के सबूतों को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। (भारत का प्राचीन इतिहास– रामशरण शर्मा, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस– नई दिल्ली : 2019 P -87)

2-3-2 gM+Iik lH;rk dk foLrkj ¼ÁIkj½ ;k eq[; dsUnz **(Extent of Harappan Civilization or Main Centres) :-**

हड़प्पा सभ्यता विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई थी। पाकिस्तान और भारत में अब तक लगभग 1000 केंद्रों की खोज की जा चुकी है। इन केन्द्रों में से प्रमुख केंद्रों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार से है –

1- gM+Iik **(Harappa)** & हड़प्पा का उपनाम तोरण द्वार का नगर है। हड़प्पा, पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में रावी नदी के किनारे पर स्थित है। यह लाहौर से लगभग 160 किलोमीटर दूर है। यह हड़प्पा सभ्यता का खोजा गया प्रथम स्थल अथवा नगर था। इसकी खोज 1921 ई० में आर० बी० दयाराम साहनी ने की थी। यह हड़प्पा सभ्यता से मिलने वाले नगरों में सबसे विशाल था। इसके मकान पक्के, सड़कें और गलियाँ चौड़ी थीं। रात्रि के समय प्रकाश की बढ़िया व्यवस्था थी। इस नगर से हमें बहुत–से गोदाम घर, मूर्तियाँ, बर्तन और मुहरें प्राप्त हुई हैं जो इस सभ्यता पर भरपूर प्रकाश डालती हैं। इस नगर की शत्रुओं से सुरक्षा के लिए इसके चारों ओर एक विशाल दीवार बनाई गई थी।

2- eksgu tksnM+ks **(Mohanjodaro)** & मोहनजोदड़ो के उपनाम मुओं का भाटा (मृतकों का टीला), स्तूपों का शहर, रेगिस्तान का बगीचा या सिंध का बाग। मोहनजोदड़ो सिंधुनदी के तट पर स्थित है। मोहनजोदड़ों, हड़प्पा सभ्यता का दूसरा महत्त्वपूर्ण नगर है। यह सिंध (पाकिस्तान) के लरकाना ज़िला में स्थित है। मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ हैं, 'मृतकों का टीला'। इस की खोज 1922 ई० में राखाल दास बनर्जी ने की थी। यह 125 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था। यह नगर सिंधु नदी के किनारे पर स्थित था। यह हड़प्पा से 483 किलोमीटर दूर था। इस नगर की रचना भी हड़प्पा की तरह थी। इस नगर की सात परतें मिली हैं। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यह नगर सात बार बसा और उजड़ा। यह नगर यहाँ से हड़प्पा सभ्यता के सबसे विशाल स्नानागार, गोदाम घर, काँसे की नर्तकी की मूर्ति और बहुसंख्या में प्राप्त मुहरों के कारण। यह एक बड़ा व्यापारिक केंद्र भी था।

3- pUgnMk **(Chanhudaro)** & यह नगर भी सिंध प्राँत में मोहनजोदड़ो से कोई 160 किलोमीटर दूर सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज 1931 ई० में एन० जी० मजूमदार ने की थी। यह 7 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था। इस नगर की दो परतें मिली हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि यह दो बार बसा और नष्ट हुआ। यह नगर मनके बनाने के लिए सुविख्यात था। इस नगर में हमें शंख की कटाई (shell cutting), धातुकर्म (metal working), मुहर निर्माण (seal making) तथा बाट बनाने (weight making) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

4- dkVyk fugx [kk **(Kotla Nihang Khan)** & यह केंद्र पूर्वी पंजाब (भारत) के रोपड़ जिला में स्थित है। इसकी खोज 1953 ई० में वाई० डी० शर्मा ने की थी। यह सतलुज नदी के तट पर स्थित था। इस नगर से प्राप्त हुए बर्तन, आभूषण और उपकरण हड़प्पा नगर से मिलते–जुलते हैं।

5- dkyhcxu **(Kalibangan)** & यह केंद्र राजस्थान प्राँत के ज़िला गंगानगर में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। इस नगर का नाम यहाँ पर बनने वाली चूड़ियों के कारण पड़ा। इस नगर की खोज 1953 ई० में ए० घोष ने की थी। 1960 ई० में बी० के० थापर और बी० बी० लाल ने यहाँ पर व्यापक उत्खनन किया। इस नगर की निर्माण योजना हड़प्पा नगर की निर्माण योजना जैसी ही है। यहाँ से हमें हड़प्पा संस्कृति के बहुत–से बर्तन, आभूषण और खिलौने मिले है। वर्तमान में यह नगर हनुमानगढ़ जिला में है।

6- ykFky **(Lothal)** & यह नगर गुजरात प्राँत के ज़िला अहमदाबाद में भोगवा नदी के किनारे पर स्थित है। इस नगर की खोज 1955 ई० में एस० आर० राव ने की थी। इस बंदरगाह से पश्चिमी एशिया के देशों से बहुत व्यापार चलता था। इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक मनके बनाने का उद्योग भी मिला है। यहाँ से प्राप्त खंडहरों से हमें हड़प्पा संस्कृति के स्नानागार, सड़कों और नालियों के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ है। अन्य नगरों की भाँति लोथल के दुर्ग को दीवार से घेरा नहीं गया था। इसे कुछ ऊँचाई पर अवश्य बनाया गया था। लोथल से ताँबे की मूर्ति मिली है। ये बतख, खरगोश, कुत्ता एवं वृषभ की है।

7- vkyexhjij **(Alamgirpur)** & यह नगर उत्तर प्रदेश के ज़िला मेरठ में हिंडन नदी के तट पर स्थित है। इस नगर की खोज 1958 ई० में वाई० डी० शर्मा ने की थी। यहाँ से हमें हड़प्पा संस्कृति के आभूषण, मूर्तियाँ और बर्तन प्राप्त हुए हैं।

8- xxk&;euk nkvkc **(Ganga Yamuna Doab)** & यहाँ के स्थल मेरठ ज़िले के आलमगीरपुर तक फैले हुए है। एक अन्य स्थल सहारनपुर जिले में स्थित दुलास है। यहाँ से संस्कृति के विभिन्न चरणों का पता चलता है।

9- /kkykohjk **(Dholavira)** & इस नगर की खोज 1967–68 ई० में जे० पी० जोशी ने की थी। यह वर्तमान में गुजरात में स्थित है। इस नगर का व्यापक पैमाने पर उत्खनन आर० एस० बिष्ट ने 1990–91 में किया। यह नगर अपनी भवन निर्माण कला, जल निकासी व्यवस्था एवं मनके बनाने के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ बड़ी मात्रा में जलाशयों के साक्ष्य प्राप्त हुए है। इनका प्रयोग खेती के लिए किया जाता है।

10- l?kksy **(Sanghol)** & इस नगर की खुदाई 1968 ई० में एस० एस० तलवार तथा आर० एस० बिष्ट ने की थी। वर्तमान यह नगर पंजाब राज्य के लुधियाना जिला में स्थित है। यहां से बर्तन और मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस नगर के बाहर एक बहुत बड़ी खाई थी जो सदैव जल से भरी रहती थी। ऐसा शत्रुओं से सुरक्षा के लिए किया जाता था।

gMIik lH;rk dk foLrkj **(Extent of Harappan Civilization)**

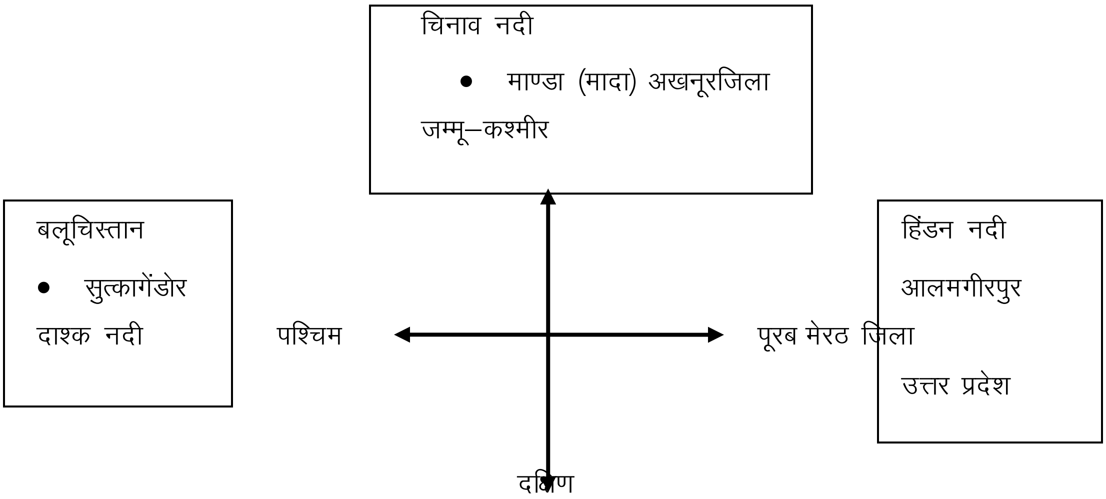

12- vejh **(Amri)** & अमरी भी सिंधु–पूर्व सभ्यता का एक हिस्सा है। इस स्थल पर सिंधु–पूर्व सभ्यता स्तर की किलेबंदी नहीं है। अमरी की एक विलक्षण विशेषता यह है कि यहां पुरानी, सिंधु–पूर्व संस्कृति और परवर्ती सिंधु सभ्यता के बीच का संक्रमण काल परिलक्षित होता है। यहां मृदभाणु (Pottery) शैलियों के दर्शन होते है।

13- vyhejkn **(Alimurad)** & यह वर्तमान में पाकिस्तान के सिंध प्रांन्त में स्थित है। कुआं, मृदभाण्ड, पाषाणों से निर्मित एक विशाल दुर्ग का अवशेष प्राप्त हुआ है। बैल की एक छोटी सी मूर्ति कच्ची मिट्टी की, कांस्य–निर्मित कुल्हाड़ी।

14- Hkxokuijk **(Bhagwanpura)** & हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले में सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल से सैन्धव सभ्यता के पतनोन्मुख काल के अवशेष प्राप्त हुए है। इस स्थल का उत्खनन जे० पी० के नेतृत्व में करवाया गया था। यहाँ सफेद, काले तथा आसमानी रंग की कांच की चूड़ियां, ताँबे की चूड़ियां, कांच की मिट्टी के चित्रित मनके आदि है। इसका उत्खनन जे० पी० जोशी के नेतृत्व में किया गया।

15- nekckn **(Thaimabad)** & यह स्थल प्रवरा नदी के किनारे (तट) पर अहमदनगर जिले में महाराष्ट्र में है। इस नगर की खुदाई से सिंधु घाटी के कुछ साक्ष्य मिले है। जैसे– मृदमांड (Pottery) लिपि की एक मुहर (Script Seal) प्याले, तश्तरी आदि। यह स्थल हड़प्पा के दक्षिण में स्थित है।

16- cuokyh **(Banawali)** & यह हरियाणा प्रांत के हिसार जिले में सरस्वती के तट पर स्थित है। इसकी खोज 1973 ई० में आर० एस० बिष्ट ने की थी। यह नगर भी मोहनजोदड़ो नगर की तरह सुनियोजित ढंग से बनाया गया था। इस नगर से प्राप्त मुहरें, उपकरण, आभूषण, मूर्तियाँ हड़प्पा संस्कृति से मिलती जुलती है।

17- jk[khx<h **(Rakhigarhi)** & राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले में घग्घर नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज 1969 में सूरज भान ने की यहां से ताम्र उपकरण, हड़प्पा लिपि युक्त मुद्रा प्राप्त हुई।

18- jkiM (**Ropar**) & रोपड़ पंजाब के रूप नगर ज़िल में सतलुज नदी के किनारे पर है। इसकी खोज यज्ञदत शर्मा ने 1955 ई० में की थी। यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी, मानव के साथ कुत्ते दफनाने का साक्ष्य भी मिला है।

19- dkVnhth (**Kotdiji**) & इसकी खोज घुर्ये एवं फजल अहमद खान ने 1935 ई०, 1955 ई० में की यह स्थल वर्तमान में सिंध (पाकिस्तान) में सिंधु नदी के किनारे पर स्थित है। यहां से कच्ची ईंटों के मकान व चूल्हे के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

20- jxij (**Rangpur**) & रंगपुर का उत्खनन का कार्य एस० आर राव ने 1954 ई० में किया यहां से ज्वार–बाजरा, तीन संकृतियों के अवशेष, नालियाँ, कच्ची ईट के दुर्ग, धान की भूसी के साक्ष्य मिले है। यह वर्तमान में गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद जिले में भादर नदी के तट पर स्थित है।

21- ljdkVnk (**Surkotada**) & यह नगर सरस्वती नदी के तट पर गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। इसकी खोज जगपति जोशी ने 1964 ई० में की थी। यहाँ से कलश शवाद्यान, घोड़े की हड्डी, तराजू का पलड़ा प्राप्त हुआ।

22- ekiMk ;k eknk (**Manda**) & यह चेनाब नदी के तटपर जम्मू कश्मीर राज्य के जम्मू क्षेत्र में स्थित है। इसकी खोज जगपति, जोशी न 1982 ई० में की। यहाँ से चर्ट, ब्लेड, हड्डी बाणाग्र, मुहरों के साक्ष्य प्राप्त हुए है। यह चेनाब नदी के दक्षिण किनारे पर स्थित है।

23- dUrklh (**Kuntasi**) & यह स्थल गुजरात के राजकोट जिले में स्थित है। इस स्थल का उत्खनन एम० के धावलिकर, एम० आर० रावल और वाई० एम० चीतलवाल के नेतृत्व में किया गया। यहाँ अवशेषो से अनुमान लगाया जाता है कि यहां बंदरगाह, व्यापार केंद्र, निगरानी स्तंभ थे। यहां पर लम्बी सुराहियां, दोहत्थे कटोरे, मिट्टी के खिलौने, गाड़ी, कांचली मिट्टी तथा सेलखड़ी के मनके, दो अंगूठियों आदि के साक्ष्य मिले है।

24- jktnh (**Rozadi**) & यह स्थल गुजरात के सौराष्ट्र जिला में इस स्थल की खुदाई से लाल काले और चमकदार मृदमांडो के अवशेष मिले है। बस्ती के चारों ओर बड़े–2 पत्थरों की सुरक्षा दीवार मिली है। हाथी के भी अवशेष मिले है।

25- vYykgnhuk (**Allahadinona**) & यह स्थल सिन्धु तथा अरब सागर के संगम स्थल से 16 किलोमीटर, उत्तर–पूर्व तथा पाकिस्तान के कराची से 40 कि0मी0 पूर्व में स्थित है। 1982 में फेयर सर्विस ने इस टीले की खोज की। यहाँ नींव और नालियाँ पत्थरों से बनी हुई है। मिट्टी से बनी एक खिलौना–गाड़ी का भी साक्ष्य प्राप्त हुआ है। यह संभवतः एक बन्दरगाह नगर था। (स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन, गुहाटी (असम) – भारतीय इतिहास – P.P. 23-24)

26- ferkFky (**Mithal**) & हरियाणा राज्य के भिवानी जिले में स्थित इस स्थल की खोज 1968 ई० में सूरजभान ने की। यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी मिली है।

2-3-3 gMIik lH;rk dh uxj ;ktuk **(Town Planning of Harappan Civilization):-**

हड़प्पा सभ्यता निश्चित रूप से एक उच्चकोटि की नगरीय सभ्यता थी। यह विशेष योजनानुसार तथा बड़े वैज्ञानिक ढंग से बसाया गया था। सभ्यता की नगर योजना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं –

1- Hkou **(Houses)** & हड़प्पा सभ्यता के लोग भवन–निर्माण कला में बहुत कुशल थे। उनके मकान पक्की ईंटों से बने होते थे। बाढ़ के ख़तरे से बचने के लिए वे अपने घरों की नींव काफी गहरी रखते थे। उनके घर खुले तथा हवादार होते थे। उनके घरों में बड़े–बड़े द्वार, खिड़कियाँ तथा रोशनदान होते थे। इस तरह लोगों को अनियोजित घर निर्मित नहीं करने दिए जाते थे। कई मकान दो तथा इससे भी अधिक मंज़िलों के होते थे। इनके ऊपर जाने के लिए सीढ़ी प्रयोग की जाती थी। प्रत्येक मकान में खुला प्रांगण, रसोई घर, कुआँ तथा स्नानागार होता था।

2- fo'kky Lukukxkj **(The Great Bath)** & हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से मिलने वाला सबसे प्रसिद्ध नगर मोहनजोदड़ो में स्थित विशाल स्नानागार था। यह स्नानागार 180 फुट लंबा और 108 फुट चौड़ा था। इसके मध्य 39 फुट लंबा, 23 फुट चौड़ा तथा 8 फुट गहरा तालाब बना हुआ था। इस तालाब के निकट एक कुआँ था, जिससे इस तालाब में पानी भर लिया जाता था। तालाब में उतरने तथा चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। इस स्नानागार के आस–पास कई कमरे बने हुए थे। समझा जाता है कि लोग यहाँ धार्मिक आयोजनों पर स्नान करने आते थे। डॉ० आर० के० मुकर्जी के अनुसार, "ऐसे स्नानागार के निर्माण से उस समय की इंजीनियरी की प्रगति का ज्ञान होता है।"

("The construction of such a swimming bath reflects great credit on the engineering of those days." Dr.R.K. Mookerjee, Hindu Civilization (Delhi : 1962) p. 51)

3- vU; Hkou **(Other Buildings)** & हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से हमें कुछ अन्य विशाल भवन भी मिले है कि इन भवनों का प्रयोग महलों अथवा सरकारी कार्यालयों के रूप में किया जाता था। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा लोथल आदि नगरों में हमें बड़े–बड़े गोदाम भी मिले हैं। इन गोदामों में अन्न को सुरक्षित रखा जाता था। यात्रियों की सुविधा के लिए उस समय विश्राम–गृह भी बनाए जाते थे।

4- ukfy;k dh 0;oLFkk **(Drainage System)** & हमें यह जानकर बहुत आश्चर्य होता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने गंदे पानी के निकास के लिए नालियों को बड़े वैज्ञानिक ढंग से घरों की नालियाँ गली की बड़ी नालियों में गिरती थीं और वे शहर के बाहर किसी बड़े नाले में जा गिरती थीं। इन नालियों को ईंटों से इस प्रकार ढका जाता था कि स़फाई करते समय उन्हें आसानी से उठाया जा सकता था। इससे पता चलता है कि वे सफ़ाई की ओर विशेष ध्यान देते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० ए० एल० बाशम के अनुसार, "नालियों की अद्भुत व्यवस्था सिंधु घाटी के लोगों की महान् सफलताओं में से एक थी। रोमन सभ्यता के अस्तित्व में आने तक किसी भी प्राचीन सभ्यता की नाली व्यवस्था इतनी अच्छी नहीं थी।"

("The unique sewerage systemof the Indus people is one of the most impressive of their achievements. No other Civilization until that of the Romans had so efficient systemof drains." Dr. A.L. Basham, The Wonder that was India (Calcutta: 1990) p. 17)

5- lM+d (Roads) & हड़प्पा सभ्यता के लोग सड़कों के निर्माण में भी बड़े कुशल थे। वहाँ सड़कें नगर के प्रत्येक ओर बनाई जाती थीं। सड़कें काफी चौड़ी होती थीं। सड़कों की चौड़ाई 13 फुट से लेकर 34 फुट तक होती थी। सड़कों पर चौराहे भी बनाए जाते थे और रोशनी की व्यवस्था भी की जाती थी। हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना के संबंध में हम डॉक्टर अरूण भट्टाचार्जी के अनुसार, "सिंधु घाटी सभ्यता का सर्वाधिक आश्चर्यजनक पक्ष उनकी सर्वश्रेष्ठ नगर–योजना थी।"

("The most wonderful aspect of the Indus Valley Civilization was the excellent town planning." Dr. Arun Bhattacharjee, History of Ancient Indian (New Delhi : 1979) p. 47)

(Prof. Manjeet Singh Sodhi, Themes in Indian History (Modern Publishers Jalendhar : 2009) P.P. 67)

2-4 fo"k; oLrq dk iqu% ÁLrqrhdj.k **(Further Main Body of the Text)**

2-4-1 vkfFkZd laxBu **(Economy Organization) :-**

हड़प्पा सभ्यता के लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत थी। निम्नलिखित तथ्यों से प्रतीत होता है –

1- d`f"k **(Agriculture)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। सिंधु नदी के आसपास का क्षेत्र बहुत उपजाऊ था और सिंचाई के लिए पानी की कोई कमी नहीं थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग बाढ़ के पानी को बाँध बना कर सिंचाई के काम में लाते थे। वे बिजाई के लिए हेरो जैसे उपकरण का प्रयोग करते थे। उस समय के यंत्र लकड़ी के बनाए जाते थे जो समय बीतने पर नष्ट हो गए। उस समय बैल के मुहरों पर किए गए रेखांकन एवं पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ (terracotta sculpture) संकेत है कि खेतों को जोतने के लिए बैलों का प्रयोग किया जाता था। चोलिस्तान (Cholistan) एवं बनावली (Banawali) से पुरातत्वविदों को मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप (terracotta models of the plough) मिले हैं। ये इस बात का प्रमाण थे कि खेतों की जुताई के लिए हलों का प्रयोग किया जाता था। अफ़गानिस्तान में शोर्तुघई (Shortughai) नामक स्थल से नहरों, पंजाब एवं सिंध से कुओं एवं धौलावीरा से जलाशयों (water reservoirs) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इनसे पता चलता है कि उस समय सिंचाई के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता था।

कालीबंगन में जुते हुए खेत में हल रेखाओं के दो समूह एक–दूसरे को समकोण पर काटते हुए (two sets of furrows at right angles to each other) मिले हैं। उस समय फ़सलों की इतनी अधिक पैदावार होती थी कि उनसे न केवल लोगों की तुरंत आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थीं बल्कि भविष्य में किसी आपात् स्थिति के लिए भी काफी भंडार रख लिया जाता था। इस तथ्य का बड़ी संख्या में मिले अन्नागारों से पता चलता है। हड़प्पा स्थलों से मिले अनाज के दानों से यह स्पष्ट होता है कि गेहूँ (wheat) तथा जौ (barley) उस समय की प्रमुख फसलें थीं। इनके अतिरिक्त दाल (lentil), सफेद चना (chick pea), तिल (sesame), बाजरा (millets) तथा चावल (rice) के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त हड़प्पा सभ्यता की सर्वाधिक प्रसिद्ध उपज

कपास (cotton) थी। इससे कपड़ा (clothes) तैयार किया जाता था। कपास की उपज के लिए हड़प्पा सभ्यता (पूरे विश्व) में प्रसिद्ध थी।

2- i'k ikyu **(Animal Rearing)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों का दूसरा मुख्य व्यवसाय पशु पालन था। हड़प्पा के लोग भेड़, बकरी, गाय, बैल, भैंस, सुअर, कुत्ता, ऊँट तथा हाथी पालते थे। वे उनका दूध, माँस, ऊन तथा भार ढ़ोने के लिए प्रयोग करते थे। वे भेड़, बकरी, गाय, भैंस तथा सूअरों से दूध, ऊन तथा माँस प्राप्त करते थे। बड़े जानवर जैसे बैल, ऊँट, गधा तथा हाथी आदि भार ढोने के लिए प्रयोग किए जाते थे। कुत्ते घर की रखवाली तथा शिकार के लिए रखे जाते थे। इसके अतिरिक्त हड़प्पा के लोग बिल्लियाँ, मोर, हिरण, बत्तखें, खरगोश, मुर्गे तथा तोते घरों में पालते थे। उन्हें चीता, शेर, रीछ तथा गैंडे आदि जानवरों का भी ज्ञान था। उन्हें घोड़े का ज्ञान नहीं था।

3- m|kx **(Industries)** & कृषि तथा पशु पालन के अतिरिक्त हड़प्पा सभ्यता के लोग उद्योग भी चलाते थे। क्योंकि हड़प्पा घाटी में कपास बड़ी मात्रा में उगाई जाती थी इस कारण कपड़ा उद्योग को बहुत प्रोत्साहन मिला। हड़प्पा के लोग बुनने, रंगने, सिलाई करने तथा कढ़ाई का काम करने में बहुत निपुण थे। वे ऊनी वस्त्र भी बनाते थे। उन्हें सोने, चाँदी तथा ताँबे आदि का ज्ञान था। हड़प्पा के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था। कुछ लोग बढ़ईगीरी का कार्य करते थे जैसे भवनोंका फर्नीचर तथा खिलौने बनाते थे। इन शिल्पों के अतिरिक्त कुछ लोग आभूषण बनाने, हाथी दाँत, मूर्तियाँ तथा भवन बनाने का काम करते थे तथा कुछ चिकित्सक तथा मछुवारे का कार्य करते थे।

4- 0;kikj rFkk okf.kT; **(Trade and Commerce)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों का व्यापार तथा वाणिज्य। आरंभ में वे देश के अन्य विभिन्न क्षेत्रों के साथ व्यापार करते थे। कृषि उत्पादों, औद्योगिक कच्चा माल, धातु के तैयार उत्पादों, मूल्यवान, पत्थरों, सोने तथा चाँदी के आभूषणों आदि का व्यापार कई क्षेत्रों के साथ किया जाता था। हड़प्पा के लोग ताँबा राजस्थान की खेतड़ी खानों से प्राप्त करते थे, मनके गुजरात से, सोना दक्षिण भारत से तथा मूल्यवान पत्थर कश्मीर तथा अफ़गानिस्तान से प्राप्त करते थे। बाद में हड़प्पा वासियों ने बाह्य व्यापार विकसित किया। विदेशों को वे पर्याप्त मात्रा में सूती कपड़ा, आभूषण, मोती तथा हाथी दाँत की वस्तुएँ निर्यात करते थे। इनके अतिरिक्त लंगूर, बंदर तथा मोर भी बाहर भेजे जाते थे। विदेशों से व्यापार जल तथा स्थल दोनों प्रकार से होता था लेकिन अपने देश में स्थल मार्ग के द्वारा व्यापार का कार्य किया जाता था। बैलगाड़ी सामान ढ़ोने का मुख्य साधन था। व्यापारिक उन्नति के कारण हड़प्पा सभ्यता के लोगों का जीवन बहुत समृद्ध था।

5- rky rFkk eki **(Weights and Measures)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने व्यापार की सुविधा के लिए तोल तथा माप प्रणाली प्रचलित की थी। हड़प्पा की खुदाई के दौरान हमें बड़ी संख्या में बाट प्राप्त हुए हैं। ये विभिन्न आकारों तथा वज़न वाले हैं। बड़े बाटों का प्रयोग भारी सामानों को तोलने तथा अति छोटे बांटों का प्रयोग आभूषणों और मनकों को तोलने के लिए किया जाता था। ये सभी बाट चर्ट (chert) नामक पत्थर से बनाए जाते थे। इन बाटों को सरकारी नियंत्रण में तैयार किया जाता। ये सभी बाट 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64 के अनुपात में होते थे। बाटों के अतिरिक्त हमें हड़प्पा स्थलों से धातु के तराजू तथा पैमाने भी मिले हैं। पैमानों का प्रयोग वस्तुओं को मापने के लिए किया जाता था। उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोगों का आर्थिक

जीवन काफी उन्नत था। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉक्टर एच० वी० श्रीनिवास मूर्ति का यह कहना पूर्णतः ठीक है, (Prof. Manjeet Singh Sodhi, Themes in Indian History (Modern Publishers Jalandhar : 2009) P.P. 9-10)

"इस विशाल (सिंधु घाटी) सभ्यता के लोगों का जीवन स्तर समकालीन मिस्त्री, सुमेरिया तथा बेबीलोनिया की सभ्यताओं से काफी ऊँचा था।"

("This vast civilization had a high standard of life far superior to that of contemporary Egyptian, Sumerian and Babylonian civilizations." Dr. H.V. Sreenivasa Murthy, History and Culture of India to 1000 A.D. (New Delhi: 1980) p. 43)

2-4-2 Nk= fØ;k dyki **(Student Activity) :-**

सिंधु सभ्यता के प्रसार, नगर योजना एवं आर्थिक संगठन का वर्णन कीजिए।

2-4-3 lkekftd laxBu **(Society Organization) :-**

हड़प्पा खोजों से मिले अवशेषों के आधार पर कहा जा सकता है कि हड़प्पा के लोगों का जीवन काफी सुखमय था। हड़प्पा सभ्यता के लोगों के सामाजिक जीवन की मुख्य विशेषताओं का वर्णन निम्न प्रकार से है –

1- ifjokj **(Family)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों के समाज की मुख्य इकाई परिवार थी। उस समय परिवार संयुक्त होते थे। उस समय के विशाल भवनों को देखकर यह अनुमान लगाया गया है कि यहाँ बड़े परिवार रहते थे। प्रत्येक परिवार में माता–पिता, भाई–बहन तथा पुत्र–पुतियाँ आदि रहते थे। हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से प्राप्त बहुसंख्या में स्त्रियों की मूर्तियों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि उस समय का समाज मातृसत्तात्मक था। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि समाज में स्त्रियों को प्रमुख स्थान दिया गया था।

2- lkekftd oxhZdj.k **(Social Stratification)** & हड़प्पा सभ्यता का समाज कितने वर्गों में विभाजित था, इसकी स्पष्ट जानकारी नहीं है। संभवतः उस समय का समाज तीन वर्गों में विभाजित था। ये वर्ग थे – शासक एवं धनी वर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्न वर्ग। शासक तथा धनी वर्ग सुखी एवं संपन्न जीवन व्यतीत करते थे। वे दुर्गों तथा विशाल भवनों में रहते थे। मध्यम वर्ग के निवास अपेक्षाकृत कुछ छोटे थे। निम्न वर्ग झोपड़ियों में रहता था।

3- Hkkstu **(Diet)** & हड़प्पा सभ्यता के लोग विभिन्न प्रकार का भोजन खाने के बहुत शौकीन थे। पुरातत्वविद जले हुए अनाज के दानों (charred grains) एवं बीजों (seeds) की खोज में हड़प्पा सभ्यता के लोगों की भोजन संबंधी आदतों को जानने में सफल हो पाए हैं। प्राचीन वनस्पति का अध्ययन करने वाले विद्वानों (scholars) को पुरा–वनस्पतिज्ञ (archaeo-botanists) कहा जाता है। इन विद्वानों ने हड़प्पा के विभिन्न स्थलों से गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना एवं तिल नामक अनाज के दाने प्राप्त किए हैं। इनके अतिरिक्त उन्होंने गुजरात से बाजरे के दाने प्राप्त किए हैं। चावल के दाने बहुत कम मिले हैं। भेड़, बकरी, भैंस तथा सूअर ये सभी जानवर पालतू थे। इसके अतिरिक्त जंगली जानवरों का शिकार हड़प्पाई लोगों द्वारा किया जाता था अथवा वे इनका माँस अन्य आखेटक समुदायों

(hunting communities) से प्राप्त करते थे। इस प्रकार कह सकते है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग शाकाहारी एवं माँसाहारी दोनों तरह का भोजन करते थे।

4- oL= **(Dress)** & हड़प्पा सभ्यता के लोग किस प्रकार के वस्त्र पहनते थे। इस बात का अनुमान हम मूर्तियों की वेशभूषा से लगा सकते हैं। अधिकतर लोग सूती वस्त्र पहनते थे। धनी लोग ऊनी वस्त्रों का भी प्रयोग करते थे। स्त्रियों तथा पुरूषों के वस्त्रों में कोई विशेष अंतर न था। स्त्रियाँ निचले भाग में लहँगा डालती थीं तथा ऊपरी भाग में एक चादर का प्रयोग करती थीं। वे सिर पर एक विशेष वस्त्र पहनती थीं जो पँखे की तरह उठा होता था। पुरूष नीचे के लिए धोती तथा ऊपरी भाग के लिए एक चादर अथवा शाल का प्रयोग करते थे। हड़प्पा सभ्यता की खुदाई से हमें अनेक तकले तथा सुइयाँ प्राप्त हुई हैं जो इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय के लोग सूत कातना तथा कपड़ों को बुनना और सीना जानते थे।

5- vkHk"k.k **(Ornaments)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों को चाहे पुरूष अथवा स्त्री आभूषणों के शौकीन थे। शरीर का शायद ही कोई ऐसा अंग होगा जिसे वे अलंकृत न करते हों। प्रमुख आभूषणों में हार, चूड़ियाँ, कड़े, अँगूठी, बाजूबँद, नथनी, पाज़ेब तथा कानों की बालियाँ थीं। धनी लोगों के आभूषण सोने, चाँदी, मूल्यवान् पत्थरों तथा हाथी दाँत से बने होते थे। ग़रीब लोगों के आभूषण ताँबे तथा हड्डियों के बने होते थे।

6- gkj Ükxkj **(Diet)** & हड़प्पा सभ्यता के लोग हार–शृंगार के बहुत शौकीन थे। स्त्रियाँ लंबे बाल रखने, विभिन्न प्रकार के जूड़े अथवा चोटी बनाने की शौकीन थीं। वे बालों को सँवारने के लिए दर्पण, कंघी तथा विभिन्न प्रकार की पिनों का प्रयोग करती थीं। खुदाई के दौरान हमें ताँबे के दर्पण तथा हाथी दाँत की कंघियाँ मिली है। इनके अतिरिक्त हमें अनेक शृंगारदान भी मिले हैं, जो हाथी दाँत से निर्मित होते थे। इनसे पता चलता है कि स्त्रियाँ काजल, लिपिस्टक, विभिन्न प्रकार के पाऊडरों, सुंगधित तेलों तथा सिंदूर आदि का प्रयोग करती थीं। पुरुषों में दाढ़ी तथा मूँछ रखने का रिवाज था और कुछ पुरुष पगड़ी भी बाँधते थे। पुरुष आँखों को सुंदर बनाने के लिए काजल का प्रयोग करते थे।

7- eukjatu **(Amusements)** & हड़प्पा सभ्यता के लोग बहुत आमोदप्रिय थे। वे अपने अवकाश के क्षणों में शतरंज तथा चौपड़ खेलने के बहुत शौकीन थे। शिकार करना, मछलियाँ पकड़ना, पशु–पक्षियों को पालना तथा उन्हें आपस में लड़वाना भी हड़प्पा निवासियों के मनोरंजन के साधन थे। उस समय के लोगों को नृत्य एवं संगीत में विशेष रूचि थी। ढोल तथा वीणा उनके मुख्य वाद्य थे। बच्चों के मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षी, मानव आकृतियाँ, गाड़ियाँ, सीटियाँ तथा झुनझुने नामक आदि खिलौने तैयार किए जाते थे।

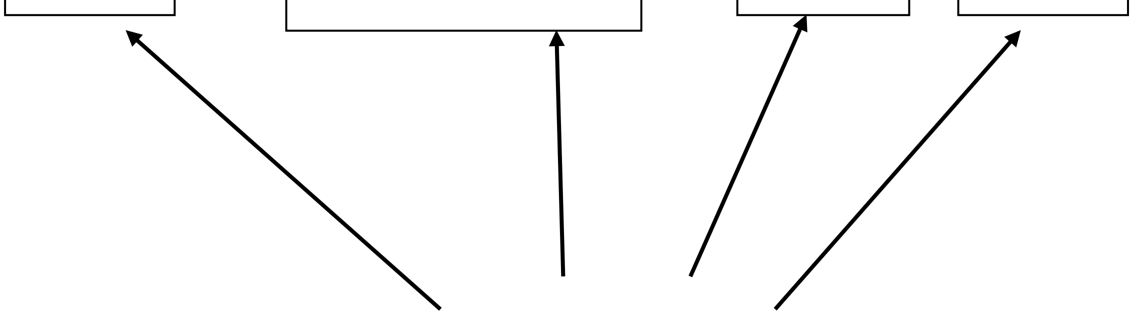

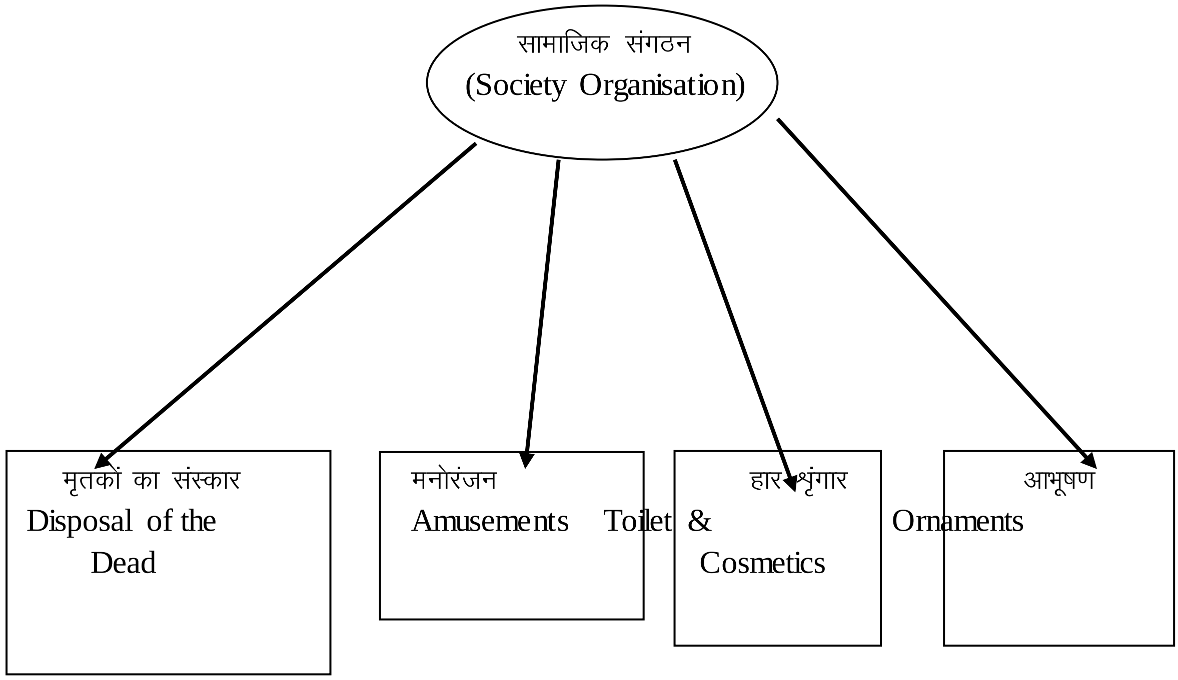

8- e`rdk dk lLdkj **(Disposal of the Dead)** & हड़प्पा सभ्यता के लोगों में शवों के विसर्जन की तीन प्रथाएँ प्रचलित थी। प्रथम विधि के अनुसार शव को पूरी तरह जला दिया जाता था। जो राख बच जाती थी उसे एक बर्तन में डाल कर दबा दिया जाता था। द्वितीय विधि के अनुसार पूरे शव को कब्र में दफ़ना दिया जाता था। मृतक व्यक्ति के अगले जीवन में प्रयोग करने के लिए उसके साथ कब्र में अनाज से भरे मिट्टी के बर्तनों को रख दिया जाता था। कुछ कब्रों में मृदभाँड एवं आभूषण भी मिले हैं। कहीं–कहीं मृतकों को ताँबे के दर्पणों के साथ दफ़नाया गया था। कुछ कब्रों की बनावट एक–दूसरे से भिन्न होती थी। तृतीय विधि के अनुसार शव को कुछ समय के लिए किसी खुले स्थान पर रख दिया जाता था। पशु–पक्षियों के खाने के बाद जब उसका अस्थि–पंजर शेष रह जाता था तो उसे दफ़ना दिया जाता था।

(Prof. Manjeet Singh Sodhi, Themes in Indian History (Modern Publishers Jalandhar : 2009) P.P. 11-13)

निष्कर्ष रूप से उपरोक्त तथ्यों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोगों का सामाजिक जीवन भी पर्याप्त उन्नत था। प्रसिद्ध इतिहासकार एस० आर० शर्मा ने ठीक लिखा है, "सिंधु घाटी के लोगों की सामाजिक व्यवस्था मिस्र तथा बेबीलोनिया की तुलना में बहुत श्रेष्ठ थी।"

("The social system of the Indus people was superior to even that of Egypt and Babylonia." S.R. Sharma,India As I See Her (Agra : 1956) p. 21)

।

2-4-4 gMIik lH;rk dh dyk **(Arts of Harappan Civilization) :-**

भारत की प्रथम विकसित सभ्यता होने के बावजूद कला की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध थी सैंधव सभ्यता। मूर्तिकला, मिट्टी के बर्तन बनाने की कला, आभूषण बनाने की कला एवं चित्रकला आदि में काफी उन्नति की थी। जिसका विवरण निम्न प्रकार से है –

1- efrːdyk **(Art of Sculpture)** & उत्खनन से जानकारी मिली कि सिंधु सभ्यता के निवासी मूर्तिकला में काफी निपुण थे। इन्होंने मूर्तियों का निर्माण मुलायम पत्थर, भूरी तथा पीली चट्टानों व धातुओं को काटकर मूर्तियों का निर्माण करते थे। मूर्तियों महिलाओं और पुरूषों दोनों की मूर्तियाँ बनाते थे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुरोहित–राजा की मूर्ति तथा हड़प्पा से प्राप्त लाल पत्थर की बनी नग्न खड़े पुरुष की मूर्ति अत्यंत ही कलात्मक है। इसके अतिरिक्त बच्चों के बहुत सारे खिलौने भी प्राप्त हुए है। इनमें कुत्ते, बंदर, हाथी, साँड आदि को सम्मिलित किया गया है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे की नर्तकी मूर्ति में उसका बायाँ हाथ कमर पर रखा हुआ है और इसमें बहुत सारी चूड़ियाँ पहनी हुई है। इसके गले में हार है। सिर के बाल घुँघराले दर्शाए गए है। इसमें नर्तकी को नग्न दिखाया गया है। यह देखने में बहुत ही सुन्दर है। रस्तम जे मेहता के अनुसार "यह कृति अत्यंत सुन्दर है।" ("It is a work of great Beauty." Rustam J. Mehta. Masterpieces of Indian Sculpture (Bombay: 1976) p. 37)

2- egjː **(Seals)** & हड़प्पा सभ्यता की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ मुहरें हैं। अब तक लगभग 2,000 मुहरें प्राप्त हुई है उन में से 1200 से अधिक मुहरें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है। ये मुहरें सेलखड़ी पत्थर (Steatite stone), काचली मिट्टी (Faience soil), चर्ट (Chert), गोमद (Gomedh) आदि की मुहरें प्राप्त हुई है। इन मुहरों पर जानवरों के चित्र अंकित है एक शृंगीपशु, भैंसे, बाद्य, सांड, बकरी, शेर, हाथी और बारहसिंगे आदि की आकृतियाँ उकेरी गई है। लोथल (Lothal) और देसलपुर (Desalpur) से ताँबे (copper) ये मुहरें (seals) बेलनाकार (Cylindrical), वर्गाकार, आयताकार एवं वृत्ताकार है। मोहनजोदड़ो (Mohaljodaro) और लोथल (Lothal) से नाव की आकृतिकी मुहरें मिली है।

3- feêh dː crːu **(Soil Pots)** & सिंधुवासी कुम्हार के चाक का प्रयोग बड़ी कुशलता के साथ करते थे। चाक् द्वारा बनाए गए मिट्टी के बर्तनो (Soil pots) पर विभिन्न प्रकार के रंगों पेड़ो व पशुपक्षियों के चित्र अंकित करते थे। हड़प्पाई लोग चाक के माध्यम से मृदभाँडो (Pottery) को चिकना और चमकीला बनाते थे। हड़प्पा के बर्तनों पर की गई चित्रकारी यह प्रदर्शित करती है कि हड़प्पावासी बड़े अच्छे चित्रकार थे।

4- rkcht **(Tabiza)** & उत्खनन से वर्गाकार तथा आयताकार तामपत्र प्राप्त हुए हैं जिन पर एक तरफ मनुष्य तथा पशु की आकृति तथा दूसरी तरफ लेख है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इन ताम्रपात्रो का प्रयोग ताबीज के रूप में किया जाता होगा। क्योंकि सिंधुवासी अंधविश्वासी थे। वे भूत–प्रेतों से बचने के ताबीज (Tabiza) बांधते थे।

5- vkHkw"k.k ,oa euds cukus dh dyk **(Art of Making Jewellery and Beads)** & हड़प्पा सभ्यता वासियों में आभूषण एवं मनके बनाने की कला के बारे में साक्ष्य प्राप्त हुए है जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि सिंधुवासियों में यह कला कूट–कूट कर भरी हुई थी जैसे – ताँबें (Copper), पक्की मिट्टी (Terracotta) एवं हाथी के दाँत के मनके (Beads), सोने (Gold), चाँदी, शंख (Shell), पत्थर (Stone), सेलखड़ी (steatie), क्वार्ट्ज (Quartz) घोंघे, हड्डिया आदि। हड़प्पा के लोगो के द्वारा बनाए गए मनके कई प्रकार के होते थे। मनको को पिरोकर माला भी बनाई जाती थी। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० आर० सी० मजूमदार के अनुसार, "ये आभूषण कई प्रकार के थे और इनसे उनके उच्च तकनीकी ज्ञान का पता चलता है।" ("These were marked by variety of designs and high technical skill") Dr. R.C. Majumdar Ancient India (Delhi : 1971) p. 23)

6- fp=dkjh **(Painting)** & विभिन्न प्रकार के बर्तनों, मुहरों, घरों पर विभिन्न प्रकार के चित्र देखकर कहा जा सकता है कि हड़प्पा वासियों में चित्रकला का गुण था वे कला के प्रेमी थे इसलिए वे मनुष्यों, पशु–पक्षियों, वृक्षो, फल, पत्तियों को बनाकर विभिन्न रंगों से उनको सजाते व संवारते थे। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग कला प्रेमी थे और अपनी कला की एक अमिट छाप उन्होंने मुहरों, बर्तनों, आभूषणों, मनको, मूर्तियों, भवनों आदि पर छोड़ी वे कला के माध्यम से मनोरंजन (Amusements) करते थे। अपने अवकाश के समय का सदुपयोग कला के माध्यम से करते थे।

2-4-5 jktuSfrd laxBu **(Political Organization) :-**

हड़प्पा सभ्यता के राजनीतिक संगठनों के बारे में निश्चित रूप से कहना असम्भव है क्योंकि इसके बारे में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला है।

(1) हड़प्पा संस्कृति के विशाल स्वरूप को देखने पर लगता है कि यह संस्कृति किसी सर्वोच्च शक्ति द्वारा संचालित होगी।

(2) कोटिल्य के अर्थ"ाास्त्र में सम्प्रभुता, मन्त्रिगण, आबादी युक्त क्षेत्र, किला, राजकोष, शक्ति और बन्धुत्व को राज्य का अटूट अंग माना गया है।

(3) हड़प्पा सभ्यता क्षेत्र की आबादी अच्छी थी। किलाबन्दी कई शहरों की विशेषताएँ होती थीं। धौलावीरा में विशेषकर किलों के अन्दर किले होते थे।

(4) व्हीलर ने हड़प्पा सभ्यता के लोगों के शासन को मध्यम वर्गीय जनंतत्रात्मक शासन कहा और उसमें धर्म के महत्त्व को स्वीकारा है।

(5) ऐसा माना गया है कि सैंधव स्थलों का शासन दुर्गो द्वारा होता था। शासनाधिकारी श्रम, भार, मूल्य आदि में एकरूपता स्थापित करने के लिए उत्तरदायी थे।

(6) मैके के अनुसार मोहनजोदड़ो का शासन एक प्रतिनिधि शासक के हाथ में था

अतः हम कह सकते हैं कि हड़प्पा सभ्यता के राजनैतिक संगठन (राजनीतिक स्थिति) के संबंध में जो निष्कर्ष निकाले गए है। वे एक अनुमान पर आधारित है। सभी इतिहासकारों के अलग–2 विचार है जैसे किसी ने जनतंत्रात्मक शासन, प्रतिनिधि शासन, व्यापारियों का शासन, मध्यम वर्ग का शासन, पुरोहितों का शासन आदि ने विचार दिए है। जिसका निष्कर्ष निकालना असंभव है।

2-4-6 gMlik fyfi **(Harappan Script)**

हड़प्पा के लोगों ने प्राचीन मेसोपोटामिया के लोगों की तरह लेखन की कला का आविष्कार किया। यद्यपि हड़प्पा लिपि की खोज सन् 1853 में हुई और सम्पूर्ण लिपि की खोज सन् 1923 में पूरी हुई। कुछ विद्वानों ने इसे प्रोटो–द्रविड़ भाषा या द्रविड़ियन के साथ जोड़ा, कुछ ने संस्कृत के साथ और अन्य विद्वानों ने सुमेरियाई भाषा के साथ जोडने का प्रयास किया। लेकिन इनमें से किसी का भी अध्ययन सन्तोषजनक नहीं है। क्योंकि लिपि की व्याख्या नहीं हो पाई है, इसलिए हम न तो साहित्य में हड़प्पा के योगदान का मूल्यांकन कर सकते हैं, और न ही उनके विचारों और विश्वासों के बारे में कुछ कहा जा सकता है।

पत्थर की मुहरों और अन्य वस्तुओं पर हड़प्पा लेखन के लगभग 4000 नमूने हैं। अधिकांश अभिलेख मुहर पर दर्ज थे और उनमें कुछ ही शब्द होते थे। इन मुहरों का उपयोग धनाढय–वर्ग अपनी सम्पत्ति को चिन्हित करने के लिए करते थे। कुल मिलाकर हमारे पास लगभग 250 से 400 चित्रलेख हैं और एक तस्वीर के रूप में इसके प्रत्येक अक्षर से कुछ ध्वनि, विचार या वस्तु का अर्थ स्पष्ट होता है। हड़प्पा लिपि वर्णमाला के अनुसार नहीं है, यह एक चित्रकारी के रूप में है। मेसोपोटामिया और मिस्र की समकालीन लिपियों के साथ इसकी तुलना करने के प्रयास किए गए, लेकिन यह सिन्धु क्षेत्र में निर्मित होने के कारण पश्चिमी एशिया की लिपियों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं दर्शाते हैं। (राम शरण शर्मा, भारत का प्राचीन इतिहास (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस–नई दिल्लीः2019) P.81)

2-4-7 gMlik lH;rk dk iru **(Decline of the Harappan Civilization) :-**

कोई भी सभ्यता जब विकास का चरमोत्कर्ष प्राप्त कर लेती है। तब उसमें अवांछित लक्षण आ जाते है। यह प्रकृति का शाश्वत नियम है। शनैः शनैः उसका पतन भी शुरू हो जाता है। किसी भी सभ्यता के पतन के अनेको कारण हो सकते है। हड़प्पा के पतन के अनेकों कारण है। जिसको लेकर इतिहासकारो के अलग–अलग मत

है। विकसित हड़प्पा सभ्यता 2500 ई० पू० से 1900 ई० पू० के बीच मौजूद थी। लेकिन ई० पू० उन्नीसवीं सदी पर हड़प्पा सभ्यता के दो मुख्य केन्द्र हड़प्पा और मोहनजोदड़ो लुप्त हो चुके थे। लेकिन अन्य दूसरे स्थलों पर यह शनैः–शनैः नष्ट हुई है। हड़प्पा सभ्यता के पतन के कुछ प्रमुख कारण उत्तरदायी माने जाते है। उन तथ्यों पर एक नजर डाल कर संक्षिप्त विवरण का अध्ययन निम्न प्रकार से है –

1- ck< **(Floods)** & हड़प्पा के केन्द्र नदियों के किनारे बसे हुए थे। वर्षा ऋतु में नदियों का जलस्तर बढ़ गया होगा जिससे जान मान का नुकसान हुआ होगा। अर्थात् नदियों में प्रत्येक वर्ष बाढ़ आ जाती थी। बाढ़ के कारण नगरों के बार–2 पुननिर्माण के स्पष्ट प्रमाण मिलते है। इस प्रकार हर वर्ष जान–माल के नुकसान को देखते हुए लोगों ने स्थानांतरण का फैसला लिया होगा। एम० आर० साहनी, जार्ज डेल्स, डॉ० राईकस का मत है कि हड़प्पा सभ्यता के विनाश में बाढ़ का मुख्य योगदान था।

2- vfXu **(Fire)** & कुछ विद्वानों के विचार है कि हड़प्पा सभ्यता के विनाश में अग्नि का भी प्रमुख कारण माना जाता है। क्योंकि उस समय भवनों के निर्माण में लकड़ी का ज्यादा प्रयोग किया जाता था। अचानक आग लगने पर भवन जलकर राख हो गए। क्योंकि बलूचिस्तान में अनेको स्थलों पर राख के अवशेष मिले है। लेकिन अधिकतर विद्वान इस पर असहमत है ऐसा मानते है कि कुछ स्थलों को हानि पहुँची होगी। लेकिन सम्पूर्ण हड़प्पा के लिए इसे जिम्मेदार नहीं माना जा सकता।

3- Hkwdai **(Earthquake)** & कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता के नष्ट होने में भूंकपों का कारण रहा है। क्योंकि भूकंप आने पर हड़प्पा के स्थल उथल–पुथल हुए और मिट्टी की परत चढ़ गई। इस कारण वहाँ नगरों का दोबारा अस्तित्व में आना संभव नहीं था।

4- ty lykou **(Floating of Water)** & प्रसिद्ध वैज्ञानिक एम० आर० साहनी का विचार है कि हड़प्पा नगरों के पतन में जल प्लावन के कारण भी हुआ है। जल प्लावन से भूमि कृषि योग्य नहीं रही होगी। जिससे उत्पादन की समस्या आई होगी। जिसके कारण वहाँ के लोगों ने दूसरी जगह पलायन शुरू कर दिया होगा और धीरे–2 हड़प्पा का पतन हो गया।

5- egkekjh **(Epidemic)** & कुछ इतिहासकारों का मत है कि हड़प्पा के पतन के कारण प्लेग अथवा कोई जानलेवा महामारी जैसी भंयकर समस्या के कारण लोगों का जीवन जीना कठिन हो गया जिसकी वजह से उन्हें जीवित रहने के लिए किसी दूसरे स्थान पर स्थानांतरण करना पड़ा होगा और धीरे–2 हड़प्पा सभ्यता पतन की ओर बढ़ी होगी। फिर एक समय हड़प्पा की अमिट छाप लुप्त हो गई।

6- c<rh tula[;k **(Increasing Population)** & हड़प्पा सभ्यता के विनाश का एक कारण वहाँ की तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या भी माना गया है। क्योंकि जनसंख्या बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों में कमी आ गई होगी और

आर्थिक स्थिति डामा–डोल हो गई जिसके कारण लोग वहाँ से पलायन कर गए होगे जिससे हड़प्पा का पतन होना स्वाभाविक ही था। कुछ इतिहासकारों ने यह मत दिया है।

7- Ákdfrd vkink **(Natural Disaster)** & कुछ इतिहासकारों का कथन है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन में प्राकृतिक आपदा भी एक कारण रहा है। जैसे – ओलावृष्टि, तेज अंधड़, ज्वालामुखी विस्फोट, वज्रपात (बिजली का गिरना), महामारी, प्लेग, मलेरिया, भूकंप, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाएँ निश्चय ही हड़प्पा के पतन का कारण रहे होगे।

8- 0;kikj esa fxjkoV **(Fall in Trade)** & आर० एस० शर्मा का मत है कि व्यापार में गिरावट के कारण हड़प्पा का पतन हुआ था। कच्चे माल के अभाव में उद्योगों में तैयार माल की कमी और मजदूरों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया होगा। दूसरा हड़प्पा सभ्यता के दूसरे नगरों के साथ व्यापारिक संबंधों में मतभेद का कारण भी हो सकता है। जिस से वहाँ की अर्थव्यवस्था बिगड़ गई होगी। जिसकी वजह से पतन होना तो निश्चित ही था।

9- ufn;ksa dk ty&ekxZ esa ifjorZu **(Changes Path of River)** & नदियाँ समय–समय पर अपने प्रवाह–मार्ग को परिवर्तित करती रहती हैं। प्रसिद्ध विद्वान एच० टी० लैम्ब्रिक, जी० एफ० देल्स तथा माधोंस्वरूप वत्स ने इसी मार्ग–परिवर्तन को सभ्यता पतन का कारण माना है। एम० एस० वत्स ने हड़प्पा के पतन का कारण रावी नदी को माना है। देल्स ने घग्गर और उसकी सहायक नदियों को कालीबंगन के पतन का कारण माना है।

10- i;kZoj.kh; vlarqyu **(Enviornmental Degradation)** & जॉन मार्शल तथा डॉक्टर रौनल्ड का विचार है कि हड़प्पा के पतन में पर्यावरणी असंतुलन की अहम भूमिका रही है। जिसकी वजह से हड़प्पा वासियों को सामान्य अनेकों समस्या पैदा हो गई जिससे वहां रहना और जीवन यापन करना दुर्गम हो गया। हड़प्पा वासी कई दूसरे स्थान पर प्लायन कर गए होंगे जिससे हड़प्पा सभ्यता का विनाश हो गया।

11- vkØe.k **(Invasions)** & गार्डन चाइल्ड, व्हीलर, स्टुवर्ट पिग्गट, आदि इतिहासकारों का मानना है कि हड़प्पा के मोहनजोदड़ो में एक ही कपड़े में तेरह व्यक्तियों के अस्थि–अवशेष की प्राप्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि अचानक आक्रमण के कारण लोग मारे गए होगे। ऋग्वेद में भी इस बात का प्रमाण मिलता है कि आर्य अपने शत्रुओं के दुर्ग नष्ट करने के लिए इंद्र भगवान की पूजा करते थे। वैदिक संस्कृति को मजबूत स्थापित करने के लिए 1500 ई० पू० हड़प्पा को मिटाने के लिए वहाँ के लोगों को मार डाला होगा। इस प्रकार हड़प्पा का पतन हुआ होगा।

2-5 Áxfr leh{kk **(Check your Progress) :-**

¼d½ fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft, ¾& **(Filling the blanks)**

(i) हड़प्पा सभ्यता के लोग .... धातु के बारे में नहीं जानते थे।

(ii) सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य नाम .... और .... है।

(iii) मोहन जोदड़ो का शाब्दिक अर्थ .... है।

(iv) लोथल .... प्रान्त .... के जिले में स्थित है।

(v) हड़प्पा सभ्यता की खोज .... ने की थी।

(vi) 1922 ई. में मोहनजोदड़ो की खोज .... ने की थी।

(vii) काली बंगन .... के लिए प्रसिद्ध है।

(viii) सिंधु घाटी के लोग .... पशु के बारे में परिचित नहीं थे।

(ix) हड़प्पा सभ्यता की लिपि .... थी।

(x) 1853 ई० में .... हड़प्पा मोहर का पता लगाया।

¼[k½ lR;@vlR; dFku ½& **(True/False)**

(i) रोपड़ पंजाब के रूप नगर जिले में सतलुज नदी के किनारे पर है। (सत्य/असत्य)

(ii) आलमगीरपुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हिंडन नदी के तट पर स्थित है। (सत्य/असत्य)

(iii) हड़प्पा सभ्यता के लोगों का कृषि मुख्य व्यवसाय नहीं था। (सत्य/असत्य)

(iv) हड़प्पा संस्कृति के लोग पीपल की प्रमुख रूप से पूजा करते थे। (सत्य/असत्य)

(v) कांस्य युगीन सभ्यता के लोगों की रूचि चित्रकारी में नहीं थी। (सत्य/असत्य)

(vi) मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार नहीं था। यह लोथल में था। (सत्य/असत्य)

(vii) हड़प्पा सभ्यता के पतन का कारण बाढ़ और अग्नि भी माना गया है। (सत्य/असत्य)

(viii) सैन्धव सभ्यता में यातायात का प्रमुख साधन बैलगाड़ी था। (सत्य/असत्य)

(ix) कांस्य युगीन सभ्यता भारत की प्रथम नागरीय सभ्यता थी जो हमारे लिए गौरव का विषय था। (सत्य/असत्य)

(x) रेडियो कार्बन–14 (C-14) पद्धति के आधार पर 2350 ई० पू० से 1750 ई० पू० कांस्य युगीन सभ्यता की तिथि मानी गई है। (सत्य/असत्य)

व्यापार में गिरावट

बाढ़ (Floods)

अग्नि (Fire)

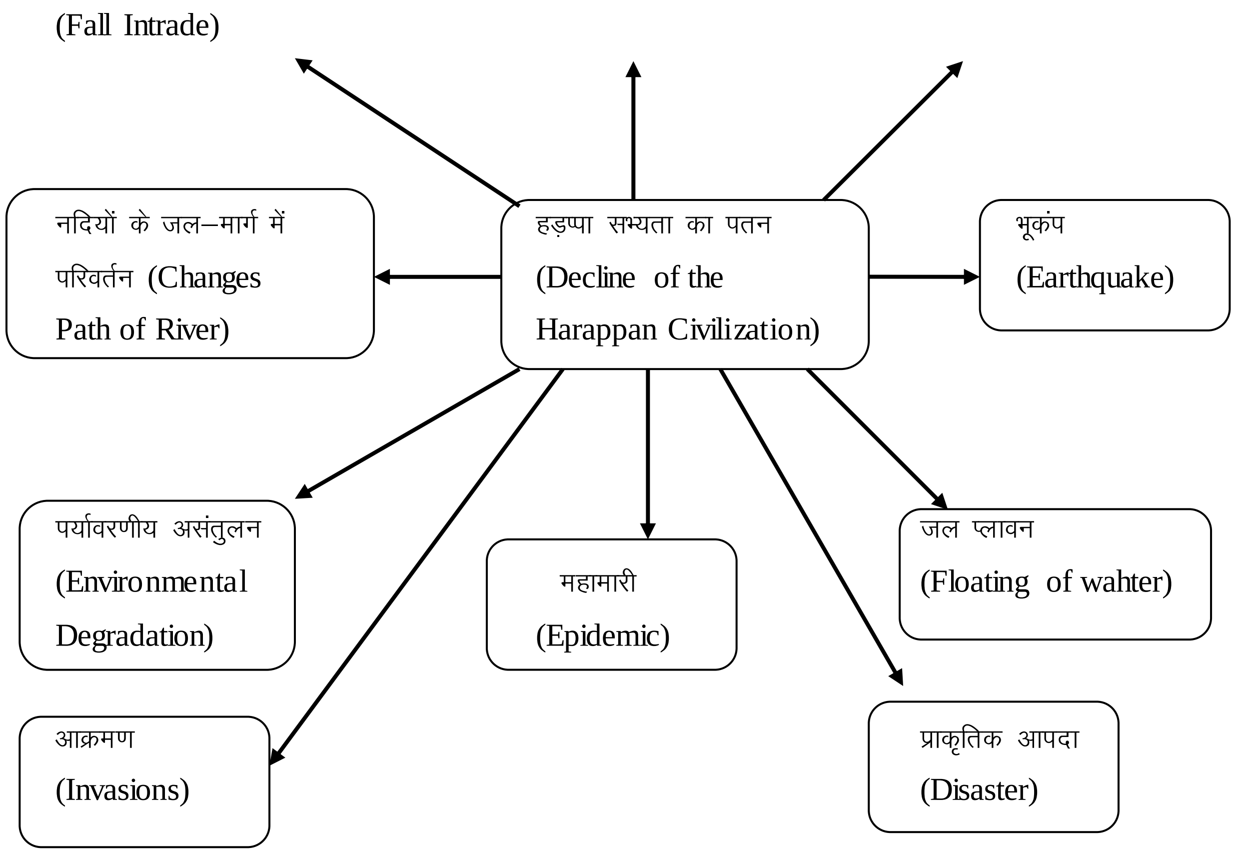

2-6 lkjka'k ;k lf{kIrdk (Summary) :-

- क्षेत्रफल की दृष्टि से प्राचीन सभ्याओं में हड़प्पा संस्कृति प्रसार सबसे अधिक है। यह सभ्यता त्रिभुजाकार में फैली हुई थी। इस संस्कृति का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहाद्वीप के पि"चमोत्तर भाग में हुआ।
- हड़प्पा सभ्यता वर्तमान में मोंटगोमरी जिला, पि"चमी पंजाब (पाकिस्तान) में रावी नदी के तट पर है। इस सभ्यता की खोज का श्रेय रायबहादुर दयाराम साहनी को जाता है उन्होंने पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देशन में 1921 ई० में किया। हड़प्पा सभ्यता का विस्तार उत्तर में जम्मू से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान तट से लेकर पूर्व में मेरठ तक था। इसका क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग कि0मी0 था।
- 1826 ई० में सर्वप्रथम चार्ल्स मर्सन को हड़प्पा से बड़ी संख्या में ईंटें प्राप्त हुई थी। 1875 ई० अलेवजेण्डर कनिघम ने हड़प्पा के खण्डहरों का सर्वप्रथम उत्खनन कराया था।
- हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त मुद्राओं की संख्या 200 से अधिक है। राणा घुण्डई के सबसे निचले स्तरों में घोड़े के दांत मिले है। हड़प्पा से आटा पीसने की चक्कियों के अवशेष मिले है। हड़प्पा से प्राप्त भण्डारागार का प्रमुख प्रवेश द्वार नदी की ओर से था। हड़प्पा के बर्तनों पर लेख प्राप्त हुए है यहाँ से प्राप्त बर्तनों में मानव आकृतियाँ भी दिखाई देती है।

- हड़प्पा से प्राप्त मुद्रा में गरूड का अंकन मिला है। एक काँसे की बनी एक नर्तकी की मूर्ति प्राप्त हुई है तथा ताँबे की बनी हुई एक 'इक्का गाड़ी' प्राप्त हुई है।
- रेडियो कार्बन–14 (C-14) पद्धति के आधार पर 2350 ई० पू० से 1750 ई० पू० हड़प्पा सभ्यता की तिथि मानी गई है। सैंधव सभ्यता में मुद्रा का निर्माण अधिकां"ातः 'सेलखड़ी' से होता था।
- सिंधु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों आदि अनाज उगाते थे उन्हें नौ प्रकार की फसलों का ज्ञान था। वे गेहूँ और जौ की दो किस्में उगाते थे। सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को जाता है। क्योंकि कपास का उत्पादन सबसे पहले सिंधु क्षेत्र में हुआ। इसलिए यूनान के लोग इसे सिन्डन (Sindon) कहने लगे।
- सिन्धुकाल में यातायात का मुख्य साधन बैलगाड़ी था। बैलों के दो प्रकार थे – 1. कूबड़ और बड़े सींगवाला बैल 2. बिना कूबड़ और छोटे सींग वाला बैल। सिंधुवासी सूत कातना, कपड़ा बुनना तथा कपड़ा रंगना भी जानते थे।
- कालीबंगा घग्घर नदी के तट पर है। यहाँ से जुते हुए खेत, चूड़ियाँ, ईंट, अग्नि हवन कुंड, लकड़ी की नाली, साधारण चूल्हों के साथ तंदूरी चूल्हे भी मिलते हैं।
- मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के दाहिने तट पर 250 मील की दूरी पर स्थित इसकी खोज 1922 ई० राखालदास बनर्जी, मार्टिमर व्हीलर ने की थी। यहाँ से विभिन्न प्रकार के साक्ष्य मिले जैसे – विशाल स्नानागार, पुरोहितों का आवास, महाविद्यालय, ठमकानों का बैक, कांस्य से निर्मित नग्न महिला मूर्ति, दाढ़ी वाले पुजारी की मूर्ति, चमकते हुए बंदर का चित्र, एक श्रृंगी पशुओं वाली मुद्राएँ प्राप्त हुई। मोहनजोदड़ो में अब तक भवनों के नौ स्तर निकाले जा चुके। मोहनजोदड़ो का अर्थ सिंधी भाषा में 'मृतकों का टीला' है। मोहनजोदड़ो में एक अन्नागार मिला है, जो 45.71 मीटर लम्बा और 15.23 मीटर चौड़ा है। मोहनजोदड़ो में प्रत्येक छोटे या बड़े मकान के प्रांगण और स्नानागार होता था। यहां की जल निकास प्रणाली भी अद्भुत थी। मोहनजोदड़ो की सबसे अधिक चौड़ी सड़क 10 मीटर की होती थी जिसे राजपंथ कहा जाता था।
- हड़प्पा वासी व्यापार और अन्य लेन–देन के लिए वनज मापन हेतु मौटे तौर पर 16 या उसके गुणकों का उपयोग किया करते थे जैसे – 16, 64, 160, 320 और 640 आदि और यह परम्परा भारत में कुछ वर्षों पहले भी थी और 16 आने का मतलब एक रूपया होता था।
- कच्चे माल का आयात (i) चाँदी और टीन का – ईरान और अफगानिस्तान से। (ii) सोना–अफगानिस्तान, फारस और दक्षिणी भारत से, (iii) ताँबा – राजस्थान के खेतड़ी और बलूचिस्तान से (iv) सीसा – ईरान, अफगानिस्तान, राजस्थान से। (v) नीलमणि– महाराष्ट्र से (vi) सेलखड़ी – बलूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात (vii) शिलाजीत – हिमाचल क्षेत्र से।
- हड़प्पा पुरातत्व का कालक्रम :–

1. 1853 ई० – ए० कनिंघम ने हड़प्पा मुहर का पता लगाया।
2. 1921 ई० – हड़प्पा में दया राम साहनी ने खोज की।
3. 1931 ई० – मार्शल द्वारा मोहनजोदड़ो की खुदाई।
4. 1938 ई० – मैके द्वारा समान आकार की खुदाई।
5. 1940 ई० – वत्स द्वारा हड़प्पा की खुदाई।
6. 1946 ई० – मोर्टिमर व्हीलर द्वारा हड़प्पा की खुदाई।
7. 1947 के बाद – सूरजभान, एम० के धवलीकर, जे० पी० जोशी, बी० बी० लाल, एस० आर० राव, बी० के यापर, आर० एस०, बिष्ट, एवं अन्य द्वारा हड़प्पा सभ्यता और उससे संबंधित स्थलों की खुदाई।

- हड़प्पा नगरों के उत्खनन से अभी तक मंदिर के अवशेष नहीं मिले है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर एक स्वास्तिक का अंकन सूर्य पूजा का प्रतीक माना जाता है। हिन्दू धर्म में आज भी स्वास्तिक को पवित्र मांगलिक चिह्न के रूप में माना जाता है।

धार्मिक प्रतीक चिन्ह			
प्रतीक चिन्ह	महत्व	प्रतीक चिन्ह	महत्व
• ताबीज	प्रजनन शक्ति का प्रतीक	• बैल	शिव का वाहन
• बकरा	बलि हेतु	• स्वास्तिक	सूर्य उपासना का प्रतीक
• सयोगी शिव	योगीश्वर	• श्रृंग	शिव का रूप
• नाग	पूजा हेतु	• भैंसा	देवता की शत्रुओं पर विजय का प्रतीक
• युगल शवाधान	पति के साथ पत्नी का सती होना		

- सिंधु लिपि के बारे में सर्वप्रथम विचार व्यक्त करने वाले व्यक्ति अलेवजंडर कनिंघम थे, कनिंघमने 1873 ई० में विचार व्यक्त किया कि इस लिपि का संबंध ब्राह्मी लिपि से है। इस लिपि को पढ़ने का प्रयास सबसे पहले 1925 ई० में एल० ए० बैडेल ने किया था।
- हड़प्पा लिपि का सबसे पुराना साक्ष्य 1853 ई० मिला था और सम्पूर्ण लिपि की खोज 1923 ई० में पूरी हुई थी, हालाँकि अभी तक इसकी व्याख्या नहीं हुई है। कुछ ने संस्कृत के साथ और अन्य विद्वानों ने सुमेरियाई भाषा के साथ जोड़ने का प्रयास किया। लेकिन इनमें से कोई भी अध्ययन संतोषजनक नहीं है। हड़प्पा लिपि न पढ़े जाने के कारण साहित्य में हड़प्पा के लोगों का क्या योगदान रहा, कुछ कहा नहीं जा सकता है।
- पत्थर की मुहरों और अन्य वस्तुओं पर हड़प्पा लेखन के लगभग 4000 नमूने हैं। मिस्त्र और मेसोपोटामिया के विपरीत, हड़प्पा ने लम्बे समय तक शिलालेख नहीं लिखा था। हड़प्पा लिपि में कुल मिलाकर हमारे पास लगभग

250 से 400 तक चित्रलेख या भावचित्रात्मक (पिवटोग्राफ) है और एक तस्वीर के रूप में इसके प्रत्येक अक्षर से कुछ ध्वनि, विचार (भाव) या वस्तु का अर्थ स्पष्ट होता है। इस लिपि में 270 वर्ण थे।

- हड़प्पा सभ्यता सम्भवतः 2500 से 1900 ईसा पूर्व बीच तक अस्तित्व में रही। हड़प्पा संस्कृति की नागरिकोत्तर अवस्था को उपसिंधु संस्कृति कहते हैं। यह उत्तर–हड़प्पा संस्कृतियाँ मूलतः ताम्रपाषाणिक हैं जिनमें पत्थर और ताँबे के औजारों का उपयोग होता था।
- जोर्वे बस्तियों में सबसे बड़ी दैमाबाद की बस्ती है, जो लगभग 22 हेक्टेयर में बसी थी और जहाँ 4000 की आबादी रही होगी इसके स्वरूप को आद्य नगरीय कहा जा सकता है, परन्तु अधिकांश जीर्वे बस्तियाँ ग्रामीण है।
- नागरिकोत्तर हड़प्पाई बस्तियाँ स्वात घाटी में मिली है। यहाँ लोग चाक पर लाल व काले रंग वाले मृदमांड तैयार करते थे इससे अच्छी कृषि और पशुपालन का कार्य भी होता था। आलमगीरपुर में उत्तर हड़प्पाई लोग संभवतः कपास का प्रयोग धागे के लिए करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के मनुष्यों की मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार की प्रमुख रूप से तीन प्रथाएँ मिलती है :– (i) दाह संस्कार – इसमें शव को पूर्ण रूप से जलाने के बाद भस्मावशेष को मिट्टी के पात्र में रखकर दफना दिया जाता था। (हिंदू विधि से मिलती प्रथा)। यह सर्वप्रमुख प्रथा थी। (ii) पूर्ण समाधिकरणः इसमें संपूर्ण शव को भूमि में दफना दिया जाता था। (iii) आंशिक समाधिकरण : इसमें पशु–पक्षियों के खाने के बाद बचे शेष भाग को भूमि में दफना दिया जाता था। (पारसी विधि से मिलती प्रथा) सामान्यतः मृतकों को उत्तर–दक्षिणक्रम (सिर उत्तर की ओर व पैर दक्षिण की ओर) में दफनाया जाता था। इसके अपवाद हड़प्पा व कालीबंगा में दक्षिण–उत्तर क्रम में, लोथल में पूर्व–पश्चिम क्रम में रोपड़ में पश्चिम–पूर्व में मृतक को दफनाए जाने प्रमाण मिले हैं। एक कब्र में एक ही व्यक्ति को दफनाया जाता था परन्तु कालीबंगा से एक ओर लोथल से तीन युगल। युग्म समाधिकरण। शवाधान मिले हैं, जिनमें एक कब्र में दो–2 मृतक दफनाए गए हैं। रोपड़ की कब्र से मालिक के साथ कुत्ते के दफनाए जाने के प्रमाण मिले हैं। लोथल की एक कब्र से मृतक के साथ बकरे को दफनाए जाने के प्रमाण मिले है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन में इतिहासकारों के विचार

	इतिहासकार	विचार
1.	गार्डन चाइल्ड व व्हीलर	सैन्य सभ्यता विदेशी आक्रमण व आर्यो के आक्रमण से नष्ट हुई।
2.	जॉन मार्शल	इस सभ्यता के विनाश के लिए भूकम्प उत्तरदायी था। प्रशासनिक शिथिलता के कारण इस सभ्यता का विनाश हुआ।
3.	अर्नेस्ट मैके जॉन मार्शल	सिंधु सभ्यता बाढ़ के कारण नष्ट हुई।
4.	फेयर सर्विस	संसाधन की कमी, वनों का कटाव एवं पारिस्थितिक असंतुलन पतन का कारण था।
5.	ऑरेल स्टाइन	जलवायु परिवर्तन के कारण यह सभ्यता नष्ट हो गई।
6.	मार्टीमर व्हीलर	हड़प्पा सभ्यता का आकस्मिक अंत हुआ था। हड़प्पा सभ्यता का आधार विदेशी था।
7.	लैम्ब्रिक	जनसंख्या वृद्धि
8.	एम० आर० साहनी	यह सभ्यता भू–तात्विक परिवर्तन के कारण नष्ट हुई।
9.	राइक्स व डेल्स डी० डी० कोशाम्बी	मोहनजोदड़ो के लोगों की आग लगाकर सामूहिक हत्या कर दी गई।

(महेश कुमार बर्णवाल : संक्षिप्त इतिहास NCERT सार, Cosmos पब्लिकेशन दिल्ली : 2019 P.P. 26-28)

dkyØe **(Time Line)**

	Year BC (ई० पू०)	Event (घटना)
1.	7000	बलूचिस्तान में सबसे पुरानी कृषि बस्तियाँ
2.	पाँचवीं सहस्त्राब्दि	अनाज का अस्तित्व, मिट्टी की ईंटों का उपयोग
3.	4000	चोलिस्तान (पाकिस्तान) में पूर्व–हड़प्पा बस्ती
4.	3000 – 2000	सिन्धु और सरस्वती में भारी बारिश और पानी का प्रवाह
5.	2500 – 1900	विकसित हड़प्पा संस्कृति
6.	2000	शक्तिशाली राज्य एलाम का उदय। सरकोतड़ा में घोड़े का

		अवशेष
7.	1900 – 1500	गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हड़प्पा संस्कृति का क्षरण काल
8.	1800	लोथल में चावल का उपयोग
9.	19–1200	उत्तर–शहरी हड़प्प संस्कृति
10.	1700	यमुना और सतलुज का सरस्वी
11.	1500 – 1200	वैदिक लोगों के एक समूह का भारतीय उपमहाद्वीप में आगमन
12.	300	उत्तरी भारत में पक्की ईंटों का उपयोग। ब्रहमी लिपि में लेखन

(भारत का प्राचीन इतिहास – रामशरण शर्मा 2019: P.89)

2-7 l।d।r l।pd (Key-words) :-

• विवर्तनिक (टेक्टोनिक) → (भूविज्ञान में) पृथ्वी की सतह की संरचनों से संबंधित	• सहस्राब्दि → एक हजार वर्ष के समूह को सहस्त्राब्दि कहते है।
• श्रेय → उपलब्धि या प्रतिष्ठा	• साक्ष्य → प्रमाण
• प्रांसगिकता → उपयोगिता	• अर्ध–शुष्क → आधा सूखा
• 40 मी० लम्बा और चौड़ा → एक बिघा	• प्रतिनिधिशासक – जनता के द्वारा चुना हुआ शासक
• एक हेक्टेयर = 2½ एकड़ (किले)	• एक एकड़ = 220 फुट लम्बा, चौड़ाई 198 फुट (220 X 198 = 436560 वर्ग 9 फीट)

2-8 Lo eY;kdu d। fy, Á'u (Self-AssessmentTest) ¼

Hkkx (Part) ¼d½ cg|o|dfYi d i।'u (Objective Types Questions)

(इनके उत्तरदायी और कोष्ठक में देखिए)

(i) हड़प्पा सभ्यता के अधिकांश मनके किस पदार्थ के बने थे ?

(a) सेलखड़ी (Steatite) (b) सोना (Gold)

(c) ताँबा (Copper) (d) काँसा (Bronze) उत्तर– A

(ii) हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization) के सर्वप्रथम किस केन्द्र (centres) की खोज हुई ?

(a) हड़प्पा (Harappan) (b) कालीबंगन (Kalibangan)

(c) चन्दुहड़ो (Chanhundaro) (d) मोहनजोदड़ो (Mohanjodaro)उत्तर– A

(iii) सिंधु घाटी सभ्यता के लोग परिचित नहीं थे –

(a) गाय (Cow) (b) कुत्ता (Dog) (c) घोड़ा (House) (d) बिल्ली (Cat) उत्तर– C

(iv) हड़प्पा सभ्यता के लोग किस उपज के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध थे ? उत्तर – B

(a) जौ (Barley) (b) कपास (Cotton) (c) गेहूँ (Wheat) (d) बाजरा (Millets)

(v) भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) के प्रथम डायरेक्टर जनरल कौन थे ?

(a) आर०बी० दया राम साहनी (R.B.Daya Ram Sahni)

(b) जॉन मार्शल (Johan Marshall)

(c) अलेक्जैंडर कनिंघम (Alexander Cunnigham)

(d) आर०ई०एम० व्हीलर (R.E.M. Wheeler) उत्तर– C

(vi) हड़प्पा सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था ?

(a) पशुपालन (Animal Rearing) (b) उद्योग (Industries)

(c) कृषि (Agriculture) (d) व्यापार (Trade) उत्तर – C

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति हमें कहाँ से मिली है ?

(a) संघोल (Sanghal) (b) बनावली (Banawali)

(c) धौलावीरा (Dholavira) (d) मोहनजोदड़ो (Mohanjodaro) उत्तर – D

(viii) हड़प्पा सभ्यता के बाट किस पदार्थ से बनाए गए थे ?

(a) सोना (Gold) (b) सेलखड़ी (Steatite)

(c) पत्थर (Stone) (d) चर्ट पत्थ्झर (Chert Stone) उत्तर – D

(ix) हड़प्पा सभ्यता के लोग किस धातु से परिचित नहीं थे ?

(a) सोना (Gold) (b) ताँबा (Copper)

(c) लोहा (d) काँसा (Bronze) उत्तर – C

(x) हड़प्पा सभ्यता से संबंधित सर्वाधिक मुहरें कहाँ से प्राप्त हुई है ?

(a) कालीबंगन (Kalibangan) (b) कोटला निहंग खाँ (Kotla Nihang Khan)

(c) मोहनजोदड़ो (Mohanjodaro) (d) आलमगीरपुरा (Alamgirpur) उत्तर – C

Hkkx (Part) & [k (Essay Type Question/Long Answer type Question)

प्र.1 हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थलों को दिखाने के लिए मानचित्र पर रूपरेखा को चिन्हित कीजिए।

(Mark/Label on the outline map of the world show/Locate important Sites of Harappan Civilization).

प्र.2 हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना, आर्थिक संगठन एवं राजनैतिक संगठन की विवेचना कीजिए।

(Discuss the town planning of Harappan Civilization, Economy Organization and political organization).

प्र.3 हड़प्पा सभ्यता के मुख्य केन्द्रों का वर्णन कीजिए।

(Describe the main centres of Harappan Civilization).

प्र.4 हड़प्पा सभ्यता की उत्पति की व्याख्या करें। हड़प्पा सभ्यता की कला पर चर्चा कीजिए।

(Explain the Extent of Harappan Civilization. Discuss the Arts of Harappan Civilization.)

प्र.5 हड़प्पा सभ्यता के पतन से संबंधित मुख्य कारणों पर प्रकाश डालिए।

(Throw Light on the main causes for the decline of Harappan Civilization.)

प्र.6 हड़प्पा सभ्यता के विस्तार या प्रसार के बारे में आप क्या जानते है?

(What do you mean by Extent of Harappan Civilization)

¼x½ y?kq mÙkjh; iz'u **(Short Answer Type Question)**

(A) रोपड़ (Ropar) (B) धौलवीरा (Dholavira) (C) सुरकोतड़ा (Surkotada) (D) बनावली (Banawali) (E) मिताथल (Mithal) (F) भोजन (Diet) (G) शिव की उपासना (Worship of Lord Shiva) (H) मुहरें (Seals) (I) चित्रकारी (Painting) (J) विशाल स्नानागार (The Gread Bath) (K) तोल तथा माप (Weights and Measures) (L) कृषि (Agriculture) (M) रोजदी (Rozadi) (N) बर्तन बनाने की कला (Art of Pottery) (O) लिपि (Script)

2-9 Áxfr leh{kk gsrq Á'ukÙkj **(Answer to Check your Progress)**

¼Hkkx&d½

(i) लोहा

(ii) हड़प्पा, कांस्य युगीन सभ्यता

(iii) मृतकों का टीला

(iv) गुजरात, अहमदाबाद

(v) दयाराम साहनी, 1921

(vi) राखल दास बनर्जी

(vii) काले रंग की चूड़ियाँ

(viii) घोड़ा

(ix) भावचित्रात्मक

(x) कनिघम

¼Hkkx &[k½

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

(vi) असत्य

(vii) सत्य

(viii) सत्य

(ix) सत्य

(x) सत्य

2-10 lUnHkZ xzUFk ,oa lgk;d iqLrdsa **(Reference and Suggested Readings)**

- महे"ा कुमार बर्णवाल – संक्षिप्त इतिहास NCERT सार, कोसमोस पब्लिकेशन मुखर्जीनगर, दिल्ली जनवरी 2019।
- द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्णमोहन श्रीमाली – प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नवम्बर 2018
- डी०एम० झा प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय पुनर्मुद्रण : अक्तूबर 2016 ।
- Proof – Manjeet Singh Sodhi Themes in Indian History. Modern Publishers Jalandhar, 2009
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली
- यूनिक सामान्य अध्ययन – डा. विनय कुमार सिंह, यूनिक पब्लिकेशन्ज, नई दिल्ली
- रामशरण शर्मा– भारत का प्राचीन इतिहास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली द्वारा चौथा हिंदी संस्करण भारत में प्रकाशित।

<table>
<tr><td colspan="2">SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER -1</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE : HIST 101</td><td rowspan="2">AUTHOR & UPTATED:
MR. MOHAN SINGH BALODA</td></tr>
<tr><td>LESSON NO : 3</td></tr>
</table>

वैदिक संस्कृति (1500 ई०पू०–600 ई०पू०) VEDIC CULTURE (1500 BC-600 BC)

v/;k;&lljpuk **(Lesson Structure)**

3.1 अधिगम उद्दे"य (Learning Objective)

3.2 परिचय (Introduction)

3.3 आध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

3.3.1 पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.) Prevedic Period (1500-1000 B.C.)

3.3.2 राज्यव्यवस्था (Polity)

3.3.3 समाज (Society)

3.3.4 धर्म (Religion)

3.4 आध्याय का आगे का मुख्य भाग (Further main body of the text)

3.4.1 उत्तर वैदिक काल (Post/Later Vedic Period) (1000-1600 B.C.)

3.4.1.1 राज्य व्यवस्था (Polity)

3.4.1.2 समाज (Society)

3.4.1.3 छात्र क्रियाकलाप (Student Activity)

3.4.1.4 धर्म (Religion)

3.4.1.5 वर्ण (Varna)

3.4.1.6जाति (Caste)

3.4.1.7 अस्पृ"यता (Untouchability)

3.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

3.6 सारांश/संक्षिप्तिका (Summary)

3.7 संकेत सूचक (Key Words)

3.8 स्व मूल्यांकन के लिए परीक्षा (Self-Assessment Test) (SAT)

3.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answer to Check Your Progress)

3.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ एवं अध्ययन सामग्री (References/Suggested Readings)

3-1 vf/kxe mís'; **(Learning Objectives)** ½&

- हमारा अतीत हमें किस प्रकार से प्रभावित करता है।
- शिक्षार्थियों की इतिहास के प्रति रूचि विकसित करना।
- इतिहास सिर्फ इतिहास नहीं है। यह वर्तमान को भी प्रतिबिम्बित करता है। इस पर पाठकों से परिचर्चा करना।
- अधिगमकर्ताओं को वैदिक संस्कृति के रूबरू करवाना।
- पाठकों को पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल की राज्यव्यवस्था, समाज, धर्म, से अवगत करवाया जायेगा।
- छात्रों को उत्तरवैदिक काल की राज्यव्यवस्था, धर्म, साहित्य सामाजिक संस्थाओं, समाज आदि के ज्ञान की जानकारी देना।
- वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर जिज्ञासु पाठकों के बीच चर्चा करना।
- इस अध्याय के माध्यम से अधिगमकर्ताओं में सूझ व सृजनात्मकता विकसित करना।

3-2 ifjp; **(Introduction)**

हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद एक नवीन सभ्यता का उदय हुआ जिसे इतिहास में वैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। अर्थात् सिंधु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिए इस काल को हम 'वैदिक काल' के नाम से जानते है। इस संस्कृति के निर्माता या जनक आर्य थे। इसलिए कभी–2 इसे आर्य सभ्यता भी कहा जाता है। आर्य शब्द का अर्थ है – श्रेष्ठ, उदात्त, अभिजात्य, कुलीन, उत्कृष्ट, स्वतंत्र आदि। आर्यों ने जिन मूल्यों की स्थापना की वे आज भी जीवन के आदर्श माने जाते है। आर्यों को विश्व की सर्वश्रेष्ठ एवं सुसंस्कृत जाति माना जाता है। आर्यों का रंग गोरा, कद लम्बा, नाक लम्बी, शरीर ह्ष्ट–पुष्ट था। हमेशा चेहरे पर लाली दिखाई देती थी। आर्य मूल निवासी कहाँ के थे। वे भारत में कब आए। इस विषय में इतिहासकार एक मत नहीं है। आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन था। भारतीय इतिहास में 1500 ई० पू० से 600 ई० पू० तक के काल–खण्ड को 'वैदिक सभ्यता' की संज्ञा दी जाती है। अध्ययन सुविधा की दृष्टि से वैदिक सभ्यता को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है –

1. पूर्व–वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई०पू०)

2. उत्तर–वैदिक कालीन (1000 ई० पू० से 600 ई० पू०)

(उत्तर वैदिक काल का समय कुछ विद्ववानों ने 1000–500 ई० पू० माना है, लेकिन ज्यादा इतिहासकारों ने 1000 ई० पू० से 600 ई० पू० माना है) यह सर्वमान्य है।

आर्यों का भारत में आगमन कई चरणों में हुआ था। शुरूआत में आर्य सिंधु नदी और सरस्वती नदी के किनारे आकर बस गए थे। इस युग को पूर्व–वैदिक काल (1500–1000 ई० पू०) कहते है। इस काल की जानकारी का स्रोत ऋग्वेद है, इसलिए इस काल खंड को ऋग्वैदिक युग भी कहते हैं। कुछ समय के बाद आर्य लोग आगे बढ़े और गंगा की घाटी में बस गए उन्होंने अपने अधिकार क्षेत्र को पुनर्नामित 'आर्यावर्त' के नाम से पहचान बनाई। जिसका अर्थ है आर्यो का देश। जिसकी समय अवधि (1000–600 ई० पू०) मानी जाती है। जिसे उत्तर–वैदिक कालीन कहा जाता है। इसकी जानकारी हमें यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद से मिलती है। इस अध्याय में हम आगे चलकर वैदिक सभ्यता की विभिन्न गतिविधियों पर विस्तार से परिचर्चा करेंगें।

3-3 d: e[; fcUn **(Main Body of Text)**

3-3-1 **पूर्व वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई० पू०) (Pre Vedic Period (1500-1000 BC)**

3-3-2 jkT;0;oLFkk **(Polity)**

पूर्व वैदिक काल में आर्यो ने राजनीतिक एवं प्रशासनिक इकाई की स्थापना की नींव डाल दी थी। अब कबीले जनों में परिवर्तित होने लगे थे और उनमें वर्चस्व की लड़ाई लड़ी जाने लगी। अब कबीले जनों में परिवर्तितों होने लगे थे और उनमें वर्चस्व की लड़ाई लड़ी जाने लगी। कालानुक्रम में भारत में आर्यो–2 के बीच अनेक लम्बे–2 संघर्ष हुए। ऋग्वेद के अनुसार, इन संघर्षों के बाद सुदास महान् विजेता के रूप में स्थापित हुआ। इन संघर्षों का सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि भारत में एक सुदृढ़ राजनीतिक संगठन की स्थापना हुई।

¼1½ jktuhfrd bdkb;k & ऋग्वैदिक काल में राजनीतिक दृष्टि से पाँच इकाइयाँ प्रचलित थी – 'गृह', 'ग्राम', 'विश', 'जन' और राष्ट्र इनमें से सबसे छोटी इकाई 'गृह' और बड़ी राष्ट्र थी। वे निम्न प्रकार से थी।

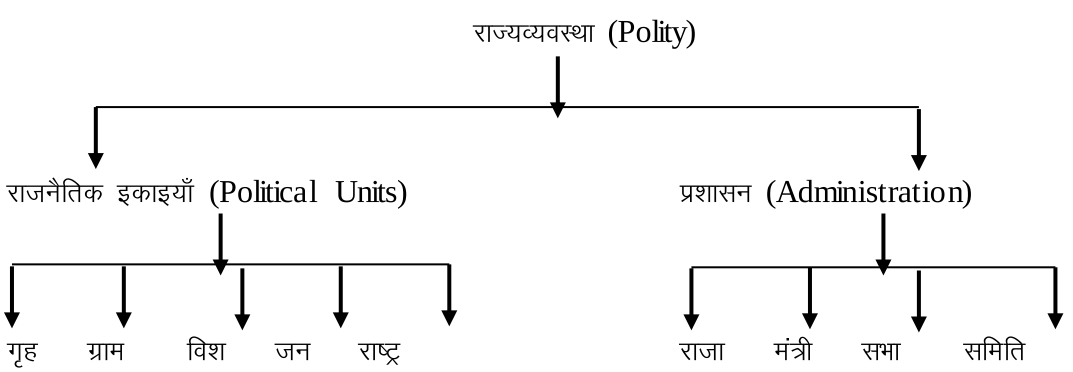

(i) xg & इसे 'कुल' और 'परिवार' भी कहते थे। यह सामाजिक व्यवस्था के साथ–साथ राजनीतिक व्यवस्था की भी लघुत्तम इकाई थी। परविार के प्रमुख को 'कुलप' या 'गृहपति' कहते थे। 'कुलप' या 'गृहपति' का पद वंशानुगत था। प्रकृत्या पितृसत्तात्मक परिवार में पिता की प्रधानता होती थी, किन्तु माताओं को भी पर्याप्त अधिकार प्राप्त होते थे।

(ii) xke **(Gram)** & अनेक ग्रामों के समूहों को मिलाकर 'ग्राम' नामक इकाई का निर्माण होता था। ग्राम–प्रधान को 'ग्रामणी' (Rural) कहते थे। इसकी नियुक्ति का आधार निर्वाचन, मनोनयन अथवा वंश था, इसके संबंध में पर्याप्त जानकारी नहीं मिलती। अनुमानतः 'ग्रामणी' कुटुम्बों में सर्वाधिक सम्माननीय, वयस्क और अनुभवी व्यक्ति होता था। उच्च स्तरीय इकाई द्वारा शासन की प्रमुख प्रशासनिक इकाई के रूप में ग्रामों की रक्षा, व्यवस्था तथा नियंत्रण की उपयुक्त व्यवस्था की जाती थी।

(iii) fn'k & अनेक ग्रामों को मिलाकर 'विश' का निर्माण किया जाता था। 'विश' का प्रधान 'विशपति' कहलाता था।

(iv) tu & अनेक विशों का समूह 'जन' कहलाता था। ऋग्वेद में यादव जन, भरत जन आदि पंच जन का उल्लेख है।

(v) राश्ट्र – एक सम्पूर्ण राज्य के लिए 'राष्ट्र' शब्द प्रयुक्त होता था। ऋग्वेद में राष्ट्र के पर्यायवाची के रूप में 'गण' का भी उल्लेख है। ऐसा अनुमान किया जाता है 'राष्ट्र' और 'गण' शब्द ऋग्वैदिक भारत में संघात्मक शासन प्रणाली का संकेत प्रस्तुत करते है। यह भी माना जाता है कि 'जन' शासन की प्रांतीय इकाई थी, जबकि 'राष्ट्र' केन्द्रीय इकाई।

½2½ Á'kklfud bdkb;k **(Administrative Units)**

(i) jktk **(King)** & ऋग्वेद में इंद्र या वरुण को राजा (सम्राट) के रूप में व्याख्यायित किया गया है। शासन–व्यवस्था का प्रधान राजा या सम्राट ही होता था। ऋग्वेद में राजा को प्रजा का रक्षक (गोपजनस्य) और नगरों पर विजय पाने वाला (पुरन्भेत्ता) कहा गया है। ऋग्वेद में राज्याभिषेक के दौरान दिए जाने वाले आशीर्वाद के मंत्र भी मिलते है। राजा का पद सामान्यतः

वंशानुगत होता था, किन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में जनता, राजवंश या उच्च पदाधिकारी उपयुक्त व्यक्ति को शासक के रूप में चुन लेते थे।

ऋग्वैदिक काल में राजा का प्रमुख कार्य प्रजा की रक्षा, शत्रुओं का नाश करना, धर्म की स्थापना, शास्त्र–सम्मत विधि के अनुसार आचरण करना, निष्पक्ष न्याय तथा दण्ड की व्यवस्था करना और प्रजा की आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति के लिए नियमित प्रयत्न करना था।

(ii) e=h **(Ministers)** & ऋग्वैदिक शासन–व्यवस्था में राजा के बाद 'मंत्री' अथवा 'पुरोहित' का स्थान आता था। मंत्री राजा के पथ–प्रदर्शक, परामर्शदाता, दार्शनिक तथा मित्र होते थे। वशिष्ठ, विश्वामित्र, देवर्षि आदि ऐसे ही पुरोहित थे। ऋग्वेद में मंत्रियों अथवा मंत्रिपरिषद् का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है।

(iii) lHkk **(Sabha)** & ऋग्वेद में 'सभा' का उल्लेख तो किया गया है, किंतु उसकी कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं दी गई है। इसके संगठन अथवा कार्यों के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती। ऐसा माना जाता है कि ऋग्वेद में सम्मेलन कक्ष को 'सभा', सभा के प्रमुख व्यक्ति को 'सभासद' तथा सभा के योग्य व्यक्ति को 'सभेय' कहा जाता था। 'सभा' नामक संस्था की उत्पत्ति ऋग्वेद के उत्तरकाल में हुई और 'सभा' में राज्य के वयोवृद्ध तथा सम्माननीय व्यक्ति सम्मिलित होते थे।

(iv) lfefr **(Samiti)** & यह एक प्रशासनिक इकाई थी और इसमें राज्य के साधारण जन भाग लेते थे। ऐसा समझा जाता है कि यह परामर्शदात्री संस्था थी और राजा समय–समय पर इस संस्था से विचार–विमर्श किया करता था। इस संस्था का प्रमुख कार्य राजा का वरण करना था। वैधानिक रूप से 'समिति' सर्वप्रधान थी और ऋग्वेद में उल्लिखित है कि समस्त प्रजा की उपस्थिति में 'समिति' राजा का निर्वाचन करती थी। 'सभा' तथा 'समिति' राजनैतिक महत्व की संस्थाएं थी और राजा पर अंकुश रखने का कार्य करती थीं।

3-3-3 lekt **(Society)**

प्रायः ऐसा माना जाता है कि ऋग्वैदिक समाज ग्रामीण समाज था, किन्तु आर्यों ने एक ऐसे समाज की स्थापना की थी, जिसका आधार सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक था। इस काल के लोगों का जीवन कबायली जीवन से मिलता–जुलता था, इसलिए वे युद्धप्रिय थे और उनकी रुचियां सामान्य तथा कुछ हद तक असभ्य थीं। परंतु, जिस प्रकार की विकसित सोच वाला रूढ़ि–विमुख व स्वतंत्र विचार वाला समाज ऋग्वैदिककाल में था, वैसा समाज भारत में फिर कभी स्थापित नहीं हो सका। इस काल में न तो जातिगत भेदभाव था, न वर्ग–विभेद था और न ही स्त्रियों को हीनता की भावना से देखा जाता था।

(i) o.kZ&O;oLFkk **(Varna System)** & ऋग्वेद के दसवें एवं अंतिम मण्डल में पुरुष सूक्त में 'विराट पुरुष' द्वारा चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है– 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहु राजन्यः कृतः उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत', अर्थात् विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मणों की, बाहुसे राजन्य (क्षत्रिय) की, उदर से वैश्य की तथा पद से शूद्रों की उत्पत्ति हुई। इसी के आधार पर ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन–अध्यापन (बुद्धिपरक कार्य), क्षत्रियों का कार्य युद्ध (वीरतापूर्ण कार्य), वैश्यों का कार्य व्यवसाय (वस्तुओं का व्यापार) और शूद्रों का कार्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना था। ऋग्वैदिक वर्ण–व्यवस्था जन्मना नहीं कर्मणा थी। ऐसा माना जाता है कि ऋग्वेद में दसवां

मण्डल बाद में जोड़ा गया है, इसलिए ऋग्वैदिक काल के संदर्भ में मुख्य रूप से दो ही जातियों अथवा वर्गों की चर्चा की जाती है, जिन्हें आर्य और अनार्य की संबा दी जाती है।

ऋग्वैदिक काल में शक्ति–सम्पन्न वर्ग 'आर्य' था, जबकि दास, दस्यु (असुर) के लिए 'अनार्य' पद का प्रयोग किया गया है। आर्यों एवं अनार्यों का भेद केवल सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं था, अपितु इनमें शारीरिक भेद भी था। ऋग्वेद के अनेक संदर्भों से ज्ञात होता है कि धर्म, भाषा, रीति–रिवाज तथा सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी आर्यों एवं अनार्यों के बीच व्यापक भेदभाव था।

(ii) ifjokj **(Family)** & ऋग्वैदिक समाज निश्चय ही पितृसत्तात्मक था, परंतु नारी को मातृरूप में पर्याप्त महत्त्व प्राप्त था। परिवार का ज्येष्ठ पुरुष–सदस्य प्रधान होता था, जिसे 'गृहपति' या 'कुलप' कहा जाता था। 'गृहपति' का पद वंशानुगत होता था तथा परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे। 'गृहपति की पत्नी' को भी सम्मान मिलता था।

सामान्यतः पुत्र, पिता की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता था, किंतु कुछ परिस्थितियों में पैतृक सम्पत्ति का विभाजन भी किया जाता था। पिता की सम्पत्ति पर पुत्री का अधिकार नहीं होता था। संयुक्त परिवार प्रणाली होने के कारण उत्तरदायित्व भी समान तथा सामूहिक था। परिवार के सम्मान, पारिवारिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों तथा मान्यताओं के पालन में समस्त कुटुम्ब तत्पर रहता था।

(iii) fL=;k **(Women)** & ऋग्वैदिक समाज में नारियों की भी महत्त्वपूर्ण भागीदारी थी। पत्नी अपने पति के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थी। ऋग्वेद के मंत्रों में कहा गया है कि 'पत्नी ही गृह है, वही गृहस्थी है तथा उसी में आनन्द समाहित है।' इस काल में पुत्र और पुत्री के बीच कोई विशेष भेदभाव का उल्लेख तो नहीं हैं, किंतु इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि उनकी आकांक्षा रहती थी कि 'उनके घर संतानों से परिपूर्ण हों और परिवार में वीर पुत्रों की कमी नहीं हो।' इस काल खण्ड में नारियों को राजनीति में भी भाग लेने का अधिकार था और शिक्षा प्राप्ति में भी उन्हें कोई बाधा नहीं थी। ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं का निर्माण विदुषियों ने किया था। ऋग्वेद में विष्पला नामक एक महिला–योद्धा का उल्लेख भी मिलता है।

(iv) [kkuiku **(Diet)** & वैदिक आर्य भोजन के रूप में मांसाहार और शाकाहार दोनों को पसंद करते थे। अजावयः – भेड़ और बकरी मांस के लिए उपयुक्त माने जाते थे और इन्हें ही यज्ञीय पशु भी कहा जाता था। ऋग्वेद में गाय 'अघन्या' – नहीं मारे जाने योग्य, कही गयी है। ऋग्वैदिक काल में सामान्यतः शाकाहार ही

प्रचलित था, विशिष्ट अवसरों पर ही मांसाहार का प्रयोग किया जाता था। खाद्यान्न के रूप में गेहूं, जौ, धान, उड़द, मूंग आदि सामान्य रूप से प्रचलित थे।

ऋग्वैदिक काल में सुरापान निन्दित था, निषिद्ध नहीं। इस काल में निश्चित रूप से सुरापान किया जाता था। सुरापान विशेष रूप से यज्ञादि के अवसर पर किया जाता था। सुरा देवताओं को भी अर्पित की जाती थी। ऋग्वेद के नवें मण्डल तथा 6 अन्य सूक्तों के सोम की स्तुति की गई है। सोम–रस मूजवंत पर्वत पर अथवा कीकटों के देश में उत्पन्न होता था। ऋग्वेद में सोम–रस की मादकता तथा उसकी आनंददायिनी शक्ति का वर्णन मिलता है।

(v) igukok **(Cloth)** & आय जन अधोवस्त्र, उत्तरीय तथा अधिवास धारण करते थे। वस्त्रों का निर्माण सूत, ऊन तथा मृगचर्म से होता था। पेशस्कारी नामक स्त्रियाँ सूई द्वारा कढ़ाई करके वस्त्र बनाती थीं। ऋग्वेद में सिर पर धारण की जाने वाली पगड़ी का भी उल्लेख मिलता है, जिसे 'ऊष्णीस' कहते थे।

आर्य विशेषकर नारियां श्रृंगार–प्रिय थीं। वेणी स्त्री की सुंदरता का प्रतीक मानी जाती थी। श्रृंगार विविध प्रकार के फूलों तथा आभूषणों द्वारा किया जाता था। आर्य पुरुष भी लंबे बाल रखते थे। दाढ़ी को '"मश्रु' कहा जाता था और क्षौर कर्म करने वाले नाई को 'वप्ता' कहा जाता था।

इस काल में स्त्री तथा पुरुष समाज रूप से आभूषण–प्रिय थे। कानों में कर्णशोभन, गले में निष्क, हाथों में कड़े, पैरों में खडुवे, छाती पर सुनहले पदक, गली में मणियां आदि इस काल के प्रमुख आभूषण थे। ऋग्वेद में माथे के टीके के रूप में 'क्रम्ब', भुजबन्ध, केयूर, नुपुर, कंकड़, मुद्रिका, खेदि आदि आभूषणों का भी उल्लेख मिलता है। इस काल में सोना, चांदी, कीमती पत्थर, हाथीदांत, मोती–मूंगा आदि का प्रयोग आभूषण–निर्माण में होता था।

वर्ण–व्यवस्था

(Varna-System)

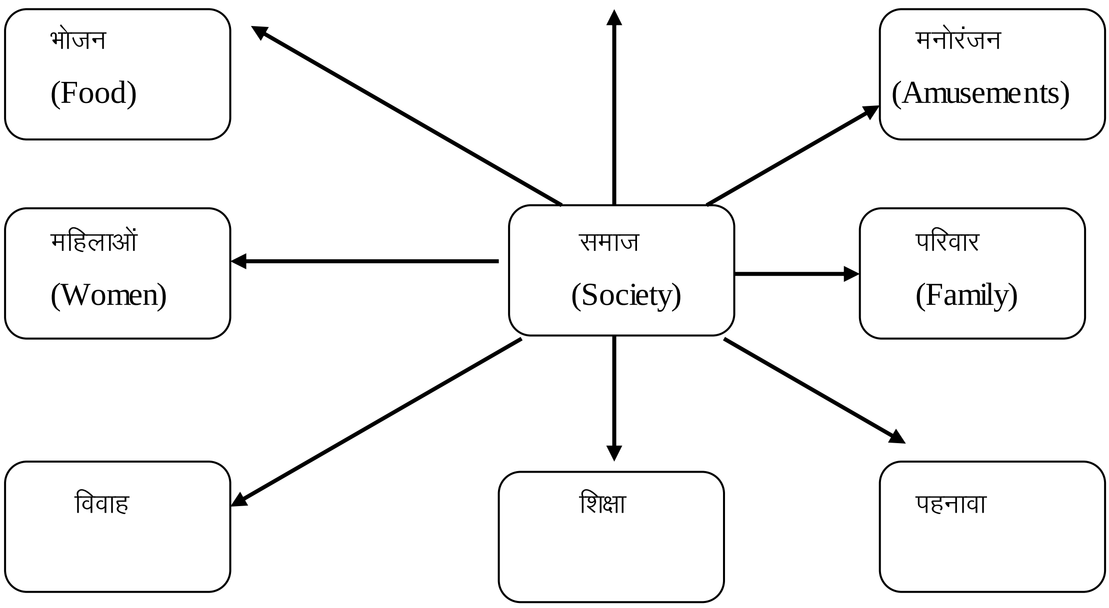

(Marriage) (Education) (Clothing)

(vi) Hkkstu **(Food)** & ऋग्वैदिक काल में शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे। शाकाहारी भोजन में आर्य गेहूँ, जौ आदि की रोटियाँ बनाकर खाते थे। दूध, घी, मक्खन आदि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करते थे। इसके साथ–साथ वे विभिन्न प्रकार के फलों एवं सब्जियों का प्रयोग भी करते थे। माँसाहारी भोजन में भेड़ और बकरी आदि का माँस खाते थे लेकिन गाय का वध निषिद्ध था। आर्य मधु तथा कुछ अन्य पेय पदार्थों का भी सेवन करते थे। सोमरस इनका प्रिय पेय पदार्थ था, जिसका प्रयोग धार्मिक अवसरों पर करते थे।

(vii) f'k{kk **(Education)** & महिलाओं पुरुषों दोनों के लिए शिक्षा ही समुचित व्यवस्था थी। शिक्षा कार्य गुरूकुल में किया जाता था। शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। स्मरण शक्ति पर विशेष बल दिया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना था।

(viii) fookg **(Marriage)** & वैदिक काल में विवाह को एक पवित्र संस्कार माना जाता था। बालिकाएं अपने पिता की आज्ञानुसार विवाह करती थीं, परन्तु साथ ही बालिकाएँ अपने पति को चुनने के लिए स्वतंत्र भी थी। साधारण वर्ग में एक पत्नी तथा उच्च वर्ग में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी। विवाह सजातीय तथा अन्तर्जातीय दोनों प्रकार से होते थे कुछ साक्ष्य एवं उल्लेख आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्याओं के भी मिले है इन कन्याओं को अमाजू कहा जाता था। पुनर्विवाह का भी प्रचलन था, विधवा महिला अपने देवर व अन्य किसी पुरुष से विवाह कर सकती थी। लेकिन बाल विवाह का कोई भी उल्लेख नहीं मिलता है। विवाह के दो मुख्य संस्कार थे– 'पाणिग्रहण' और 'अग्नि परिक्रमा'।

3-3-4 /keZ **(Religion)**

ऋग्वैदिक काल में अनेक प्रकार के देवी–देवताओं एवं प्राकृतिक शक्तियों की आराधना की जाती थी। ऋग्वेद में कुल 33 देवता माने जाते है। इनमें से तीन सबसे अधिक महत्वपूर्ण थे इन्द्र, अग्नि तथा सोम है। इन्द्र देवता को ऋग्वैदिक युग सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इन्द्रके 250 सूक्त है। इन्द्र को वर्षा का देवता भी माना गया है। अग्नि के 200 तथा सोम के लिए 100 से अधिक मंत्र रचे गए है। अग्नि की भूमिका जंगलों को जलाने, खाना पकाने आदि कार्यों में थी। सोम को वनस्पतियों का अधिपति माना गया है तथा एक मादक रस सोमरस इसी के नाम पर पड़ा। पृथ्वी को जगतमाता कहा जाता है। सूर्य की पूजा काफी भक्ति भाव से की जाती थी। रूद्र उग्र देवता थे। उग्ररूप में रूद्र थे तथा योगी रूप में शिव थे। स्तुति, सूक्ति, स्तवत प्रशंसा आदि से देवताओं को प्रसन्न किया जाता था। देवताओं की पूजन–प्रणाली में स्तुति अथवा प्रार्थना सबसे सरल, सुबोध और सुविधाजनक पद्धति थी। ऋग्वेद में देवताओं के लिए पवित्र आचरण का आग्रहहै। ऋग्वेद देवताओं के चार प्रकार बताए गए है – दिव्य (स्वर्गीय देवता), पार्थिव (पृथ्वी के देवता), गोजात (गाय से उत्पन्न या संबद्ध देवता) अप्य (जल से उत्पन्न या संबंद्ध देवता)। वरूण को जल या समुद्र का देवता माना गया है। इसे ऋत् अर्थात् प्राकृतिक संतुलन का रक्षक कहा गया

है। मारूत आँधी के देवता के रूप में जाने जाते थे। देवताओं में कुछ देवियाँ, जैसे अदिति और ऊषा, जो प्रायत के प्रतिरूप है। सामान्यतः प्रत्येक कबीले या गोत्र का अलग देवता होता था।

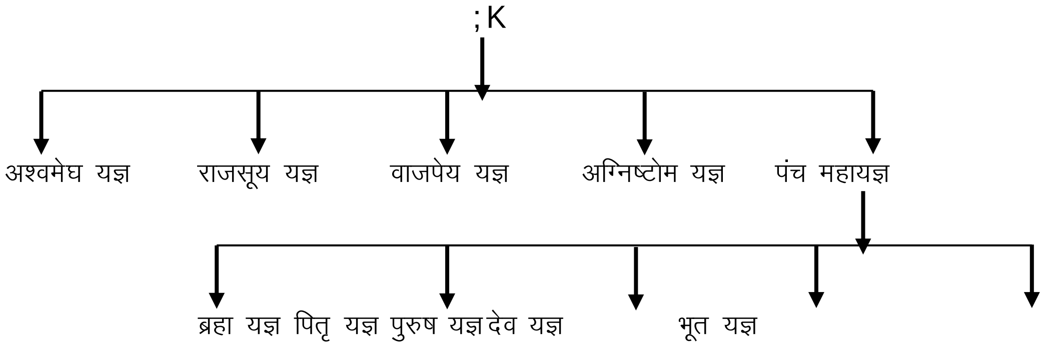

(1) v'oe?k ;K & यह यज्ञ राजा के प्रभुत्व को चुनौती था। युवराज के राज्याभिषेक के बाद अन्य राज्यों को चुनौती देते हुए एक घोड़ा छोड़ दिया जाता था। यह घोड़ा जिन–2 राज्यों से होकर गुजरता था उसे राजा के अधीन मान लिया जाता था। यदि कोई शासक इसका विरोध करता तो उसे घोड़े के स्वामी नरेश से युद्ध करना पड़ा था।

(2) jkt l; ;K & यह यज्ञ किसी राजा के राज्याभिषेक के लिए आयोजित शक्ति का प्रदर्शन करना था।

(3) okt i; ;K & यह एक गोत्र के राजाओं के मध्य रथदौड़ भी इसका उद्देश्य शौर्य एवं शक्ति का प्रदर्शन करना था।

(4) vfXu"Vke ;K & इस यज्ञ में सोम रस का पान किया जाता था तथा अग्नि में पशु बलि चढ़ाई जाती थी।

(5) ipegk ;K & ब्रहा यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृयज्ञ, देव यज्ञ एवं भूत यज्ञ।

(i) cgk ;K & इसमें वेदों का पाठ कर ब्रहा की पूजा एवं स्मरण किया जाता था।

(ii) fir ;K & इसमें सामाजिक श्राद्धों तथा तर्पण द्वारा पितरों की पूजा की जाती थी।

(iii) u;K ;K & अतिथि सत्कार करके मनुष्यों की पूजा की जाती थी।

(iv) no ;K & इसमें देवताओं को प्रसन्न करने हेतु पवित्र अग्नि में घी एवं सुगंधित द्रव्यों का हवन किया जाता था।

(v) Hkr ;K & भूतों को प्रसन्न करने हेतु भोजन अन्न या अन्य पदार्थों द्वारा भूतों की पूजा की जाती थी।

(स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन राजीव अहीर, नई दिल्ली 2018 – P.P. 28-30)

_Xofnd dkyhu ufn;k

आधुनिक नाम	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	प्राचीन नाम
• झेलम	वितस्ता	• सोहन	सुषोमा
• काबुल	कुभा	• घग्घर/रक्षी/चितंग	सरस्वती दृशद्धती
• चिनाव	आस्किनी	• सिंध	सिंधु
• कुर्रम	क्रुभु	• स्वात	सुवस्तु
• मरूवर्मन	मरूद्वृधा	• गोपल	गोमती
• घग्घर	दृषद्वती	• सतलज	शतुद्रि
• व्यास	विपाशा	• श्रावी	परुण्णी

_Xoifnd ;qx dh nsfo;k

• पृथ्वी → जगत की जननी या माता	• इला → आराधना की देवी
• ऊषा → प्रातः काल के देवी	• सिंधु → नदी देवी
• सूर्या → सूर्य देवता की पुत्री	• पुरापाघि → उर्वरता की देवी
• रात्री → रात की देवी	• आप → जल की देवी
• सावित्री → सूर्य को प्रेरणा प्रदान करने वाली	• अरण्यानी → वन देवी
• दिशान → वनस्पतिदेवी	

3-4 **(Further Main Body of the Text)**

3-4-1 **उत्तर वैदिक काल (1000– 600 ई० पू०) Post Later Vedic Period (1000-600 BC) :-**

भारतीय इतिहास में उस काल को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों एवं उपनिषद् की रचना हुई को उत्तर वैदिक काल (1000से 600 ई० पू०) कहा जाता है।

3-4-1-1 jkT;0;oLFkk **(Polity):-**

उतर वैदिक काल में 'राजतंत्र' ही शासन तन्त्र का आधार था, कही–2 पर गणराज्यों के उदाहरण भी मिले है।

(1) tuin ;k jkT; (Janapada Or Kingdom) & उत्तरवैदिक काल में कबीलों से जनपद बन जाने के कारण राजनैतिक गतिविधियां तेज हो गई। साम्राज्यवादी तथा सामंतवादी दोनों प्रकार की प्रवृतियां प्रबल हुई। उत्तरवैदिक काल में राजत्व का दैवी सिद्धांत स्पष्ट हो गया और स्त्रियों की राजनैतिक गतिविधियां कम हुई। इसी काल में 'पुरु' एवं 'भरत' जनपदों को मिलाने से 'कुरू' जनपदों को मिलाने से 'पंचाल' जनपद का निर्माण हुआ।

उत्तरवैदिक काल में राज्य का आकार बढ़ने से राजा के पद का महत्त्व भी बढ़ा। अपने पद की प्रतिष्ठा के लिए राजा इस काल में 'राजसूय', 'अश्वमेघ' एवं 'वाजपेय' जैसे विशाल यज्ञों का आयोजन करता था। ज्यों–ज्यों साम्राज्यवाद का विस्तार हुआ, त्यों–त्यों विभिन्न दिशाओं के शासकों ने अलग–अलग उपाधियों को धारण करना शुरू कर दिया। पूर्व के राजा 'सम्राट' की, पश्चिम के राजा 'स्वराट्' की, उत्तर के राजा 'विराट्' की दक्षिण के राजा 'भोज' की और मध्यदेश के राजा 'राजा' की उपाधि धारण करते थे।

उत्तरवैदिक काल निम्नलिखित राज्य (State) थे –

(i) x/kkj **(Gandhara)** & पश्चिमी पंजाब के रावलपिण्डी और उत्तरी पश्चिमी सीमा के पेशावर जिले में स्थित इस राज्य के दो प्रमुख नगर थे – तक्षशिला और पुष्कलावर्त्त (पुष्कलावती)।

(ii) dd ; **(Kaikay)** & गंधार राज्य के पूर्व में व्यास नदी के तट पर केकय राज्य था। विदेह के राजा जनक के समय अश्वपति इस राज्य का राजा था।

(iii) en **(Madra)** & कश्मीर मं उत्तर मद्र, कांगड़ा के समीप पूर्वी मद्र और अमृतसर के आसपास दक्षिणी मद राज्य था।

(iv) m'khuxj **(Ushinagar)** & अनुमानतः यह वर्तमान उत्तर प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र में था।

(v) ikpky **(Panchala)** & आधुनिक उत्तर प्रदेश के बरेली, बदायूं, फर्रुखाबाद के जिले प्राचीन पांचाल थे। विदेह के राजा जनक के समय प्रवाहण जावलि इस राज्य के राजा थे। आरंभ में यह राज्य राजतंत्र था। छठी ई० पू० में यहाँ पर गणतंत्र की स्थापना हो गई।

(vi) dk'kh **(Kashi)** & यह राज्य पहले बहुत शक्तिशाली था। इस राज्य की राजधानी वाराणसी थी। अजातशत्रु यहां का (जनक के समकालीन) राजा था।

(vii) dk'ky **(Koshala)** & इस राज्य की राजधानी अयोध्या थी। इसके पूर्व में विदेह राज्य था।

(2) jktk **(King)** & सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राहाण में राजा की उत्पत्ति का सिद्धान्त मिलता है। राजत्व का दैवी सिद्धांत इसी कालखण्ड में स्थापित हुआ। राजा के पदारोहण के लिए जनता की पूर्व स्वीकृति आवश्यक थी (अथर्ववेद के अनुसार)। राजा का पद वंशानुगत होता था और उस पर धर्म का अंकुश होता था। उत्तरवैदिक काल में राजा स्वेच्छाचारी हो गया था –वह किसी भी व्यक्ति को दण्ड दे सकता था। प्रजा से कर वसूल कर सकता था तथा किसी भी कर्मचारी को अपदस्थ कर सकता था। वह साम्राज्य का विस्तार यश और कीर्ति का प्रसार करने के

लिए भी स्वच्छंद था। राज्याभिषेक पुरोहित द्वारा सौ छिद्रो वाले स्वर्ण पात्र से और 17 प्रकार के जल से किया जाता था।

(3) Á'kklfud inkf/kdkjh **(Administrative Officer)** & उत्तरवैदिक काल में आर्यों के जीवन में पूर्ण रूप से स्थिरता आ गई थी। अब व्यवस्थित शासन–प्रणाली की आवश्यकता पड़ी। ऋग्वैदिक काल में प्रशासनिक कार्यों में राजा को सहयोग देने के लिए मुख्य रूप से तीन ही अधिकारी थे – पुरोहित, सेनानी और ग्रामीण। इसी काल में प्रशासनिक पदाधिकारियोंको 'रत्निन' कहते थे। इस काल में भी पुरोहित को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। उसके बाद सेनापति, संगृहीतृ (कोषाध्यक्ष), भागदुध (कर वसूलने वाला अधिकारी), सूत अथवा भार, प्रतिहारी, अक्षवाप (जूआ आदि पर निगरानी रखने वाला), क्षत्रि (घरेलू कार्य का अध्यक्ष), पालागल (दूत या संदेशवाहक) आदि मुख्य पदाधिकारी थे। उत्तरवैदिक काल में ग्रामीणी के कार्यों में भी वृद्धि हुई। ऋग्वैदिक काल में वह ग्राम–स्तर पर केवल सैनिक कार्य करता था, किंतु अब वह ग्राम के लोगों से कर एकत्रित करने तथा स्थानीय स्तर पर मुख्य न्यायाधीश के कार्य भी करने लगा था। इन अधिकारियों के अतिरिक्त अंगरक्षक, धर्माध्यक्ष, दौवारिक (राजमहल के द्वार का प्रमुख अधिकारी), परिचारक, वृन्दाध्यक्ष, अश्वाध्यक्ष आदि का भी उल्लेख मिलता है।

उत्तरवैदिक काल में सबसे निचले स्तर का अधिकारी 'ग्राम अधिकृत' था। इस काल में स्थानीय प्रशासकों के लिए 'रथपति', 'शतपति' जैसे शब्दों का उपयोग हुआ है। 'उग्र' एवं 'जीवग्रह' इस काल में पुलिस एवं गुप्तचर अधिकारी थे।

(4) Á'kklfud laLFkk,¡ **(Administrative Institutions)** & अथर्ववेद में 'सभा' (Sabha) एवं 'समिति' को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है। राजा प्रार्थना करता है कि सभा एवं समिति मेरे ऊपर कृपा करें। सभा एवं समिति की स्थापना ऋग्वैदिक काल में ही हो चुकी थी। सभा, ऋग्वैदिक युग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संस्था थी। उत्तरवैदिक काल में भी सभा महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्था बनी रही।

उत्तरवैदिक काल में 'समिति' सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में स्थापित हो गयी। इस काल में समिति का राजा पर पर्याप्त नियंत्रण था। अथर्ववेद में समिति को 'अरिष्टा' कहा गया है। समिति सामान्यतः युद्ध, संधि, आय–व्यय तथा सार्वजनिक कार्यों को देखती थी। भूमि, द्यूतक्रीड़ा, ऋण, दायभाग, चोरी, चोट तथा हत्या के मामलों में न्याय का कार्य भी समिति (Samiti) करती थी।

(5) U;k; O;oLFkk **(Justice System or Nyay System)** & उत्तरवैदिक काल में न्याय–व्यवस्था भी सुव्यवस्थित हो गई। मुख्य न्यायाधीश राजा स्वयं होता था। ब्राह्मण की हत्या को उस समय सबसे बड़ा अपराध माना जाता था। ब्राह्मण को दण्डमुक्त रखा गया था। क्षत्रिय की हत्या के लिए 1000 गायें, वैश्य की हत्या के लिए 100 गायें तथा शूद्र की हत्या करने पर 10 गायें अपराधी को मृतक के परिजन को देने पड़ते थे। जबकि प्रत्येक हत्या के लिए अपराधी को सरकार को एक बैल देना होता था। हाथ–पांव काट देने का दण्ड दिया जाता था।

3-4-1-2 lekt **(Society):-**

1- ifjokj **(Family)** & उत्तरवैदिक काल में ग्रामीण समाज का नागरीय समाज में परिवर्तन होने लगा था। परिवार पितृ प्रधान होते थे। पैतृक सम्पत्ति संयुक्त परिवार की निधि होती थी। अपने जीवनकाल में ही पिता अपने पुत्रों के मध्य सम्पत्ति का विभाजन कर देता था।

2- Hkkstu **(Food)** & उत्तरवैदिक आर्य खानपान के विशेष प्रेमी थे। उनके खाद्य व्यंजनों में 'क्षीरौदन' (खीर), 'तिलोदन', 'मुदगोदन'(लड्डू), 'घृतोदन', 'पंक्ति', 'करम्भ', 'पुरोपाष', 'युवगु', 'लाज' तथा 'सक्तु' प्रमुख थे। शहद का उपयोग किया जाता था और विशेष अवसरों पर सुरापान भी किया जाता था।

3- efgyk,¡ **(Women)** & उत्तरवैदिक काल में रचे गए ब्राह्मण ग्रंथों में स्त्रियों की निन्दा के उल्लेख यह बताते हैं कि इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। इस काल में स्त्रियों की राजनीतिक गतिविधियां न के बराबर हो गई थी इनको शिक्षा से दूर रखा जाने लगा।

4- igukok ;k o:'k&Hk"kk **(Dress/Clothing)** & उत्तरवैदिक काल में ऋग्वैदिक काल के तीन प्रमुख वस्त्रों – अधोवस्त्र, उत्तरीय तथा अधिवास के साथ चीर, चेबर तथा चेल नामक वस्त्रों का प्रचलन भी हो गया। ऋषि तथा ब्रह्मचारी पशुधर्म का उपयोग करते थे। निष्क, प्रवर्न, प्रकाश, विमुक्ता आदि इस काल की स्त्रियों के प्रमुख आभूषण थे।

5- xks=&O;oLFkk **(Gotra System)** & 'गोत्र' की संकल्पना ऋग्वैदिक काल में भी थी। संस्था के रूप में 'गोत्र' का उल्लेख प्रथम अथर्ववेद में मिलता है। गोत्र का शाब्दिक अर्थ होता है 'गोष्ठ'। गोष्ठ उस स्थल को कहा जाता था जहां सम्पूर्ण कुल की गो सम्पत्ति एक साथ रखी जाती थी। उत्तरवैदिक काल में 'गोत्र' सामुदायिक जीवन का आधार हो गया। एक ही 'गोत्र' के महिला एवं पुरुष का विवाह नहीं हो सकता था।

6- fookg ÁFkk **(Marriage)** & उत्तरवैदिक काल में सामाजिक दृष्टि से विवाह का बड़ा महत्त्व था। अविवाहित व्यक्ति को यज्ञ का अधिकार प्राप्त नहीं था। वैदिक ग्रंथों में उल्लेख हुआ है – 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्'। जिसका अर्थ है कन्या वर की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करती थी। विवाह को धार्मिक महत्त्व भी प्राप्त था और दहेज प्रथा का अभाव था।

उत्तरवैदिक काल में जाति–प्रथा कठिन नहीं हुई थी, अंतरजातीय विवाह प्रतिबंधित नहीं था। ऋग्वेद में भाई–बहन, पिता–पुत्री आदि के विवाहों का निषेध है। उत्तरवैदिक काल बहुविवाह भी प्रचलित था। वैदिक साहित्य में राजाओं की अनेक पत्नियों का उल्लेख मिलता है। मैत्रायणी संहिता में मनु की दस पत्नियों का उल्लेख है।

ऐतरेय ब्राह्मण में ऐसा उल्लेख है कि पुरुष एक ही समय में अनेक पत्नियां रख सकता है, किंतु एक स्त्री एक ही समय में अनेक पति नहीं रख सकती। इससे ऐसा आभास मिलता है कि भिन्न–भिन्न समयों में महिलाओं के अलग–अलग पति हो सकते थे। अथर्ववेद में 'दिधुषू' शब्द से ज्ञात होता है कि विधवा अपने देवर से विवाह करती थी, जबकि 'परपूर्वी' शब्द से ज्ञात होता है कि स्त्री दूसरा विवाह कर सकती थी।

7- vkJe&0;oLFkk **(Ashram System)** & उत्तरवैदिक काल में आश्रम ने व्यवस्थाका स्वरूप ले लिया और आरंभ में तीन आश्रम प्रचलित हुए – 'ब्रह्मचर्य गृहस्थ' एवं 'वानप्रस्थ'। आश्रम–व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख छान्दोग्योपनिषद् में मिलता है। उत्तरवैदिक काल के अंत में आकर चौथा आश्रम भी प्रचलित हो गया जिसे 'सन्यास' कहते है। सर्वप्रथम 'जाबालोपनिषद्' में चार आश्रमों का वर्णन मिलता है एवं 'सन्यास' आश्रम को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है।

(स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन राजीव अहीर, नई दिल्ली 2018 – P.P. 33-34)

3-4-1-3 Nk= fØ;kdyki **(Student Activity)**

Á- iwoZ ofnd dky ij ,d laf{kIr fVIi.kh fyf[k,A **(Write a short note on the Pre-vedic Period).**

3-4-1-4 /keZ **(Religion)**

धर्म शब्द संस्कृतकी धृ धातु से बना है का प्रयोग 'धारण करना' इस अर्थ में होता है कि इस प्रकार धर्म वह है जो व्यक्ति धारण करे। "धारणाद्धर्मितया है, एडवर्ड के अनुसार, "धर्म आध्यात्मिक शक्तियों में विश्वास है।" (Religion is the belief in spritiualbeings)

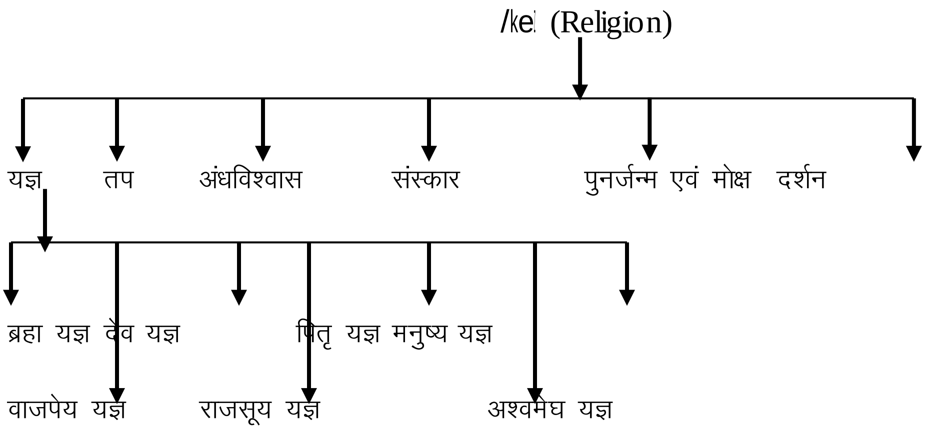

(1) ;K & उत्तर वैदिककाल में धर्म का मुख्य आधार यज्ञ था। इस काल में यज्ञों में पशुओं की बलि भी बड़े पैमाने पर दी जाती थी। गृह सूत्र और श्रौत सूत्र से तत्कालीन यज्ञ विधि विधान की जानकारी मिलती है। उत्तरवैदिक काल में सामान्यतः शूद्रों को यज्ञों में शामिल नहीं किया जाता था लेकिन कुछ उदाहरण मिलते हैं कि इनकी

सहभागिता यज्ञों में थी। देवता, ऋषि, पितृ, पशु आदि के लिए यज्ञ किया जाता था। इस काल में यज्ञ ब्राह्मण ही करा सकते थे।

(i) okti; ;K & यह यज्ञ राजा अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए करते थे। यह यज्ञ सोम की प्रार्थना के लिए किया जाता था और यह यज्ञ 17 दिनों तक चलता था।

(ii) cgk ;K & प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता।

(iii) jktl; ;K & जो यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के समय किया जाता था उसे राजसूय यज्ञ कहा जाता था। इस यज्ञ से राजा की शक्ति को प्रजा में प्रदर्शित किया जाता था।

(iv) nso ;K & देवताओं के प्रति प्रार्थना की जाती थी।

(v) firK; & पितरों का तर्पण किया जाता था।

(vi) v'oes?k ;K & यह उत्तरवैदिक काल का महत्वपूर्ण एवं कठिन यज्ञ था। इस यज्ञ की तैयारी के लिए 10–12 माह का लगभग समय लगता था और यह तीन दिन तक चलता था। इस यज्ञ में एक घोड़ा छोड़ा जाता था। यह घोड़ा जहाँ तक जाता वहाँ तक राजा का साम्राज्य समझा जाता था। घोड़े का प्रतिरोध करने वाले को राजा के साथ युद्ध करना पड़ता था।

(vii) euq"; ;K & अतिथि सत्कार के लिए।

(2) ri & इस युग में तप को अधिक महत्त्व दिया जाता था ऐसा माना जाता था कि तप के आधार दैवी शक्ति प्राप्त की जा सकती है। तैत्तिरीय उपनिषद में यह उल्लेख मिलता है कि वरूण अपने पुत्र को कहता है कि तप के आधार पर ब्रह्म मिल सकते है इसलिए तप करो।

(3) va/kfo'okl & उत्तरवैदिक काल में अंधविश्वास की प्रवृत्ति थी। आर्य जादू–टोने में विश्वास करते थे। इसकी जानकारी अर्थर्ववेद में मिलती है।

(4) iqutZUe ,oa eks{k & उत्तरवैदिक काल में पुनर्जन्म, मोक्ष तथा कर्मके सिद्धान्तों की स्पष्ट रूप से स्थापना हुई। उनका मानना था जो मनुष्य जीवन में ब्रहाज्ञान प्राप्त कर लेता है बाद में मृत्यु के बाद ब्रहा तत्व में विलीन हो जाता है और वह जन्म–मरण चक्र से मुक्त हो जाता है।

(5) n'kZu & इस काल में लोगों के दार्शनिक विचारों में परिवर्तन आया। उत्तरवैदिक काल में रचित उपनिषद के अध्यात्मिक साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त है। इस काल में ब्रहा और आत्मा की एकता पर विशेष बल दिया गया है। उपनिषद काल में 'ब्रह्म' एक जीव–स्वरूप, 'आत्मा' एवं परमात्मा के संबंध, मोक्ष, माया आदि। अर्थात् ब्रह्म को सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक तथा अन्तर्यामी स्वीकार किया, आत्मा–परमात्मा, स्वर्ग–नरक, माया–मोक्ष और कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन इसी काल में हुआ।

e[; n'ku ,o jpf;rk

n'ku	jpf;rk@iorld
चार्वाक (भौतिकवादी)	चार्वाक
सांख्य	कपिल
योग	पंतजलि (योगसूत्र)
न्याय	गौतम (न्यायसूत्र)
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा (वेदांत)	बादरायण (ब्रहासूत्र)
वैशेषिक	कणाद या उलूक

(6) lLdkj (Sanskar) & संस्कार शब्द के अनेक अर्थ हैं शुद्धि, आत्म–सृजन का गुण, यथा पूर्ण करना, स्मृति चिह्न आदि ऐसा विश्वास किया जाता है, कि संस्कारों का उदय वैदिककाल अथवा इससे पूर्व हो चुका था संस्कारों का शास्त्रीय विवेचन सर्वप्रथम 'वृहदारण्यकोपनिषद' से प्राप्त होता है विभिन्न ग्रंथों में संस्कारों की संख्या अलग–2 बताई गई है, किन्तु अधिकांशत विद्धानों ने सोलह संस्कारों को मान्यता प्रदान की है प्राचीन भारतीय समाज में प्रत्येक व्यक्ति इन सोलह संस्कारों को पूर्ण करता था।

16 संस्कारों का विवरण स्मृति ग्रंथों से मिलता है –

1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयन 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकरण 9. कर्ण भेद 10. विद्यारम्भ 11. उपनयन 12. वेदारम्भ 13. केशन्त गोदान 14. समावर्तन 15. विवाह 16. उन्तेष्टि (अन्त्येष्टि)

(i) xHkk/kku lLdkj & एक पुरुष जिस क्रिया के द्वारा स्त्री में अपना वीर्य स्थापित करता है उसे गर्भाधान संस्कार कहा जाता है। शौनक मुनि ने इस संस्कार की परिभाषा देते हुए कहा है – "जिस कर्म की पूर्ति से स्त्री प्रदत्त शुक्र धारण करती है, उसे गर्भाधान कहते है। इस सस्कार के समय पुरुष और स्त्री की कम–से–कम क्रमशः 25 और 16 वर्ष की आयु होनी चाहिए। वेदों में गर्भ की स्थापनाओं के लिए अनेक प्रार्थनाओं का उल्लेख मिलता है। प्राचीनकाल भारतीय समाज में गर्भाधान करना पुरुष का परम आवश्यक कर्तव्य समझा जाता था। इस संस्कार के लिए रात्रि तथा उचित नक्षत्र का ध्यान रखना अति आवश्यक था। स्त्री के ऋतुकाल की चौथी रात्रि से लेकर सोलहवीं रात्रि तक का समय गर्भाधान संस्कार के लिए उपयुक्त माना जाता था। यह संस्कार प्रथम गर्भाधारण के समय ही किया जाता था। बार–बार नहीं, यह संस्कार श्रेष्ठ सन्तानोत्पत्ति हेतु किया जाता था।

(ii) i¡lou lLdkj & स्त्री द्वारा गर्भधारण करने के तीसरे, चौथे अथवा आठवें माह में पुत्र प्राप्ति की इच्छा हेतु यह संस्कार दिया जाता था। संस्कार सम्पन्न होने के समय गर्भवती स्त्री को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने होते थे तथा उपवास रखना होता था। इसकी नासिका के दाहिने रन्ध्र में इस उद्देश्य से वटवृक्ष का रस दिया जाता था। जिससे उसे गर्भकाल में किसी प्रकार का कष्ट न हो, स्त्री तथा पुरुष द्वारा यह भी प्रतिज्ञा की जाती थी कि वे ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेंगे जिससे गर्भ को किसी प्रकार की हानि पहुँचे।

(iii) lheUrkUu;u lLdkj & यह संस्कार गर्भवती स्त्री के गर्भ की रक्षा के लिए किया जाता था। ताकि रक्तपान करने वाली राक्षसनियाँ गर्भ को हानि न पहुँचा सके। आश्वलायन गृहसूत्र के अनुसार यह संस्कार गर्भ के चौथे अथवा पाँचवें माह में किया जाता था। अलबरूनी ने भी इसका समर्थन किया है। स्मृतियों के अनुसार यह संस्कार गर्भधारण के छठे अथवा आठवें माह में किया जाता था। इस संस्कार में स्त्री के केशों को ऊपर उठाकर सँवारा जाता था। इस संस्कार के द्वारा स्त्री के गर्भधारण की सूचना दी जाती थी। इस प्रकार ये तीन संस्कार शि”ु के जन्म से पूर्व किए जाते थे।

(iv) tkrde lLdkj & शि”ु के जन्म के उपरान्त यह संस्कार किया जाता था। इस संस्कार के समय पिता नवजात शिशु को अपनी अंगुली से मधु अथवा घृत चटाता था तथा उसके कान में मेघाजनन का मंत्र पढ़ता था तथा उसे आशीर्वाद देता था। इस संस्कार में नवजात शि”ु के लिए बल, बुद्धि तथा दीर्घायु की प्रार्थना की जाती थी तथा ब्राह्मणों को दान दिया जाता था

(v) ukedj.k lLdkj & यह संस्कार नवजात शिशु के नाम रखने हेतु किया जाता था। शि”ु का नाम अधिकांशतः किसी ऋषि देवता अथवा पूर्वज के नाम के आधार पर रखा जाता था। कभी–कभी नक्षत्र, मास के देवता अथवा लौकिक नाम के आधार पर बच्चे का नाम रखा जाता था। बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार शि”ु के जन्म से 10वें, 11वें, 13वें, 16वें, 19वें तथा 32 वें दिन होना चाहिए जबकि गोमिल के अनुसार 10वें, 12वें, 100वें अथवा प्रथम वर्ष के समाप्त होने पर यह संस्कार किया जाना चाहिए। इस संस्कार में शि”ु की बाईं कलाई पर सोने की पत्ती बाँधी जाती है। होम किया जाता है तथ साथ ही ब्राह्मणों को भोजन भी कराया जाता है।

(vi) fu"Øe.k lLdkj & नवजात शिशु को घर से बाहर निकाले जाने के अवसर पर किए जाने वाले संस्कार को निष्क्रमण संस्कार कहा जाता है। यह शिशु के जन्म के 12वें दिन से लेकर चौथे मास के मध्य कभी भी किया जा सकता है। इस संस्कार में शिशु को अच्छे वस्त्र पहनाकर, माता–पिता द्वारा सूर्य के दर्शन कराए जाते थे।

(vii) vUuÁk'ku lLdkj & मनु तथा याज्ञवल्क्य के अनुसार शि”ु के जन्म के छठवें मास में किया जाना चाहिए। इसमें शिशु को ठोस अन्न (मुख्यतः चावल की खीर) खिलाया जाता है। किसी–किसी ग्रन्थ में इस अवसर पर शिशु को पक्षियों का मॉस खिलाने का विधान मिलता है। जोकि मार्कण्डेय पुराण तथा अन्य ग्रन्थों में मधु, घी, तथा खीर खिलाने का विधान मिलता है। इस संस्कार के सम्पन्न होने के पश्चात् माता अपने शिशु को स्तनपान कराना बन्द कर देती है।

(viii) pMkdeZ laLdkj & इस संस्कार को मुंडन अथवा चौल संस्कार के नाम से भी जाना जाता है। इस संस्कार के द्वारा शि"ाु के अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की जाती है। गृहसूत्रों के अनुसार यह संस्कार शि"ाु जन्म के प्रथम वर्ष के अन्त में अथवा तीसरे वर्ष की समाप्ति से पूर्व किया जाना चाहिए। किन्तु परिवर्ती साहित्य में इस संस्कार का समय शिशु जन्म के पाँच से लेकर सात वर्ष के मध्य माना गया है। इस संस्कार के अवसर पर शिशु के सिर को गीला कर सम्पूर्ण बाल मुंड़वा दिए जाते हैं। सिर पर मात्र शिखा (चोटी) रहती है। शि"ाु के मुंडे हुए बालों को गीले आटे अथवा गोबर के पिंड के साथ रखकर किसी गुप्त स्थान पर फेंक दिया जाता है। वैदिक ग्रन्थों के अनुसार इस संस्कार के सम्पादन का प्रयोजन यह था कि इससे हर्ष, सौभाग्य और उत्साह की वृद्धि होती है। इस संस्कार का सम्पादन वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ किया जाता था।

(ix) d.kZo/k laLdkj & रोगादि से बचने तथा आभूषण धारण करने के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता था। यह एक अनिवार्य संस्कार था। स्मृतिकार देवल के अनुसार जिस ब्राह्मण का कर्णवेध नहीं होता उसके देखने मात्र से ही सम्पूर्ण पुण्य नष्ट हो जाते हैं। बृहस्पति के अनुसार यह संस्कार शिशु के जन्म के दसवें, पन्द्रहवें दिन करना चाहिए। जबकि कात्यायन के अनुसार इस संस्कार को शि"ाु के जन्म के तीसरे अथवा पाँचवे वर्ष में भी सम्पन्न किया जा सकता है। गृहसूत्र में इस संस्कार का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है।

(x) fo|kjEHk laLdkj & ऋषि विश्वामित्र के अनुसार यह संस्कार बालक के जन्म के पाँचवें वर्ष में सम्पन्न किया जाता है। चूँकि इस संस्कार के अन्तर्गत बालक को अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है। इसलिए इस संस्कार को अक्षरारम्भ संस्कार के नाम से भी जाना जाता है। इस संस्कार के अवसर पर बालक को गुरु के पास ले जाकर सरस्वती पूजन किया जाता है। यह कार्य किसी भी शुभ दिन प्रारम्भ किया जाता है। इस दिन गुरु बालक को गायत्री मंत्र उच्चारण के साथ उसे शिक्षा देना प्रारम्भ करता है।

(xi) miu;u laLdkj & इस संस्कार का मुख्य प्रयोजन था – शिक्षा, बालक के शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाने पर यह संस्कार किया जाता था। अलग–अलग जाति के बालको के लिए इस संस्कार की आयु अलग निर्धारित थी। गृहसूत्रों के अनुसार ब्राह्मण बालक का जन्म के आठवें वर्ष में, क्षत्रिय बालक का ग्यारहवें वर्ष में तथा वैश्य बालक का बारहवें वर्ष में यह संस्कार किया जाना चाहिए। यह संस्कार शूद्रों के लिए वर्जित था। इस संस्कार के बाद व्यक्ति द्विज हो जाता था अर्थात् उसका दूसरा जन्म माना जाता था। इस संस्कार के अवसर पर बालक को यज्ञोपवीत धारण करवा के ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रविष्ट कराया जाता था। गृहसूत्रों के अनुसार यह कोई आवश्यक संस्कार नहीं था किन्तु उपषिद काल में यह एक आवश्यक संस्कार हो गया था। वर्तमान काल में इस संस्कार का विद्या सम्बन्धी महत्व प्रायः समाप्त हो गया है। अब तो यह संस्कार अधिकाशतः विवाह से पूर्व ही किया जाता है। प्राचीन साहित्य में इस संस्कार का उल्लेख मिलता है। संस्कार के समय अनेक देवी–देवताओं की उपासना की जाती थी तथा बालक अन्तिम बार अपनी माँ के साथ भोजन करता था। इस संस्कार के साथ ही बालक को उत्तरदायित्वपूर्ण एवं संयमी जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया जाता था।

(xii) osnkjEHk laLdkj & प्राचीनकाल में उपनयन संस्कार के समय वेदाध्ययन स्वतः ही आरम्भ हो जाता था। इसी कारण 'वेदारम्भ' को पृथक् से संस्कार नहीं माना जाता था। सम्भवतः इसी कारण धर्मसूत्रों, गृहसूत्रों एवं स्मृतियों में कहीं भी इस संस्कार का उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु परवर्ती काल में संस्कृत का बोलचाल की भाषा में प्रयोग होना समाप्त हो गया तो 'वेदारम्भ' को अलग से संस्कार के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इस संस्कार का सर्वप्रथम उल्लेख व्यास स्मृति में मिलता है। इस संस्कार का सम्पादन उपनयन संस्कार के पश्चात् किसी शुभ दिन किया जाता था। इस अवसर पर चारों वेदों का अलग–अलग स्वाध्याय करने हेतु अलग–अलग आहुतियां दी जाती थीं। बाद में चारों वेदों का एक–साथ अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विशिष्ट आहुति दी जाती थी। इसके पश्चात गुरु विद्यार्थी को वेदों की शिक्षा देना आरम्भ करता था।

(xiii) ds'kkUr vFkok xksnku laLdkj & जब बालक सोलह वर्ष की आयु प्राप्त कर लेता था। तब इस संस्कार का सम्पादन किया जाता था। इस संस्कार को किसी शुभ दिन किया जाता था। इस अवसर पर बालक की प्रथम बार दाढ़ी–मूछों को मूँड़ा जाता था। यह संस्कार बालक के वयस्क होने का सूचक है। चूँकि इस संस्कार के समय बालक अपने आचार्य को गाय दान में देता था। इसलिए इस संस्कार को गौदान संस्कार के नाम से भी जाना जाता है।

(xiv) lekorZu laLdkj & समावर्तन का अर्थ है लौटना। जब बालक छात्र विद्याध्ययन पूर्ण कर गुरुकुल से अपने घर को वापस लौटता था। तब इस संस्कार का सम्पादन किया जाता था। यह संस्कार बालक के ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति का सूचक है। इस संस्कार को गुरु की अनुमति मिलने पर ही किया जाता था। इसमें बालक अपने गुरु को उचित दान दक्षिणा देता था। इसके उपरान्त स्नान कर मृगचर्म, मेखल तथा दण्ड आदि को जल में प्रवाहित कर देता था तथा एक नवीन कोपीन को धारण करता था। कुछ दही एवं तिल का भोजन करने के उपरान्त अपनी दाढ़ी, नाखून एवं केशों को कटवाता था। तत्पश्चात् ब्रह्मचर्य आश्रम में वर्जित वस्तुओं यथा – माला, हार, उष्णीष, उपानह आदि को धारण करता था। यह संस्कार अधिकांशतः 25 वर्ष की आयु में किया जाता था।

(xv) fookg laLdkj & प्राचीनकाल से वर्तमानकाल तक हिन्दू धर्म में विवाह को एक पवित्र संस्कार के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। वासतव में अन्य संस्कारों की तुलना में इस संस्कार का अत्यधिक महत्व है। इस संस्कार के साथ ही मनुष्य गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होता है। इसमें स्त्री–पुरुष पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर एक–दूसरे के साथ सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह संस्कार चारों वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस संस्कार का मुख्य प्रयोजन सन्तान उत्पन्न कर पितृ ऋण से मुक्त होना।

(xvi) vUR;sf"V laLdkj & यह मनुष्य के जीवन का अन्तिम संस्कार हैं, जो व्यक्ति के निधन हो जाने के पश्चात् सम्पन्न किया जाता है। चूँकि इस संस्कार को शुभ संस्कार नहीं माना गया है। सम्भवतः इसीलिए अधिकांश गृहसूत्रों में इसका उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु इतना अवश्य है कि यह मनुष्य के जीवन का अन्तिम तथा आवश्यक संस्कार है जो मृत्यु उपरान्त मनुष्य की अन्तिम क्रिया कर सम्पन्न किया जाता है।

3-4-1-5 o.k **(Varna)**

वर्ण (Varna)

ब्राह्मण (Brahmin) क्षत्रिय (Kshatriya) वैश्य (Vaishya) शुद्र (Shurdas)

उत्तरवैदिक काल (Post Vedic Period) तक समाज चार वर्गों (वर्णों) में विभाजित हो चुका था – ब्राह्मण (Brahmin), क्षत्रिय (Shatriya), वैश्य (Vaishya), शूद्र (Shurdas)

(i) ckge.k **(Brahmin)** & ब्राह्मणों का कार्य शिक्षा देना, धार्मिक अनुष्ठान व यज्ञ करना। युद्ध के समय राजाओं की जीत के लिए देवाराधना करते थे। बदले में राजा इन्हें धान देते थे।

(ii) {kf=; **(Kshtriya)** & क्षत्रियों का समाज में दूसरा स्थान होता था। ये समाज के सभी वर्गों की रक्षा करते थे और शासन चलाते थे।

(iii) oS'; **(Vaishya)** & वैश्यों का समाज में तीसरा स्थान था। इनका कार्य कृषि, पशुपालन, व्यापार और उत्पादन से संबंधित कार्य करते थे।

(iv) 'kæ **(Shurdas)** & शूंद्रों का वर्ण व्यवस्था में चौथा स्थान है। शूद्र को 'अन्यस्यप्रेस्य' अर्थात् तीनों वर्णों का सेवक बतलाया गया है। उत्तर वैदिक काल में शूद्रो के अन्य वर्ग थे चांडाल, निषाद्, पौल्कस, वेदहव आदि। गायत्री मंत्र एवं उपनयन संस्कार इनके लिए मना था। (यानी इसका इनको अधिकार नहीं था)

3-4-1-6 tkfr **(Caste)**

जाति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम महर्षि यास्क के निरूक्त में कृष्ण जाति के रूप हुआ है। जाति के लिए अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त शब्द 'Caste' पुर्तगाली भाषा के 'Casta' शब्द से बना है जिसका अर्थनस्ल। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जाति वह सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता का आधार एवं प्रमाण वंशानुक्रम (Heredity) होता है। अर्थात् जाति एक वंशानुक्रम शील गुणों का एक गुच्छ है। चार्ल्स कूले के अनुसार, "जब एक वर्ग पूर्णतः वंशानुगत होता है तो हम उसे एक जाति कह सकते है।" (According to Charles Cooley, "When a class is some what hereditary, we may call it caste.") जाति वंशानुगत के आधार पर व्यक्तियों का एक ग्रुप या समूह है। जाति खान–पान, रहन–सहन, विवाह, व्यवसाय, रीति–रिवाज आदि तौर–तरीकों में अनेक संबंधो व प्रतिबन्धो में बंधी हुई होती है। समाज में इसके सभी सदस्यों की स्थिति वंशानुक्रम (Heredity) के आधार पर निर्धारित होती है।

जाति की विशेषताएँ (Characteristics of Caste) – जाति की मुख्य विशेषताएँ निम्न है –

1. प्रत्येक जाति की समाज में अपनी एक पहचान होती है।
2. जाति का आधार वंशानुक्रम होता है।
3. प्रत्येक जाति के अपने रीति–रिवाज, रहन–सहन, कार्यशैली अलग–अलग होती है।
4. एक जाति में अनेक उपजातियां पाई जाती है।
5. जाति में अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध होते है।
6. जातियों में जातीय चेतना (Caste Consciousness) पाई जाती है।
7. प्रत्येक जाति में सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification) पाया जाता है। अर्थात् ऊंच–नीच के आधार पर जातियों का सामाजिक ढंग अलग–2 होता है।
8. एक जाति के व्यक्ति अपनी ही जाति में विवाह करते है।

3-4-1-7 vLi';rk (Untouchability)

वैदिक युग के समय समाज वर्णों में बढ़ा हुआ। उत्तर वैदिक युग में कई सामाजिक समूह थे, जैसे– पुजारी, राजा, सैनिक, व्यापारी, कृषक, पशुपालक, शिल्पी, मजदूर, मछली पकड़ने वाले और आदिवासी लोग, शिकारी और खाद्य संग्राहक और ऐसे लोग जो दफनाने और दाह–संस्कार का काम करते। इसे लोगो को पुजारी घृणा व नफरत की दृष्टि से देखते थे। इन लोगों के साथ संबंध रखना पाप समझते थे। उत्तर वैदिक युग अस्पृ"यता बहुत अधिक थी। जिन लोगो को व्यवसाय के आधार पर शूद्र समझा जाता था वे लोग तीनो वर्णों के लोगों की सेवा करते थे। वे कोई धार्मिक अनुष्ठान भी नहीं कर सकते थे। शूद्रों के लिए मंदिरो आदि में पूजा करने की मनाही थी।

3-5 Áxfr leh{kk (Check your Progress)

¼d½ fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft, %& (Filling the blanks)

(i) पूर्व वैदिक काल का समय .... था।

(ii) आर्यों का मुख्य व्यवसाय .... था।

(iii) सांख्य दर्शन के .... प्रवर्वतक थे।

(iv) संस्कारों की संख्या .... थी।

(v) पृथ्वी .... की जननी माता थी।

(vi) अश्वमेघ यज्ञ .... को चुनौती देने के लिए होता था।

(vii) शिक्षा से पूर्व .... संस्कार संपन्न किया जाता था।

(viii) ऋग्वेद 10 मंडल तथा .... सूक्त है।

¼[k½ lR;@vlR; dFku ½& **(True/False)**

(i) भारत में आर्यो के प्रारंभिक इतिहास की मुख्य जानकारी का स्रोत वेद है। (सत्य/असत्य)

(ii) ऋग्वेद के तीन पाठ है – (i) साकल (ii) बाल खिल्भ (iii) वासकल (सत्य/असत्य)

(iii) आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, उदात्त, कुलीन। (सत्य/असत्य)

(iv) आर्य की भाषा संस्कृत नहीं थी। (सत्य/असत्य)

(v) ऋग्वेद की सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती नहीं थी। (सत्य/असत्य)

(vi) असतोमासद्गमय वाक्य ऋग्वेद से लिया गया है। (सत्य/असत्य)

(vii) जिस कर्म की पूर्ति से स्त्री प्रदत्त शुक्र धारण करती है उसे गर्भाधान कहते हैं। (सत्य/असत्य)

(viii) जुते हुए खेत को उर्वरा कहा जाता था। (सत्य/असत्य)

(ix) वेदांगो की संख्या 6 है और वेदों की संख्या 4 है। (सत्य/असत्य)

(x) संगीत के बारे में जानकारी ऋग्वेद से मिलती है। (सत्य/असत्य)

(xi) आर्य लोग दो प्रकार के वस्त्र प्रयोग करते थे। (सत्य/असत्य)

(xii) शिशु के जन्म के उपरान्त जातकर्म संस्कार किया जाता था। (सत्य/असत्य)

(xiii) वर्णों की संख्या तीन थी। (सत्य/असत्य)

(xiv) आश्रम चार थे। (सत्य/असत्य)

(xv) सबसे बड़ी इकाई गृह तथा छोटी इकाई राष्ट्र थी। (सत्य/असत्य)

3-6 lkjka'k ;k laf{kflrdk (Summary)

- भारत में आर्यो के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी का मुख्य स्रोत वेद है। वेद शब्द का अर्थ है – ज्ञान।
- आर्य सर्वप्रथम पंजाब एवं अफगानिस्तान में बसे मैक्स मूलर आर्यो का मूल निवास स्थान मध्य एशिया को माना है।
- भारत में आर्यो की जानकारी ऋग्वेद से भी मिलती है। इस वेद में आर्य शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है। आर्यो द्वारा निर्मित सभ्यता वैदिक सभ्यता कहलाई। आर्य शब्द का अर्थ – श्रेष्ठ, उदात्त, कुलीन।
- आर्यो की भाषा संस्कृत थी व मुख्य व्यवसाय पशुचारण व उसके साथ खेती भी करते थे।
- ऋग्वैदिक काल की मुख्य सामाजिक संस्थाएं थी – (i) कुल परिवार (ii) ग्राम (iii) विश (कबीला) (iv) जन (v) राष्ट्र। ग्राम के मुखिया को ग्रामिणी एवं विश के प्रधान को विशपति तथा जन के शासक को राजन कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक युग की सार्वजनिक संस्था 'सभा' वृद्ध और अभिजात वर्गीय लोगों की संस्था थी। ऋग्वेद में सर्वत्र आर्यों के निवास स्थान के लिए सप्तसैन्धव शब्द का प्रयोग किया गया है। समिति जनता की विशाल संस्था होती थी।
- ऋग्वेद एक संहिता है जिसमें दस मण्डल तथा 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के तीन पाठ है। (i) साकल – 1017 मंत्र (ii) बालखिल्य–11 मंत्र (iii) वाष्कल–56 मंत्र
- ऋग्वेद के ब्राहाण ग्रंथ ऐतरेय व कौषितिकी है। आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद कहा जाता है। ऋग्वेद की सर्वाधिक पवित्र नदी सरस्वती थी। असतो मा सद्गमय वाक्य ऋग्वेद से लिया गया है।
- ऋग्वेद हिन्द–यूरोपीय भाषाओं का सबसे प्राचीनतम और पवित्र गंथ है। ऋग्वेद में अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियाँ संग्रहीत हैं, जिनकी रचना विभिन्न गोत्रों के ऋषियों और मन्त्रसृष्टाओं ने की है।
- ऋग्वेद में 'संघ' नामक उच्च शिक्षण–संस्थान का उल्लेख हुआ है। संघ शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में किया गया, जो बाद में बौद्ध धर्म का केन्द्र–बिन्दु बना।
- ऋग्वैदिक काल समाज में एक पत्नी प्रथा थी एवं पितृसत्तात्मक प्रणाली था। विधवा विवाह पर रोक थी। खुद की संतान न होने पर दत्तक पुत्र को अपनाया जाता था। संपति का वारिस पुत्र के न रहने पर पुत्री होती थी।
- राज्याधिकारियों में पुरोहित एवं सेनानी मुख्य थे। रथकार तथा कम्मादिनामक अधिकारी रत्नी कहे जाते थे इनकी संख्या राजा सहित करीब 12 हुआ करती थी।

- 'पुरप' दुर्गपति होते थे। 'स्पश' जनता की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।
- संधि–विग्रह के प्रस्तावों को राजाओं के पास ले जाने वालो को दूत कहा जाता था।
- वाजपति गोचर भूमिका अधिकारी एवं कुलप परिवार का मुखिया होता था।
- उग्र (पुलिस) अपराधियों को पकड़ने का कार्य करती थी।
- सभा– यह श्रेष्ठ एवं संभ्रांत लोगों की संस्था थी।
- समिति – यह केन्द्रीय राजनीतिक संस्था थी। सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करती थी। राजा को चुनने एवं पदच्युत करने का अधिकार होता था। समिति के अध्यक्ष को 'ईशान' कहते थे।
- भागन्दुध – विशिष्ट अधिकारी जो राजा के अनुयायियों के मध्य बलि भेंट का समुचित बंटवारा एवं कर का निर्धारण करता था।
- ऋग्वेद में उल्लेख 33 बार हुआ है जिसमें अनेक स्थानों पर यव एवं धान्य शब्द का उल्लेख मिलता है। 'गो' शब्द प्रयोग ऋग्वेद में 174 बार किया गया है। युद्ध का मुख्य कारण गायों की गवेषणा अर्थात् 'गावेष्टि' था। पुरोहितों को दान के रूप में गायें और दासियाँ दक्षिणा दी जाती थी।
- जुते हुए खेत को – 'उर्वरा' कहा जाता था।
- बैल के लिए – 'बृक' शब्द प्रयोग किया जाता था।
- हल के लिए – 'लांगल' शब्द प्रयोग किया जाता था।
- अनाज नापने वाले पात्र का नाम – 'ऊर्दर'
- अनाज के भण्डारण करने वाले कमरे (कोठार) को 'स्थिवि' कहते थे।
- गोबर की खाद के लिए – 'करीष' शब्द प्रयोग किया जाता था।
- 'अवत' शब्द का प्रयोग नलकूपों के लिए होता था।
- 'कीनांश' शब्द हलवाहे के लिए प्रयोग किया जाता था।
- बादल के लिए – 'पर्जन्य' शब्द प्रयोग किया जाता था।
- 'सीता' शब्द का प्रयोग हल से बनी नालियों के लिए होता था।
- 'पणि' – व्यापार के लिए भ्रमण करने वाले को पणि कहा जाता था।
- 'गविष्टि' – शब्द का प्रयोग युद्ध के लिए होता था जिसका अर्थ है – गायों की खोज।
- गाय – अघन्या (जिसका वध न हो)
- आमाजू – जीवन भर अविवाहित रहने वाली महिलाओं को कहा जाता था।
- दुहिता – पुत्री को कहा जाता था।
- उर्वरा – ऊपजाऊ भूमि को कहा जाता था।

- गोमत – धनी व्यक्ति को गोमत कहा जाता था।
- तक्षण – बढ़ई का काम करने वाले को तक्ष कहा जाता था।
- ऋग्वेद में बेटी के लिए कामना व्यक्त नहीं की गई है, जबकि संतान और पशु की कामना सूक्तों में बार–बार मिलती है। इस युग में नियोग–प्रथा और विधवा–विवाह के प्रचलन का आभास मिलता है। बाल–विवाह का कोई उदाहरण नहीं है।
- पृथ्वी – सृजन की देवी है।
- घौ – आकाश का देवता (सबसे प्राचीन)
- वरूण – जल का देवता है। पृथ्वी एवं सूर्य के निर्माता, विश्व के नियामक एवं शासक, सत्य का प्रतीक।
- सरस्वती – विद्या की देवी है।
- सोम– वनस्पति देवता।
- विष्णु – विश्व के संरक्षक व पालककर्ता
- उषा – प्रगति एवं उत्थान–देवता
- पूषन – पशुओं का देवता
- रूद्र– पशुओं के देवता है।
- मरूत – आधी–तूफान का देवता।
- अ"िवन – विपत्तियों को हरने वाले देवता
- इन्द्र – वर्षा का देवता एवं युद्ध का नेता
- सूर्य – तेजका देवता है।
- अश्विन – दुर्भाग्य एवं रोगों को दूर करने वाला देवता है।
- अग्नि – देवता एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ
- आर्यों का मुख्य पेय पदार्थ सोमरस था और यह प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बनाया जाता था।
- आर्य लोग तीन प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे – वास, अधिवास, उष्णीय। अन्दर जो कपड़ा डालते थे उस को नीवि कहते थे।
- ऋग्वैदिक काल के प्रमुख खाद्य को 'शकम' या 'करीष' के नाम से जाना जाता था।
- ऋग्वैदिक काल के प्रमुख खाद्यान्न चावल और जौ थे। इस काल में उन के लिए प्रसिद्ध गंधार था।
- वेदों की संख्या चर है – 1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद
- ऋग्वेद से चिकित्सा शास्त्र से संबंधित जानकारी मिलती है।
- यजुर्वेद – यजुर्वेद से युद्धकला से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।

- समवेद – कला व संगीत के बारे जानकारी प्राप्त होती है। इसी वेद से सबसे पहले 7 स्वरों (सा ....रे...... गा .... मा ....प .... ध .... नि) की प्राप्ति हुई। इसे भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है। सामवेद का मंत्र सूर्य देवता को समर्पित है। इस प्रकार यह कह सकते है कि साम का अर्थ है – गान।
- ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद को वेदत्रयी के नाम से भी जाना जाता है।
- अथर्ववेद – इस वेद को ब्रहमवेद (श्रेष्ठवेद) कहा जाता है। इससे वेद भवन निर्माण कला से संबंधित जानकारी मिलती है। इसमें 20 अध्याय, 731 सूक्त व 6 कमंत्र है।
- उपवेदों की संख्या चार है – 1. आयुर्वेद 2. धनुर्वेद 3. गंधर्ववेद 4. शिल्पवेद
- वेदांगों की संख्या 6 है – 1. शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरुक्त 5. छंद 6. ज्योतिष
- संस्कार 16 है – 1. गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमन्तोन्नयन 4. जातकर्म 5. नामकरण/नाधेय 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकर्म/मुंडन 9. कर्ण–वेध 10. विद्यारम्भ 11. उपनयन 12. वेदारम्भ 13. समावर्तन 14. विवाह 15. वानप्रस्थ 16. अंत्येष्टि
- वर्ण 4 है। 1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शूद्र
- पुरुषार्थ 4 है धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष
- आश्रम 4 है – प्राचीन समय से ही आश्रम को भारतीय समाज का मुख्य आधार माना गया है आश्रम शब्द 'श्रम' धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है – परिश्रम करना। आश्रम का आशय जीवन के विभिन्न स्तरों से है इसलिए प्रत्येक आश्रम की अवधि 25 वर्ष मानी गई है। 1. ब्रहाचर्य आश्रम (0–25 वर्ष) – इस आश्रम में गुरू के पास रह कर शिक्षा प्राप्त करना। 2. गृहस्थ आश्रम (25–50 वर्ष) – इस आश्रम को चारों आश्रमों में से महत्वपूर्ण माना गया है। इस आश्रम में व्यक्ति विवाह करता है, संतान उत्पन्न व अन्य कार्य करता है। 3. वानप्रस्थ (50–75 वर्ष) वन की ओर प्रस्थान करना व दो पुरूषार्थ धर्म एवं मोक्ष की प्राप्ति वनों में होती थी। 4. संन्यास (75–100 वर्ष) – इस आश्रम में व्यक्ति सन्यासी की तरह जीवन यापन करता था। व्यक्ति गृहस्थ आश्रम से संयास आश्रम में सीधा जा सकता है। इनमें से गृहस्थ आश्रम को उतम माना गया है।
- शूद्र – गायत्री मंत्र का उच्चारण नहीं कर सकते थे और नहीं जनेऊ पहन सकते थे। यह तीन उच्च वर्णों को अधिकार था (ब्राहाम्ण, क्षत्रिय, वैश्य) लेकिन राजा के राज्याभिषेक से जुड़े हुए सामाजिक सार्वजनिक अनुष्ठानों में शूद्रो को हिस्सा लेने की इजाजत थी। क्योंकि वे भी मूलतः आर्य समुदाय के वंश माने जाते थे।
- वर्ण व्यवस्था की शुरूआत वैदिक आर्यो ने की थी।
- बाल गंगाधर तिलक ने उत्तरी ध्रुव को आर्यो का मूल निवास माना है। यह वर्णन इनकी पुस्तक "The Arctic Home of the Aryans" में मिलता है।
- आर्यों का मूल निवास को सबसेअधिक प्रामाणिक मत (विचार) आल्प्स पर्वत के पूर्वी भाग में स्थित यूरेशिया का है।

3-7 l:d:r l:pd **(Key-words)**

शब्द (प्राचीन नाम)	अर्थ (आधुनिक नाम)
• गोप्ता → राजा	• दात्र या सृणि → फसल काटने का हँसुआ
• उर्दर → अनाज मापक	• गोमत → धनी व्यक्ति
• स्थिवी → अनाज भण्डारण/ अनाज जमा करने वाली कोठरी	• श्रोत्रिय → विद्वान ब्राहाम्ण
• यव → जौ	• कुष्टि → कृषि
• कीवांस या कीनाश → किसान	• वहतु → दहेज
• अजा → बकरी	• विदुषी → विद्वान महिलाएँ/ज्ञान से परिपूर्ण
• अवि → भेड़	• करीष → गोबर की खाद
• तनय और सुवीर → पुत्र या बेटा	• तनया एवं दुहिता/दुहित्री → पुत्री या बेटी अर्थात् दूध दुहने वाली
• गविष्टि → गवेषणा का शाब्दिक अर्थ गायों की खोज करना लेकिन इस शब्द का अर्थ लड़ाई भी है क्योंकि गायों के कारण अनेक लड़ाइयाँ हुई थी।	• वप्ता → नाई • उष्णीव → पगड़ी • उपानह → जूते
• पवीरवत् → फाल वाला हल	• लांगल → हल
• बेकनाट या सूदखोर → ऋण या कर्ज देकर ब्याज लेने वाला	• पर्जन्य → बादल
• गव्य या गव्यति → चारागाह	• उर्वरा → कृषि योग्य भूमि या जुता हुआ खेत
• बृक → बैल	• कुसीद → ऋण
• आमाजू → आजीवन अविवाहित रहने वाली लड़कियां	• सृणि या दात्र → दरांती
• अघन्या → गाय अर्थात्	• तक्षण/तक्षक/तक्षा → बढ़ई
• सुरा → शराब	• मधु → शहद
• उग्र → पुलिस	• सीता → हल से बनी नालियां
• कुन्या, कूप, अवत → ये सिंचाई के साधन थे।	• वाय/तंतवायु → जुलाहा (वस्त्र बनाने वाला)
• अरित्र → पतवार	• क्षीरौदन → खीर
• अरितृ → नाविक	• धन्व → मरूस्थल
• कुटुम्ब → परिवार	• गोहंता/गोहन → अतिथि अर्थात् गाय का वध करने वाला
• गृहपति या कुलप → ज्येष्ठ पुरुष	• गोधूलि → समय
• गवभूति → दूरी	

3-8 Lo eY;kadu d fy, Á'u **(Self-AssessmentTest)**

Hkkx **(Part)** ¼d½ nh?kZ&mÙkjh; i:'u **(Long Answer Type Question)**

प्र.1 पूर्व वैदिक काल की व्याख्या कीजिए। (Explain the Prevedic Period).

प्र.2 उत्तर वैदिककाल पर एक लेख लिखिए। (Write a note on Later Vedic Period).

प्र.3 ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल की राज्यव्यवस्था, समाज और धर्म की विस्तार से चर्चा कीजिए। (Discuss in detail Polity System, Society and Religion of Pre-Vedic Period).

प्र.4 वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था को समझाइये। (Explain political system of vedic period).

प्र.5 उत्तर वैदिक काल की राज्यव्यवस्था, समाज और धर्म की विस्तार से चर्चा कीजिए (Discuss in detail Polity Society and Religion. Explain Society and Religion of Vedic Period).

प्र.6 वैदिक काल, समाज धर्म को समझाइए। (Explain Society and Religion of Vedic period).

प्र.7 उत्तर वैदिक कालीन आर्यो में राजनैतिक व धार्मिक जीवन का वर्णन कीजिए। (Analyse the political, and relgion of the life of later Vedic Aryans). GJU Hisar 2019

Hkkx **(Part-B)** ¼[k½ y?k mÙkjh; iz'u **(Very Short Question)**

प्रश्न 1. पूर्व वैदिककाल काल क्या है ? (What is Pre-Vedic Period)

प्रश्न 2. उत्तर वैदिक काल के समाज पर चर्चा कीजिए? (Discuss the Society of Post Vedic Pediod)

प्रश्न 3. वर्ण को परिभाषित कीजिए।(Defineof Varna)

प्रश्न 4. जाति क्या है? (What is Caste)

प्रश्न 5. अस्पृश्यता से आप क्या समझते है ? (What do you mean by untouchability)

प्रश्न 6. संस्कार पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए। (Write a short note on Sanskar).

प्रश्न 7. वैदिक संस्कृति को परिभाषित कीजिए। (Define of Vedic Culture).

Hkkx **(Part-C)** ¼x½ cgqfodYih; iz'u **(Objective Types Questions)**

(इनके उत्तरदायी और कोष्ठक में देखिए)

(i) आर्यो का मुख्य पेय पदार्थ क्या था ?

(a) दूध (b) चाय (c) सोमरस (d) अश्वगंधा उत्तर– C

(ii) आर्य शब्द का अर्थ है –

(a) घुड़सवार (b) यायावर (c) राष्ट्र (d) उत्कृष्ट उत्तर– D

(iii) सबसे प्राचीन वेद –

(a) सामवेद (b) धनुर्वेद (c) ऋग्वेद (d) यजुर्वेद उत्तर– C

(iv) आर्यों की भाषा थी –

(a) संस्कृत (b) पालि (c) अरबी (d) उर्दू उत्तर– A

(v) वेदों की संख्या कितनी है ?

(a) 2 (b) 4 (c) 6 (d) 10 उत्तर– B

(vi) आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्या को वैदिक काल में क्या कहा जाता था ?

(a) संयासी (b) वाजसनेयी (c) अखुर (d) अमाजु उत्तर– D

(vii) ऋग्वेद में 'जन' और 'विश' शब्द का उल्लेख कितनी बार हुआ है ?

(a) 250, 175 (b) 270, 170 (c) 200, 100 (d) 170, 33 उत्तर– B

(viii) 'असतो मा सद्गमय' किस वेद से लिया गया है ?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद (c) सामवेद (d) अथर्ववेद उत्तर– A

(ix) उपवेदों की संख्या कितनी है ?

(a) 4 (b) 6 (c) 8 (d) 2 उत्तर– A

(x) भारतीय संगीत का जनक माना जाता है ?

(a) ऋग्वेद (b) उपनिषद (c) वेदांग (d) सामवेद उत्तर– D

(xi) सोम देवता का संबंध है –

(a) वर्षा (b) वनस्पति (c) विद्या (d) तूफान उत्तर– B

(xii) मनुस्मृति में विवाह के कितने प्रकारों का उल्लेख किया गया है?

(a) 8 (b) 16 (c) 6 (d) 4 उत्तर– A

(xiii) ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी –

(a) सिंधु (b) गंगा (c) रावी (d) सरस्वती उत्तर– D

(xiv) 'अवि' शब्द किस के लिए प्रयोग किया जाता था ?

(a) बकरी (b) भेड़ (c) हल (d) बढ़ई उत्तर– B

(xv) उपनिषदों की संख्या –

(a) 108 (b) 16 (c) 18 (d) 1028 उत्तर– A

3-9 Áxfr lehk{kk gsrq Á'ukÙkj (Answer to Check your Progress)

¼Hkkx&d½

(i) 1500 ई. पूर्व – 1000	(iv) सोलह	(vii) उपनयन
(ii) कृषि	(v) जननी	(viii) 1028
(iii) कपिलमुनी	(vi) युद्ध	

¼Hkkx &[k½

(i) सत्य	(vi) सत्य	(xi) सत्य
(ii) सत्य	(vii) सत्य	(xii) सत्य
(iii) सत्य	(viii) सत्य	(xiii) असत्य
(iv) सत्य	(ix) सत्य	(xiv) सत्य
(v) सत्य	(x) सत्य	(xv) असत्य

3-10 संदर्भित एवं विशेश अध्ययन ग्रन्थ (Reference and Suggested Readings)

- द्विजेन्द्र नारायण झा एवं कृष्णमोहन श्रीमाली – प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नवम्बर 2018
- महे"ा कुमार बर्णवाल – संक्षिप्त इतिहास NCERT सार, कोसमोस पब्लिकेशन मुखर्जीनगर, दिल्ली जनवरी 2019।
- K.L. Khurana : Ancient India (From Earliestto 1206A.D.), Lakshmi Narain Agarwal, Agra: Eighteenth Edition: 2019
- डी०एन० झा प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पुनर्मुद्रण : अक्तूबर 2016 ।
- रामशरण शर्मा– भारत का प्राचीन इतिहास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा भारत में प्रकाशित 2/11 भूतल अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्लीः चौथा हिंदी संस्करण 2019
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन – सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली।

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER-1	
COURSE CODE : HIST- 101	**AUTHOR & UPTATED:** **MR. MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 04	
Ekgkt uin ,o ex/k lkekT; **(Mahajanapadas & Magadha Empire)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

4.1. अधिगम उद्दे”य (Learning Objectives)

4.2. परिचय (Introduction)

4.3. आध्याय के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)

4.3.1. महाजनपद युग (MahajanPads Period)

4.3.2. मगध साम्राज्य का उदय या अभ्युदय (The rise of Magadha Empire)

4.3.3. मगध साम्राज्य के विस्तार के कारण या मगध की सफलता के कारण (Reasons for the Expansion of Magadha Empire)

4.4. आध्याय का आगे का मुख्य भाग (Further Main Body of text)

4.4.1 धार्मिक आन्दोलर्न के उदय के कारण (Casue of Rise of Religious Movements)

4.4.2. बौद्ध धर्म (Buddhism)

4.4.2.1. महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय (Life History of Mahatma Baudh)

4.4.2.2. बौद्ध धर्म की f”क्षाऍं एवं सिद्धान्त (Teaching and theory of Buddhism)

4.4.2.3 बौद्ध धर्म का विकास या प्रसार (Development or range of Buddhism)

4.4.2.4. बौद्ध धर्म के पतन के कारण (Reason of decline of Buddhism)

4.4.3 जैन धर्म (Jainism)

4.4.3.1. महावीर स्वामी का जीवन परिचय (Life History of Mahavir Swami)

4.4.3.2. जैन धर्म की f"k्षाएं एवं सिद्धान्त (Teaching and theory of Jainism)

4.4.3.3 जैन धर्म के विस्तार के कारण (Reason for the espansion of Jainism)

4.5. प्रगति समीक्षा (Check your Progress)

4.6. सारां"ा (Summary)

4.7. संकेत सूचक (Key works)

4.8 स्व–मूल्यांकन परीक्षा (Self. Assessment Test) (SAT)

4.9. प्रगति समीक्षा हेतु प्र"नोत्तर (Answers to check your Progress)

4.10. संदर्भ ग्रंथ एवं सहायक अध्ययन सामग्री (References/Suggested Reading)

4-1- vf/kxe mí”; **(Learning Objectives)**

bl v/;k; d v/;;u d lk”pkr] fo|kFkh ;kX; gkx k&

- इस अध्याय के अधोलिखित उद्दे"य निम्न प्रकार से है :–
- सोलह महाजनपदों में से मगध साम्राज्य किस प्रकार शक्ति"ाली साम्राज्य बना इस से पाठकों को अवगत करवाना।
- मगध का उत्थान किस प्रकार हुआ अधिगमकत्ताओं के बीच चर्चा करना।
- मगध के उत्थान की सफलता के क्या कारण थे इस पर f"k्षार्थियों के बीच परिचर्चा करना।
- मगध साम्राज्य के उदय में किन वं"ाों के शासकों की अह्म भूमिका रही, इससे छात्रों को रूबरू करवाना।
- मगध साम्राज्य के संदर्भ में वि"ोष धार्मिक आन्दोलनों पर विस्तार पूर्वक चर्चा करना।
- वर्तमान समय में इसकी क्या प्रांसगिकता है इस पर एक गोष्ठी करवाना।
- सर्वोच्चता एवं वर्चस्व के लिए लगातार संघर्ष के बीच मगध को किस प्रकार सफलता मिली इस पर जिज्ञासु पाठकों के बीच क्रिया–कलाप करवाना।
- बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के उद्य (उद्‌भव) के क्या कारण थे। इससे छात्रों को अवगत करवाना।
- जन साम्राज्य में बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का किस प्रकार से फैलाव (विस्तार) हुआ इनकी जानकारी अधिगमकर्ताओं को देना।

4-2- ifjp; (Introduction) :- पारंपरिक साहित्य के अनुसार छठी शताब्दी ई. पू. में 16 बडे राज्य (महाजनपद) थे। (छठी शताब्दी ई.पू. वि"व इतिहास के लिए महत्वपूर्ण शताब्दी मानी जाती है। यह एक ऐसी सदी थी जिसमें पूरे वि"व में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक बदलाव आए। भारत भी इन परिवर्तनों से अछूता नही रहा। इन महाजनपदों को पोड़"ा महाजनपदों के नाम से भी जाना जाता था। इनमें से प्रत्येक में कई कृषक बस्तियां शामिल थी। महाजनपदों में से अधिकतर राजतंत्र थे परन्तु कुछ

राज्य गणतंत्र भी थे। इनका उल्लेख हमें बौद्ध ग्रंथ के ''अंगुत्तरनिकाय'' में मिलता है। पाणिनी ने अपने ''अष्टाध्यायी'' बाईस जनपदों का उल्लेख किया है। 'महावस्तु' में केवल सात महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। लेकिन बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में सोलह का उल्लेख मिलता है। ये राज्य थे अंग, मगध, का"ाी, कौ"ाल, वज्जि (वृज्जि), मल्ल, चेदि, वत्स, कुरू, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अ"मक, अवन्ति, गन्धार, कम्बोज। भारत में कां"ाी इनमें से सबसे अधिक शक्ति"ााली था। लेकिन छठी शताब्दी मे का"ाी, कों"ाल, मगध और वज्जि महासंघ यही चार राज्य महत्वपूर्ण रह गए। इन सभी में आपसी संघर्ष चलता रहा अन्त में मगध इन में से एक शक्ति"ााली राज्य बनकर सामने आया। मगध का उत्थान उसके प्रथम शक्ति"ााली शासक विम्बिसार था। जो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में केवल 15 वर्ष की छोटी आयु में सिंहासन पर बैठा जो बौद्ध धर्म का संरक्षक था। शुरूआत में मगध की राजधानी गिरिव्रज थी लेकिन बाद में राजगृह को राजधानी बनाया गया था।

भारत में ईसा पूर्व छठी शताब्दी को ' धार्मिक क्रान्ति का काल' भी कहा जाता है क्योंकि ब्राह्मणों के प्रभुत्व, यज्ञ एवं कर्मकाण्ड के विरोध में यह आन्दोलन चला। इस आन्दोलन में जैन धर्म और बौद्ध धर्म प्रमुख थे। जिन्होनें एकें"वरवाद तथा अंहिसा पर बल दिया। इस अध्याय में सोलह महाजनपदों, मगध साम्राज्य एवं धार्मिक आन्दोलन : ck) ,o tSu dk foLrkj ls v/;;u djsxsA

4-3- **विशय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text):-**

4-3-1 egktuin ;qx **(Mahajanapadas Period):-** महात्मा बुद्ध के जन्म के पूर्व लगभग छठी सदी ई.पू. उत्तरी भारत में कुल 16 बडे राज्य स्थापित थे। जिन्हे महाजनपद कहा जाता था। जनपद से अभिप्राःय एक ऐसे क्षेत्र से है जहां किसी कुल (Clan) अथवा जनजाति (Tribe) के लोग आकर बस जाते है। महाजनपदों का उल्लेख हमें बौद्ध ग्रंथ ''अगुत्तरनिकाय'' (Anguttaranikaya) में मिलता है। ये दो प्रकार के थे। इनमें से अधिकां"ा राजतंत्र और कुछ गणतंत्र थे जैनग्रन्थ 'भगवतीसूत्र' (Bhagwatisutra) में भी 16 महाजनपदों (Sixteen Mahajanapadas) का उल्लेख किया गया है। दोनों की सूची में अन्तर है। अधिका"ा इतिहासकार व विद्वान इस बौद्ध ग्रन्थ की सूची पर ही बल देते है।

budh lwph fuEu izdkj ls g\&

.सं.	महाजनपद (Mahananapadas)	राजधानी (Capital)
1	अंग (Anga)	चम्मा
2	मगध (Magadha)	गिरित्रज (राजगृह)
3	का"ाी (Kashi)	वाराणसी
	को"ाल (Kosala)	श्रावस्ती/अयोध्या (फैजाबाद)

4		
5	मल्ल (Malla)	कु”ीनगर/पावापुरी (देवरिया गौरखपुर)
6	वज्जि (Vajji)	विदेह एवं मिथला
7	चेदि (Chedi)	शक्तिमती (सोत्थिवती)
8	वत्स (Vatsa)	कौ”ाम्बी (इलाहाबाद)
9	कुरू (kuru)	इन्द्रप्रस्थ (मेरठ, द.पू. हरियाणा)
10	मत्स्य (Matsya)	विराटनगर (जयपुर)
11	पांचाल (Panchala)	उत्तर पंचाल – अहिच्छत्र
12	शूरसेन (sursena)	मथुरा
13	अ”मक (Ashmaka)	पोतन या पोटली
14	अवन्ति (Avanti)	उत्तरी अवन्ति (उज्जैन), दक्षिणी अवन्ति (महि”मति)
15	गन्धार (Gandhara)	तक्ष”िला
16	कम्बोज (Kamboj)	हारक

mijkDr 16 egktuinksa dk lf{kIr o.kZu bl izdkj gS (The Sixteen Mahajanapadas) :-

¼1½ vax **(Anga)** उत्तरी बिहार का आधुनिक भागलपुर एवं मुंगेर जिला का क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित था। इस जनपद की राजधानी चम्पा थी। जिसका प्राचीन नाम मालिनी था। छठी सदी ईसा पूर्व में यह कला, सभ्यता, संस्कृति तथा व्यापार का मुख्य केन्द्र बिन्दु था। यहॉ का शासक ब्रह्मदत्त था। इस राज्य का मगध के साथ संघर्ष चल रहा था। धीरे–धीरे इस राज्य की शक्ति कमजोर होती गई। बाद में मगध के राजा ने अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार अंग महाजनपद का पतन हुआ।

¼2½ ex/k **(Magadha)** आधुनिक बिहार राज्य के पटना और गया जिलों को मिलाकर मगध बनता है। मगध का उल्लेख सर्वप्रथम अथर्ववेद में मिलता है। मगध जनपद की राजधानी गिरीवृज (राजगृह) थी। मगध राज्य उत्तर की ओर से गंगा नदी, दक्षिण की ओर से विंध्याचल पर्वत, पूर्व की ओर से चम्पा और प”चम की ओर से सोन नदियों से घिरा हुआ था। मगध में राज्य के प्रधान को सम्राट कहा जाता था। हरयक वं”ा, नंदवं”ा और मौर्यवं”ा के सम्राटों के शक्ति केन्द्र मगध में ही था।

¼3½ dk”kh **(Kashi)** का”ी की राजधानी वाराणसी थी जो दो नदियों वरूणा और असी नदियों के मध्य स्थित थी। आधुनिक बनारस एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को का”ी जनपद कहा जाता था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वाराणसी मिट्टी की दीवारों से घिरी हुई एक नगरी थी। आजात शत्रु के समय इसे मगध में मिला लिया गया।

¼4½ को”ाल **(Koshala)** को”ाल महाजनपद में आधुनिक उत्तर प्रदे”ा के फैजाबाद, गोडा तथा बहराईच जिले शामिल थे। यह उत्तर में नेपाल, दक्षिण में सई नदी, प”चम में पांचाल राज्यों की सीमाओं से लेकर पूर्व में गंडक नदी तक फैला हुआ था। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। कौ”ाल को भी मगध का ”िाकार बनना पडा। आजात शत्रु ने अपने पराक्रम से कौ”ाल को भी मगध में मिला लिया।

¼5½ eYy **(Malla)** इसमें उत्तर प्रदे”ा के आधुनिक देवरिया, बस्ती, गोरखपुर का क्षेत्र शामिल था। इसकी दो राजधानियां थी कु”ानगर और पावा। कु”ीनगर में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण एवं पावा में महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई। आपसी संघर्षो में मल्ल भी कमजोर हो गया। इसका लाभ मगध ने उठाया और अपने साम्राज्य में मिला लिया।

¼6½ ofTt **(Vajji)** इसकी राजधानी का नाम वै”ाली था। यह मगध के उत्तर में स्थित वज्जि संग आठ कुलो का एक संघ था। जिसमें मुख्य विदेह, लिच्छवि, कात्रिक, और वज्जि महत्वपूर्ण थे। वज्जि में आधुनिक बिहार का मुज्जफ्फर जिला शामिल था। छठी शताब्दी ई.पू. में यह एक स्वतंत्र राज्य था, किन्तु कालान्तर में अजात”ात्रु ने इस राज्य को अपने राज्य मगध में मिला लिया था।

¼7½ psfn **(Chedi)** यह महाजनपद यमुना के किनारे बुन्देलखण्ड और इसके इर्द–गिर्द के क्षेत्र सम्मिलित थे। इसकी राजधानी शक्तिमति थी। महाभारत काल में यहां का शासक शि”ुपाल था। चेदि वं”ा भारत के प्राचीन क्षत्रिय वं”ाों मे से एक था। खाखेल के हाथी गुफा ”िालालेख से ज्ञात होता है कि इस वं”ा की एक शाखा ने कलिंग मे अपना शासन स्थापित किया।

¼8½ oRl **(Vatsa)** वत्स राज्य उत्तर प्रदे"ा के इलाहाबाद तथा मिर्जापुर आदि आधुनिक जिले सम्मिलित थे। इसकी राजधानी dk"kkEch थी। प्राचीन को"ाम्बी को आजकल 'कौ"ाम' कहा जाता है। उदयन इस राज्य का सबसे प्रसिद्ध शासक था। वह महात्मा बुद्ध का संमकालीन था।

¼9½ d¦: **(Kuru)** कुरू राज्य में वर्तमान दिल्ली, मेरठ और थाने"वर (कुरूक्षेत्र) सम्मिलित थे। इसकी राजधानी bUnziLFk (आधुनिक दिल्ली) थी जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है। महात्मा बुद्ध के समय यहां का राजा कोरव्य था। पहले यहां राजतंत्र था बाद में गणतंत्र की स्थापना हुई। छठी सदी ई.पू. में यह राज्य अपना प्राचीन गौरव समाप्त कर चुका था।

¼10½ eRL; **(Matsya)** वर्तमान में जयपुर के समीपवर्ती क्षेत्र मत्स्य महाजनपद के अन्तर्गत आते थे। इसकी राजधानी विराट नगर थी। इस राजधानी की स्थापना राजा विराट ने की थी। छठी शताब्दी ई.पू. मे इस राज्य का महत्व कम हो गया था फिर यह मगध साम्राज्य का अंग बन गया।

¼11½ ikpky **(Panchala)** वर्तमान रूहेलखण्ड के बरेली, बदायूँ, एवं फरूखाबाद जिलों को मिलाकर ही प्राचीन पांचाल महाजनपद का निर्माण होता था। यह राज्य उत्तरी पांचाल ओर दक्षिणी पांचाल नामक दो भागों में बंटा हुआ था। उत्तरी पांचाल की राजधानी का नाम अहिछत्र और दक्षिणी पांचाल की राजधानी का नाम कांपिल्य था। प्रारंभ में यहां राजतंत्र था, किन्तु बाद में गणतंत्र की स्थापना हो गई। पाण्डवों की पत्नी द्रोपदी यही के राजा द्रुपद की पुत्री थी।

(12) भाूरसेन (Sursena) शूरसेन राज्य यमुना नदी के किनारे पर स्थित था। इसकी राजधानी मथुरा थी। बुद्ध के समय में यहां का राजा अवन्ति पुत्र था। जो बुद्ध के उपदे"ाों से बहुत प्रभावित था। मेगस्थनीज ने इसका वर्णन एक शान्तिप्रिय राज्य के रूप में किया है।

¼13½ अ"मक **(Ashmaka)** यह जनपद गोदावरी के तटवर्ती प्रदे"ा में स्थित था। इसका दूसरा नाम अस्सक भी था। इसकी राजधानी पोतन थी जिसका पहले नाम पोदन्य था। इस राज्य के शासक ईक्ष्वाकु वं"ा के थे। बुद्ध के समय में अवन्ति राज्य ने अ"मक को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया था।

¼14½ vofUr **(Avanti)** आधुनिक मालवा और उसके समीपवर्ती भाग शामिल थे। इसकी दो शाखाएं थी– उत्तरी तथा दक्षिणी अवंति। उत्तरी अवंति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ति की राजधानी महि"मति थी बौद्ध धर्म से प्रभावित इस महाजनपद को f"ा"ाुनाग ने मगध में मिला लिया था।

¼15½ xa/kkj **(Gandhara)** गंधार महाजनपद में वर्तमान पाकिस्तान के पे"ावर, रावलपिंडी और क"मीर के जिले सम्मिलित थे। इसकी राजधानी तक्षf"ाला थी। तक्षf"ाला उस समय वि"वविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध था। यह वि"वविद्यालय ज्ञान के केन्द्र के रूप में सर्वत्र प्रख्यात था। यहां पर भारत के विभिन्न राज्यों एवं विदे"ाों से विद्यार्थी f"ाक्षा ग्रहण करने आते थे। कुरूवं"ाीय धृतराष्ट्र महाराजा की पत्नी गंधारी यही की राजकुमारी थी। छठी शताब्दी ई.पू. में यहॉ का शासक पु"कर सरित था। वह मगध के शासक बिम्बसार का समकालीन था। छठी सदी ई. पू. के अंत में ईरान के शासक डेरियस प्रथम ने गंधार पर अधिकार करके इसे अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया था। पाणिनि के अनुसार गंधार का प्राचीन नाम कंधार था।

¼16½ dEck t **(Kamboj)** वर्तमान में रोजारी एवं हजरा के क्षेत्र ही कम्बोज राज्य के अन्तर्गत आता था। इसकी राजधानी हाटक थी। आरंभ में यहां पर प्रजातंत्रीय प्रणाली थी, परन्तु बाद में यहां पर गणतंत्रीय शासन की स्थापना की गई। कौटिल्य ने कम्बोज राज्य को 'वार्ता"ास्त्रोपजीवी' कहा है। कम्बोज राज्य घोड़ो के लिए प्रसिद्ध था। साहित्यिक स्त्रोतों में यहां के दो प्रमुख राजाओं – चन्द्रवर्मन और सुदक्षिण का उल्लेख हुआ है। छठी सदी ई.पू. की राजनीति में कम्बोज की कोई भागीदारी नही रही।

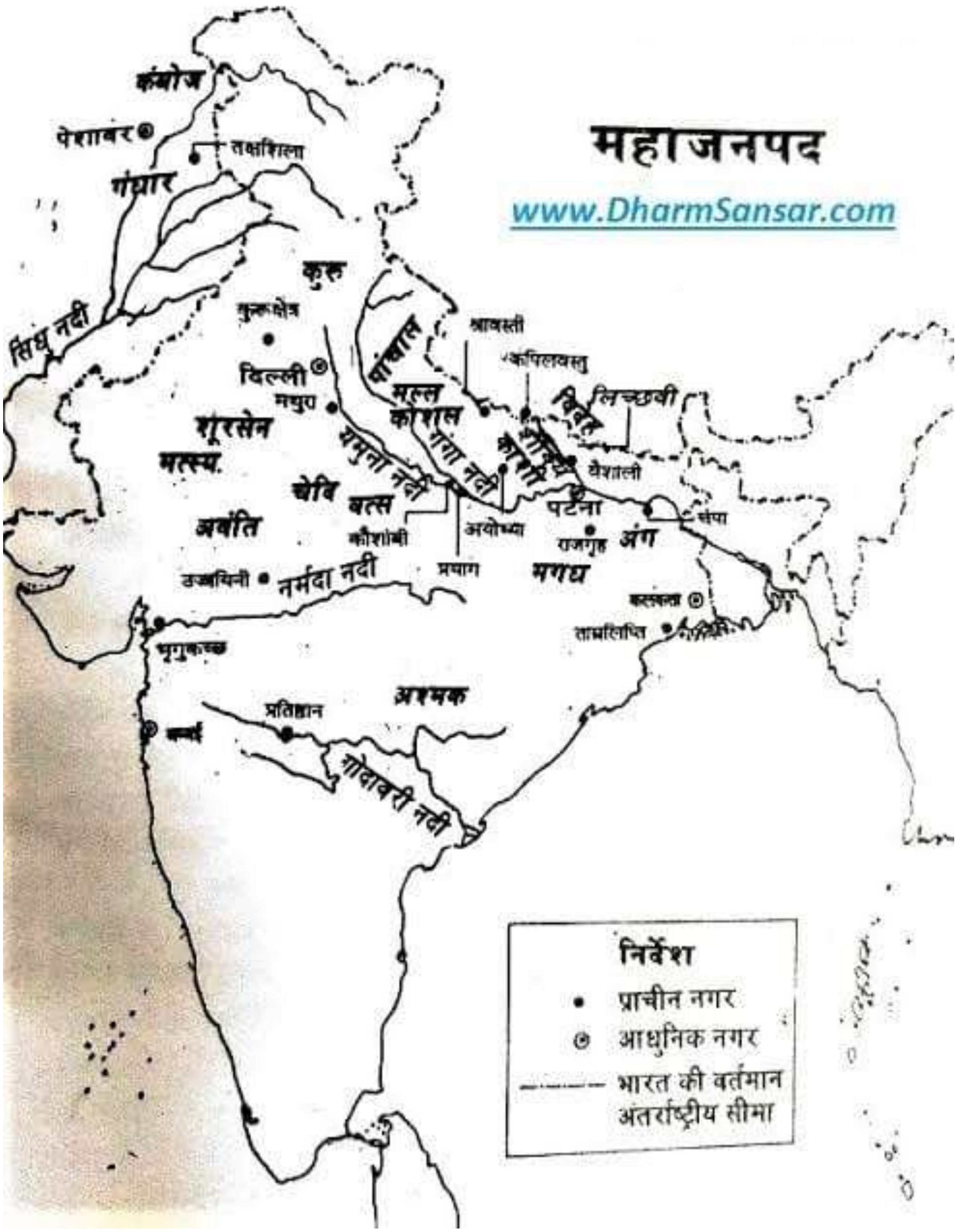

Source :- www.dharamsansar.com

4-3-2 ex/k lkekT; dk mn; **(The Rise of Magadha Empire) :-**

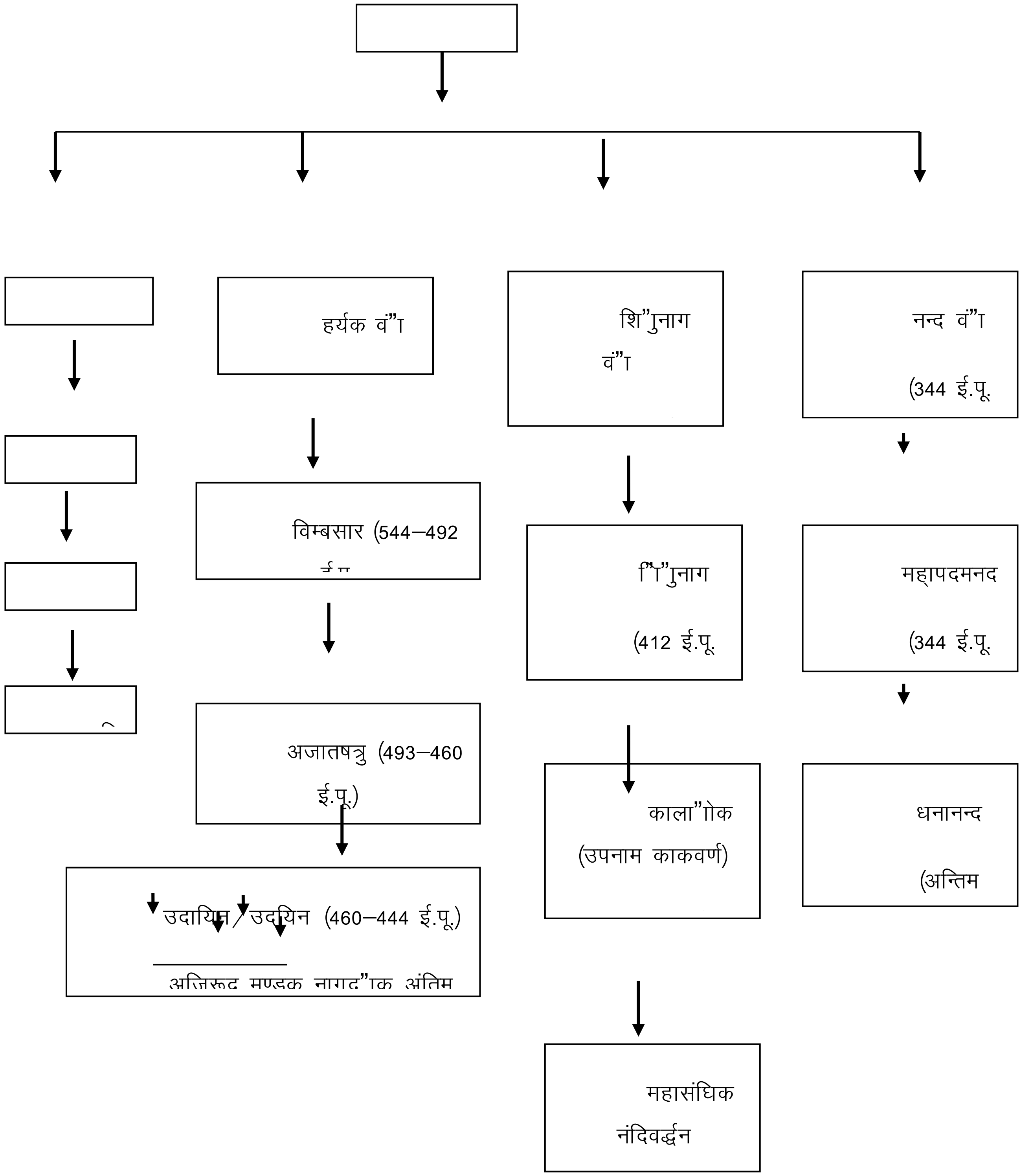

Ekx/k lkekzT; dk mYys[k lo/kiFke vFkoZon esa feyrk gS ex/k oa"k dk laLFkkid blls iwdkj gS &

क्र.सं.	वं"ा	संस्थापक
1	बृहद्रथ	बृहद्रथ
2	हर्यक	बिम्बसार
3	f"ा"ुनाग	f"ा"ुनाग
4	नंद	महापद्म नंद (महानन्दिन)

Ekx/k lkekzT; dk mRFkku ,oa foLrkj esa ftu oa"ों के भाासकों की भूमिका रही है उनका laf{kIr o.kZu fuEu iwdkj ls gS &

¼1½ cgnzFk oa"k ¼& महाकाव्यों एवं पुराणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मगध के सबसे पुरातन वं"ा के संस्थापक बृहद्रथ थे। बृह्द्रथ के पिता का नाम वसु था। बृह्द्रथ ने बह्द्रथ वं"ा की नींव डाली इस वं"ा के निम्न शासकों ने मगध पर शासन किया।

¼d½ cgnzFk ¼& बृह्द्रथ महाभारत के समय का राजा थां इसने प्राग ऐतिहासिक काल में सर्वप्रथम मगध में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थीं बृह्द्रथ अपने वं"ा का महान राजा था। महाभारतकालीन कृष्ण को घोर शत्रु था। मगध राज्य का उत्कर्ष या उदय इसी के शासनकाल में हुआ था। इसकी राजधानी गिरिब्रज (राजगृह) थी।

¼[k½ tjklä/k & जरासंध बृह्द्रथ का पुत्र था। यह भी अपने पिता की भांति महाभारतकालीन कृष्ण का पक्का शत्रु था। जरासंघ एक पराक्रमी शासक था और उसने अनेक राजाओं को पराजित करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उत्तर भारत में अपने साम्राज्य के विस्तार के समय भीम और जरासंध के बीच में मल्ल युद्ध हुआ। इस युद्ध में भीम ने जरासंघ को मार डाला। जरासंघ की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शासक बना।

¼x½ fjiqat; ¼& रिपुंजय जरासंघ का पुत्र था। यह बह्द्रथ वं"ा का अन्तिम शासक था। यह एक कमजोर व अयोग्य राजा था। रिपुंजय की हत्या इसके मन्त्री पुलिक ने कर दी और अपने पुत्र को गद्दी पर बैठाया। इस प्रकार बृह्द्रथ वं"ा का अन्त हो गया।

¼2½ हर्यक वं"ा (पितृ रूता वं"ा) (544 ई.पू. से 492 ई.पू.) :— बिम्बसार, महत्वाकांक्षी एवं वीर सामंत, 'भट्टिय' का पुत्र था। हर्यक वं"ा का संस्थापक था एवं इस वं"ा का सबसे अधिक प्रतापी राजा था। इसका उपनाम 'श्रेणिक या (जैन साहित्य में इसे श्रेणिक कहा गया है) यह अपने पिता के सहयोग से मगध के सिंहासन पर आसीन हुआ था। इसे अपनी राजधानी गिरिव्रज को बनाया और कु"ाल प्र"ाासन की आव"यकता पर बल दिया। बिंबसार ने अपनी शक्ति और राज्य के विस्तार के लिए अनेक राज्यों से वैवाहिक संबन्ध स्थापित किए उसकी चार पत्नियां थी,

पहली पत्नी कौ"ालराज की पुत्री व प्रसेनजित की बहन महाकौ"ाल थी। दूसरी पत्नी वै"ााली लिच्छवि शासक चेटक की पुत्री चेल्लना थी। तीसरी पत्नी विदेहराज की पुत्री वासपी थी। चौथी पत्नी क्षेमा थी जो भद्र नरे"ा की पुत्री थी, विभिन्न राजबली से वैवाहिक सम्बन्ध से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी व मगध का प्रसार क्षेत्र भी बढ़ा। बिंबसार ने केवल 15 वर्ष की आयु में अपने पिता की सहायता से मगध का सिंहासन संभाल लिया था।

lkfl) bfrgkldkj vkj-, l-f=ikBh d: vu|lkj ; विवाह न केवल बिंबिसार के समकालीन शासकों में प्राप्त प्रमुखता को ही द"ार्तिं है, अपितु इन्होनें मगध राज्य के विस्तार के लिए मार्ग भी तैयार कियkA **''These marriages net only show the high position of bimbisar among his royal contemporaries, but they seem to have also paved the way for the expansion of Magadha"" R.S. Tripathi, history of ancient India (Delhi : 1987) P93)**

बिंबिसार एक सफल कूटनीतिज्ञ था। पुराणों के अनुसार विम्बिसार ने करनी 28 वर्ष तक शासन किया। बौद्ध ग्रंथ महावं"ा के अनुसार 52 वर्ष तक शासन किया स्मिथ ने बिम्बिसार की शासन की तिथि 582 bZ-iw-&544 bZ- पू. मानी है। राधामुकुंद मुखर्जी व डॉ. हेमचन्द राय चौधरी ने बिम्बिसार की शासन की तिथि ¼544 bZ-iw-&492 bZ-iw- rd½ मानी है। यानि विभिन्न इतिहासकारों में इस को लेकर मतभेद है। बिम्बिसार महात्मा बुद्ध का मित्र एवं संरक्षक था। विनयपिटक से ज्ञात होता है कि बुद्ध से मिलने के बाद उसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। बिम्बिसार का अवन्ति से अच्छा सम्बन्ध था क्योंकि जब अवन्ति के राजा प्रद्योत बीमार थे तो बिम्बिसार ने अपने वैद्य जीवक को भेजा था। बिम्बिसार ने अंग और चम्मा को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया और इसकी शासन व्यवस्था को चलाने के लिए अपने पुत्र अजात"ात्रु को यहां का उपराजा नियुक्त किया।

- **बिम्बिसार के भाासन काल के प्रमुख प्र"kklfud inkf/kdkjh ¼&**

  प्र"ाासन व्यवस्था को उत्तम ढंग से चलाने के उद्दे"य से उसने एक मंत्रिमण्डल का गठन किया हुआ था।

  (1) उपराजा (2) माण्डलिक राजा (3) सेनापति (4) सेनानायक महामात्र (5) व्यावहारिक महामात्र (6) ग्रामभोजक

(ख) vtkr"k=q 492 bZ-iw- & 460 bZ-iw- ½ **(Ajatashatru)** अजात"ात्रु ने अपने पिता की हत्या करके सत्ता प्राप्त की थी। इसलिए इसे पितृहंता भी कहते है। अजात"ात्रु को कूणिक भी कहा जाता है। मगध के सिंहासन पर बैठने से पहले वह अंग राज्य का सूबेदार ("ाासक के रूप में) राजकीय कार्य कर चुका था। अजात"ात्रु एक दुर्धर्ष साम्राज्यवादी था। इसने काफी समय के बाद कां"ाी एवं वज्जि संघ को जीत लिया था। अजात"ात्रु का प्रथम युद्ध को"ाल के राजा प्रसेनजित से हुआ। बिम्बिसार की हत्या के दुख के कारण कोसल देवी ने जल्द ही प्राण त्याग दिए। राजा प्रसेनजित बिम्बिसार और अपनी बहन दोनों की मृत्यु का उत्तरदायी अजात"ात्रु को ही मानता था। इसलिए उसने का"ाी साम्राज्य को वापिस मांगा क्योकि का"ाी मगध साम्राज्य की आय का एक मुख्य स्त्रोत था। युद्ध के बाद को"ाल राजकुमारी वाजिरा के साथ उसका विवाह हुआ। अजात"ात्रु की दूसरी महत्वपूर्ण सफलता वै"ााली के लिच्छवियों को पराजित करना था। मगध और लिच्छवियों के बीच 16 व"ाेंर् तक शासन चला। अंत में अजात"ात्रु को ही सफलता मिली।

अजात"ात्रु बौद्ध एवं जैन धर्म दोनों को मानता था। इसी के शासन काल में आठवें वर्ष में महात्मा बुद्ध का निर्वाण प्राप्त हुआ था। महापरिनिर्वाण सूत्र के अनुसार अजात"ात्रु ने बुद्ध के अव"ाेषों को लेकर राजगृह में

एक स्तूप निर्मित कराया। बौद्ध साहित्य के अनुसार अजात”ात्रु ने 32 वर्षो तक शासन किया। पुराणों के अनुसार उसने 28 वर्षो तक शासन किया। साम्राज्य के विस्तार के लिए अजात”ात्रु ने अपना अंतिम युद्ध अवंति के विरूद्ध लड़ने की इच्छा पाल रखी थी, किन्तु ऐसा करने के पूर्व ही उसकी हत्या उसके पुत्र उदायिन द्वारा करवा दी गई।

(x½ mnkf;u ¼460 b-i- l s 444 b-i-½ :– यह अजात”ात्रु एवं पद्मावती की संतान था। इसे उदयभद्र के नाम से भी जाना जाता है। सिंहली अनश्रुतियों के अनुसार अजात”ात्रु के पुत्र उदायिन ने पिता की हत्या करके सत्ता प्राप्त की। उदायिन ने (460ई.पू. से 444 ई. पू.) तक मगध पर शासन किया। गंगा और सोन नदी के संगम पर एक किला बनाया ओर 'पाटलिपुत्र' (वर्तमान पटना) की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाया। राजगृह के व्यापारी पाटलिपुत्र मे आकर बस गए और शीघ्र ही यह व्यापारिक केन्द्र बन गया। जैन स्त्रोतों के अनुसार पह अपने पिता के शासन काल में चम्पा का उपराजा था। पुराणों के अनुसार उसने 33 वर्ष शासन किया और महावं”ा के अनुसार 16 वर्ष तक शासन किया लेकिन यह जैन मतानुयायी था। इसने पाटलिपुत्र में जैन pR;xg का निर्माण करवाया और यह जैनियों के उपवास (व्रत) भी रखता था। बौद्ध साहित्य के अनुसार उदायिन के बाद उसने तीन पुत्रों – (1) अनिरूद्ध (2) मुंडक (3) नागद”ाक ने क्रम”ाः शासन किया। बाद में जनता ने इन पितृहताओं को शासन से उतारकर f”ा”ाुनाग नामक एक योग्य अमात्य को शासक बनाया और इसी ने f”ा”ाुनाग वं”ा की नींव रखी।

(3) f”ा”ाुनाग वं”ा (412 ई.पू.–344 ई.पू-½

(क) f”ा”ाुनाग (412 ई.पू. से 398 ई.पू-½ :– इस वं”ा का संस्थापक f”ा”ाुनाग था। शासक बनने से पूर्व f”ा”ाुनाग अमात्य था और बनारस के गवर्नर के रूप में कार्य करते थे। इसकी सबसे बडी सफलता अंवति एवं वत्सराज को जीत कर मगध साम्राज्य का विस्तार उत्तरी भारत में मालवा से बंगाल तक किया। इसने वै”ााली को अपनी राजधानी बताया।

¼[k½ dkyk”kksd ;k dkdo.kZ ¼394b-i- l s 366 b-i-½ – पुराण एवं दिव्यावादन में काला”ाोक का नाम काकवर्ण मिलता है। इसने वै”ााली के स्थान पर पुनः पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। इसी के शासनकाल में वै”ााली में द्वितीय बौद्ध संगीति (383 ई.पू.) का आयोजन हुआ। काला”ाोक की हत्या राजधानी के समीप घूमते समय किसी व्याक्ति ने छुरा घोंपकर कर दी थी। काला”ाोक की मृत्यु के बाद उसके दस पुत्रों – (1) भद्रसेन (2) कोंरडवर्ण (3) मंगुर (4) सर्वज (5) जलिक (6) उभाक (7) संजय (8) कोरव्य (9) पजाक (10) नंदिवर्द्धन या महानंदिन इन सभी ने काला”ाोक की मृत्यु के बाद 22 वर्ष तक शासन किया।

¼4½ uno”k ¼344 b-i-&323 b-i-½ – f”ा”ाुनाग वं”ा के बाद मगध पर नंद वं”ा के शासकों का अधिकार हो गया। नंद वं”ा में कुल नौ राजा हुए और इसी कारण उन्हे नवनंद कहा जाता है। नंद वं”ा के संस्थापक और उसके वं”ा के बारे में विद्वानों में मतभेद है। पुराणों के अनुसार इसे 'महापद्म' का नाम दिया गया है।

¼d½ egkineun ¼344 b-i- l s 322 b-i-½ – नंद वं”ा के संस्थापक शासक की सेना की संख्या दस पद्म थी इसलिए उसे महापद्मनंद की संज्ञा दी गई है। जैन ग्रन्थ के अनुसार वह एक नाई और वै”या का पुत्र था। यह सम्पूर्ण मगध साम्राज्य का सबसे अधिक शक्ति”ााली शासक था। कलिंग की विजय के बाद इसने एक नहर या बांध का निर्माण करवाया जिसका वर्णन बाद में खारवेल ने अपने हाथी गुफा में किया। महापदमनंद ने ''सर्वक्षत्रांतक'' और ''एकराट'' की उपाधि धारण की थी। व्याकरणाचार्यपाणिनि इसका एक अच्छा मित्र था।

¼[k½ /kukuan ¼& महापदमनंद के बाद के शासकों के बारे में कोई वि"ाष जानकारी नहीं मिलती है। केवल थोड़ी बहुत जानकारी मिलती हे तो धनानंद के बारे में मिलती हैं महोबोधिवं"ा के अनुसार, नंदवं"ा का अंतिम शासक धनानंद था। यह महापदमनंद के आठ पुत्रों में सबसे छोटा था। धनानन्द सिकन्दर का समाकलीन था ग्रीक (यूनानी) लेखकों में इसे अग्रमीज कहा गया है। जेनाफोन ने धनानंद को बहुत धनाढ्य एवं शक्ति"ााली व्यक्ति कहा है। इस के पास दो लाख पैदल सैनिक तीस घुडसवार एवं तीस हजार से लेकर छः हजार तक हाथी थे। पुराणों, बौद्धग्रन्थों, अर्थ"ाास्त्र (कोटिल्य) से जानकारी के आधार पर ऐसा माना गया है कि) से जानकारी के आधार पर ऐसा माना गया है कि 322 ई.पू. चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य की मदद से धनानंद की हत्या की और मौर्यवं"ा के शासन की नींव डाली।

4-3-3- ex/k lkezkT; ds foLrkj ds dkj.k (Reasons for the Expansion of Magadha Empire)

ex/k dh lQyrk ds dkj.k fuEufyf[kr Fks tks bl izdkj ls gS ¼&

(1) HkkSxksfyd fLFkfr **(Geographical Position)** :– मगध साम्राज्य के विस्तार के लिए उत्तरदायी उसकी भौगोलिक स्थिति थी। मगध तीन ओर से नदियों से घिरा हुआ था और एक और पहाड़ी से। इस के उत्तर की ओर गंगा, दक्षिण की ओर विंध्याचल पर्वत, पूर्व की ओर सोन तथा प"िचम की ओर चंपा नदियां बहती थी। मगध की दो राजधानियां थी एक राजधानी गिरित्राज (राजगीर) थी, दूसरी पाटलिपुत्र थी इसका वर्तमान में नाम पटना हैं राजगीर पहाड़ियों से घिरा हुआ था दूसरी राजधानी गंगा, गंडक ओर सोन नदियों के संगम पर स्थित थी। इसलिए ये दोनों राजधानियां सुरक्षित थी। इस प्रकार मगध साम्राज्य को शक्ति"ााली एवं समृद्ध बनाने में इसकी भौगोलिक स्थिति एक मुख्य कारण रहा।

¼2½ ykgs ds fo"kky HkaMkj **(Rich Iorn ore)** :– लोहे के काफी समृद्ध भण्डार मगध की राजधानी राजगीर के आस–पास थे। जिसका उपयोग प्रभाव"ााली हथियार बनाने एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएं बनाना सरल था। क्योंकि मगध के विरोधियों के पास लोहे के भण्डार की कमी थी। इसलिए वे अच्छे शस्त्रों का निर्माण नहीं कर सकें। मगध में धातु से बने सिक्को का लाभ भी शासकों को मिला। इस प्रकार कह सकते है कि मगध के उत्थान व कल्याण (सफलता) के पीछे लोहे के भण्डारों का बहुत सहयोग था जिसके कारण वे अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकें।

(3) **कृशि ;Agriculture)** :– लोहे के वि"ााल भण्डारों के कारण कृषि के कार्य में भी उन्नति हुई। जिससे बढ़िया औजारों के माध्यम से यहां के किसानों ने पर्याप्त अनाज पैदा किया। अपने पालन–पोषण के बाद उनके पास पर्याप्त अनाज बच जाता था। उसे राजा कर के रूप में जनता से लेकर इकट्ठा कर लेते थे।

(4) izfrcU/kksa ls eqfDr :– आर्यो का साम्राज्य उत्तर में प"िचम से पूर्व की ओर फैला हुआ था। पूर्वी राज्यों में आर्येतर लोग अधिक थे। इसलिए किसी सीमा तक मगध के आस–पास के लोग आर्य जाति पर लगे प्रतिबंधो से मुक्त थे।

(5) O;kikj **(Trade)** :– मगध साम्राज्य में चावल की पैदावार भरपूर होती थीं प्रयाग से प"िचम के क्षेत्र की अपेक्षा यह प्रदे"ा कहीं अधिक उपजाऊ था ओर पाटलिपुत्र एक जलदुर्ग भी था।

¼6½ fo"kky **(Vast Army)** :– सेना मगध के शासकों के पास एक वि"ााल सेना थी इस सेना के सैनिक बहादुर थे। अन्य शासक युद्ध में पैदल सैनिक और घुड़सवार की सेना रखते थे। यूनानी

स्त्रोतों से पता चलता है कि नंद शासकों के 2 लाख पैदल सैनिक, 60 हजार घुडसवार, 6 हजार हाथी थे। इस वि"ााल सेना का प्रयोग बड़ी सूझ–बूझ के साथ युद्धों में प्रयोग किया व हाथियों से बड़े–2 दुर्गो को तोड़ने के लिए तथा व्यापार का सामान लाने व ले जाने के लिए किया।

(7) महान भाासक (Great King) :– मगध साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण कारण वहां के महान राजाओं का योगदान बिम्बिसार से लेकर धनानंद तक मगध को ऐसे वीर एवं शक्ति"ाली, महत्वाकांक्षी, साम्राज्यवादी और कु"ाल शासक प्राप्त हुए। इन शासकों ने मगध साम्राज्य के विस्तार के लिए अनेकों प्रयास किए। ये शासक अच्छे राजनीति थे और अपनी शक्तियों का आंकलन करके सही अवसर पर विरोधियों को पराजित करते थे। जिसे मगध को एक वि"ााल साम्राज्य बनाकर खडा कर दिया।

¼8½ vPNh vkfFkZd fLFkfr **(Good Economic Condition)** :– मगध को आर्थिक पक्ष से मजबूत बनाने में वहॉ लोहे के वि''ााल भण्डार, उपजाऊ भूमि जल दुर्ग, फसलों की भरपूर पैदावार। वाणिज्य एवं व्यापार के मुख्य केन्द्र एव सिंचाई के साधन। चावल की पैदावार के सुविख्यात क्षेत्र एवं वहॉ की मेहनती व कर्मठ जनता का साम्राज्य के प्रति भरपूर योगदान।

इस प्रकार से हम कह सकते है कि मगध की सफलता के पीछे अनेक कारक उत्तरदायी थे। जिन के कारण मगध एक वि''ााल साम्राज्य बन कर चमका।

4-4 विशयवस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further Main Body of Text)

4-4-1 /kkfeZd vkUnksyu dk mn; dk dkj.k **(Casue of Rise of Religious Movements):-** ई. पू. छठी शताब्दी में गंगा के मैदानी इलाकों मे कई धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। जिनमें से 62 धार्मिक सम्प्रदायों के बारे में जानकारी या प्रमाण मिलता है। लेकिन जैन साहित्य के अनुसार इनकी संख्या 200 थी एवं बौद्ध साहित्य के अनुसार इनकी संख्या 62 थी। ब्राह्मणों के प्रभुत्व, धार्मिक अनुष्ठानो, रीति–रिवाजों, यज्ञ एवं कर्मकाण्डों धार्मिक प्रथाओं के विरोध में यह आन्दोलन चला। भारत में इसी सदी को धार्मिक क्रान्ति का काल कहा जाता है। इसका केन्द्र बिन्दु मगध था। धार्मिक आन्दोलन के इस काल में सामाजिक व्यवस्थाकार, दा"र्निक, इतिहासकार, धर्मसुधारक आदि वर्तमान को भविष्य की आकांक्षाओं से परिचित करने का प्रयास कर रहे थे। इस समय दो वर्ग मुख्य थे। एक धार्मिक कर्मकाण्ड को मानने वाला, दूसरा वर्ग धार्मिक कर्मकाण्ड का विरोध करने वाला। इस समय सन्यासियों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। ई. पू. छठी सदी को भारतीय इतिहास का संक्रमण काल भी कहा गया है। इस युग मे पूरे वि"व में धार्मिक आन्दोलन की गति काफी तेजी से बढ़ रही थी। चीन में कन्फयू"ियस तथा लाओत्से ईरान में जरथ्रुष्ट, जुडिया में जैरेमिया ने, यूनान में सुकरात अपने दा"र्निक सिद्धान्तों की विवेचना कर रहे थे। इन सभी नेताओं ने तत्कालीन धर्म प्रविष्ट बुराईयों को दूर करने एवं मानव कल्याण के लिए प्रयत्न किए।

ऐसे समय में लोग एक ऐसे धर्म की खोज में जुटे हुए थे जो सरल, सुबोध और उच्चस्तरीय हो। उसी समय भारत में महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध दो महान व्यक्ति आगे आए। जिन्होने अन्धवि''वास की घोर निन्दा की ओर लोगों के समक्ष बौद्ध एवं जैन धर्म को रखा। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म ने धार्मिक विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया और इन धर्मो का उदय सबसे शक्ति''ाली धार्मिक सुधार आन्दोलनो के रूप में हुआ।

4-4-2 ckS) /keZ **(Buddhism):-** भारत प्राचीन काल से धार्मिक संस्कारों वाला दे''ा रहा है। जब भी धर्म का पतन हुआ तब धर्म की रक्षा के लिए महान व्यक्तियों ने अवतार लिया। छठी सदी में जब धर्म पतन की ओर अग्रसर था। ऐसे समय में भगवान बुद्ध का जन्म हुआ जिन्होनें बौद्ध धर्म की स्थापना की। इसलिए बौद्ध धर्म का वास्तविक

संस्थापक महात्मा बुद्ध को कहा जाता है। बौद्ध धर्म को भारत में ही नही पूरे वि''व के धर्म की संज्ञा दी गई। बौद्ध धर्म के उपदे''ा पालि भाषा में दिए गए ताकि जनसाधारण उपदे''ाों को सुनकर अपने जीवन में उतार सकें।

4-4-2-1 egkRek c) dk thou ifjp; **(Introduction of life of Mahatma Budha):-** बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. कपिलवस्तु के पास नेपाल के लुम्बिनी मे शाक्य क्षत्रिय परिवार में हुआ था। जिसे बस्ती जिले में पिपरहवा नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि जन्म होने पर वे खड़े हो गए, सात डग चले और कहा यह मेरा अंतिम जन्म है। इसके बाद मेरा कोई जन्म नही होगा। इनकी माता का नाम महामाया एवं पिता का नाम शुद्धोधन था। इनकी माता का इनके जन्म के सातवें दिन देहान्त हो गया। इनका पालन–पोषण (लालन–पालन) विमाता (मौसी) महाप्रजापति गौतमी ने किया इसलिए ये बाद में गौतम कहलाए। बालक गौतम को देखकर कालदेव तथा ब्राह्मण कौण्डिन्य ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक बडा होकर एक चक्रवर्ती सम्राट अथवा सन्यासी होगा। बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया। 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह शाक्य कुल की कन्या य''ाोधरा से हुआ। य''ाोधरा के अन्य नाम गोपा, बिंबा तथा भद्रकच्छा भी है। य''ाोधरा से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। लेकिन सिद्धार्थ खु''ा नही हुए वरन् उसे मोह बन्धन मानकर 'राहु' कहा और उसका नाम राहुल रखा गया। राजा शुद्धोधन यह नही चाहते थे कि सिद्धार्थ सन्यासी बने इसलिए बचपन से ही उनका राजसी ठाट–बाट (भोग–विलास) के जीवन के लिए प्रबन्ध किया गया। सांसारिक दु:खों से व्यथित होकर सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। इसे बौद्ध ग्रन्थ में महापरिनिर्वाण कहा गया है। 35 वर्ष की अवस्था में निरंजना नदी के तट पर स्थित अरूवेला (बौद्ध गया) नामक स्थान पर ज्ञान की प्राप्ति हुई और इन्होनें अपना प्रथम उपदे''ा मगधी भाषा (पाली) में दिया।

bUgksaus viuk iFke mins"k lkjukFk ¼cukjl½ esa fn;k जिसे धर्मचक्रपरिवर्तन कहा गया है। वहीं बौद्ध ने संघ की स्थापना की और संघ के सदस्यों को विभिन्न क्षेत्रों में जाकर धर्म का प्रचार करने का आदे''ा दिया। इन्होने अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में चुंद नामक सुनाार के घर भोजन किया जिसके कारण बीमार हो गए और उसी समय वह कु''ाीनगर आ गए और 80 वर्ष की आयु में 483 ई.पू. इनका निधन हो गया। जिसे बौद्ध ग्रन्थों में महापरिनिर्वाण कहा गया है। कुछ विद्वानों ने इनकी मृत्यु को 486 ई. पूर्व भी माना है।

4-4-2 c) /keZ dh f"k{kk,¡ ,oa fl)kUr **(Buddhism Religious of Education and theory)**

बौद्ध धर्म की f''ाक्षाओं की जानकारी बौद्ध साहित्य के मूल ग्रंथ त्रिपिटक से मिलती है। (1) त्रिपिटक :– (क) विनयपिटक

(ख) सुत्तपिटक (ग) अभिधम्मपिटक

(क) lqÙkfiVd – यह तीनों पिटकों में सर्वाधिक बड़ा और अधिक महत्व वाला पिटक है। सुत्तपिटक में बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों तथा महात्मा बुद्ध के उपदे"ाों व संवादों का वर्णन किया गया है। इस के 5 खण्ड है।

(i) दीर्घ निकाय (ii) मजिसम निकाय (iii) अंगुतर (iv) संयुक्त निकाय (v) खुदक निकाय

(ख) vfHk/kEefiVd – इसमें बौद्ध द"ान तथा बौद्ध परिभाषाओं आदि का विवेचन किया गया है। इस पिटक के सात भाग –:

(i) धम्म संगनी (ii) विभिंग (iii) धातु कथा (iv) पुलपंजति (v) कथा वस्तु (vi) यमक
(vii) पठान इसमें अध्यात्मिक एवं दा”र्ानिक विचारों का संकलन

(ग) fou;fiVd – विनय पिटक जिसमें भिक्षु–भिक्षुणियों के संघ उनके दैनिक जीवन से संबधित नियमों का वर्णन किया गया है। इस पिटक के तीन भाग है :– (i) सुत विभाग (ii) परिवार (iii) खंदक। बौद्ध संघ के आचार–विचार व नियम–निषेध का संकलन है।

(2) ck) lfxfr;k :– बौद्ध धर्म में सभाओं का आयोजन किया गया। जिन्हे बौद्ध संगीति के नाम से जाना जाता है। बौद्ध धर्म में चार समितियों का आयोजन किया गया :–

(i) iFke ck) lxhfr ¼483 ch-lh-½ :– महात्मा बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद 483 ई.पू. में आजात”ात्रु के शासनकाल मे राजगृह (बिहार) नामक स्थान पर प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया। इस संगीति में बुद्ध के उपदे”ाों को दो पिटकों सुत्तपिटक, विनयपिटक नामक ग्रंथों में संकलित किया गया है। इसके अध्यक्ष महाकस्सप थे।

(ii) f}rh; ck) lxhfr ¼383 b-i-½ :– यह बौद्ध संगीति काला”ाोक के शासन में वै”ााली (बिहार) में आयोजन हुआ। इसके अध्यक्ष साबकमीर थे।

(iii) r`rh; ck) lxhfr ¼255 b-i-½ :– इस बौद्ध संगीति का आयोजन सम्राट अ”ाोक के शासन काल में पाटलिपुत्र (वर्तमान में पटना) में हुआ था। इसके अध्यक्ष मोग्गलिपुत्र तिस्स थे। इस संगीति में महात्मा बुद्ध के उपदे”ाों का संकलन किया गया है। इसे अभिधम्मपिटक के नाम से जाना जाता है। इसमें संघ भेदों को रोकने के लिए कठोर नियम बनाए गए है।

(iv) prFk ck) lxhfr ¼iFke b- **भाताब्दी)** :– इस संगीति का आयोजन कुषाण वं”ा के शासक कनिष्क के समय में कुण्डलवन (क”मीर) में हुआ था। इसका कार्य विभाष”ाास्त्र नामक टीका का संकलन तथा बौद्ध धर्म का दो संप्रदाय में बटना – हीनयान और महायान नामक दो संप्रदाय में बटना। इसके अध्यक्ष वसुमित्र (अवघोष) थे।

(3) deokn :– बौद्ध धर्म में कर्म के अनुसार ही जन्म, मृत्यु एवं निर्माण की प्राप्ति। इसके लिए सत्कर्म करना जरूरी था अर्थात मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसे ही फल को प्राप्त करता है।

(4) {kf.kdoknh –: बौद्ध धर्म के अनुसार संसार क्षणवाद है ओर अन्तः शुद्धिवादी है इसके लिए संस्कार व्ययधर्मा है। इसी के साथ मोक्ष की प्राप्ति। मनुष्य को भ्रम है कि वह सांसारिक वस्तुओं को स्थाई मान लेता है।

(5) n%[k :– संसार दुःखों का घर है। दुःख महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्यों में से एक है। जन्म, मरण, जरा, व्याधि प्रिय का वियोग, इच्छा के अनुसार वस्तु का न मिलना।

(6) **अश्टांगिक मार्ग** – महात्मा बुद्ध ने दुःख की निवृति (निर्वाण) के लिए अष्टांगिक मार्ग का उपाय बताया है।

(i) **सम्यक दृश्टि** :– चार आर्य सत्यों को जानने के लिए सम्यक दृष्टि आव”यक है। सत्य, असत्य, पाप, पुण्य, सदाचार–दुराचार, तृष्णा–अतृष्णा के बीच विभेद समझाना।

(ii) lE;d ladYi :– भौतिक सुखों के प्रति आकर्षण के त्याग का संकल्प।

(iii) lE;d okd~ :– सदा सच बोलने वाला।

(iv) lE;d Øe :– सम्यक् कर्म से मनुष्य अहिसां प्रिय अर्थात सदा सत्य कर्म करने वाला।

(v) lE;d thfodk :– ईमानदारी से आजीविका अर्जित करना।

(vi) lE;d i;Ru :– इंद्रियों पर संयम तथा बुरी भावनाओं का परित्याग करना सम्यक प्रयत्न है।

(vii) lE;d Lefr :– कार्य, वेदना, चित्त और धर्म में स्मृति सम्यक स्मृति है।

(viii) lE;d lekf/k :– मन की एकाग्रता और ध्यान केन्द्रित करना सम्यक समाधि है।

अश्टांगिक मार्ग मे Ld/k rhu g – प्रज्ञा स्कंध, शील स्कंध, समाधि स्कंध।

(7) दस भील :– (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) अपरिग्रह अर्थात धन संग्रह न करना (v) ब्रह्चर्य (vi) नृत्य व संगीत का त्याग (vii) सुगन्धित पदार्थो का त्याग (viii) असमय भोजन का त्याग (ix) कोमल शय्या का त्याग (x) कामिनी कंचन का त्याग

उपयुर्क्त दस शीलों में से प्रथम पांच गृहस्थों के लिए तथा भिक्षुओं के लिए दसों शील आव"यक था।

(8) vuh"ojoknh :– महात्मा बुद्ध अनी"वरवादी विचारों के थे। वे संसार के उत्पत्ति में ई"वरीय योगदान नही मानते है। अर्थात संसार की सृष्टि में ई"वर का कोई अस्तित्व नही है। बौद्ध धर्म में व्यक्ति, भौतिक और मानसिक तत्वों के पांच (स्ंकधों, रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान) से मिलकर बना है।

(9) e/;e ekxZ :– बुद्ध के अनुसार f"ाक्षा न अधिक विलास करना चाहिए न ही अधिक संयम करना चाहिए। मध्यम मार्ग को अपनाना चाहिए।

(10) irhR; leRikn :– महात्मा बुद्ध के अनुसार एक वस्तु के विना"ा के प"चात् दूसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है। प्रत्येक घटना के पीछे कार्य–कारण का संबन्ध होता है।

(11) iqutZUe – ई"वर और आत्मा के अस्तित्व में न होते हुए भी बुद्ध का पुर्नजन्म मे वि"वास था, इस सम्बन्ध में उनका विचार है कि पुर्नजन्म आत्मा का नही वरन् अनित्य अंहकार का होता है वे पुर्नजन्म को भी कार्यकारण नियम द्वारा संचालित मानते है।

(12) tkfr&ikfr dk fojks/kh – गौतम बुद्ध जाति–पांति में वि"वास न करके बल्कि एकता पर बल देते थे। बौद्ध धर्म का अनुसरण कोई भी कर सकता है चाहे वो किसी भी जाति का हो। उन्होनें एक स्थान पर कहा भी – ''हे भिक्षुओ ! जिस प्रकार बडी–बडी नदियां समुन्द्र में गिरकर अपना अस्तित्व खो देती है, उसी प्रकार भिक्षु के वस्त्र धारण करने के बाद ऊंच–नीच, वरण–भेद, समाप्त हो जाता है।

(13) deZdk.M] ;K rFkk Ik"kcfy dk fojks/kh – प"ाुओं की बलि चढ़ाना तथा यज्ञ आदि में महात्मा बुद्ध वि"वास नही करते थे तथा कर्मकाण्ड के घोर विरोधी थे।

(14½ vfgalk ij cy – महात्मा बुद्ध अंहिसा पर बल डालते थे ज्ञान प्राप्ति के बाद उन्होनें अंहिसा परमोधर्म के सिद्धान्त का प्रचार–प्रसार किया। मनुष्य को अपने मन, वचन तथा कर्म से किसी जीव को दुःख नही पहुंचाना चाहिए।

(15) vukReokn – शरीर अनेक तत्वों से मिलकर बना हुआ है तथा मृत्यु के बाद प्रत्येक तत्व अपने मूल स्त्रोत में विलीन हो जाता है। आत्मा से बढ़कर कोई चीज इस सृष्टि में नही है।

(16½ fuokZ.k – बौद्ध धर्म का प्रमुख लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति जिसका अर्थ है – दीपक का बुझ जाना अर्थात जीवन–मरण चक्र से मुक्ति पाना। महात्मा बुद्ध के निधन को महापरिनिर्वाण की संज्ञा दी गई है।

4-4-2-3- ckS) /keZ dk fodkl ;k izlkj **(Development/range of Buddhism)**

I. ckS) /keZ dk yphykiu½& अन्य धर्मो की तुलाना में बौद्ध धर्म में लचीलापन था क्योकिं इसमें परिस्थितियों के अनुसार परिर्वतन संभव था। केवल भारतीय ही नही विदे"ाी भी इस धर्म के प्रति आकर्षित हुए और इस प्रकार बौद्ध धर्म का विकास तेजी से हुआ।

II. fl)kUrks dh ljyrk e0;ogkfjdrk ½& बौद्ध धर्म के सिद्धान्त व्यवहारिक एवं सरल थे इन्हे जनसाधारण लोग भी आसानी से अपना सकते थे। इसके माध्यम से जनसाधारण को कर्तव्यों का बोध कराया जाता था।

III. egkRek cq) dk 0;fDrRo & महात्मा बुद्ध का व्यक्तित्व क्षमा, दया, सहन"ाीलता, स्नेह, करूणा आदि से भरपूर था। इसलिए जनता से लेकर राजा तक प्रत्येक व्यक्ति उनकी तरफ आकर्षित हुआ ओर उनका अनुयायी बन गया।

IV. lkekftd lekurk dk fl)kUr **(Principle of Social Equality)** – महात्मा बुद्ध ने जाति वर्ग की घोर निन्दा की ओर समानता पर बल दिया जबकि ब्राह्मण धर्म में समाज के निम्न वर्ग के लोगों के साथ घृणा करते थे।

V. eBks dh LFkkiuk & किसी भी धर्म के विकास के लिए उसमें संगठन की अति आव"यकता होती है। इसलिए बुद्ध ने बौद्ध धर्म के विकास व प्रचार के लिए मठों की स्थापना की। ताकि भिक्षुओं में पारस्परिक समानता व भाईचारे की भावना विकसित हो। यह किसी भी धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए आव"यक है।

VI. jktdh; laj{k.k & बौद्ध धर्म ने अत्यधिक विकास कर लिया था। जिसके कारण बिन्दुसार, अ"ाोक, कनिष्क, हर्ष आदि ने इसे राजकीय संरक्षण प्रदान किया। अ"ाोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए स्तूप एवं स्तम्भों का निर्माण करवाया।

VII. rRdkyhd /kkfeZd fLFkfr & छठी शताब्दी ई. पू. कर्म काण्ड, यज्ञों ओर आडम्बरों का प्रचलन अधिक हो गया था। जिसके कारण जनसाधारण बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए।

VIII. lkfgR; dh i`pjrk & किसी भी धर्म के विकास में साहित्य का वि"ोष योगदान होता है। साहित्य को ही पढ़कर उस धर्म का सार आसानी से समझा जा सकता है। बौद्ध धर्म साहित्य को पढ़कर भारतीय ही नहीं किन्तु विदे"ाी भी आकर्षित हुए।

IX. ckS) laxhfr;ks dk vk;ktu & समय–समय पर बौद्ध संगीतियां आयोजन की गई। इन संगीतियों ने बौद्ध धर्म के विकास में वि"ोष योगदान दिया तथा आव"यकता पडने पर सिद्धान्तों का सरलीकरण किया। जिससे बौद्ध धर्म की उन्नति हुई।

X. **आम बोल की भाशा का प्रयोग** – बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार हेतू सरल एवं रोचक भाषा (पाली) का प्रयोग किया गया। परिणाम स्वरूप जनसाधारण ने सुगमता पूर्वक ग्रहण किया। इससे बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई।

4-4-2-4 ck) /keZ ds iru ds dkj.k (The reason of Decline of Buddhism)

1. **मठों में प्रर्याप्त मात्रा में भ्रश्टाचार** – अब बौद्ध मठ "िक्षा का केन्द्र न रहकर भोग ओर विलासिता का केन्द्र बन गये। बौद्ध धर्म कर्मकाण्ड का विरोधी था किन्तु अब वह कर्मकाण्ड के भावों में ग्रस्त हो गया।
2. ck) /keZ ds /kkfeZd fl)kUrks esa erHksn & बौद्ध भिक्षु धार्मिक सिद्धान्तों को लेकर एक मत न होकर आपस में विरोध कर रहे थे जिस कलह के कारण लोगों की रूचि बौद्ध धर्म से हट गई। जिन रूढियों एवं कुरीतियों के कारण हिन्दू धर्म का पतन हुआ था वही सब बुराईयॉ बौद्ध धर्म के पतन का भी कारण बनी और जनसाधारण का धीरे–धीरे इस पर से वि"वास उठ गया।
3. fgUnw /keZ esa lq/kkj & बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के समय हिन्दू धर्म में बहुत सारी त्रुटियां थी ओर धीरे–धीरे हिन्दू धर्म ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने की भरपूर कोि"ा"ा की जिसमें कुछ धर्म सुधारकों का भरपूर प्रयास रहा। धर्म सुधारकों में शंकराचार्य, रामानन्द, रामानुज, कुमारिल भट्ट, प्रभाकर आदि नाम उल्लेखनीय है। इन दा"ानिकों ने हिन्दू धर्म के दोषों को दूर किया ओर बौद्ध अनुयायियों से तर्क करके उन्हे पराजित किया जिसका जनसाधारण पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। हिन्दू धर्म की और उन लोगों का आकर्षण बढ़ा।
4. ck) /keZ dk cnyk :i & जिस बौद्ध धर्म का महात्मा बुद्ध ने प्रतिपादन किया तब यह अत्यंत सरल एवं व्यवहारिक जीवन के लिए उपयोगी था किन्तु समय परिर्वतन के साथ–साथ बौद्ध धर्म में दुरूहता और कट्टरता का समावे"ा हो गया। इसका वास्तविक स्वरूप बदल गया। बौद्ध धर्म में उत्पन्न होने वाली कुप्रथाओं ने सामान्य जन को विक्षुब्ध कर दिया।
5. jktdh; laj{k.k dk vHkko & बौद्ध धर्म के उत्थान में राजकीय संरक्षण को अहम भूमिका थी उसके पतन में भी उसकी उतनी ही भूमिका रही। सातवाहन, शुंग, गुप्त आदि शासकों ने बौद्ध धर्म को संरक्षण नही दिया इन्होनें ब्राह्मण विद्वानों को प्रोत्साहन दिया परिणाम स्वरूप बौद्ध धर्म एक राष्ट्रीय धर्म रहा। इस प्रकार बौद्ध धर्म का अन्त हो गया।
6. ck) /keZ esa efgykvksa dk izo"k & बौद्ध धर्म में महिलाओं के प्रवे"ा से अनेकों कुरीतियां पनपी। महात्मा बुद्ध के मठों में भिक्षु–भिक्षुणियों के रहने का अलग–अलग प्रबन्ध किया था ताकि उनके बीच में वार्तालाप न हो ओर एक दूसरे के सम्पर्क में न आए परन्तु महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद शनै–"ानै नियमों में "िाथिलता आई ओर कुछ वर्षो में ही बौद्ध बिहारों में महिलाओं की संख्या अधिक हो गई जिसके कारण ब्रह्मचर्य का पालन नही रहा। जिसके कारण मठों का वातावरण दूषित हो गया। यह सब देखकर सामान्य जन इसे तुच्छ दृष्टि से देखने लगे।
7. ckgjh vkØe.k & बाहर से भारत पर होनें वाले नरसंहार करने वाले आक्रमण भी बौद्ध धर्म के पतन का प्रमुख कारण बने। विदे"ाी आक्रमणों ने बौद्ध सांस्कृति, संघारामों तथा बौद्ध

बिहारों को विनष्ट कर दिया। इसके कारण भी बौद्ध धर्म की बहुत अवनति हुई ओर बौद्ध धर्म भारत से विलुप्त हो गया।

8. jktiir jktkvk dk mn; & सम्राट हर्ष की मृत्यूपरान्त भारत में राजपूत राजाओं की शक्ति बढ़ने लगी। राजपूत राजा बौद्ध धर्म के अहिंसावादि सिद्धान्त के विरूद्ध थे अतः उन्होनें इसे राजाश्रय नही दिया। यह भी बौद्ध धर्म के पतन का मुख्य कारण बना।

9. efLye vkØe.kdkjh – इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए बौद्ध बिहारों एवं हिन्दू धर्मो को नष्ट कर दिया। भिक्षु–भिक्षुणियों की हत्या कर दी गई। नालंदा जैसे बौद्ध f”k्षा केन्द्रों को जला दिया। इस प्रकार भारत बौद्ध केन्द्रों को उन्होनें नष्ट कर दिया। बौद्ध धर्म धीरे–धीरे नष्ट हो गया।

4-4-3- tu /ke **(Jainism)** & भारत में विभिन्न धर्मो का अपना–अपना वर्चस्व जिसमें जैन धर्म का भी वि”ोष महत्व रहा है। यह काफी पुरातन है। लेकिन जैन धर्म का विकास छठी शताब्दी ई.पू. हुआ है। जैन शब्द संस्कृत के जिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है विजेता (जितेन्द्रिय) जैन महात्माओं को निग्रंथ (बन्धन रहित) जैन धर्म के अनुयायियों को तीर्थंकर कहा जाता है। जैन धर्म में 24 तीर्थंकर है। जैन मुनियों ने ऋषभदेव को प्रथम तीर्थंकर माना है। पुराणों, विष्णुपुराण ओर भागवत पुराण में ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है। जो साधक अद्‌भुत सिद्धि प्राप्त करके कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त कर लेता है वहीं तीर्थंकर कहलाता है। जैन धर्म का संस्थापक ऋषभदेव को माना जाता है। लेकिन वास्तिव संस्थापक महावीर स्वामी को माना जाता है। तीन तीर्थंकर के बारे में ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है। जिनमें प्रथम – ऋषभदेव 23वें पा”र्वनाथ 24वें महाबीर स्वामी लेकिन शेष 22 तीर्थंकरों के बारे में कोई ऐतिहासिक प्रमाण नही मिलता है।

- tu /ke d 24 rhFkdj &

(1) ऋषभदेव	(2) अजितनाथ	(3) संभवनाथ
(4) अभिनंदन	(5) सुमितनाथ	(6) पद्मप्रभु
(7) सुपा”र्वनाथ	(8) चंद्रप्रभु	(9) पद्मप्रभु
(10) पुष्पदंत	(11) शीतलनाथ	(12) श्रेयाँ”ानाथ
(13) वसुपूज्य	(14) विमलनाथ	(15) अनंतनाथ
(16) धर्मनाथ	(17) कुंधुनाथ	(18) अरनाथ
(19) मल्लिनाथ	(20) मुनिसुब्रतनाथ	(21) नमिनाथ
(22) अरिष्टनेमि	(23) पा”र्वनाथ	(24) महावीर

4-4-3-1 egkohj Lokeh dk thou ifjp; **(Life History of Mahavir Swami)** – महावीर स्वामी का जन्म वै"ाली के समीप कुण्डग्राम में (बिहार के वर्तमान जिले वै"ाली में) 599 ई. पूर्व में और मृत्यु 527 ई.पू. में हुई थी, कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार इनका जन्म 540 ई.पू. और मृत्यु 468 ई.पू. में निर्धारित करते है। यही बाद वाली तिथि निर्धारित की गई है। इनके पिता सिद्धार्थ क्षत्रियगण के मुखिया थे। इनकी माता त्रि"ाला लिच्छवी नरे"ा चेटक की बहन थी। महावीर स्वामी का विवाह राजकुमारी य"ाोधरा से हुआ। य"ाोधरा से प्रियद"र्ाना एक पुत्री उत्पन्न हुई जिसका विवाह जामालित से हुआ। जामालित महावीर स्वामी के प्रथम अनुयायी बने। तीस वर्ष की आयु मे महावीर स्वामी ने गृह त्याग किया। अपने पिता के निधन के बाद अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर और अपने परिवार के दायित्व को बडे भाई को सौंपकर सत्य की खोज के लिए निकल पडे। जैन ग्रन्थ कल्पसूत्र से ज्ञात होता है कि बारह वर्ष की घोर यातनापूर्ण तपस्या के बाद तेरहवें वं"ा में महावीर को केवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई। जाम्भियगाम (जुम्भिका) ऋजुपालिक नदी शॉल वृक्ष नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई। आचरांग सूत्र से महावीर के कठोर तप की जानकारी मिलती है। वर्धमान ने तप के दौरान महान पराक्रम का प्रद"र्ान किया इसलिए इन्हे महावीर कहा जाता है। 'पद्मावती' (चम्पानरे"ा दधिवाहन की पुत्री) महावीर स्वामी की प्रथम f"ाष्या बनी। 72वर्ष की आयु में महावीर स्वामी ने राजगृह के समीप पावापुरी में शरीर छोडा।

4-4-3-2- tSu /keZ dh f"k{kk,i ,oa fl)kUr **(Teachings and Theory of Jainism)** %&

1. iapegkozr & जैन धर्म के पालन के लिए पंचमहाव्रत का पालन करना अति आव"यक है।

I. vfgalk & मन, क्रम–वचन किसी के प्रति ऐसा व्यवहार न करें जिससे उसे दुःख या कष्ट हों।
II. lR; & कर्म एवं वचन में सत्य होना।
III. vLrs; & दूसरों की किसी भी वस्तु को किसी रूप में स्वीकार न करना। (छल / कपट / चोरी / लोभ)
IV. czgep;Z & भोग वासनाओं से दूर रहकर सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करना। स्त्री को न देखना ओर न उससे वार्तालाप करना।
V. vifjxzg & भौतिक वस्तुओं का त्याग करना चाहिए तथा भौतिक सम्पति का अनाव"यक संग्रह नही करना चाहिए।

2. f=jRu & कर्म फल से छुटकारा पाना तथा निवारण को जैन धर्म में त्रिरत्न कहा है। मोक्ष प्राप्ति के लिए त्रिरत्न है –

I. lE;d Kku & सच्चा और पूर्ण ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।
II. lE;d n"kZu & यर्थाथ ज्ञान की प्रति श्रद्धा को जैन धर्म में सम्यक् द"र्ान कहा गया है।
III. lE;d vkpj.k & मनुष्य को इन्द्रियों के अधीन न होकर सदाचारी जीवन यापन करना चाहिए। इसके लिए उसे सत्य, अहिंसा तथा ब्रह्मचर्य का पालन आव"यक है।

3 ip v.kor & जैन भिक्षु और भिक्षुणियों के लिए पंच महाव्रत का पालन करना आव"यक था। महावीर स्वामी ने गृहस्थों को 5 या पंच अणुव्रत के पालन का उपदे"ा दिया – (i) अंहिसा (ii) अमृषा (iii) अचौर्य (iv) अपरिग्रह (v) ब्रह्मचर्य

4 vuh"ojokfnrk & महावीर स्वामी ई"वर के अस्तित्व में वि"वास नहीं करते थे। सृष्टि का निर्माण द्रव्यों, आका"ा, काल, धर्म, अधर्म व जीव से हुआ है।

5 deZ rFkk iqutZUe & मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्म से विमुख होना आव"यक है इससे ही पुनःर्जन्म से मुक्ति मिलती है।

6 L;knokn %& मनः स्थिति वैचारिक शक्ति एवं योग्यता की क्षमता सभी मे समान नही होती।

7 vudkRedrkokn & आत्मा का अस्तित्व तो है परन्तु परम आत्मकता जैसी चीज नही थी। आत्मा धर्म का कोई सम्बन्ध नही है।

8 fuofr dh iz/kkurk & जैन धर्म में निवृति की प्रधानता पर बल दिया गया है। संसार दुःखों का घर है। दुख का मुख्य कारण तृष्णा है। तृष्णा का ना"ा करने के लिए निवृति से ही हो सकता है।

9 vBkjg iki & इन पापों से मनुष्य कर्म बंधन में फंसता है – (i) झूठ (ii) चोरी (iii) मैथुन (iv) क्रोध (v) हिंसा (vi) द्रव्य मूर्छा (vii) लोभ (viii) माया (ix) मान (x) मोह (xi) कलह (xii) द्वेष (xiii) दोषारोपण (xiv) चुगली (xv) निंदा (xvi) असंयम (xvii) माया मृषा (कपटपूर्ण झूठ (xviii) मिथ्या द"ान रूपी शल्य

10 tkfr iFkk rFkk fyax Hksn dk fojks/k & महावीर स्वामी ने जाति प्रथा के घोर विरोधक थे। मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वै"य और शूद्र होता है। लिंग भेद का भी महावीर स्वामी ने विरोध किया। महिला और पुरूष दोनों ही समान है तथा दोनों को मोक्ष प्राप्ति का अधिकार है।

4-4-3-3 tSu /keZ ds foLrkj ds dkj.k **(Reasons for the expansion of Jainism)** %& जैन धर्म के संस्थापक महावीर स्वामी ने कैवल्य की प्राप्ति के बाद जैन धर्म का प्रचार–प्रसार किया। कौ"ाल, विदेह, मगह तथा अंग राज्यों में तेजी के साथ फैल गया। जैन साधुओं ने प"चम में प्रचार किया। तीर्थ–स्थली मथुरा को अपने धार्मिक प्रचार का केन्द्र बनाया। दक्षिण में जैन धर्म का प्रचार दिगंबर सम्प्रदाय के अनुयायियों ने किया। लेकिन जैन धर्म बौद्ध धर्म की भांति विदे"ाों तक फूला–फैला नही । भारत में जैन धर्म के प्रसार के कारण निम्नलिखित थे।

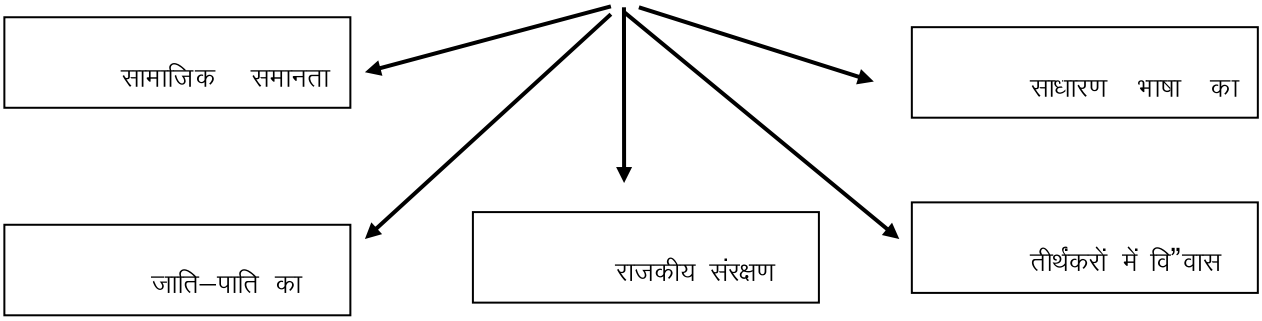

blдk o.ku fuEu i:dkj l: g: &

¼1½ **fl)kUrk dh ljyrk &** जैन धर्म के सिद्धान्त बहुत ही सरल थे जो जनसाधारण आसानी से अपना सकता था। कष्ट साध्य जैन धर्म के व्यवहारिक एवं सरल सिद्धान्तों ने जनता को उनके कर्तव्यों का बोध करवाया एवं स्वालंबी बनने का उपदे”ा दिया।

¼2½ **rhFkdjk e fo”okl &** जैन अनुयायी जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में अटूट वि”वास व श्रद्धा रखते थे। वे तीर्थंकरो का सर्वज्ञ एवंम् सर्व”ाक्ति मान मानते थे।

¼3½ **jktdh; lj{k.k &** जैन धर्म के प्रचार–प्रसार में तत्कालीन राजाओं का समर्थन व राजकीय संरक्षण प्रदान किया। अनेक राजा सांमत महावीर के उपदे”ाों से बहुत प्रभावित हुए और जैन धर्म के प्रसार में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया।

¼4½ **l?k dh LFkkiuk &** महावीर स्वामी ने कैवल्य की प्राप्ति के बाद जैन धर्म के संघ की स्थापना की और जैन धर्म के प्रचार–प्रसार में अहम् भूमिका निभाई।

¼5½ **tkfr&ikfr dk fojk/k &** महावीर स्वामी जाति–पाति एवं वर्ण वर्ग के विरोधी थे। वे सभी के साथ एक समान व्यवहार करने पर बल देते थे कि किसी जीव को दुःख न हो।

(6) साधारण भाशा का प्रयोग – जैन धर्म के सिद्धान्त साधारण बोल–चाल की भाषा में लिखे गए थे ताकि जनता उन्हे आसानी से समझ सके। महावीर स्वामी तथा उसके f”ाष्यों ने साधारण भाषा में उपदे”ा दिए ताकि लोग इस धर्म के ज्यादा से ज्यादा अनुयायी बन सके।

¼7½ **lkekftd lekurk ij cy &** महावीर स्वामी ने समानता पर बल दिया और इसके साथ स्वतंत्रता एवं नैतिकता पर भी बल दिया। ब्राह्मण समाज में निम्न वर्ग के लोगों को हीन दृष्टि से देखा जाता था। महावीर स्वामी ने इन सभी जातियों के लिए धर्म के रास्ते खोल दिए।

इस प्रकार से कह सकते है कि उपयुर्क्त तथ्यों व कथनों के कारण जैन धर्म ने छठी शताब्दी में पूरे भारत में तेज गति के साथ विकास किया। जिसमें स्वामी जी व उनके f”ाष्यों का योगदान काफी सराहनीय था।

4-5 ixfr leh{kk (Check Your Progress)

Hkkx ¼d½ fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft, **(Fill in the blanks)**

I. महाजनपदों की संख्या .... थी और का”ाी की राजधानी .... थी।

II. उत्तरी बिहार का आधुनिक भागलपुर मूंगेर जिले का क्षेत्रफल .... में शामिल था।

III. वज्जी जनपद की राजधानी का .... था।

IV. विराटनगर .... की राजधानी थी।

V. ि”ा”ाुनाग वं”ा .... तक था।

VI. जरासंध .... का पुत्र था।

VII. घटक .... की राजधानी थी

VIII. ि”ा”ाुनाग वं”ा का संस्थापक .... था।

IX. दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद .... था।

X. महावीर की पत्नी का .... एवं पुत्री का नाम .... था।

XI. जैन धर्म त्रिरत्न (क)... (ख) .... (ग) .... है।

XII. गौतम बुद्ध का जन्म .... ई.पू. में .... स्थान पर हुआ।

XIII. गौतम बुद्ध का विवाह .... वर्ष की अवस्था में .... के साथ हुआ।

XIV. महाबीर के बचपन का नाम .... था।

XV. बौद्ध संघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा .... थी।

Hkkx ¼[k½ mfpr feyku fdft, **(Matching Test) :-**

I.	ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक थे	(1) जन्म, घटना से
II.	महावीर स्वामी की मृत्यु कितने वर्ष में हुई	(2) प्रथम
III.	कमल एवं सांड का बौद्ध धर्म के किस प्रतीक से संबन्ध है।	(3) 72 वर्ष की आयु
IV.	दिगंबर और श्वेताम्बर का सम्बन्ध किस धर्म से है।	(4) महात्मा बुद्ध
V.	ऐ”िाया का ज्योतिपुंज (Light of Asia)	(5) जैन धर्म
VI.	शूरसेन महाजनपद की राजधानी	(6) 30 वर्ष
VII.	गंधार धनपद की राजधानी	(7) 255 ई.पू.
VIII.	सबसे बड़ा महाजनपद	(8) श्रावस्ती
IX.	बुद्ध ने सर्वाधिक उपेद”ा किस महाजनपद की राजधानी में दी	(9) मथुरा
X.	महावीर स्वामी ने कितनी वर्ष की आयु में गृह त्याग किया।	(10) 29 वर्ष
XI.	महात्मा बुद्ध ने कितनी वर्ष की आयु में गृह त्याग किया।	(11) तक्ष”ाला

XII. प्रथम बौद्ध संगीति कब हुई (12) मगध

XIII. तृतीय बौद्ध संगीति कब हुई (13) 483 ई.पू.

XIV. सोलह महाजनपदों की जानकारी मिलती है (14) उपनिषद्

XV. वि”व दुःखों से भरा है का सिद्धान्त बुद्ध ने कहां से लिया (15) अंगुन्त्तर निकाय से

Hkkx ¼x½ lR;@vlR; **(True & False)**

I. प"चम में का"ाी जनपद था जिसकी राजधानी वाराणसी थी।
¼lR;@vlR;½

II. अयोध्या को"ाल के अन्तर्गत आता था जिसका सम्बन्ध रामकथा से नही था।
¼lR;@vlR;½

III. शूरसेन की राजधानी मथुरा थी।
¼lR;@vlR;½

IV. महावीर की माता त्रि”ाला राजा चेटक की बहन नहीं थी।
¼lR;@vlR;½

V. मगध सोलह महाजनपदों में से सबसे कमजोर था।
¼lR;@vlR;½

VI. मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
¼lR;@vlR;½

VII. नन्दवं”ा के शासक बौद्ध धर्म के समर्थक थे।
¼lR;@vlR;½

VIII. नन्द वं”ा का अन्तिम शासक विम्बसार था।
¼lR;@vlR;½

IX. यूनानी साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि नंदों की सेना में छह हजार हाथी थे।
¼lR;@vlR;½

X. उग्रसेन को पुराणों ने महापद्म कहा गया है और उसके आठ पुत्र थे।
¼lR;@vlR;½

XI. चतुर्थ बौद्ध संगति प्रथम सदी ई.पू. में कनिष्क के शासनकाल में वै”ााली में हुई थी।
¼lR;@vlR;½

XII. सुतपिटक में बुद्ध के आध्यात्मिक व दा”ार्निक विचारों का संकलन किया गया है।
¼lR;@vlR;½

XIII. जैन धर्म में युद्ध और कृषि दोनों को वर्जित माना गया है दोनों का संबन्ध जीवों के प्रति हिंसा से है।¼lR;@vlR;½

XIV. महावीर स्वामी की पत्नी का नाम य”ाोधरा और पुत्री का नाम त्रि”ाला था।
¼lR;@vlR;½

XV. महावीर ने कृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति की।
¼lR;@vlR;½

4.6. lkjk"k (Summary)

- मगध जनपद आधुनिक पटना, गया तथा शाहबाद का सम्मिलित भूभाग था। यह साम्राज्य उत्तरी भारत के वि"ााल तटवर्ती मैदानों के ऊपरी व निचले भागों के मध्य स्थित और पूर्ण सुरक्षित था। बौद्ध व जैन धर्मो का अभ्युदय इसी प्रदे"ा में हुआ।
- बृहद्रथ मगध राज्य का संस्थापक था। हरिवं"ा पुराण में उल्लेख मिलता है कि वृहद्रथ के पुत्र जरासंध ने अपने काल में का"ाी, को"ाल, मालवा, चेदि, मालवा, विदेह, अंग, बंग, कलिंग, पाण्डय, सौवीर, भद्र, क"मीर और गान्धार आदि राजाओं को पराजित किया।
- हर्यक, बिम्बसार, अजात"ात्रु उद्‌य भद्र, अनुरूद्ध, मुण्ड एवं नागद"ाक इस वं"ा के प्रमुख शासक था। बिम्बसार का राज्य तीन सौ योजन तक फैला था। बिम्बसार के शासनकाल मे मगध की राजधानी गिरिव्रज थी।
- बिम्बसार ने एक नवीन राज्य की स्थापना की थी जिसे फाह्यान ने अजात"ात्रु को उसका संस्थापक बताया है। बिम्बसार के राज्य में गांवों की संख्यां 80009 थी। बिम्बसार की राज्यसभा में गांव के प्रतिनिधियों को स्थान प्राप्त था। बिम्बसार के राज्य में जीवन वैद्य और महागोविन्द प्रसिद्ध वास्तुकार हुए। बिम्बसार के शासनकाल में दण्डनीति बडी कठोर थी कारावास के अतिरिक्त मृत्युदण्ड भी दिया जाता था। बिम्बसार के शासनकाल में न्यायधी"ा को व्यावहारिक महापात्र कहा जाता था।
- बिम्बसार के शासनकाल में उनका ज्येष्ठपुत्र द"ाक उपराजा था। अजात"ात्रु का दूसरा नाम कुणिक भी था। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार अजात"ात्रु पितृहन्ता नहीं था। अजात"ात्रु के दो मंत्री थे – सुद्धि और वस्सकार अजात"ात्रु ने वै"ााली के विरूद्ध युद्ध में दो नवीन अस्त्रों का प्रयोग किया था। जिनका नाम रथमूसल तथा महा"िालाकष्टक था।
- प्रो. हेमचन्द्र राय ने रथमूसल की तुलना आधुनिक टैंकों से की है। जैन ग्रन्थों से पता चलता है कि अजात"ात्रु को वै"ााली जीतने के लिए 16 वर्ष तक युद्ध करना पड़ा था। अपने पिता के शासन काल में अजात"ात्रु सूबेदार रह चुका था।
- पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेख है कि उभयी भद्र ने अपने पिता अजात"ात्रु की हत्याकर सत्ता हासिल की तथा सैंतीस वर्षो तक मगध पर शासन किया। उदयीभद्र के प"चात् अनुरूद्ध, मुण्ड और नागद"ाक ने मगध पर शासन किया। नागद"ाक मगघ का अंतिम शासक था।
- नागद"ाक के प"चात् हर्यक वं"ा का अंत हो गया और "िा"ाु नागवं"ा का काला"ाोक मगध का शासक बना। काला"ाोक ने अपनी राजधानी पटना को बनाया। काला"ाोक का उपनाम काकवर्ण था। राजधानी के समीप घूमते हुए काला"ाोक की किसी व्यक्ति ने छुरा घोंपकर हत्या कर दी।
- "िा"ाुनागवं"ा का अंतिम शासक नंदिवर्धन था। "िा"ाु नागों के बाद नंदीं का शासन शुरू हुआ ये मगध के सबसे शक्ति"ाली शासक थे।
- महापद्‌मनंद नंदवं"ा के प्रथम शासक जिन्होनें "िा"ाुनागवं"ा का अन्त करके अपना अधिकार स्थापित किया। नंदवं"ा में नौ राजा थे। इसलिए उन्हे नव नंद भी कहा जाता है। उग्रसेन को पुराणों में महापद्‌म कहा गया है। शेष आठ उसी के पुत्र थे। महापद्‌म नंद ने 344 ई.पू. से 322

ई.पू. शासन किया। इन्होनें कलिंग की विजय की तथा वहां एक नहर खुदवायी। बाद में इसका उल्लेख खाखेल ने अपनी हाथी गुफा में उल्लेख भी किया।

- घनानंद नंद वं"ा का अंतिम शासक था। महापद्म नंद के आठ पुत्रों में घनानंद सिकन्दर का समकालीन था। घनानंद के समय 325 ई पू. सिकन्दर ने प"िचम भारत पर आक्रमण किया। यह नंदवं"ा का अन्तिम सम्राट था।
- नन्द शासक जैन धर्म को मानते थे। नंद काफी धनी और बहुत शक्ति"ााली थे। 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य की मदद से घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वं"ा की स्थापना की नींव डाली।
- प्रारम्भ में मगध की राजधानी राजगीर और द्वितीय पाटलिपुत्र। राजगीर पांच पहाडियों से घिरा हुआ है।
- यूनानी स्त्रोतों से ज्ञात होता है कि नंदों की सेना में 6000 हाथी थे। यूनानियों ने घनानंद को अग्रमिस कहा था। नंद वं"ा के बाद मगध पर मौर्य वं"ा के शासकों ने शासन किया।
- महात्माबुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में शाक्य नाम क्षत्रिय कुल में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी वन में हुआ। बचपन का नाम सिद्धार्थ था। पिता का नाम शुद्धोदन माता का नाम महामाया देवी जो कौ"ाल राज्य कोलीय वं"ा की राजकुमारी थी। इनका गोत्र गौतम था। इनकी विमाता गौतमी प्रजापति थी।
- महात्मा बुद्ध का विवाह 16 वर्ष की आयु मे य"ाोधरा के साथ हुआ। इनके पुत्र का नाम राहुल था। 29 वर्ष की आयु में महात्मा बुद्ध को वैराग्य उत्पन्न हो गया और उन्होनें गृहत्याग कर दिया। इस घटना को बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहते है।
- महात्मा बुद्ध के तीन प्रमुख नाम है – बुद्ध, तथागत, शाक्यमुनि। गृहत्याग के बाद सिर मुंडवाकर भिक्षु के काषाय वस्त्र धारण करके अनोमा नदी के तट पर तपस्या करने लगे।
- 35 वर्ष की आयु में बोध गया में वै"ााख पूर्णिमा की एक रात को निरंजना (पुनपुन) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान की प्राप्ति हुई तब वे गौतम कहलाए। महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदे"ा वाराणसी के सारनाथ में पांच सन्यासी ब्राह्मणों को दिया। जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्मचक्र के नाम से जाना जाता है।
- महात्मा बुद्ध ने सबसे अधिक उपदे"ा कों"ाल दे"ा की राजधानी श्रावस्ती में दिए और इसे प्रचार–प्रसार का केन्द्र बनाया। महात्मा बुद्ध के प्रिय "िाष्य उपालि व आनंद थे जिन्होनें बौद्ध मठ की स्थापना की।
- महात्मा बुद्ध के अनुयायी – महात्मा बुद्ध के अनुयायियों को चार भागों में बांटा गया है भिक्षु–भिक्षुणी, उपासक–उपासिका। बौद्ध धर्म के तीन सम्प्रदाय – हीनयान, महायान एवं वज्रयान। हीनयान ने महात्मा बुद्ध को उपदे"ा के रूप में स्वीकार किया है। महायान सम्प्रदाय ने बुद्ध को भगवान के रूप में तथा वज्रयान में बुद्ध को अलौकिक सिद्धपुरूष स्वीकार किया।
- महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्य – दुःख, दुःख समुदाय, दुःख विरोध, दुःख निरोध–गामिनी प्रतिपदा। महात्मा बुद्ध के अनुसार मध्यम या अष्टांगिक मार्ग अपनाना चाहिए। न अधिक विलास करना चाहिए न अधिक संयम।

- बुद्ध की f"k्षाओं को संकलित करने के लिए तीन भागों में बांटा गया है – सुत्तपिटक (पिटकों में बृहत्तम) बुद्ध के उपदे"ाों व संवादों का संकलन। विनय पिटक (लघुत्तम) बौद्ध संघ के आचार–विचार न नियम–निषेध का संकलन है।
- अभिधम्म पिटक (पिटकों में माध्यम) बुद्ध के आध्यात्मिक व दा"ार्निक विचारों का संकलन। 45 वर्ष तक निरन्तर धर्म का उपदे"ा देते रहे और 80 वर्ष की आयु में 483 ई. पू. वै"ााली पूर्णिमा के दिन कु"ाीनगर (कसिया गांव देवरिया जिला –पूर्वी उत्तर प्रदे"ा) में शरीर को त्याग दिया। इस घटना को बौद्ध धर्म में महापरिनिर्वाण कहा जाता है।
- महावीर का जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम के वै"ााली के निकट बिहार में हुआ। बचपन का नाम वर्धमान महावीर। पत्नी य"ाोदा और पुत्री प्रियद"ार्ना प्रथम f"ाष्य जामालि (दामाद)। गृह त्याग 30 वर्ष की आयु में बड़े भाई नन्दिवर्द्धन की आज्ञा से।
- 12 वर्ष की लगातार तपस्या के बाद जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई। उपाधियां – जिन (विजेता) निर्ग्रन्थ (वंधनरहित) अर्हत पूज्य 192 वर्ष की आयु 468 ई.पू. राजगीर के समीप पावापुरी (राजगृह) बिहार में।
- जैन धर्म में युद्ध और कृषि दोनों वर्जित थे। ये दोनों जीवों के प्रति हिंसा करती है। जैन धर्म के मुख्य उपदे"ाों को संकलित करने के लिए पटना में एक परिषद का गठन किया गया।
- वर्धमान के ज्ञान प्राप्ति के लिए कठिन तपस्या की जानकारी 'कल्पसूत्र'' से मिलती है। महावीर के तप वर्णन – आचारांग सूत्र से मिलती है। जैन धर्म की f"k्षाओं में 5 मूल f"k्षाएं थी – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और अपरिग्रह ये पा"र्वनाथ ने प्रतिपादित किए। पाचवां तत्व ब्रह्मचर्य महावीर ने जोड़ा।

4-7- l:d:r l:pd (Key Words)

शब्द (word)	अर्थ (Meaning)	शब्द (word)	अर्थ (Meaning)
मरण	मृत्यु	जरा	बुढ़ापा
दुरूहता	जटिल	निषेध	मनाही
विक्षुध्ध	दुखी कर दिया	कैवल्य	ज्ञान
विमाता	सौतेली माता	प्रख्यात	प्रसिद्ध

4.8. Lo&eY;kdu ijh{kk ¼Self Assessment Test) (SAT)

Hkkx ¼d½ **(Part –A)** cgqfodYih; iz"u **(Multiple Choice Questions) (MCQS)**

(इनके उत्तर दायिनी तरफ कोश्ठक में दिए गए है।)

I. **छठी भाताब्दी ई-i-** e iohZ mÙkj in"k dk nofj;k ftyk e fLFkr FkkA

(क) मल्ल

(ख) पांचाल

(ग) कुरू

(घ) उपयुर्क्त में कोई नही (ग)

II g;Zd o”ा के भासक थे

(क) विम्बसार, अजात”ात्रु, मुण्ड पंचनक

(ख) विम्बसार, अजात”ात्रु, अनुरूद्ध, नागदासक

(ग) विम्बसार, अजात”ात्रु, मुण्ड उदयत, पंचनक

(घ) अजात”ात्रु अनुरूद्ध, नागदासक, काला”ोक (घ)

III **चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किसके भासनकाल में किया गया था।**

(क) अजात”ात्रु (ख) काला”ोक (ग) अ”ोक (घ) कनिष्क (घ)

IV tSu xzFk esa fdl dh ek dk uke ^inekorh* feyrk gS

(क) उदयभद्र (ख) अनिरूद्ध (ग) मुण्डक (घ) नागद”ाक (घ)

V NBh lnh bZ- iw- vusd x.kra=kRed jkT; vfLrRo esa Fks bl iadkj ds jkT;ks esa ,d **भााक्य राज्य था इस राज्य में किस**

egku O;fDr dk tUe gqvk Fkk

(क) महात्मा बुद्ध

(ख) महावीर स्वामी

(ग) उपयुक्त दोनों

(घ) कोई नही (ख)

VI egkRek cq) ds xg LFkku dk izrhd gS

(क) कमल एवं साण्ड (ख) स्तूप (ग) घोड़ा (घ) बोधि वृक्ष

(ग)

VII tSu /keZ esa lZLFkkid ,oa iFke rhFkZdj dkSu Fks

(क) बुद्ध (ख) पा"र्वनाथ (ग) महावीर (घ) ऋषभदेव (घ)

VIII 23o rhFkdj tu u pkj or d ikyu dk min"k fn;k Fkk] fuEufyf[kr e dku lk or ugh Fkk

(क) सत्य (ख) अहिंसा (ग) ब्रह्मचार्य (घ) अपरिग्रह (ग)

IX **छठी भाताब्दी ई-i-** d fdl egktuin dh jkt/kkuh dk uke egkHkkjr ,o ijk.kk e ^ekfyuh* feyrk g

(क) अंग (ख) अ"मक (ग) कौ"ाल (घ) सम्युतर (क)

X ck) /ke ^ghu;ku* ,o egk;ku nk lEink;k e fofHkDr gk x;k Fkk

(क) मौर्य काल में (ख) कुषाण काल में (ग) शुंग काल में (घ) गुप्त काल में (ख)

Hkkx ¼[k½ **(Part –A)** nh?k mÙkjh; i"u **(Long Answer types Question) (LAQS)**

i"u 1- ex/k lkekT; d foLrkj d dkj.kk dh 0;k[;k dhft,A

(Explain the Reasons for the expension of Magadha)

i"u 2- Hkxoku c) d thou ,o min"kk dk eY;kdu djA

(Exmine the Life and teaching of Loard Buddha) (Bhagalpur Univ. 2018)

i"u 3- egkohj Lokeh dh thouh vkj mudh f"k{kkvk ij idk"k MkyA

(Throw Lighton the life and teachings of MahavirSwami)

i"u 4- ex/k lkekT; d mn; ij ,d fuc/k fyf[k,A (Write a Brief essay on rise Magadha Empire)

i"u 5- egktuin ;x dh 0;k[;k djA **(Explain the Mahajanpadas period)**

Hkkx ¼x½ vfr Yk?k mÙkjh; i"u **(Part (C) (Very Short Answer Question) :-**

(1) बौद्ध धर्म का संस्थापक कौन था ? (Who was the founder of Buddhism)

(2) मगध की राजधानी कौन सी थी ? (Which was the Capital of Magadha)

(3) जैन धर्म का संस्थापक कौन था ? (Who was the founder of Jainism)

(4) धार्मिक आन्दोलन क्या था ? (What is Religious Movements)

(5) बुद्ध के पिता कौन थे ? (Who is Father of Buddhism)

(6) भगवान बुद्ध के उपदे"ों का मूल्यांकन करें ? (Examine the teachings of Loard Buddha) (Bhagalpur Univ. 2018)

(7) महावीर स्वामी की पत्नी का क्या नाम था ? (What was the Name of Mahavir's wife)

(8) वज्जि की राजधानी कौन सी थी ? (Which was the Capital of Vajji)

(9) गौतम बुद्ध के पुत्र का क्या नाम था ? (What was the name of Gautam Budha's son)

4-9 ixfr leh{kk gr i”ukÙkj **(Answer to check your Progress)**

¼d½ fjDr LFkkuk d mÙkj ¼&

(क) 16, वाराणसी (Varansi) (II) अंगजनपद (Angajanpad) (III) वै"ााली (IV) मत्स्य (Matsya) (V) 412 ई.पू.– 344 ई पू. (VI) बृहद्रथ (भीम के साथ मल युद्ध में मारा गया) (VII) कम्बोज (Kamboj) (VIII) f"ा"ुनाग (IX) अ"मक (X) य"ोदा एवं पुत्री का नाम अनोज्या प्रियद"ानी (XI) (1) सम्यक द"ान (2) सम्यक् ज्ञान (3) सम्यक् आचरण (XII) 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के लुम्बिनी (XIII) 16 वर्ष की अवस्था में य"ोधरा (XIV) वर्द्धमान (XV) 15 वर्ष

¼[k½ mfpr feyku dj ¼& (i) 2 (ii) 3 (iii) 1 (iv) 5 (v) 4 (vi) 9 (vii) 11 (viii) 12 (ix) 8 (x) 6 (xi) 10 (xii) 13 (xiii) 7 (xiv) 15 (xv) 14

(ग) lR;@vlR; **(True an False) :-** (i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य (v) असत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii) असत्य (ix) सत्य (x) सत्य (xi) असत्य (xii) असत्य (xiii) सत्य (xiv) असत्य (xv) सत्य

4-10- lanHkZ xzaFk ,oa lgk;d v/;;u lkexzh **(References /Suggested Reading)**

- Eku thr flag lk<h % **(Themes in Indian History, Modern's publishers, Railway Road, Jalandhar, 1^{st} Edition : 2009**
- f} tUnukj;.k >k ,oa d`श्ण मोहन श्रीमाली : प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम dk;kZUo;u funs"kky; fnYyh fo"ofo|ky;] 43 oka iqueqZnz.k % uoEcj] 2018
- egs"k dqekj o.kZeky % laf{klr bfrgkl & **NCERT** lkj] **cosmos** ifCyds"ku] eq[kthZ uxj] fnYyh] tuojh] 2019
- jke"kj.k भार्मा : भारत का प्राkphu bfrgkl] vkWDlQksMZ ;wfuofl.Vh izsl }kjk Hkkjr izdkf"kr & 2@11 Hkkry] HkkIkjh jksM] nfj;kxat] ubZ fnYyh] pkSFkk fgUnh laLdj.k] 2019
- Mh-,u->k- Hkkjr dk izkphu bfrgkl] fofo/k vk;ke] fgUnh ek/;e dk;kZUo;u funs"kky; fnYyh fo"ofo|ky;] iqueqZnz.k % vDVwcj] 2016
- ;wfud lkekU; v/;;u & Mk- fou; dqekj flag] bykgkckn ¼mÙkj izns"k½
- LiDVªe ifCyds"ku & lkekU; v/;;u] vfgj uxj] fnYyh

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER -1	
COURSE CODE : HIST- 101	AUTHOR & UPTATED: MR. MOHAN SINGH BALODA
LESSON NO. 05	
ek;Z lkezkT; **(MAURYAN EMPIRE)**	

v/;k; lajpuk **(LESSON- STRUCTURE)**

5-1 vf/kxe mís”; **(Learning Objectives)**

5-2 ifjp; **(introducation)**

5-3 vk/;k; dk eq[; fcUnq **(Main Body Of Text)**

5-3-1- ek;Z lkezkT; **(Maurvan Empire)**

5-3-2- pUnzxqIr ek;Z **(Chandragupta Maurya) (323-298 bZ0 iw0)**

5-3-3- fcUnqlkj **(Bindu Sara) (298-**273 bZ0 iw0½

5-3-4- v”kksd **(Ashoka) (273-232** bZ0 iw0½

5-3-5- ek;Z oa”k dk eq[; L=ksr **(Main Sources of the Mauryan Dynasty)**

5-4 vk/;k; dk vkx dk e[; Hkkx **(Further Main Body Of The Text)**

5-4-1 jkT; 0;oLFkk ,o i"kklu **(Polity And Administration)**

5-4-2 ek;dkyhu vkfFkd thou **(Economic Life Of The Mauryas)**

5-4-3 v"kkd d /kEe idfr ,o fl)kUr **(Ashoka"S Dhamma Of Nature And Principles)**

5-4-4 v"kkd d /ke dk ilkj **(Ashoka"S Dhamma Of Prapogation)**

5-4-5 ek; lkekT; dk iru **(The Decline Of Mauryas)**

5-4-6 ek;kÙkj lkekT; % d"kk.k vkj lkrokgu **(Post Mauryan Empires Kushnas And Satvahanas)**

5-4-6-1 **कुशाण (Kushana)**

5-4-6-2 lkrokgu **(Satvahanas)**

5-5- ixfr leh{kk **(Check Your Progress)**

5-6- lkjk"k@lf{kflrdk **(Summary)**

5-7- ldr lpd **(Key Words)**

5-8- Lo eY;kdu ijh{kk **(Self-Assessment Test) (Sat)**

5-9- ixfr leh{kk gr i"ukÙkj **(Answer To Check Your Progress)**

5-10- lgk;d lnHk xiFk ,o v/;;u lkexh **(References/Suggested Readings)**

5-1 vf/kxe mí"; **(learning objectives) :-**

जब आप इस अध्याय को समझ पाएंगें तो आप इस योग्य हो जाएंगें (बन जाएंगें)

- f"k्षार्थी मौर्य साम्राज्य के बारे में ज्ञान प्राप्त करेगें।
- पाठकों के बीच इस पर परिचर्चा करना कि मौर्य साम्राज्य पूर्व साम्राज्यों की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ नीतियों पर आधारित व विस्तारवादी था।
- अधिगमकर्ताओं को मौर्य साम्राज्य के भारत में फैलाव से रूबरू करवाना।
- मौर्यकालीन प्र"ाासनिक नीतियों की पाठक प्रमुख वि"ोषताओं को आत्मसात कर सकेगें।

- मौर्यकालीन तथा पूर्व के शासकों की प्र"ाासनिक नीतियों का पाठक तुलनात्मक अध्यनन कर सकेगें।
- जिज्ञासु पाठकों के बीच राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सास्कृतिक बिन्दुओं पर परिचर्चा करना।
- अधिगमकर्ताओं को अ"ोक के धम्म् व प्र"ाासनिक सुधारों के प्रसार से अवगत करवाना।
- मौर्यकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों पर अपने साथी पाठकों के साथ परिचर्चा कर सकेगें।
- प्राचीन भारत के इतिहास में अ"ोक की प्रसिद्धि के क्या कारण थे। इसके बारे में अवगत करवाना।
- मौर्य काल के पतन के कारण क्या थे।
- मौर्योत्तर साम्राज्य के प्रमुख शासकों से परिचित करवाना।
- कुषाण शासकों की वं"ाावली से f"ाक्षार्थियों को अवगत करवाना।
- सातवाहन वं"ा के मुख्य शासक कौन–कौन हुए।

5-2- ifjp; **(Introducation)**

मौर्य वं"ा की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी जो एक साधारण परिवार के थे, चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य की सहायता से नन्द वं"ा को नष्ट किया। चन्द्रगुप्त की जाति के सम्बन्ध में विद्धान एक मत नही है। ब्राह्मण परम्परा के अनुसार ये शूद्र जाति के बताए जाते है तो जैन एवं बोद्ध साहित्य के अनुसार चन्द्रगुप्त क्षत्रिय कुल से सम्बन्ध रखते थे। उनका जन्म नन्द के रनिवास में रहने वाली एक शुद्र महिला मुरा की कोख से हुआ था। बोद्ध परम्परा के अनुसार चन्द्रगुप्त नेपाल की तराई से लगने वाले गोरखपुर क्षेत्र के पीपहलिवन के छोटे गणराज्य के क्षत्रिय वं"ा के थे। रोमिला थापर ने चन्द्रगुप्त को वै"य जाति का माना है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध के राजसिंहासन पर बैठ कर एक ऐसे राज्य की नींव डाली जो सम्पूर्ण भारत में फैला था। जस्टिन ने चन्द्रगुप्त के विषय में कहा है कि छः लाख की सेना के साथ चन्द्रगुप्त ने सम्पूर्ण भारत को रोंद कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। उत्तरी पf"चमी भारत को सिकन्दर के उत्तराधिकारियों से मुक्त कर सेल्यूकस को हराकर उसे संधि करने के लिए बाध्य कर दिया। सेल्यूकस के साथ हुए शान्ति समझौते में सेल्यूकस ने न केवल अपनी बेटी का चन्द्रगुप्त से विवाह किया अपितु पूर्वी अफगानिस्तान , बलूचिस्तान ओर सिंधु का पf"चमी क्षेत्र भी चन्द्रगुप्त को सौंप दिया। सेल्यूकस ने पांच सौ हाथियों के साथ दहेज में चार प्रान्त एरिया, अराकोसिया, जेड्रोसिया एवं पेरीपेमिसदाई (अर्थात काबुल–कंधार–मक्रांत और हेरात) दे दिए। इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने भारत के वि"ााल भू–भाग बिहार, उड़ीसा, बंगाल, पf"चमी और उत्तर पf"चमी भारत जिसमें दक्कन भी शामिल था, केरल, तमिलनाडु, उत्तरपूर्वी भारत लगभग पूरे महाद्वीप पर शासन किया।

चन्द्रगुप्त के वं"ा की भांति उनके जीवन के पुर्नगठन का आधार भी परम्पराएॅ एवं किंवदतियां ही अधिक है इनका भी कोई ठोस आधार नही है। इस सम्बन्ध में चाणक्य चन्द्रगुप्त कथा सार उल्लेखनीय है जिसके अनुसार नंद से अपमानित होकर चाणक्य ने उसे समूल नष्ट करने का प्रण लिया इसी क्रम में संयोगात उनकी भेट चन्द्रगुप्त से हो गई वह उसे तक्षf"ाला ले गये ओर f"ाक्षा दीक्षा के उपरान्त चाणक्य की कूटनीति ओर चन्द्रगुप्त ने शौर्य तथा रण कौ"ाल से नन्द वं"ा के अन्तिम सम्राट धनानन्द का उन्मूलन कर दिया।

मौर्य शासक न केवल महान विजेता थे अपितु वे उच्चकोटि के कु"ाल शासक प्रबन्धक भी थे। मौर्य का प्र"ाासन तन्त्र अत्यन्त विस्तृत था। मेगस्थनीज की पुस्तक इण्डिका तथा कौटिल्य के अर्थ"ाास्त्र में

इसके पुष्ट प्रमाण मिलते है। चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर प"िचम में हिन्दुकू"ा तथा दक्षिण में उत्तरी कर्नाटक एवं पूर्व में मगध से प"िचम में सौराष्ट्र तक फैला था। मौर्य साम्राज्य के संगठन का स्वरूप एक–तन्त्रीय था। केन्द्रीय व्यवस्था को शक्ति"ााली एवं मजबूत बनाने के लिए प्रान्तों में विभाजित कर दिया। मेगस्थनीज यूनानी राजदूत था जिसे सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था। इनकी प्रसिद्ध रचना 'इण्डिका' जो सम्पूर्ण मौर्य साम्राज्य के तात्कालिक व्यवस्था से अवगत कराती है।

मौर्य साम्राज्य के विस्तार में चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र – बिन्दुसार – बिन्दुसार का पुत्र– अ"ाोक इन सभी ने मौर्य साम्राज्य में समय–समय पर प्र"ाासनिक सुधार किए जिसकी वजह से मौर्य साम्राज्य समग्र राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ।

मौर्योत्तर काल में, भारत में विकेन्द्रीकरण की प्रवृति को रोकने के लिए राजतन्त्र में दैवी तत्व का समायोजन हुआ। मौर्य सत्ता के पतन के बाद क्रम"ाः उत्तर–दक्षिण भारत की बडी शक्तियां थी। कुषाण वं"ा का प्रतापी शासक कनिष्क एक महान शासक था। सर्वप्रथम सात वाहनों ने बौद्ध और ब्राह्मणों को प्र"ाासनिक नियन्त्रण से मुफ्त भूमि दान देकर केन्द्रिय सत्ता को कमजोर करने की प्रथा को आरम्भ किया।

मौर्यत्तर काल युग की विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्रि कमजोर हो गई। सामन्ती शासन के बीज इसी युग में बोए गए। सातवाहनों का इतिहास काफी अन्धकारमय है। इनके अभ्युदय के काल और राजाओं के क्रम का ठीक पता नही है। इस वं"ा में गौतमी पुत्र सतकरणी महान शासक हुआ। मौर्य साम्राज्य के राज्य व्यवस्था प्र"ाासनिक व आर्थिक, अ"ाोक धम्म का विस्तार। मौर्योत्तर काल के दो प्रमुख वं"ा कुषाण वं"ा व सातवाहन वं"ा आदि सभी की विस्तार पूर्वक चर्चा करेगें।

5-3- **विशयवस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body Of Text)**

5-3-1- Ekk;l lkezkT; (Mauryan Empire) :– मगध में नन्द वं"ा के बाद मौर्यो का सूर्य उद्‌य हुआ। अनेको स्त्रोतों से जानकारी के आधार पर इनका इतिहास अपेक्षाकृत अधिक वि"वसनीय हो जाता है। जैसे की कौटिल्य के अर्थ"ाास्त्र से उनकी शासन व्यवस्था का पता चलता है। मौर्यकाल के असली छाप पुस्तकों का मूल भाव माना जाता है। सबसे अधिक प्रमाणित मौर्य पर लेख अ"ाोक द्वारा जारी किए गए अभिलेख है। मौर्यो ने मगध साम्राज्य का विस्तार सम्पूण भारत में कर दिया था। इतिहासकारों ने मौर्यवं"ा के इतिहास को मौर्य साम्राज्य के इतिहास के रूप में स्थाापित कर दिया है। मौर्य वं"ा की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू विष्णु गुप्त अथवा चाणक्य की सहायता से नन्द वं"ा के अन्तिम शासक घनानंद को हराकर मौर्य साम्राज्य की नींव डाली।

5-3-2- pUnxqIr ek;l ¼323&298 b-i-½ **(Chandragupta Maurya)** –: भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य का महत्वपूर्ण स्थान है। मौर्य राज वं"ा का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य 25 वर्ष की आयु में 322 ई.पू. में नंदों से सत्ता छीनकर सिंहासन पर बैठा। इसका जन्म 345 ई.पू में हुआ था। भारतीय परंपराओं के अनुसार चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त)। नंद वं"ा के अन्तिम शासक घनानंद को हराने में इसके गुरू चाणक्य ने मदद की थी। जो बाद में चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री बना और इसकी प्रसिद्ध पुस्तक अर्थ"ाास्त्र है जिसका संबन्ध राजनीति से है।

चन्द्रगुप्त मौर्य की जाति के विषय में इतिहासकार एक मत नही है। ब्राह्मण साहित्य ने इन्हे शूद्र कुल में जन्मा माना है। जैन बौद्ध ने क्षत्रिय कुल में माना है। प्रो. रोमिला थापर ने मौर्य को वै"य जाति का माना है। चन्द्रगुप्त मौर्य की संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेख साक्ष्य रूद्रदायन जूनागढ़ के अभिलेख से मिलता

है। चन्द्रगुप्त मौर्य जैनधर्म का अनुयायी था। जस्टीन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सेन्ड्रोकोट्टस कहा है, जिसकी पहचान विलियम जोन्स ने चन्द्रगुप्त मौर्य से की है।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने व्यापक विजय प्राप्त कर प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की थी, 305 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस में युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त की विजय हुई, फिर बाद में दोनों राजाओं के मध्य संधि हुई। संधि के तहत सेल्यूकस ने 500 हाथी, पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिंधु के पि"चम के क्षेत्र दे दिए। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दिया। इस वैवाहिक संबंध का विवरण एटिपथानस ने किया। मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त ने अपना राजदूत नियुक्त किया।

वृद्धावस्था में चन्द्रगुप्त ने राजकाज के कार्य छोडकर जैन मुनि–भद्रभाहु का ि"ाष्य बन गया। जैन धर्म की मान्यता के अनुसार जैन तरीके से श्रवण बन गीता (मैसूर) में मृत्यु का वर्णन किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जिस पहाडी पर अपना अंतिम समय अर्थात जीवन जिया उसे चंद्रगिरी कहा जाता है।

5-3-3- fcUnqlkj **(Bindusara)(** 298&273 bZ-iw-) :– बिन्दुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र था। वह अपने पिता के देहान्त के बाद 298 ई.पूर्व सिंहासन पर विराजमान हुआ। यूनानियों ने इसे अमित्रकेटस कहा है इसका अर्थ हुआ शत्रुओं का विना"ा करने वाला। बिन्दुसार को वायुपुराण में मदसार कहा गया है और जैन ग्रन्थों में इसे सिहंसेन कहा गया है। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय को मानता था। इसके दरबार में पिंगलवास नामक एक भविष्यवक्ता रहता था जिसका सम्बंध आजीवक संप्रदाय से था बिन्दुसार ने अपने पिता के वि"ााल साम्राज्य पर कु"ालता पूर्वक शासन किया और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। पुराणों के अनुसार बिन्दुसार ने 24 वर्ष तक तथा महावं"ा के अनुसार 27 वर्ष तक शासन किया। अपने प्र"ाासन काल में उसने विदे"ाी शासकों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखे। सीरिया के शासक एंटीयोकस प्रथम ने डाइमेक्स नामक व्यक्ति को बिन्दुसार के राजदरबार में राजदूत के रूप में भेजा। मिश्र के शासक फिलाडेल्फस हाल्मी द्वितीय ने डायोनिसस नामक राजदूत को बिन्दुसार के राजदरबार में भेजा। बिन्दुसार के काल में तक्ष"ाला में दो विद्रोह हुए जिसका मुख्य कारण स्थानीय कु"ाासन था। दूसरे विद्रोह के दौरान बिन्दुसार की मृत्यु 273 ई. पू. हुई।

5-3-4- v"kksd **(Ashoka) (** 273- 232 bZ-iw-) :– अ"ाोक वि"व के महान सम्राटों में से एक था अर्थात अ"ाोक मौर्य शासकों में से भी एक महान शासक था। बौद्ध परम्परा के अनुसार अ"ाोक ने अपने 99 भाईयों की हत्या करवा दी थी इससे ज्ञात होता है कि आरंभिक जीवन में अत्यन्त क्रूर स्वभाव का था। आधुनिक इतिहासकार इसे अति"ायोक्ति मानते है। लेकिन यह तो सत्य है कि सिंहासन के लिए इसका अपने भाईयों के साथ संघर्ष हुआ और इसमें इसकी विजय हुई, पुराणों में उसका नाम अ"ाोक वर्धन मिलता है। उसके अभिलेखों ने उसे देवनांप्रियम तथा प्रियद"ाी कहा गया है। 'मास्की' ि"ालालेख में उसका नाम केवल अ"ाोक मिलता प्रारंभ में अ"ाोक ब्राह्मण धर्म का है पालक तथा ि"ाव का उपासक था। अ"ाोक की पत्नी देवी सिंहली अनुश्रुति के अनुसार अ"ाोक की प्रथम धर्मपत्नी थी। इसी से उसे महेन्द्र और संघमित्रा पुत्र–पुत्री प्राप्त हुए थे। अ"ाोक की एक अन्य पत्नी 'ति"यरक्षित' थी जिसका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ दिव्यावद्वान में मिलता है। सिंहासनारूढ़ होने के पूर्व अवन्ति (उज्जैन) तक्ष"ाला का प्रान्तीय शासक था। अ"ाोक के साम्राज्य का विस्तार पूर्व में बंगाल से लेकर पि"चम में अफगानिस्तान तक तथा उत्तर में क"मीर तक तथा दक्षिण में सुदूर दक्षिण तक था। अ"ाोक के जीवन के कलिंग का युद्ध एक घटना थी जिसमें उसकी जीवनधारा बदल गई। एक क्रूर शासक मानव कल्याण के लिए मानवता के उच्च आद"ाों को प्राप्त करने

के लिए भरपूर प्रयास किया और अपना पूरा जीवन प्रजा की सेवा में लगा दिया। इसके लिए उन्होने धम्म का प्रतिपादन किया। धम्म लोक कल्याण की भावना से ओत–प्रोत था जिससे आपस में परस्पर सहिष्णुता भाईचारे की भावना को सीखने पर बल दिया। ऐसा माना जाता है कि अ"ाोक का जन्म 294 ई.पूर्व हुआ था। इसकी माता का नाम सुभद्रांगी था। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बिन्दुसार की 16 रानियों से 101 पुत्र थे जिनमें अ"ाोक सबसे योग्य पुत्र था इसलिये 18 वर्ष की आयु में इनके पिता ने इन्हे उज्जैन का शासक बना दिया था। अ"ाोक ने 40 वर्ष तक राज्य करने के बाद 232 ई. पूर्व लगभग प्राण त्याग दिए। इसके उपरान्त लगभग 50 वर्ष उसके उत्तराधिकारियों ने शासन किया। पुराणों के अनुसार अ"ाोक के बाद कुणाल गद्दी पर बैठा दिव्यावदान में उसे धर्मविवर्द्धन कहा गया। कुणाल अंधा था और वह शासन कार्य में असमर्थ था। सत्य तो यह है कि अ"ाोक के बाद ही मौर्य साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया था और लगभग 50 वर्ष के इस साम्राज्य का अंत हो गया।

5-3-5- ek;l o”k dk e[; j=kr **(Main Sources Of The Mauryan Dynasty)** :–

मौर्य वं"ा भारत का ऐसा प्रथम वं"ा था जिसके समय में भारत में क्रमानुसार इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है। मौर्य वं"ा के बारे में जानकारी निम्न स्त्रोतों से मिलती है :–

1- कौटिल्य के अर्थ"ाास्त्र से (Arthashastra Of Kautilya)
2. मैगस्थनीज की इंडिका से (Indica Of Megasthenes)
3. वि"ाखदत्त की मुद्राराक्षस (Visakhadatta"s Of Mudrarakshas)
4- पुराण से (The Puranas)

5- जैन एवं बौद्ध ग्रन्थ से (Jain And Buddhist Texts)
6. अभिलेख (Inscriptions)
7- भवन एवं स्मारक से (Buldings And Monuments)
8. पतंजलि के महाभाष्य से ।
9. राजतरंगिणी से ।
10. यूनानी एवं रोमन विवरण से।
11. चीनी यात्रियों का विवरण।

5.4. **विशय वस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण** (Further Main Body Of The Text)

5.4.1. jkT; 0;oLFkk ,o i”kklu **(Polity And Administration)**

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी विजयों से सारे भारत को एकता के सूत्र में बांध दिया। मौर्य साम्राज्य से पूर्व भारत छोटे–छोटे टुकडों में बंटा हुआ था। उसमें राजनैतिक एकता की बहुत कमी थी। अपनी शासन व्यवस्था को इस ढंग से स्थापित किया कि मौर्य वं"ा अन्त तक बना रहे। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी बुद्धि अपनी मेहनत के बल पर बहुत से

प्रदे"ाों पर विजय प्राप्त करके एक वि"ााल साम्राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त मौर्य एक कु"ाल योद्धा सेना नायक तथा महान विजेता ही नही बल्कि एक अच्छा योग्य प्र"ाासक भी था। इतने वि"ााल साम्राज्य को संभालना आसान कार्य नही था। इसलिए मौर्यो ने अपने शासन को अलग–अगल भागों में बांटा हुआ था। जो निम्न प्रकार से है।

मौर्य प्र”ाासन (Mourya Administration)

↓

केन्द्रीय शासन प्रबन्धक (Central Administration)

↓

राज्य प्रबन्ध /”ाासन (State Administration)

↓

जिला प्रबन्ध /”ाासन (District Administration)

↓

नागरीय प्र”ाासन (Cities Administration)

↓

न्याय प्रबन्ध (Judicial Administration)

↓

गुप्तचर व्यवस्था (Spy System)

↓

सेना प्रबन्ध (Army Administration)

budk o.kZu fuEu izdkj ls gS %&

(1) **केन्द्रीय भाासन (Central Administration)** :– शासन का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था उसकी गद्दी पैतृक होती थी। उसकी शक्तियां असीमित थी। उसका प्रत्येक शब्द काननू बन जाता था। वह बडे से बडे अपराधी के दंड को कम या अधिक कर सकता था। राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां भी राजा ही करता था। राजा ही प्रजा पर नए कर लगा सकता था तथा पुराने करों को हटा सकता था। राजा की शक्तियां किसी ताना”ााह से कम न थी किंतु मौर्य साम्राज्य के किसी भी राजा ने इसका दुरूपयोग नही किया अपितु वे अपने को प्रजा का सेवक मानते थे प्रजा के सुख में अपना सुख तथा कल्याण में अपना कल्याण समझते थे। Mk- oh- vkj- vkj- fnd”khrj ds vuqlkj “ राजा यह महसूस करता था कि वह राज्य का नौकर है। उसे इससे बढ़कर और कोई खु”ाी नही होती थी कि वह प्रजा के प्रति अपने कर्तव्यों तथा जिम्मेवारियों को जिसे वह पवित्र तथा धार्मिक समझता है का पालन कर रहा है। **‘’ The King felt that he was only the servant of the**

state. No pleasure was greater to him then to discharge the duties and responsibilities wich he outed to the people and which he regarded sacred and religious " Dr. V.R.R. Dikshitar. The mouryan polity (delhi : 1993) P. 100.

मंत्रि परिशद (The Council of Ministres) :– राजा की सहायता के लिए मंत्रिपरिषद की व्यवस्था की गई थी। इसमें 12 से लेकर 20 मंत्री होते थे। मौर्यो ने प्र”ाासन की सुविधा के लिए मंत्रिगठन कर रखा था। शासक उन्ही व्यक्तियों का मन्त्री पद के लिए चुनाव करते थे जो योग्य तथा ईमानदार होते थे। समय–समय पर ये मन्त्री बैठक करके राज्य की नीतियों को बनाने और लागू करने में सहायता करते थे। इन मन्त्रियों को बारह हजार पण वार्षिक वेतन दिया जाता था। मौर्य काल के निम्न मन्त्री होते थे :–

(i) प्रधानमन्त्री (Prime Minister) (ii) पुरोहित (Purohit) (iii) सेनापति (senapati) (iV) दण्डपाल (Dandpal) (v) सन्निधात्ता (Sannidhata) (vi) द्वारपाल (Dwarpal) (VII) दुर्गपाल (Durgpal) (VIII) अन्तपाल (Antpal) (ix) अन्तपुर रक्षाधिकारी (Antahpur Rakshadhikari) (x) प्र”ाात्र अर्थात कारागार का अधिकारी (Karagar Ka Adhikari) (xi) नगर का रक्षक (Nagar Ka Rakshak) (xii) समाहर्ता (Samaharta) (xiii) प्रदेष्टा (Pradeshta) (xiv) न्यायधी”ा (Judge) (xv) कोतवाल (Kotwal) (xvi) मन्त्रीमण्डलाध्यक्ष (Mantrimandladhyksha) (xvii) कारखानों का अधिकारी–कार्मान्तरिक (Karmantrik) (xviii) अन्नपाल (annpal)

2. jkT; icU/r (State Administration) :– मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने शासन की सुविधा के लिए साम्राज्य को चार प्रान्तों में विभक्त कर रखा था। मध्य प्रदे”ा या प्राची का शासन सीधा केन्द्र के अधीन था। दूसरे प्रान्तों को युवराज तथा राजकुमारों की देख–रेख में चलाया जाता था। प्रान्तों के शासक सम्राट की आज्ञानुसार कार्य करते थे। प्रान्तीय शासकों की सहायता के लिए अनेक पदाधिकारी नियुक्त किये थे। कौटिल्य के अर्थ”ाास्त्र के अनुसार प्रान्त के राज्यपालों को वेतन के रूप बारह हजार पण वार्षिक मिलते थे।

3ftyk i:cU/k **(District Administration)** :– मौर्य साम्राज्य के प्रान्त कई जिलों में विभक्त थे। उस समय जिलों को जनपद कहा जाता था। जनपद के प्रधान अधिकारी को प्रदेष्टा कहा जाता था। मेगस्थनीज ने जिला अधिकारियों के लिए 'एग्रोनोमोई' शब्द का प्रयोग किया है। जनपदों का शासन वि”ोष पद्धति से होता था। जिसमें स्थानीय, द्रोणमुख, खाकटिक ओर सग्रहण चार कोटियां थी। स्थानीय के अधीन आठ सौ गांव आते थे। द्रोणमुख के अधीन चार सौ गांव आते थे खाखटिक के अर्न्तगत दो सौ गांव शामिल थे ओर संग्रहण के अधीन केवल सौ गांव थे। इन संस्थानों के प्रमुख युक्त की सहायता से प्र”ाासनिक कार्य करते थे। संग्रहण का प्रधान अधिकारी गोप कहलाता था। गोप के ऊपर स्थानिक तथा स्थानिक के ऊपर नगराध्यक्षक का पद होता था। जिला स्तर पर सम्यक् व्यस्था के लिए अनेक समितियां कार्यरत थी।

3 uxjh; i”kklu **(Cities Administration)** :– मौर्य शासन में पाटलिपुत्र, तक्ष”ाला कौ”ाांबी और उज्जैन आदि नगरों के लिए वि”ोष व्यवस्था थी। नगर का मुखिया नगर अध्यक्ष कहलाता था। उसकी सहायता के लिए तीस सदस्यों की एक समिति थी। इसमें 6 विभाग थे और हर विभाग में 5 व्यक्ति थे। ऐसी सुदृढ शासन पद्धति को देखकर विदे”ाी भी अंचभित थे।

4 LFkkuh; i:c/k **(Local Administration)** :– शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम शासन थी। इसके मुखिया को ग्रामिक अथवा ग्रामिणी कहते थे। हर गांव में एक सरकारी कर्मचारी था जो भोजक कहलाता था। 5–10 गांवों की व्यवस्था गोप नामक अधिकारी के पास थी। गोप से ऊपर स्थानिक होता था जो जनपद में चौथाई भाग की व्यवस्था करता था।

5 U;k; i:cU/k **(Judicial Administration)** :– न्यायालयों के चार स्तर होते थे। (1) जनपद संधि – इस न्यायालय में 200 गांवों का आपसी झगड़ों का निपटारा होता था। (2) द्रोणमुख – यह न्यायालय 400 गांव के ऊपर होता था (3) सजुक – जनपद के न्यायालय का न्यायाधी"ा होता था। (4) व्यावहारिक महागात्र –यह नगर का न्यायाधी"ा होता था। (5) न्यायालय – मौर्य साम्राज्य में दो प्रकार के न्यायालय होते थे (क) धर्मस्थलीय न्यायालय – इसमें दीवानी के मामलों का निपटारा होता था। (ख) कष्टक शोधन न्यायालय – इस न्यायालय में फौजदारी सम्बन्धी मामलों का न्याय निर्णय होता था।

6 x|rpj 0;oLFkk (SPY System) :– मौर्य साम्राज्य की गुप्तचर व्यवस्था अत्यंत सुन्दर थी। कौटिल्य अर्थ"ाास्त्र के अनुसार – गुप्तचरों की दो श्रेणी थी (क) संस्थान (ख) संचारण।

¼d½ l:LFkku – इस श्रेणी के गुप्तचर कापटीक, गृहपर्तिक, तापस, वैदेहक आदि नामों से जाने जाते थे। ये एक ही नि"चत स्थान पर रहते थे।

¼[k½ l:pkj.k – इस कोर्ट के गुप्तचर ज्योतिष, साधु आदि के भेष में घूम–घूम कर सम्राट तक सूचनाएं पहुंचाते थे।

7 l:uk i:cU/k (Army Administration) :– सेना प्रबन्ध के 6 भाग थे। प्रत्येक विभाग का प्रबन्ध पांच–पांच सदस्यों के हाथ में रहता था। सेना के निम्नलिखित विभाग थे –

(क) uk l:uk – इस विभाग का अध्यक्ष नवाध्यक्ष कहलाता था। इस विभाग में जहाज व नौकाओं का निर्माण तथा सामुंद्रिक युद्ध करने का प्र"ाक्षण दिया जाता था।

(ख) l:fud ;krk;kr foHkkx – युद्ध के दौरान यह विभाग सैनिकों को हथियार, भोजन सामग्री तथा प"ाुओं के लिए भोजन का प्रबन्ध करता है।

(ग) i:ny l:uk foHkkx – यह पैदल सेना संबन्धी प्रबन्ध करता था।

(घ) v"o l:uk foHkkx – यह विभाग घोड़ो को युद्ध प्र"ाक्षण तथा अस्तबल एवं चारे का प्रबन्ध करता था। इस विभाग का अध्यक्ष अ"वाध्यक्ष कहलाता था।

(ङ) gLr l:uk foHkkx – इस विभाग का काम हाथियों को युद्ध प्र"ाक्षण तथा उन्हें वि"ाेष जंगलों में रखने की व्यवस्था बनाता था। इसके अध्यक्ष को हस्ताध्यक्ष कहा जाता था।

(च) jFk l:uk foHkkx – इस विभाग का काम रथ सेना का प्रबन्ध करना था इस विभाग का अध्यक्ष रथाध्यक्ष कहलाता था।

Lkfefr	dk;!
(1) प्रथम समिति	जलसेना की व्यवस्था
(2) द्वितीय समिति	यातायात एंव रसद की व्यवस्था
(3) तृतीय समिति	पैदल सैनिको की देख–रेख
(4) चतुर्थ समिति	अ"वारोहियों की देख–रेख
(5) पंचम समिति	गजसेना की देख–रेख

(6) 'ाष्ठ समिति   रथ सेना की देख–रेख

5-4-2 ek;Zdkyhu vkfFkZd thou **(Economic Life of The Mauryas)** :– मौर्यकाल में आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। कृषि के साथ–साथ अन्य व्यवसाय भी उन्नत थे मौर्यकाल में आर्थिक विकास के लिए कुछ नियम अर्थात नीतियां बना रखी थी।

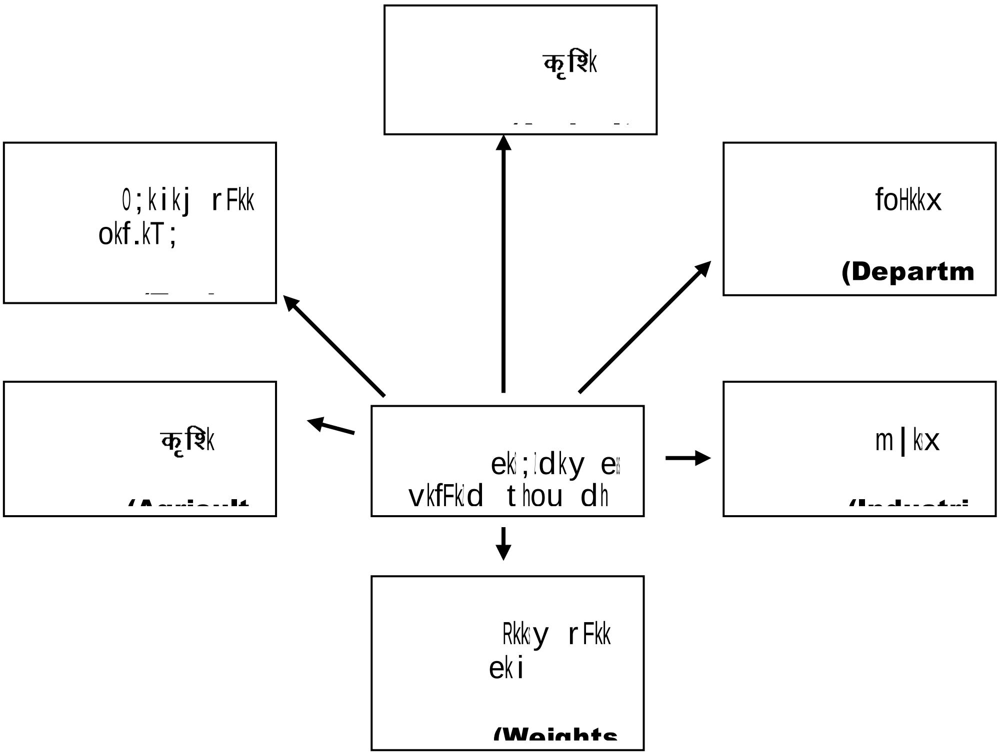

budk o.kZu fuEu izdkj ls gS &

(1) कृषि (Agriculture) :– भारत एक कृषि प्रधान दे"ा था। इसलिए मौर्यकाल में आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान था। वर्ष में प्रायः दो फसले होती थी। मौर्यकाल में हर प्रकार की फसल का उत्पादन होता था। गेहूं, जौ, चावल, उड़द, मूंग, गन्ना, चना, सरसों, मसूर, मटर आदि मुख्य फसलें थी ओर इसी के साथ फलों का भी उत्पादन किया जाता था जामुन, अनार, खरबूजा, आम, अंगूर, कि"ामि"ा आदि फल का उत्पादन किया जाता थां कृषि की उन्नति के लिए राज्य ने कुछ विभाग बना रखे थे। सूखा, बाढ़, ओलावृष्टि आदि संकट के समय राज्य की ओर से उर्वरक, बीज कृषि के महत्वपूर्ण उपकरण उपलब्ध करवाए जाते थे। राज्य का आय का साधन भूमिकर था भूमि कर भूमि की उर्वरा"ाक्ति पर निर्भर था। इसकी मात्रा 1/5 से 1/3 भाग होती थी। राज्य कर को वसूलने के लिए अधिकारी नियुक्त कर रखे थे। राजा चन्द्रगुप्त के समय सिंचाई की व्यवस्था की गई बाद में इस कार्य को और विकसित रूप अ"ाोक ने दिया।

½2½ 0;kikj rFkk okf.kT; **(Trade And Commerce)** :– मौर्य काल में स्वदे"ाी और विदे"ाी दोनो तरह के व्यापार चलते थे अपने राज्य में सड़क मार्ग से व्यापार होते थे। विदे"ाी व्यापार जल मार्ग से किए जाते थे। प्राचीन भारत में कर प्रणाली की दृष्टि से मौर्यकाल अति उत्तम था। कोटिल्य ने किसानों f"ाल्पकारियों और व्यापारियों से वसूले जाने वाले विभिन्न करों के नाम उल्लेखित किए है। उत्तरी मैदानों में गंगा और अन्य नदियां यातायात के लिए मार्ग का निर्माण करती थी। मयूर पर्वत अर्द्ध चन्द्र की छाप वाली आहत रजत मुद्राएं मौर्य साम्राज्य की प्रसिद्ध मुद्राएं थी। ये मुद्राएं दे"ा के विभिन्न भागों में बहुत मात्रा में प्रचलित थी। अर्थ"ाास्त्र के अध्ययन से पता चलता है कि उत्तरी मार्ग से ऊनी वस्त्रों, घोड़ों तथा चमड़े का दक्षिणी मार्ग से मोती, स्वर्ण, हीरों आदि बहुमूल्य रत्नों का व्यापार होता था।

½3½ foHkkx **(Department)** :– मौर्य काल में आर्थिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न विभागों के अधिकारी नियुक्त कर रखे थे –

- न्यायिक अधिकारी को रज्जुक कहा जाता था।
- जन सम्पर्क अधिकारी को पुलिसाती कहा जाता था।
- कृषि के विभाग के अध्यक्ष को सीताध्यक्ष कहा जाता था।
- मुद्रा विभाग के अध्यक्ष को अकाराध्यक्ष कहा जाता था।
- व्यापारिक कर लेने वाले को शुल्काध्यक्ष कहा जाता था।
- व्यापारिक मार्गो के अध्यक्ष को संस्थाध्यक्ष कहा जाता था
- कोटिल्य के अर्थ"ाास्त्र में कृषि कार्यो में दास को रखने की व्यवस्था थी।

(4½ m|kx **(Industries)** :– मौर्य काल में बडे व लघु उद्योग दोनो प्रकार के थे। ऊनी वस्त्र उद्योग, कपड़ा उद्योग, बढई उद्योग, सुरा निमार्ण धातु उद्योग आदि। अर्थ"ाास्त्र में पांच प्रकार की सुरा का उल्लेख मिलता है। सबसे प्रमुख उन्नत व्यवसाय रे"मी और सूती का था। सूती वस्त्र का व्यवसाय का"ाी, वत्स ओर मथुरा आदि प्रसिद्ध थे। ऊनी वस्त्र के लिए बंगाल मलमल के लिए प्रसिद्ध था इसके अलावा धातु व्यवसाय था जिसमें लोहा, सोना, तांबा, चांदी, जस्ता, बर्तन आदि के अलावा जहां उद्योग आदि उद्योग विकसित हो गए थे। व्यापारी के लिए व्यवसायिक संघ बने हुए थे। व्यापारियों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

(5) rky rFkk eki **(Weights and Measores)** :– माप–तोल के लिए मौर्य लोगों ने इकाई बना रखी थी। जिन वस्तुओं को सही से मापा जा सके और वस्तुओं के क्रय–विक्रय में किसी प्रकार की कोई हानि न हो।

½6½ enk fofu;e :– मौर्य काल में सोना, चांदी, तांबा से निर्मित सिक्के शुरू हो चुके थे। मुद्राओं को लक्षणाध्यक्ष मुद्रा तथा राजकीय टकसाल का अधिकारी जारी करता था। मौर्यकाल में दो प्रकार की मुद्राए चलती थी (प्रचलन में थी) राजकीय मुद्रा एवं व्यवसायिक मुद्रा। अर्थ"ाास्त्र में व्यापक रूप से मुद्रा प्रणाली की चर्चा की गई। कौटिल्य के vFk"kkL= e ek;dkyhu enkvk d uke fuEu g &

(क) कर्षापण या पण – यह चांदी का सिक्का था।

(ख) सुवर्ण – यह सोने का सिक्का था।

(ग) भाषक – यह तांबे का सिक्का था।

(घ) मापक तथा काकणी

इन मुद्राओं का उल्लेख मिलता है। कुछ सुनार स्वतंत्र रूप से सिक्के ढ़ालते थे। जिसके लिए उन्हे राज्य को 13.5 प्रति”ात शुल्क के रूप में देना पड़ता था। चांदी व तांबे के सिक्के मौर्यो की शाही मुद्रा थी। इसके अतिरिक्त सांचे में ढले तांबे के सिक्के और डाई–स्ट्रक सिक्के भी जारी किए गए थे। चार तांबे व चार चांदी के सिक्कों का उल्लेख मिलता है।

चांदी के सिक्के – (1) पण (2) अर्द्धपण (3) पाद (4) अष्टभाग।

तांबे के सिक्के – (1) मा”ाक (2) अर्द्धमा”ाक (3) काकणी (4) अर्द्धकाकणी।

इस प्रकार से मौर्य काल में लोगों का आर्थिक जीवन समृद्ध था। राज्य के आय स्त्रोतों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण स्थापित किया जा सके ताकि राज्य सुदृढ़ व शक्ति”ााली बन सकें। संकट के समय या प्राकृतिक आपदा के समय कृषकों की सहायता करना, उद्योगों व व्यापारिक केन्द्रो पर अधिकारियों की नियुक्ति कर रखी थी, खनिज पदार्थो व शराब के कारखानों पर राज्य का सीधे नियंत्रण था। राज्य की अपनी स्वंय की भूमि थी। जिस भूमि को सीता भूमि कहते थे इस पर मजदूरों को मजदूरी देकर स्वंय खेती करवा ली जाती थी। इस प्रकार राज्य के आमदनी के कई स्त्रोत थे। जिससे मौर्य राज्य की काफी उन्नति हुई।

5-4-3- v”kksd ds /kEe dh izd`fr ,o fl)kar **(Ashoka”s Dhamma of Nature and Principles)** :– अ”ाोक वि”व के महान सम्राटों में से एक था। अ”ाोक का विधिवत राज्याभिषेक 269 ई.पूर्व में हुआ था। बल्कि अ”ाोक 273 ई. पूर्व ही मगध के सिंहासन पर आसीन हो चुका था। कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अ”ाोक ि”ाव का उपासक था और वह लगभग 60 हजार ब्राह्मणों को प्रतिदिन भोजन खिलाता था पुराणों में अ”ाोक नाम वर्धन मिलता है। अ”ाोक ने अपनी प्रजा के नैतिक विकास के लिए जिन आचारों की संहिता के पालन की बात कही उसे ही अभिलेखों में 'धम्म' कहा गया। अ”ाोक के दूसरे एवं सातवें स्तम्भ में धम्म के लेखों का वर्णन मिलता है। धम्म प्राकृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है – धर्म । अ”ाोक के धम्म की परिभाषा ^jkgqykokn lqÙk* से ली गई है। ^vikfluo cgqdFkkus n;k nkus lPps lkSp ;s ekno lk/kos p*

(1) v”kksd ds /kEe dh izd`fr ,oa fl)kar **(Nature and Principles of Ashoka”s)** :– धम्म की शुरूआत करने का प्रमुख उद्दे”य अपने साम्राज्य में विभिन्न धर्मो एवं जातियों के लोगों के बीच आपसी एकता और भाई–चारे को स्थापित करना था। इस कार्य के लिए अ”ाोक ने अपने धम्म में सभी धर्मो की अच्छी बातों को शामिल किया ओर उन्हे अपने साम्राज्य में लागू किया। इसलिए अ”ाोक के धम्म को सभी धर्मो का सार कहा गया है।

(1) cMksa dk lEeku ,oa viuks ls NksVks dk I;kj **(Respect for the Elders and Love with Youngers)** :– हमें अपनों से बडों का सदैव आदर करना चाहिए तथा अपने से छोटों से हमे”ाा प्यार करना चाहिए। हमें अपने माता–पिता, गुरूजनों, उच्च अधिकारियों का हमे”ाा आदर करना चाहिए। इसके अलावा हमें

साधुओं, ऋषि–मुनियों, मित्रों आदि का भी आदर करना चाहिए। बड़ो को भी अपने से निम्न अधिकारियों, सेवकों, गरीबों, f"ाष्यों, बच्चों को प्रेम करना चाहिए एवं सहानुभूति होनी चाहिए।

(2) lR; de **(Truth Karma)** :– मनुष्य को सदैव सत्कर्मो में वि"वास रखना चाहिए उसे अव"य ही अपने कर्मो का फल मिलता है। अ"ोक का यह वि"वास है कि कर्म सिद्धान्त में दृढ़ वि"वास होना चाहिए। मनुष्य को उसके कर्मो का फल मिलता है ओर अच्छे कर्म करके मानव स्वर्ग की प्राप्ति कर सकता है। समाज के दूसरे लोगों को सत्य कर्मो से कार्य करने की प्रेरणा दे सकता है। एक जन्म में किए गए कार्य का अगले जन्म में भुगतान करना पड़ता है।

(3) nku O;oLFkk **(Charity System)** :– अ"ोक गरीबों को दान देते थे व साधु संतों को भी खूब दान देते थे। वह f"ाक्षा को सर्वोत्तम दान समझता था। इसलिए अ"ोक ने अपने शासन काल में काफी स्कूल खुलवाए और लोगों के लिए f"ाक्षा की व्यवस्था की। लोगों को दान का महत्व बताया कि जीवन दान देने से उसका जीवन सफल होता है।

(4) vPNk thou **(God Life)** :– अ"ोक ने अपने धम्म के माध्यम से जनता को सादा एवं उच्च विचारों वाला जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। मनुष्य को अपने जीवन में सदैव दुष्कर्मो से बचकर रहना चाहिए। क्रोध, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, झूठ, बेईमानी इन सभी बुराइयों से हमे"ाा अपने आप को दूर रखना एवं अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहिए।

(5) vfgalk (Ahinsa) :– अ"ोक ने अपने धम्म के सिद्धान्त में इस बात पर बल दिया कि हमें कभी भी किसी जीव को कष्ट नही देना चाहिए। इसी को आधार मानकर अ"ोक ने भी f"ाकार करना व मांस खाना त्याग दिया। उसने वर्ष में 365 दिन में से 56 दिन किसी भी प"ाु का वध नही करना और उन्होनें प"ाुओं की सेवा के लिए पु"ा अस्पतालों की व्यवस्था की।

(6) lPpkb **(Truth)** :– अ"ोक ने लोगों को सदैव सत्य बोलने के लिए प्रेरित किया और कहा कि सत्य ही जीवन का सबसे बडा आधार ओर धन है। सच्चाई के बिना धर्म एक बाह्य आडम्बर एवं दिखावा है। हमें अपने जीवन को सत्य की कसौटी पर ही कसना चाहिए।

(7) /kkfed l**हिश्णुता** (Religious Tolerance) :– अ"ोक ने अपने धम्म को मूल सूत्र में निम्न को सम्मिलित किया – (i) संयम (ii) भाव शुद्धि (विचारों की पवित्रता) (iii) कृतज्ञता (iv) दृढ़ भक्ति (v) दया (vi) **भाौच** (पवित्रता) (vii) सत्य (viii) सुश्रुता (सेवा) (ix) दान (x) सम्प्रतिपत्ति (सहायता करना) (xi) अपिचिति (आदर)

(8) jhfr&fjokt **(Ceremonies)** :–अ"ोक ने अपने धम्म के माध्यम से लोगों को संदे"ा दिया कि बाह्य आडम्बर, रूढ़ि, परम्परा, अंधवि"वास के अनुसार जन्म, विवाह, उपवास, तीर्थ स्थलों की यात्रा आदि से जुडी हुई प्रचलित कुरीतियां एवं रिवाज गलत अवधारणाएं आदि से दूर रहना चाहिए व अच्छे

रीति–रिवाजों का पालन करना जैसे बडों का आदर, मित्रों का सम्मान, छोटों से प्रेम, दान, दया आदि परम्पराओं का अनुसरण करते हुए व्यक्ति महान बन सकता है।

5.4.4. v”kkd d /kEe dk izlkj **(Propagation of Ashoka”s Dhamma) -:** अ”ाोक ने अपने धम्म का प्रचारकों को भेजकर पूरे वि”व में शान्ति का संदे”ा दिया इसके माध्यम से जन–जन मानवीय कल्याण की भावनाओं का प्रचार–प्रसार किया। शांति एवं अहिंसा का पाठ पूरे वि”व को पढ़ाया। अ”ाोक के धम्म का उल्लेख भाब्रू (वैराट) लघु f”ालालेख में मिलता है। इसी f”ालालेख में अ”ाोक ने त्रिसंघ में वि”वास व्यक्त किया है। ये त्रिसंघ या त्रिरत्न है – बुद्ध, धम्म एवं संघ। इसी के साथ बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध धर्म की पुस्तकें पढ़ने का निर्दे”ा भी मिलता है।

(1) ck) /keZ dk izpkj–izlkj dk fy, :– अ”ाोक ने सिर्फ उपदे”ा ही नही दिए बल्कि उन्हे व्यक्तिगत जीवन में उतारकर लोगों के समक्ष एक आद”ाZ प्रस्तुत किया। उसने भोग विलासिता के जीवन को त्यागकर सादा एवं उच्च जीवन व्यतीत किया। कलिंग के युद्ध के प”चात् युद्ध नीति को त्याग दिया। प्रजा के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए ओर सभी धर्मो के प्रति सहन”ाीलता की नीति धारण की जिससे जनसाधारण बहुत प्रभावित हुए।

(2) /keZ;k=k (Dharam Yatra) :– . प्राचीन काल में बिहार यात्रा के रूप में प्रचलित यात्रा को अ”ाोक ने अपने आठवें f”ालालेख में धर्मयात्रा का वर्णन किया। धर्मयात्रा महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित स्थानों की महत्वपूर्ण यात्रा थी। लुम्बिनी, महात्मा बुद्ध का जन्म बोधगया' बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति, सारनाथ, बुद्ध प्रथम प्रवचन, कु”ाीनगर बुद्ध का निर्वाण। इन यात्राओं के कारण बौद्ध धर्म का प्रसार एवं महत्व बढ़ गया।

(3) vfHkys[kksa }kjk izpkj ^ **(Education Through Edicts) -:** अ”ाोक ने धम्म का प्रचार करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। अपने अभिलेखों एंव स्तंभो पर अंकित करवाया ताकि जनता इन्हे पढ़कर अपने जीवन में उतार सके। इन अभिलेखों को मुख्य मार्गो व सार्वजनिक स्थानों पर स्थापित किया ताकि इन की तरफ आकर्षित हो सके।

(4) **f”k{kk (Education):-** अ”ाोक ने अपने शासन काल में अनेकों स्कूलों की स्थापना की ताकि जनसाधारण को f”ाक्षित किया जा सके और f”ाक्षा के माध्यम से धम्म के प्रति हीन भावना को दूर किया जा सके, f”ाक्षित लोगों के माध्यम से धम्म के प्रचार–प्रसार को तेजी से बढ़ाया जा सकता था।

(5) अच्छा 0;ogkj **(Good Behaviour):-** धम्म के माध्यम से अ”ाोक ने लोगों को उचित व्यवहार की प्रेरणा दी। बड़ो का सम्मान करना चाहिए। उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। गुरू के प्रति श्रद्धा, साधु सन्तों का सत्कार, शत्रुओं से मित्रवत व्यवहार, असहाय,

दीन–दुखी और दासों के प्रति करूणा की भावना और यथा"ाक्ति उनकी सहायता करना। अपने छोटे व f"ाष्यों के साथ प्रेम पूर्वक बर्ताव अपने अर्धानस्थ कर्मचारियों, बच्चों, गरीबों, नौकरों आदि के साथ विनम्रता व सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करना।

(6) /ke egkek= **(Dharma Mahamatar):-** अ"ोक ने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धर्म की स्थापना की। धर्म के विकास एवं उत्थान के लिए अनेकों धर्म महामात्रों की नियुक्ति की ताकि धर्म के देख–रेख का कार्य सुचारू रूप से चल सके।

(7) turk dh HkykbZ ds dk;Z **(Works of public welfare):-** अ"ोक ने अपने शासनकाल के दौरान अनेको जनकल्याण कार्य किए। उसने अनेकों मार्गों का निर्माण करवाकर उनके किनारे छायादार वृक्ष लगवाए, धर्म"ाालाएं, अस्पतालों का निर्माण करवाया। पानी की व्यवस्था के लिए अनेकों तालाबों, कुओं, बावडियों का निर्माण करवाया। यात्रियों की सुविधाओं के लिए जगह–जगह सराय बनवाई ताकि सुगमता से यात्रा एवं विश्राम कर सकें।

(8) /keZkuq"kklu **(Religion Dicipline):-** अ"ोक ने अपने तीसरे f"ालालेख में धर्म प्रचार के लिए नियुक्त राजुकों, प्रादे"ाकों तथा युक्तों को आज्ञा देते हुए कहा कि वे प्रत्येक पांचवें वर्ष राज्यों का भ्रमणकर जनता को उपदे"ा दें। ये राजाज्ञा अ"ोक ने अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष में जारी किया था। इसे उनके अभिलेखों में अनुसंधान कहा गया।

(9) eBksa dk fuekZ.k (Building of Vihars):- अ"ोक ने अपने शासनकाल में अनेकों बौद्ध मठों का निर्माण करवाया और इसी के साथ–साथ बौद्ध धर्म में आने वाले विद्वानों को संरक्षण दिया। जगह–जगह बौद्ध मूर्तियों व स्तूपों को स्थापित किया गया।

(10) rhljh ckS) lfefr **(Third Buddhist Sangati):-** (1) अ"ोक ने बौद्ध धर्म में चले आ रहे संघर्ष व आपसी मतभेदों को दूर करने के लिए 251 ई. पूर्व पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध समिति का आयोजन किया जिसमें बौद्ध भिक्षुओं ने भाग लिया जो नौ माह तक चली जिसमें भिक्षुओं को बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अधिप्रेरित किया।

(11) v"kksd ds vfHkys[k **(Abhilekh of Ashoka):-** अ"ोक के इतिहास की संपूर्ण जानकारी हमें उसके अभिलेखों से प्राप्त होती है। अभी तक हमें अ"ोक के चालीस अभिलेख प्राप्त हुए है। इन अभिलेखों में तीन लिपियों का प्रयोग किया गया है ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं आर्मेइक। आर्मेइक एवं ग्रीक लिपि के अभिलेख अफगानिस्तान से खरोष्ठी लिपि उत्तर–प"िचमी पाकिस्तान से तथा शेष साम्राज्य से ब्राह्मी लिपि के अभिलेख मिलें है। अ"ोक के अभिलेखो को तीन वर्गो में बांटा गया है।

(i) f"ाला लेख (ii) स्तंभ लेख (iii) गुहा लेख।

(i) f"kykys[k

f"kykys[k	**खोज का वर्श**	fyfi
1 भाहबाजगढ़ी	1836	**खरोश्ठी**
2 ekulsgjk	1889	**खरोश्ठी**
3 fxjukj	1822	czkgeh
4 Fkksyh	1837	czkgeh

5 dkylh	1837	ckgeh
6 tkx<	1850	ckgeh
7 lkikjk	1882	ckgeh
8 ,jxMh	1916 dk yxHkx	ckgeh

(ii) LrHk ys[k & अ"ाोक के स्तंभ लेखों को दो वर्गो में विभक्त किया गया है, बृहत स्तंभ और लघु स्तंभ। ये स्तंभ लेख टोपरा (दिल्ली), मेरठ, कौ"ाम्बी (इलाहबाद), रामपूर्वा (चम्पारण), लौरिया (नन्दनगढ़ चम्पारण), लौरिया अरराज(चम्पारण महरौली (दिल्ली) से प्राप्त हुए है।

(iii) xqgkys[k & यह लेख बराबर नामक पहाडी गुहा में स्थित है। उसमें अ"ाोक द्वारा अपने राज्य अभिषेक के बारहवें वर्ष में आजीवकों को बराबर की गुफा देने और अ"ाोक की धार्मिक सहिष्णुता का वर्णन मिलता है।

5-4-5 ek;l lkekT; dk iru **(The Decline of Mauryan)** :– अ"ाोक की मृत्यु 232 ई. पूर्व के बाद मौर्य साम्राज्य का विघटन शुरू हो गया। लगभग 185 ई. पूर्व अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ को पदचयुत कर पुष्यमित्र ने शुंग वं"ा की नींव रखी। अ"ाोक की मृत्यु के बाद केवल 47 व"ाों में वि"ााल मौर्य साम्राज्य की अमिट छाप नष्ट हो गई। मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अनेकों कारक उत्तरदायी है जो निम्नलिखित है :–

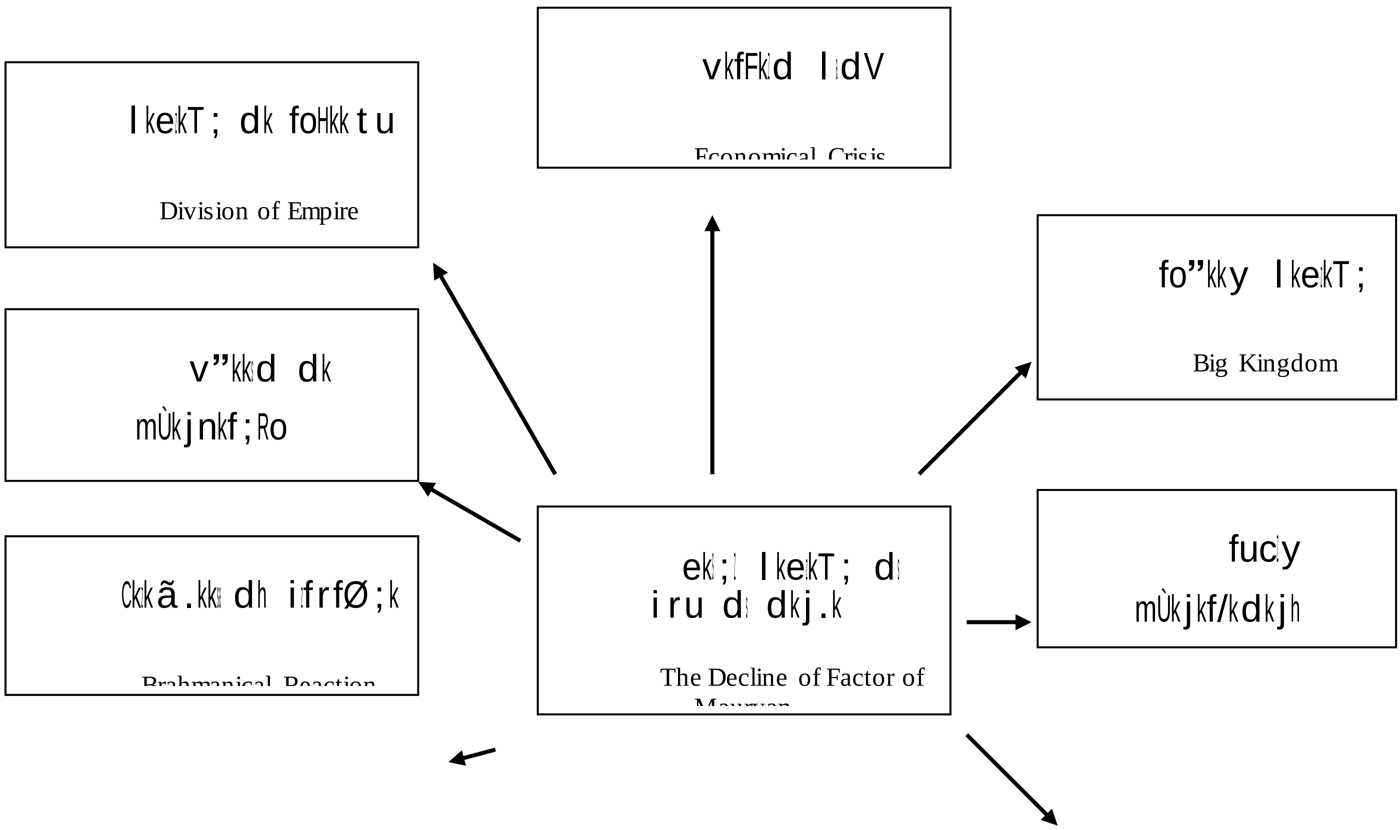

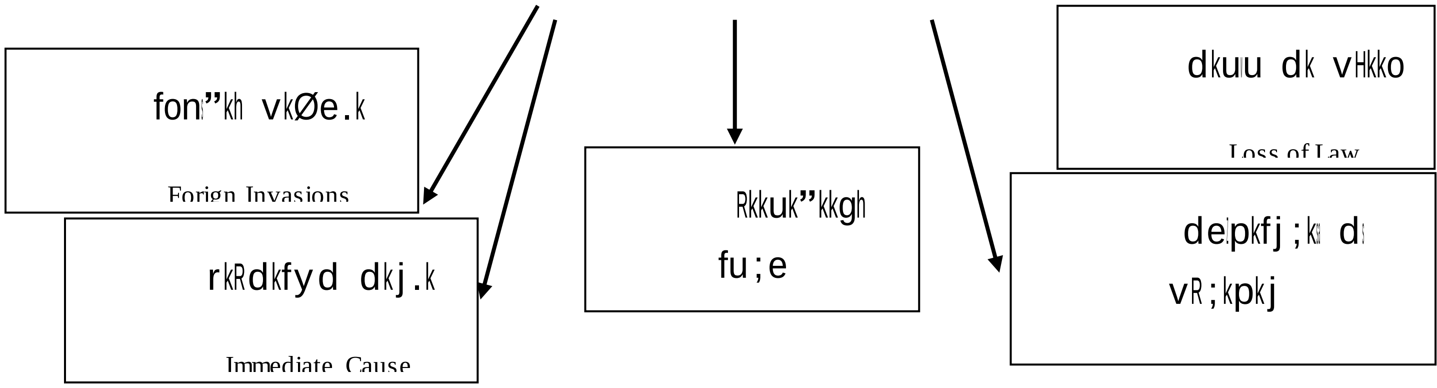

budk lf{kIr fooj.k fuEu iadkj ls g :–

(1) czkã.kka dh ifrfØ;k **(Brahmanical Recation) :-** डां. हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार अ”ोक के शासन काल में ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया को झूठे देवता कहा गया था। इस अपमान का बदला लेने के लिए पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य वं”ा को उखाड़ फैंका जो ब्राह्मण ही था। मौर्य साम्राज्य के शासक बृहद्रथ की हत्या कर दी और शुगवं”ा की स्थापना की।

(2) fo"kky lkezkT; **(Big Kingdom):-** मौर्य साम्राज्य काफी वि”ाल था इस वि”ाल साम्राज्य को चलाने के लिए योग्य व कु”ल शासकों की आव”यकता थी। अ”ोक के बाद के शासकों में इस योग्यता व क्षमता का अभाव था। मौर्य साम्राज्य का प्रसार उत्तर में हिमालय, दक्षिण में मैसूर, पूर्व में बंगाल, उत्तर–पिं”चम में हिन्दुकु”ा पर्वत तक इसकी सीमाएं फैली हुई थी।

(3) lkezkT; dk foHkktu **(Division of Empire):-** अ”ोक के शासनकाल तक एकता स्थापित थी लेकिन अ”ोक की मृत्यु के बाद जालोक ने क”मीर की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। बीरमेन ने गान्धार को स्वतंत्र कर दिया। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य एक–एक करके विभाजित होता गया जिसका परिणाम मौर्य साम्राज्य के लिए बहुत घातक रहा।

(4) vkfFkd ladV **(Economical Crisis):–** चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासनकाल के दौरान अनेकों नए पद सृजित किए और धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए धन का काफी व्यय किया। अ”ोक ने भी अपने शासनकाल में अनेकों जनकल्याण कार्य किए। जिससे राजकोष कंगाल हो गया। उत्तराधिकारियों को समय पर वेतन नही दिया गया। आय के स्त्रोत कम थे जिससे मौर्य साम्राज्य की आर्थिक स्थिति डावॅाडोल हो गई जो बाद में मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

(5) v"kksd dk mÙkjnkf;Ro **(Responsibility of Ashok):-** डॉ. राय चौधरी के अनुसार अ”ोक की अहिंसा की नीति को मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी माना गया है। अ”ोक ने कलिंग के युद्ध के बाद सदा–सदा के लिए युद्ध नीति को त्याग दिया। अ”ोक की इस नीति के कारण सैनिकों के मनोबल में गिरावट आई मौर्य सेना निष्क्रिय हो गई। प्रान्तीय प्र”ासक काफी स्वेच्छाचारी होकर जनता पर अत्याचार करने लगे। सेना की संख्या में कमी कर दी गई। अ”ोक ने धार्मिक तथा

मानवतावादी कार्यो पर अधिक धन खर्च करना शुरू कर दिया जिन्हे मोर्चो की आर्थिक दुर्बलता का दोषी माना गया है चारों तरफ अराजकता फैलनें लगी। ऐसे समय पतन स्वाभाविक था।

(6) fuc:y mÙkjkf/kdkjh **(Weak Successors):-** किसी भी साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए योग्य शासकों की आव"यकता होती है। इतने वि"ााल साम्राज्य को संभालना अयोग्य शासकों के सामर्थ्य में नही था। चन्द्रगुप्त मौर्य और अ"ोक आदि योग्य शासकों के कारण मौर्य साम्राज्य ने उन्नति की थी। उनके बाद के शासकों में योग्यता क्षमता का अभाव था। वे वि"ााल साम्राज्य को संभालने में असमर्थ रहे। पुष्यमित्र शुंग ने अन्तिम मौर्य शासक की हत्या कर सत्ता छीन ली।

(7) fon:"kh vkØe.k **(Foreign Invasions):**.– भारत की उत्तर–प"िचमी सीमा हमे"ाा ही असुरक्षित रही। ऐसा अवसर पाकर विदे"ाी शासकों ने मौर्य साम्राज्य पर आक्रमण कर दिए क्योंकि अ"ोक की मृत्यु के बाद केन्द्रीय शासन कमजोर हो गया था। बार–बार होने वाले विदे"ाी आक्रमणों ने मौर्य साम्राज्य को कमजोर बना दिया ओर धीरे–धीरे उसका अस्तित्व मिट गया।

(8) rkuk"kkgh fu;e **(Despotic Rule):-** तक्ष"िाला मे बिंदुसार के समय और अ"ोक के समय में जनविद्रोह की जानकारी मिलती है। तक्ष"िाला वासियों ने अ"ोक से कहा था कि '' ge jktk d: fojk/kh ugh g: gekjk fojk/k vekR;ks: l: g ** इस विद्रोह को दबाने के लिए अ"ोक ने कुणाल को भेजा था इससे पता चलता है कि ताना"ाही शासक थे। उनके आदे"ाों को कानून समझा जाता था। राजा की इच्छा को मानना सबके लिए आव"यक था। निहार रंजन ने मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण जनता का विद्रोह बताया है। जब अयोग्य उत्तराधिकारियों ने नेतृत्व संभाला तो मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

(9) rkRdkfyd dkj.k **(Immediate Cause):-** पुष्यमित्र शुंग मौर्य शासक वृहद्रथ का सेनापति था। उसकी इच्छा शासक बनने की थी। इस उद्दे"य को प्राप्त करने के लिए 185 ई. पूर्व उसने व्रहद्रथ की हत्या कर दी और शुंग वं"ा की नींव डाल दी जिससे मौर्य वं"ा का सदा के लिए अंत हो गया।

(10) कानून का अभाव (Lose of Law):- मौर्य साम्राज्य के पतन में जो कारक उत्तरदायी थे उनमें प्रमुख कारक कानून का अभाव भी था राजा की मृत्यु के बाद उनके पुत्रों में सिंहासन प्राप्त करने के लिए द्वन्द्व शुरू हो गया जैसे अ"ोक ने सिंहासन प्राप्त करने के लिए अपने 99 भाईयों की हत्या कर दी थी। दूसरा उदाहरण कुणाल को उसकी सौतेली माता ने सिंहासन प्राप्ति के लिए अंधा करवा दिया था जिसके कारण मौर्य साम्राज्य की शक्ति छिन्न–भिन्न हो गई ओर राजमहल शड्यन्त्रों का केन्द्र बन गया।

(11) depkfj;ks: d: vR;kpkj (Repression of the officials) :- कर्मचारियों के अत्याचार की मौर्य साम्राज्य के पतन में अहम भूमिका रही है जैसे बिंदुसार के शासन में तक्ष"िाला विद्रोह अ"ोक के समय जनता विद्रोह कर्मचारियों के अत्याचार का ही परिणाम था। ऐसे अत्याचारी कर्मचारियों ने जनता को विद्रोह के लिए मजबूर किया। जिससे मौर्य साम्राज्य का पतन हुआ।

5.4.6.**मौर्योत्तर साम्राज्य : कुशाण और सातवाहन (**200 ई. पूर्व–300 ई. पूर्व) **(Post Mauryan Empires :**

Kushanas and Satvahans) पूर्व मौर्योत्तरकाल माना जाता है।

मौर्य साम्राज्य का पतन होने से भारत की राजनैतिक एकता बिखरने लगी। भारत के उत्तर–पश्चिमी मार्गो से अनेकों विदेशी आक्रमणकारी भारत पहुंचे और अपना राज्य स्थापित करने लगे। उत्तर–दक्षिण भारत की बडी शक्ति के रूप में कुषाणवंश का एक तेजस्वी शासक कनिष्क एक महान शासक था। भारतीय संस्कृति के इतिहास में कुषाण काल का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

सातवाहन शासकों का इतिहास तमसाच्छादित था। इस वंश में गौतमी पुत्र सतकरणी जैसा महान शासक हुआ है इसने अन्य शासकों को बुरी तरह से पराजित किया और लगभग संपूर्ण दक्षिणी भारत और दक्षिणी पश्चिमी भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। यहां हम मौर्योत्तर काल के दो प्रमुख वंशों का अध्ययन करेगें।

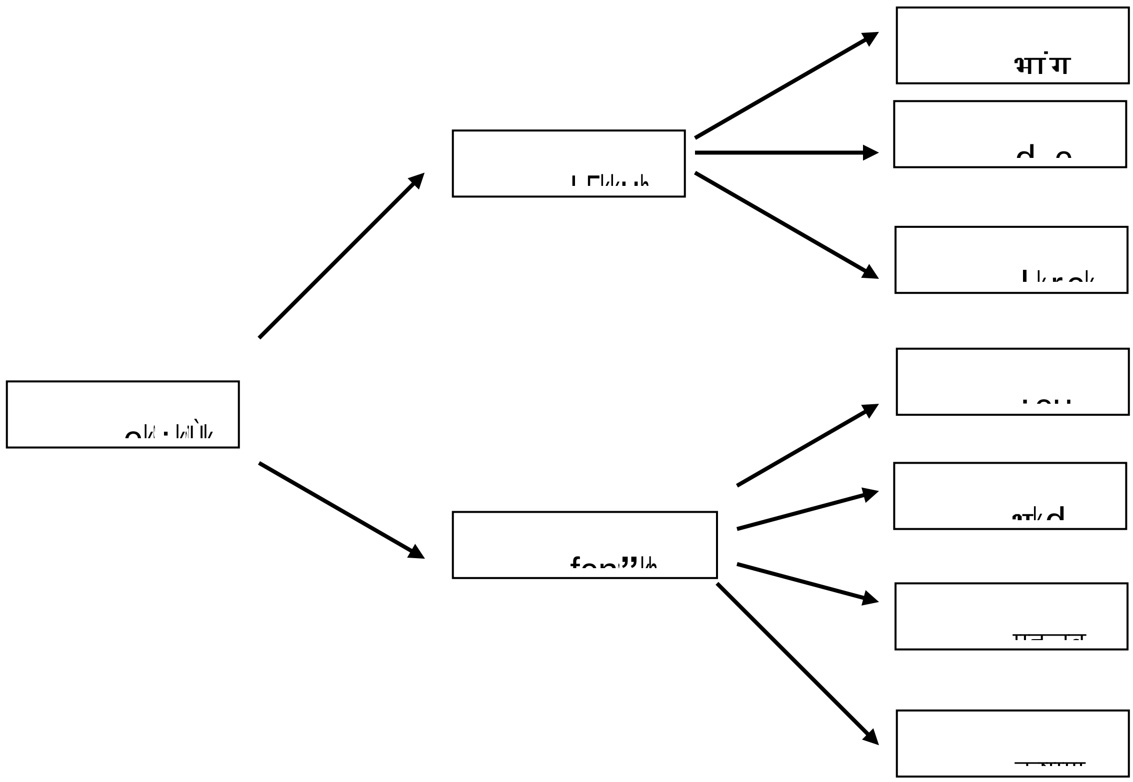

5.4.6.1. **कुशाण (Kushan):-** कुषाण वं”ा मौर्योत्तरकालीन भारत का प्रथम साम्राज्य था जिसका प्रभाव सुदूर मध्य एि”ाया, ईरान, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान तक फैला हुआ था। पार्थिभाईयों के बाद कुषाणों का शासन प्रभुत्व में आया, जो सूची कहलाते थे । सूची नाम का एक कबीला समूह था जो पांच कुलों मे बंटा हुआ था कुषाण उन्ही में से एक थे। इनका साम्राज्य अमुदरिया से गंगा तक मध्य एि”ाया के खुरा”ाान से उत्तर प्रदे”ा के वाराणसी तक फैला हुआ था।

कुषाण राजवं”ा के विषय में उसकी जानकारी के रत्रोतों में चीनी रत्रोतों का स्थान प्रथम है, यूची कबीले भारत की ओर आए थे ऐसा चीनी रत्रोतों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। इन रत्रोतों में (**History Of first Han Dynasty**) नामक रचना का वि”ाेष महत्व है। इसके अलावा नागार्जुन के माध्यमिक सूत्र अ”वघोष के बुद्धचरित तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग से भी कुषाण तथा कनिष्क के विषय में परिचय प्राप्त होता है। कुषाण वं”ा के शासक निम्न थे। जिनकी सूची इस प्रकार से है :–

कुशाण वं”k (The Kushanas)

↓

d|t|y dMfQ l|l & i|Fke

↓

i|= fde dMfQ l|l & f}rh;

↓

कनिश्d i|Fke ¼78&144 b|- i|-½ (Kanishka –

↓

हुविश्d (Huvishka)

↓

कनिश्d f}rh; (Kanishka – 2nd)

↓

Okk l|n|o i|Fke (Vasudeva)

↓

कनिश्d r`rh; (Kanishka – 3rd)

↓

Okk l|n|o f}rh; (Vasudeva – 2nd)

bue se कुछ मुख्य भाासकों का वर्णन निम्न प्रकार से है :–

(1) d|t|y dMfQ l|l (**Kuja Kadfhises):-**. कुजलु कडफिसेस का एक अन्य नाम कदफिस भी था। ये कुषाण वं"ा का प्रथम शासक था। यूची कबीलो ने शकों से (ताहिआं क्षेत्र को जीत लिया। चीन के इतिहासकार स्यू माचियन का मानना है कि यूची कबीले में कुषाण बहुत शक्ति"ाली थे इनका सरदार कुजुलफिसेस ने पांच अन्य कबायली समुदायों को अपने नेतृत्व में लेकर उत्तर पर्वतों को पार किया और काबुल पर कब्जा करके उसने वहां से यूनानी सत्ता को हटा दिया। कुजुलफिसेस ने तांबे के सिक्के जारी करवाए थे और महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इसका शासन काल 15 ई. से 65 ई. के बीच माना जाता है। इसकी मृत्यु लगभग 80 वर्ष की अवस्था में हुई थी।

(2) foedMfQ l|l (**VimKadphises – 2):-** (65–78 ई.) कुजुल कडफिसेस की मृत्यु के बाद इसका पुत्र बिमकडफिसेस शासक बना। इसने भी अपने पिता की भांति अपने साम्राज्य का काफी विस्तार किया। चीनी ग्रन्थ ''हाऊहान"ू ' से ये अनुमान लगाया जाता है कि विमकडफिसेस ने 'तिएन'–यूं' (सिंधू नदी पार तक्ष"ाला के क्षेत्र) पर विजय प्राप्त किया। उसके बाद भी विजयों का क्रम जारी रखा। पंजाब बनारस और मथुरा के क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया यह अपने पिता की भांति एक महान योद्धा तथा कु"ाल शासन प्रबन्धक भी था। इसने अपने राज्य को छोटे–छोटे प्रान्तों में बांट दिया था जिन्हे स्ट्रेपीज कहते थे। शासन चलाने के लिए कु"ाल राज्यपाल नियुक्त कर रखे थे जिन्हे क्षत्रप कहते थे। इसने सिक्कों पर "िाव, नदी, त्रिशूल, महाराज, राजाधिराज, महे"वर, सर्व लोके"वर आदि उपाधियां भी धारण कर रखी थी। सिक्कों पर इन आकृतियों से ऐसा प्रतीत होता है कि विमकडफिसेस सर्वमतानुयायी था। अपने शासन काल के अन्त में इसने चीन पर आक्रमण किया लेकिन इस बार पराजय का सामना करना पड़ा। इसका शासन काल लगभग 65–78 ई. तक था। विमकडफिसेस द्वितीय के नाम से इसे जाना जाता है।

(3) **कनिश्क (Kanishka 78-144 b|-):**. दो कडफिसेस शासकों के बाद कुषाण शासन की बागडोर सबसे प्रसिद्ध और शक्ति"ाली शासक कनिष्क ने संभाली। यह कुषाण वं"ा के सभी शासकों में योग्य ओर महान था। यह काल कुषाण काल का सबसे उत्कर्ष काल था। कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरूषपुर में 400 फिट ऊंची 13 मंजिलों की एक मीनार बनवाई जिसके ऊपर एक लोह क्षत्र स्थापित किया और उसी के पास एक वि"ाल संघाराम विहार बनवाया। संघाराम कनिष्क के चैत्य के नाम से प्रसिद्ध था। इसका यवन वास्तुकार अगिलस ने किया। कनिष्क इतिहास दो कारणों से प्रसिद्ध था। प्रथम उसने शक् संवत 78 ई. में चलाया। इस संवत का प्रयोग भारत सरकार द्वारा किया गया। द्वितीय इसने बौद्ध धर्म को अपनाया तथा उसे संरक्षण दिया। कुछ इतिहासकार इसका शासनकाल (78–144 ई.) कुछ (78–105 ई.) मानते है। कनिष्क की दूसरी राजधानी मथुरा थी। श्री धर्मपिटक निदान सूत्र के चीनी अनुवाद से ज्ञात होता है कि कनिष्क ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण करके वहां के राजा को पराजित करके एवं उससे हर्जाने के रूप में अ"वघोष जैसे प्रसिद्ध विद्वान, बुद्ध का भिक्षापात्र तथा एक अनोखा मुकुट प्राप्त किया। कनिष्क कला और संस्कृति का महान संरक्षक माना जाता है। कनिष्क की राज्य सभा में अनेकों विद्वान थे पा"र्व, वसुमित्र एवं अ"वघोष जैसे बौद्ध दा"ानिक तथा नागार्जुन प्रसिद्ध विद्वान, चरक जैसे चिकित्सक थे जिनका सहयोग कनिष्क को मिला। मध्य ए"िाया के कुछ प्रदे"ा यारकन्द, का"ानगर, खोतान, ये कनिष्क के अधिकार में आ गए। इसके बाद वि"ाल साम्राज्य गंगा, सिन्धु एवं ऑक्सस की घाटियों तक इसका वि"ाल साम्राज्य फैला

हुआ था। कनिष्क के शासन काल में चौथी संगीति का आयोजन किया। यह संगीति क”मीर के कुण्डलवन में आयोजित की गई इसका अध्यक्ष वसुमित्र उपाध्यक्ष अ”वघोष थे। इस संगीती में बौद्ध धर्म को दो विभागों में विभाजित किया गया। हानियान और महायान। अ”वघोष ने बुद्धचरित सौन्दर नन्द, शारिपुत्र प्रकरण एवं सूत्रालंकार जैसे ग्रन्थ की रचना की। बुद्धचरित बौद्धधर्म का महाकाव्य कहलाता है। इसकी तुलना बाल्मीकि के 'रामायण' से की जाती है। कनिष्क दरबार की दूसरी विभूति नागार्जुन दा”ीनिक होने के साथ–साथ वैज्ञानिक भी थे। इनकी समता मार्टिन लूथर से की जाती है इन्हे भारत का आईस्टाइन भी कहा जाता है। इन्होने अपने ग्रन्थ 'माध्यमिक सूत्र' में सापेक्षता के सिद्धान्त का निरूपण किया है। चौथी बौद्ध संगीति में वसुमित्र ने बौद्धधर्म के वि”वको”ा 'महाविभा”ा सूत्र' को रचा। कनिष्क दरबार की विभूतियों में अन्यतम विभूति 'चरक' ने औषध विज्ञान 'चरक संहिता ' की रचना की। भारत में बसकर कुषाणों ने भारतीय संस्कृति को आत्मसात किया जो भारतीय संस्कृति यूनानी संस्कृति से प्रभावित थी। कुषाण शासकों को 'देवपुत्र' की उपाधि से विभूषित किया गया।

(4) **हुविश्क (Huvishka):**. कनिष्क के दो पुत्र थे – व”िष्क और हुविष्क। कनिष्क की मृत्यु के बाद उसका बेटा हुविष्क 162 ई. में सिंहासन पर आसीन हुआ इसने क”मीर में हुविष्कपुर नामक एक नगर की स्थापना की तथा मथुरा में एक बहुत सुंदर विहार का निर्माण करवाया। यह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।

हुविष्क के शासन काल में इसके बडे भाई की मृत्यु हो गई। वह अपने पिता की भांति महान योद्धा था। इसने अपने शासन काल के दौरान सुन्दर–सुन्दर सिक्के बनवाए। इसको भवन निर्माण कला से बहुत प्रेम था।

(5) ok l|no i:Fke (**Vasudeva Oratham):-**. हुविष्क के बाद 180 ई. में वासुदेव कुषाण शासक बना। ये कुषाणवं”ा का अन्तिम शासक था। इसने बौद्ध धर्म का त्याग करके हिन्दू धर्म अपनाया। इसने पुरूषपुर से राजधानी को मथुरा में हस्तान्तरित किया। इसके ि”ालालेख मथुरा और उसके आस–पास प्रदे”ाों से प्राप्त हुए। इसके सिक्को पर ि”ाव तथा विष्णु के चित्र अंकित है क्योंकि यह ि”ाव का उपासक था। वासुदेव के बाद वासुदेव द्वितीय और कनिष्क शासक हुए लेकिन इनके समय में कुषाण साम्राज्य अनेक टुकडो में बंट गया था। नागों, शको तथा पहलुओं ने कु”ााण साम्राज्य के अलग–अलग हिस्सों को अपने–अपने अधिकार में ले लिया। चौथी सदी के शुरूआत में कुषाण साम्राज्य का पतन हो गया।

5.4.6.2 lkrokgu (**Satvahanas):-** मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण–पि”चम भारत की मुख्य शक्ति सातवाहन थे। पुराणों में सातवाहनों को आन्ध्र कहा गया है। पुराणों के अनुसार आन्ध्रों ने 300 वर्षो तक शासन किया। सातवाहनों के इतिहास की जानकारी हमें खुदाई से प्राप्त अभिलेखों, सिक्कों और धार्मिक ग्रन्थों से प्राप्त होती है। सातवाहन शब्द वाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' तथा सोमदेव रचित (कृत) ' कथा सरित्सागर में मिलता है। सातवाहनों के सबसे पुराने अभिलेख ई.पूर्व पहली सदी के है उन्होने कण्वों को पराजित कर मध्य भारत के कुछ भागों में अपनी सत्ता को स्थापित कियझं

Lkkrokgu oa”k

↓

fleqd ¼60&37 bZ-iw-½

↓

कृश.k ¼37&27 bZ-iw-½

↓

भkkrd.khZ iFke ¼27&17 bZ-iw-½

↓

भkkrd.khZ f}rh;

↓

gky ¼20&24 bZ-iw-½

↓

xkSreh iq= भkkrd.khZ ¼106&130 bZ-½ (Gotmi Putar Satakani)

↓

0kf”k"Bh iq= Jh iqyekoh ¼130&154 bZ-½ (Vadhidhti Putta Shri

↓

यज्ञश्री भातकर्णी (165—194 ई-½ (Yagva Shri Satakani)

Lkkrokgu oa”ा के मुख्य भासकों के बारे में निम्न प्रकार से वर्णन है :–

(1) fleqd ¼**Simuka):-** सातवाहन वं"ा का संस्थापक सिमुक था। पुराणों के अनुसार सिमुक ने अन्तिम रूप से शुंग व कण्व सत्ता पर अधिकार किया। उसने लगभग 23 वर्षो तक शासन किया इसके अलावा सौराष्ट्र, मालवा तथा मध्यप्रदे"ा के बहुत से भागों पर अधिकार कर लिया था। पहले यह अच्छा शासक था लेकिन बाद में अत्याचारी बन गया इसलिए इसकी हत्या कर दी गई।

(2) **कृश्ण (Krishna)** ¼ 37&27 b- i-½ – सिमुक के बाद उसका भाई कृष्ण गद्दी पर बैठा। वह बहुत वीर राजा था। पुराणों के अनुसार उसने 18 वर्षो (37–27 ई. पू.) तक शासन किया। उसने अपने साम्राज्य का खूब विस्तार किया। इसने अपने साम्राज्य में नासिक तक सातवाहन शक्ति का विस्तार किया। नासिक ि"ालालेख में इसका नाम मिलता है एवं इसके शासन काल में किसी उच्चअधिकारी से नासिक में गुफा का निमार्ण करवाया।

(3) **भातकर्णी प्रथम** ¼ 27&17 b- i-½ ¼**Satakani -First):-** कृष्ण के बाद शातकर्णी प्रथम शासक बना जो सातवाहन सिमुक का पुत्र था। वह अपने पिता की भांति महान योद्धा व शासक था। ऐतिहासिक तथ्यों के प्रामाणिकता के आधार पर यह सुनि"चत नही हो सका है कि शातकर्णी सिमुक का पुत्र था या कृष्ण का। इसने प्रतिष्ठान को अपनी राजधानी बनाया। यह सातवाहन शासकों में प्रथम शासक था जिसने शातकर्णी की उपाधि प्राप्त की। इसने प"चमी मालवा, नर्मदा घाटी एवं आधुनिक ब"ार आदि क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया। इसने विजय के उपलक्ष्य में दो अ"वमेघ करवाए।

(4) **भातकर्णी द्वितीय (Satakani – Second):-**. शातकर्णी द्वितीय सातवाहन वं"ा 'ाष्ठम का शासक था इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नही है। इसने शुंग शासकों से मालवा जीत लिया था।

(5) gky (Hala) ¼20&24 b- i-½ ¼& हाल इस वं"ा का सतरहवां शासक था। वह स्वयं एक महान कवि था। इसने प्राकृत भाषा गाथा सप्त"ाती नामक पुस्तक की रचना की इसमें उसकी प्रेम गाथाओं का वर्णन हैं। 'कातन्त्र' के लेखक सर्व वर्मन उसके दरबार में रहते थे। इसी के शासनकाल में गुणाढय ने वृहत्कथाकोष नामक ग्रंथ की रचना की।

(6) **गौतमी पुत्र भातकर्णी** ¼106&130 b- i-½ ¼**Gotmi Putra Satakani):-** सातवाहन वं"ा का सुविख्यात एवं पराक्रमी शासक था। इसकी माता बलश्री का नासिक अभिलेख प्राप्त हुआ। नासिक अभिलेखा में इसे ब्राह्मण एवं बेजोड़ ब्राह्मण माना गया है। यह सातवाहन वं"ाावली का 23वां शासक था। गौतमी पुत्र शातकर्णी से पूर्व शासकों ने खासकर शक शासक नहपान ने सातवाहन शासकों की शक्ति को क्षति पहुंचाई। इसका साम्राज्य उत्तर में मालवा से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैला हुआ था। उसके साम्राज्य में गुजरात, महाराष्ट्र, मालवा, कोकण, पूना और नासिक प्रदे"ा शामिल थे। उसकी शासन व्यवस्था का मुख्य उद्दे"य प्रजा के लिए कल्याणकारी कार्य करना। उसने बौद्ध संघ को अजकालीकम तथा कार्ले के भिक्षु संघ को करजक ग्राम दान में दिए। इसने सातवाहन वं"ा के य"ा व कीर्ति को बढ़ाया। उसकी ये उपलब्धियां नासिक अभिलेख में मिलती है। गौतमी पुत्र शातकर्णी ने वेणकटक स्वामी की उपाधि धारण की तथा वेणकटक नगर की स्थापना की जो नासिक जिला में है।

(7) **of”ाइठीपुत्र पुलमावी** ¼130&154 bZ-½ **(Vashishtiputtar sri Pulumavi):-** सातवाहन वं”ा का एक अन्य शक्ति”ााली शासक जिसने 130 ई.–154 ई. तक शासन किया पुराणों ने इसका नाम पुलोभा शातकर्णी टाल्मी के अनुसार सिरो पोलिमेओस के रूप में मिलता है। इसने प्रतिष्ठान को अपनी राजधानी बनाया।

(8) **यज्ञ श्री भाातकर्णी** ¼165&194 bZ-½ :– सातवाहन वं”ाावली का यह 127 वां शासक था। इसके शासन की जानकारी हमें चिन्न नामक स्थान से प्राप्त अभिलेख कल्हेरी अभिलेख नासिक अभिलेख से प्राप्त होते है, उसके सिक्के आन्ध्र प्रदे”ा, महाराष्ट्र व मध्य प्रदे”ा और गुजरात में पाए गए है। इन सिक्कों पर जहाज का चित्र है जो जल यात्रा और समुन्द्री व्यापार का प्रतीक है।

5.5. iz;fr leh{kk **(Check Your Progress) :-**

Part (A) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए **(Fill in the Blanks):-**

(1) चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म .... ई. पूर्व हुआ।

(2) चन्द्रगुप्त मौर्य जिस पहाडी पर अपना अन्तिम जीवन व्यतीत किया, उसे .... कहा जाता है।

(3) चन्द्रगुप्त मौर्य के राजनीतिक गुरू ....थे।

(4) अ”ोक का जन्म .... ई. पूर्व हुआ था।

(5) मेगस्थनीज ने .... पुस्तक की रचना की।

(6) अ”ोक की दो पुत्रियां .... थी और .... ।

(7) हिन्दुकु”ा पर्वत मौर्य साम्राज्य और .... के राज्य की बीच की सीमा थी।

(8) बिन्दुसार की मृत्यु के समय अ”ोक .... का वायसराय था।

(9) सातवाहनों को .... राजव”ां भी कहा जाता है।

(10) कनिष्क ने शक संवत् की शुरूआत ....ई. में की थी।

Part (B) lR;@vlR; dFku **(True/False):-**

(1) मौर्योत्तर काल में विस्तृत राज्य की स्थापना सातवाहन एवं कुषाण दो वं”ाो ने की थी। (सत्य/असत्य)

(2) कनिष्क ने जैन धर्म को संरक्षण दिया।
(सत्य/असत्य)

(3) सातवाहन वं"ा का संस्थापक सिमुक था।
(सत्य/असत्य)

(4) मौर्यकाल में मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी
(सत्य/असत्य)

(5) मौर्यकाल में लगान की दर 10 प्रति"ात थी।
(सत्य/असत्य)

(6) अ"ोक की पत्नी का नाम पदमावती था।
(सत्य/असत्य)

(7) गुहालेख की तिथि 250 ई. पू. से 300 ई. पू. तक मानी गई है।
(सत्य/असत्य)

(8) अ"ोक को उसके अभिलेखों तथा साहित्यों में देवानां प्रियद"ाी कहा गया है।
(सत्य/असत्य)

(9) सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलना का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ किया था।
(सत्य/असत्य)

(10) चन्द्रगुप्त मौर्य ने कु"ाणवं"ा की नींव डाली थी।
(सत्य/असत्य)

Part (C) उचित मिलान कीजिए **(Match the Following)**

(1) सातवाहन का संस्थापक	(क) 106–130 ई.।
(2) गौतमी पुत्र सातकर्णी ने शासन किया	(ख) 323–298 ई. पूर्व।
(3) चन्द्रगुप्त मौर्य का शासनकाल	(ग) सिमूक।
(4) अ"ोक का राज्यभिषेक	(घ) 187–75 ई. पू.।
(5) शुगवं"ा का शासन काल	(ड) वासुदेव द्वितीय
(6) कुषाण वं"ा का अंतिम शासक	(च) 273 ई. पूर्व
(7) मौर्य वं"ा का अन्तिम शासक	(छ) यज्ञ श्री"ातकर्णी

(8) सातवाहन का 127 वां शासक (ज) वृहद्रथ

5-6 lkjk"k ;k lf{kflrdk (Summary)

- मौर्य राजवं"ा की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी। ब्राह्मण परंपरा के अनुसार चन्द्रगुप्त की माता शूद्र जाति की मुरा नामक स्त्री थी। सर विलियम जोंस ने सेन्ड्रोकोटस की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य से की थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने विजय प्राप्त कर प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। मौर्य राज्य की स्थापना में विष्णुगुप्त/चाणक्य/कोटिल्य जो जाति से ब्राह्मण था जिसका अहम योगदान है।
- चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य का 322 ई. पूर्व में राज्याभिषेक किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने 305 ई. पूर्व में सीरिया के सम्राट सेल्यूकस को पराजित किया सेल्यूकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया था। सेल्यूकस ने मेगस्थनीज को राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन प्रणाली राजतन्त्रात्मक थी ओर इसको चलाने के लिए मन्त्री परिषद् की नियुक्ति की थी। कौटिल्य के अर्थ"ाास्त्र से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त ने गुप्तचर विभाग भी बना रखा था। चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन काल (223–298 ई. पूर्व)।
- चीनी ग्रन्थ फा–पुएन चु–लिन में बिन्दुसार को बिन्दुपाल कहा है। यूनानियों ने बिन्दुसार को अमित्रकेटस या अमित्रघात कहा है। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय को मानता था।
- अर्थ"ाास्त्र में शी"ार्स्थअधिकारी के रूप तीर्थ का उल्लेख मिलता है, इन्हे महामात्र भी कहा जाता था, जिनकी संख्या 18 होती थी। पुरोहित, महामंत्री एवं सेनापति को लगभग 48000 पण वार्षिक वेतन के रूप में मिलता था।
- बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली एक मंत्रिपरिषद थी जिसका प्रधान खल्लाटक था। राधागुप्त, बिन्दुसार का महामंत्री था। बिन्दुसार का शासन काल 298 ई.पू. से 273 ई.पू. तक था। सीरिया के शासक एंटीयोकस प्रथम ने डाईमेकस नामक व्यक्ति को बिन्दुसार के राजदरबार में राजदूत के रूप में भेजा था।
- बिन्दुसार ने मैत्रीपूर्ण पत्र–व्यवहार में सीरिया के शासक एंटियोकस से तीन वस्तुओं (1) मीठी मदिरा (2) सूखी अंजीर (3) एक दा"ार्निक की मांग की थी। दार्शनिक को छोड़कर अन्य दो वस्तुओं एंडियोकस ने भेजी। बिन्दुसार की मृत्यु 273 ई. पू. के लगभग हुई थी।
- मौर्य शासन में सबसे बडी प्र"ाासनिक इकाई – प्रांत होती थी। जिले का प्र"ाासन 'स्थानिक' के हाथों में रहता था। स्थानिक के अधीन गोप होते थे, जिनके अधिकार क्षेत्र गांव होते थे 100 गांवों को मिलाकर संग्रहण बनता था ओर क्षेत्र गांव होते थे। प्र"ाासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' थी गांव के मुखिया को 'ग्रामिक' कहा जाता था। मेगस्नीज के अनुसार नगर का प्र"ाासन तीस सदस्यों का एक मण्डल होता था, एक मण्डल छः समितियों में बांटा गया ओर प्रत्येक समिति में पांच सदस्य होते थे।
- इण्डिका में मौर्य काल के प्र"ाासन, समाज और अर्थ व्यवस्था पर प्रका"ा डाला गया है। पाटलिपुत्र, कौ"ाम्बी, उज्जयिनी और तक्ष"ाीला मुख्य नगर थे। कौटिल्य के अर्थ"ाास्त्र मं विस्तारपूर्वक नौकर"ाही का उल्लेख किया गया है।

- अ”ाोक मौर्य शासकों में सबसे महान था वह अपने 99 भाईयों की हत्या करके 273 ई. पूर्व सिहांसन पर बैठा था। अ”ाोक के इतिहास की जानकारी उसके अभिलेखों से मिलती है।
- अब तक अ”ाोक से संबन्धित 40 अभिलेख प्राप्त हुए है। इन अभिलेखों में तीन लिपियों की जानकारी मिलती है – ब्राह्मी, खरोष्ठी ग्रीक एवं आर्मेइक।
- अ”ाोक की पत्नी विदि”ाा के श्रेष्ठी की पुत्री थी। सिंहली अनुश्रुति के अनुसार यह अ”ाोक की पहली पत्नी थी। इसी से महेन्द्र और संघमित्रा का जन्म हुआ।
- अ”ाोक के धम्म की परिभाषा 'राहुलोबादसुत्त' से ली गई एव भात्रू (वैराट) लघु f”ालालेख' में श्री अ”ाोक के धम्म का उल्लेख मिलता है। इस अभिलेख में त्रिसंघ या त्रिरत्न है – बुद्ध, धम्म एवं संघ। अ”ाोक ने अपने राज्याभिषेक के 13 वें वर्ष धर्म की स्थापना की ओर धम्म की देख–रेख के लिए धर्म–महामात्र की नियुक्ति की।
- अ”ाोक f”ालाओं पर संदे”ा खुदवाने वाला पहला भारतीय शासक था। बौद्धग्रन्थ दिव्यावदान में अ”ाोक की एक अन्य पत्नी ति”याक्षिता का उल्लेख हे। अ”ाोक के अभिलेखों को तीन वर्गो में बांटा गया है (1) f”ालालेख (2) स्तम्भलेख (3) गुहालेख। f”ालालेख –इनकी संख्या 14 है। 1750 ई. में टीकेन्थैलर ने सबसे पहले अ”ाोक स्तम्भ का पता लगाया। लेकिन 1837 ई. में जेम्स त्रिसेप ने इन्हे पढ़ने में सफलता प्राप्त की, f”ालालेख पहाडों को काटकर f”ालाखण्ड़ो को समतल कर उस पर उत्कीर्ण किया जाता था।
- कौ”ााम्बी तथा प्रयाग के स्तम्भों में अ”ाोक की रानी का कारू बाकि द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख है। इसे रानी का अभिलेख कहा जाता है।

v”kkd d e[; f”kykys[k %&

-l-	f”kykys[k dk uke	[kkst का वर्श	fyfi	ftyk	lkn”k
	मानसेहरा	1889	खरोष्ठी	मनसेहरा	पाक–अफगान सीमा
	जोगगढ़	1850	ब्राह्मी	गंजाम	ओड़ि”ाा
	शहबाजगढी	1836	खरोष्ठी	मदर्नि	अफगानिस्तान
	छौली	1837	ब्राह्मी	पुरी	ओडि”ाा

	गिरनार	1822	ब्राह्मी	जूनागढ़	गुजरात
	सौपरा	1882	ब्राह्मी	ठाठो	महाराष्ट्र
	एर्रगुडी	1916 के लगभग	ब्राह्मी	कर्नूल	आन्ध्र प्रदे”ा
	कालसी	1837	ब्राह्मी	देहरादून	उत्तराखण्ड

v”kkd d: y?k f”kyky:[k **(Minor Rock Edict Of Ashok)**

Øe l:[;k	f”kyky:[k dk uke	LFkku
1	रूपनाथ	मध्य प्रदे”ा के जबलपुर जिले में स्थित
2	गोविमठ	मैसूर के कोपबल नामक स्थान के समीप स्थित
3	पलकिगुण्डु	गोविमठ से चार मील की दूरी पर स्थित
4	भाब्रू	बैराट (राजस्थान के जयपुर में स्थित)
5	मास्की	हैदराबाद के रायचूर जिले में स्थित
6	ब्रह्मगिरि	मैसूर के चितलुदुर्ग में स्थित
7	सिद्धपुर	ब्रह्मगिरि के एक मील प”चिम में स्थित

8	जिंग रामे”वर	ब्रह्मगिरि के तीन मील उत्तर–पि”चम में स्थित
9	एर्रगुडि	आन्ध्र के कुर्नूल जिले में स्थित
10	अहरौ”ा	उत्तर प्रदे”ा के मिर्जापुर जिले में स्थित
11	सासाराम	बिहार
12	राजुलमंड गिरि	आन्ध्र के कुर्नूल जिले में स्थित
13	गुर्जरा	मध्य प्रदे”ा के दतिया जिले में स्थित

v”kkd d LrHky[k **(Pillar Edicts of Ashok)** :- LrHk y[kk dh l[;k 7 g tk 6 vyx&vyx LFkkuk l fey gA tk bl idkj g&

e l-	LrEHk y[k dk uke	LFkku
	दिल्ली मेरठ	यह भी पहले मेरठ में था जो बाद में फिरोजतुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया।
	लौरिया अरराज	बिहार के चंपारन जिले में स्थित
	प्रयाग	यह पहले कौ”ाम्बी में था, जो बाद मे अकबर द्वारा इलाहाबाद के किले में रखा गया।
	रामपुखा	चम्पारन (बिहार)
	लौरिया नन्दगढ़	चम्पारन (बिहार)
	दिल्ली टोपरा	सहारनपुर (खिजाबाद) जिले में, उत्तर प्रदे”ा तुगलक शासक फिरोज”ॉह द्वारा दिल्ली। इस पर अ”ोक सातो अभिलेख उत्कीर्ण है

		जबकि शेष स्तम्भों पर केवल छः लेख है।

दिव्यावदान में अ”ोक की माता का नाम सुभद्रांगी बताया गया है। अभिलेखों में अ”ोक की ‘देवानापिय’ तथा ‘पियदस्सी’ कहा गया है। लघु ि”ाला में अ”ोक ने अपने को बुद्ध शाक्य कहा है। कन्धार ि”ालालेख की भाषा यूनानी एवं अरमाइकण अ”ोक के लगभग सभी अभिलेखों की भाषा प्राकृत है।

- राज्याभिषेक के 20 वें वर्ष अ”ोक लुम्बनी गया ओर वहां उसने पत्थर की एक मजबूत दीवार का निर्माण करवाया। ग्यारहवें ि”ालालेख में अ”ोक धर्मदान को साधारण दान में उत्तम बताया है। अ”ोक के शासनकाल मे पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षत ‘मोगालिपुत्तितिरस’ ने की। कल्हण के अनुसार अ”ोक क”मीर का प्रथम मौर्य”ाासक था।
- पुराणों के अनुसार अ”ोक ने 37 वर्ष तक कु”ालतापूर्वक शासन किया और उसकी मृत्यु 236 ई. पू. हुई।
- मौर्यवं”ा का अंतिम सम्राट वृहद्रथ था उसे उसी के सेनापति पु”यमित्र ने 184 ई.पू. में हत्या कर मौर्यवं”ा का ना”ा कर दिया और शुंगवं”ा की स्थापना की।
- शुंग वं”ा (187–75) का संस्थापक पु”यमित्र शुंग था जिसने विद्रोह करके मौर्यवं”ा के अन्तिम सम्राट वृहद्रथ की हत्या कर शुंग वं”ा की नींव डाली।
- पार्थिभाईयों के प”चात कुषाणों का शासन स्थापित हुआ जो यूची कहलाते थे। यूची एक कबीला था जो पांच कुलो में बंटा था उनमे ही एक कुषाण थे। कुषाणों का शासन अमुदरिया से गंगा तक, मध्य एि”ाया के खुरासान से उत्तर प्रदे”ा के वाराणसी तक फैला था। कुषाणों ने पूर्व सोवियत गणराज्य में सम्मिलित मध्य एि”ाया का वृहद् भाग ईरान का हिस्सा अफगानिस्तान और लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत भूभागों को अपने अधीन कर लिया था।
- भारत में सर्वप्रथम कुजुल कडफिसेंस (15–65 ई.) नामक कुषाण शासक ने पि”चमोत्तर प्रदे”ा पर आक्रमण कर उसे अपने अधिकार में कर लिया उसने तांबे के सिक्के चलवाए।
- कुजुल कडफिसेस (65–78 ई.) की मृत्यु के बाद विमकडफिसेस सिंहासन पर बैठा। चीनी ग्रंथ हाऊ–”ाू के अनुसार उसने लिएन–चु को जीता तथा वहां पर शासन के लिए एक सेनापति को नियुक्त किया।
- कनिष्क (78–105 ई.) ने अपनी राजधानी पुरूषपुर में 400 फीट ऊंचा 13 मंजिलों का मीनार बनवाया उसके ऊपर एक लौह छत्र रखवाया तथा समीप में संघाराम निर्मित करवाया।
- कनिष्क ने पा”र्व के पराम”ा पर बौद्धो की चतुर्थ संगीति का क”मीर के कुण्डलवन बिहार में आयोजन करवाया। जिसकी वसुमित्र ने अध्यक्षता तथा अ”वघोष ने उपाध्यक्षता की। इसी संगीति में अ”वघोष ने बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय को अंतिम रूप दिया।
- कनिष्क कला तथा संस्कृति साहित्य का महान संरक्षक था।
- कुषाण शासकों ने महाराजाधिराज की गौरवपूर्ण उपाधि धारण की। शको ओर कुषाणों ने इस भावना को बढ़ावा दिया तथा राजा को देवता का अवतार माना गया।
- कुषाण शासक देवपुत्र कहलाते थे और उन्होने राज शासन में क्षत्रप प्रणाली चलाई, कुषाण शासकों ने कला की शैलियों का विकास किया। मथुरा कला के प्रथम संरक्षक कुषाण थे बल्कि गांधार कला के सरंक्षक शक एवं कुषाण दोनों थे। गांधार कला यथार्थवादी थी परन्तु मथुरा कला आद”ावादी थी।

- दक्कन और मध्य भाग में मोर्यो के उत्तराधिकरी सातवाहन हुए। पुराणों में सातवाहनों को आन्ध्र कहा गया है। सातवाहनों के सबसे पुराने अभिलेख ईसा पूर्व पहली सदी के है। सातवाहन का प्रथम शासक सिमुक था। सातवाहन शासक ब्राह्मण थे और उन्होनें ब्राह्मणवाद के विजयाभियान का नेतृत्व किया। वे कृष्ण, वासुदेव आदि के भगत थे।
- सातवाहनों का सबसे मुख्य शासक शातकर्णी था। पुराण एवं स्मृति मौर्योत्तर काल के सम्बन्ध में जानकारी के महत्वपूर्ण रत्रोत है। मौर्योत्तर काल का समय 200 ई. पू से 300 ई. माना गया है। सातवाहन वं”ा के शासकों को दक्षिणाधिपति कहा जाता है।
- कुषाण शासक हविष्क ने क”मीर में हुविष्क पूर्व नामक नगर बसाया। कुषाण शासक वासुदेव प्रथम की कुछ मुद्राओं पर ि”ाव, नंदी व अरदोक्षो की आकृति मिलती हैं कुषाणकाल तक सोने की मुद्राएं प्रचलित थी। कुषाणकाल में ही संस्कृत के प्रथम प्रसिद्ध विद्वान अ”वघोष, पा”र्व और नागार्जुन पाए गए है। कुषाण शासक कुजुल कडफिसस प्रथम के इतिहास का प्रमुख स्त्रोत मुद्रा है। सातवाहन शासक यज्ञश्री शातकर्णी (165–194 ई.) व्यापार और जलयात्रा का प्रेमी था। इसके सिक्के आन्ध्र प्रदे”ा, महारा”ट्र, मध्य प्रदे”ा ओर गुजरात में पाए गये है। इन सिक्को पर जहाज का चित्र है, जो जलयात्रा ओर समुन्द्री व्यापार के प्रति उसके प्रेम का परिचायक है। प्लिनी ने लिखा है कि पूर्वी दक्कन के आन्ध्र प्रदे”ा के लगभग सभी गांवो के अलावा दीवार से घिरे 30 नगर थे। अत्यधिक संख्या में मिले रोमन और सातवाहन सिक्कों से बढ़ते हुए व्यापार का संकेत मिलता है।

5-7 l:dr lpd **(Key words)**

शब्द (words)	vFk (Meaning)
• वस्तु विनिमय	वस्तु के बदले वस्तु का लेन–देन
• विधवा विवाह	विधवा हो जाने पर किसी के साथ विवाह
• नियोग विवाह	अपने देवर के साथ विवाह
• अपासिनवे	पापहीनता
• बहुकथाने	बहुकल्याण
• सच	सत्यवादिता
• शौच में	पवित्रता है
• मादवे	मृदुता है
• साधवे	साधुता है
• ि”ालालेख	पत्थर पर लिखे जाने वाले लेख
• गुहालेख	गुफाओं में लिखे जाने वाले लेख
• विघटन	पतन
• अमिट छाप	जो मिट ना सके

• तमसाच्छादित	अंधकार से ढ़का हुआ
• हर्जाना	नुकसान की भरपाई / क्षति–पूर्ति
• सुविख्यात	प्रसिद्ध
• पराक्रमी	शक्ति"ाली / प्रतापी
• अद्वितीय	बेजोड़ / जिसकी बराबरी का कोई दूसरा न हो

5-8 LoeY;kdu ijh{kk **(Self Assesment Test) (SAT)**

Part – A nh?kZ mÙkjh; iz"u **(Long Answer Type Question) (LAQS)**

iz"u & 1 ekS;Z dkyhu iz"kklu 0;oLFkk ij fuca/k fyf[k,A **(Write an essay on Administrative system mauryan) (J.U. Hisar DDE 2019)**

iz"u & 2 v"kksd ds /kEe ij ,d laf{kIr fuca/k fyf[k,A **(Write a brief essay on Ashok Dhamma (Bhagalpur Uni. 2010, 2012, 2014, 2016, 2018)**

iz"न – 3 एक भासक के रूप में अ"kksd dk ewY;kadu djsaA **(Make an estimate of ashok"s as a ruller.)**

iz"u & 4 ekS;Zdkyhu iz"kklu ds fofo/k vk;keksa dk fo"लेशण करें। **(Analyse the various limensions of the mauryan administration.) (Bhagalpur Univ. 2004, 2006, 2008, 2014, 2016)**

iz"u & 5 lkrokgu o"k dh 0;k[;k djsaA **(Explain the Satavahan)**

iz"u & 6 ekS;Z lkezkT; ds iru ds dkj.kksa dh 0;k[;k dhft,A **(Explain the reasons for the decline of Mauryan Empire)**

iz"न – 7 कुशाण वं"k ij ,d fuca/k fyf[k,A **(Write a brief essay on Kushans)**

Part –B vfr y?kq mÙkjh; iz"u **(Very Short Answer Type Questions)**

(1) केन्द्रीय भाासu **(Central administration)**

¼2½ pUnzxqIr ekS;Z **(Chandragupta Mauryan)**

¼3½ v"kksd **(Ashok)**

(4) कुशाण **(Kushans)**

(5) कुशाण वं"k dk laLFkkid dkSu Fkk **(Who Was Founder of Kushans)**

¼6½ v"kksd dk iq= dkSu Fkk **(who was son of ashoka)**

¼7½ v"kksd dk /kEe D;k Fkk **(What is Ashoka Dhamma)**

¼8½ ekS;Z lkezkT; dk laLFkkid dkSu Fkk **(who was the founder of Mauryan)**

Part –C cgqfodYih; iz"u **(Multiple choice Qustions) (MCQS):-**

(इनके उत्तर दाहिनी तरफ कोश्ठक में दिए गए है)

(1½ uan oa"**ा का अन्तिम भाासक कौन** Fkk **?**

(क) महापद्म नंद (ख) घनानंद उत्तर – (ख)

(ग) "ि"ाुनाग (घ) उदयन

¼2½ ex/k dh jkt/kkuh ikVfyiq= fuEu esa ls fdl unh lzxe ij fLFkr Fkh **?**

(क) गंगा (ख) गंडक उत्तर – (घ)

(ग) सोन (घ) उपरोक्त सभी

(3) मगध साम्राज्य के भाक्ति"kkyh gksus dk D;k dkj.k Fkk **?**

(क) लोहे के वि"ााल भण्डार (ख) भौगोलिक स्थिति उत्तर – (घ)

(ग) वि"ााल शक्ति"ााली सेना (घ) उपरोक्त सभी

¼4½ fuEufyf[kr esa ls fdls ekS;Z ;qx dk L=ksr ekuk tkrk gS **?**

(क) मुद्राराक्षस (ख) अर्थ"ाास्त्र उत्तर –

(घ)

(ग) इंडिका (घ) उपरोक्त सभी

¼5½ esxLFkuht dkSu Fkk **?**

(क) एक ईरानी राजदूत (ख) एक यूनानी राजदूत उत्तर –

(ख)

(ग) एक चीनी यात्री (घ) एक धर्म प्रचारक

(6) मेगस्थनीज किस भाासक के दरबार में एक यूनानी राजदूत के तौर पर रहा था ?

(क) चन्द्रगुप्त मौर्य (ख) अ”ाोक उत्तर – (क)

(ग) समुन्द्रगुप्त (घ) हर्षवर्धन

(7)किस यूनानी भाासक ने मेगस्थनीज को एक राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य के njckj esa Hkstk Fkk?

(क) सैल्यूकस निकेटर (ख) सिंकदर उत्तर – (क)

(ग) मेनाण्डर (घ) एंटीआल्कीडस

¼8½ bafMdk dk ys[kd dkSu Fkk **?**

(क) फाह्यान (ख) हयूनसांग उत्तर – (ग)

(ग) मेगस्थनीज (घ) कालिदास

¼9½ esxLFkuht ds lEcU/k esa fuEufyf[kr esa ls rF; xyr gS **?**

(क) वह एक यूनानी राजदूत था जो समुन्द्रगुप्त के दरबार में रहा। उत्तर – (क)

(ख) उसने इंडिका नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की।

(ग) यह पुस्तक मूल रूप से उपलब्ध नही है।

(घ) इसमे मेगस्थनीज ने आंखों देखी बातों का वर्णन किया है ?

¼10½ eqnzkjk{kl dk ys[kd dkSu Fkk **?**

(क) वि”ाखदत्त (ख) देवदत्त उत्तर – (क)

(ग) अतुल (घ) भवभूति

5-9 izxfr leh{kk gsrq iz”ukÙkj **(Check your Progress):-**

Part (A) fjDr LFkkuksa ds mÙkj

(1) 345 ई. पूर्व. (2) चन्द्रगिरी (3) चाणक्य (4) 294 ई.पू. (5) इंडिका (6) संघमित्र और चारूमति (7) सैल्यूकस (8) उज्जैन (9) आन्ध्र (10) 78

Part (B) lR;@vlR; dFku ds mÙkj :-

(1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) सत्य(10) असत्य

Part (C) mfpr feyku dh mÙkj

(1) x (2) d (3) [k (4) p (5) ?k (6) M (7) t (8) N

5-10 lgk;d lnHkZ xzUFk ,oa v/;;u lkexzh **(Refeneces/Suggested Readings)**

- **Manjeet Singh sodhi : Themes in Indian Hostory, Modern's publishers, Railway Road, Jalandhar first Edition : 2009**
- Mk- fou; dqekj flag : सामान्य अध्ययन, यूनिक प्रका"ान, इलाहबाद (उत्तर प्रदे"ा)
- स्पेक्ट्रम पब्लिके"ान : सामान्य अध्ययन, अहीर नगर, (दिल्ली)
- Ekgs"k dqekj o.kZoky : संक्षिप्त इतिहास एन.सी.ई.आर.टी. सार, कॉसमास, पब्लिके"ान, मुखर्जीनगर, दिल्ली,

जनवरी, 2019

- Mh-,u->k- : प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदे"ालय दिल्ली वि"वविद्यालय, पुनर्मुदण : अक्टूबर, 2016
- jke**"रण भार्मा** : भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस द्वारा भारत में प्रका"ात – 2/11 भूतल, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, चौथा हिन्दी संस्करण, 2019
- **द्विजेन्द्रनारायण झा एवं कृश्ण मोहन श्रीमाली** : प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदे"ालय दिल्ली वि"वविद्यालय, 43वां पुनर्मुद्रण : नवम्बर, 2018

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : HIST- 101	**AUTHOR & UPTATED:** **MR. MOHAN SINGH BALODA**
LESSON NO. 06	
xqIr lkezkT; **(Gupta Empire)**	

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

6-1- vf/kxe mís"; **(Learning Objectives)**

6-2- ifjp; **(Introduction)**

6-3- vk/;k; ds eq[; fcUnq **(Main Body of Text)**

- 6.3.1. गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत (History Source of the Guptas)
- 6.3.2. गुप्तकालीन राज्य (Guptas State: Establishment and Expansion)
- 6.3.3. गुप्तकालीन प्र”ाासन (Administration of the Guptas)

6-4- vk/;k; dk vkxs dk eq[; Hkkx **(Further Main Body of the Text)**

6-4-1 xqIrdkyhu lekt **(Society of the Guptas)**

6-4-2- xqIrdkyhu vkfFkZd fLFkfr **(Economic condition of the Guptas)**

6-4-3- xqIrdkyhu dyk ,oa LFkkiR; ¼okLrqdyk½ **(Art and Architecture of the Guptas)**

6-4-4- xqIr lkezkT; dk iru **(Decline of the Guptas empire)**

6-5- izxfr leh{kk **(Check your progress)**

6-6- lkjka”k **(Summary)**

6-7- lwdr&lwpd **(Key-Words)**

6-8- Lo&eWY;kadu ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

6-9- izxfr leh{kk gsrq iz”ukÙkj **(Answers to check your Progress)**

6-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d v/;;u lkexzh **(References/Suggested Reading)**

6-1- vf/kxe mís”; **(Learning Objectives)**

bl v/;k; ds v/;;u ds i”pkr~ vki fuEu ;ksX; gks tk,xs &

- गुप्त साम्राज्य की वं”ाावली को आप जान जाएगें।
- गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्त्रोतों पर आप अपने साथी पाठकों के साथ परिचर्चा कर सकेगें।
- गुप्तकालीन राज्य व प्र”ाासन प्रणाली की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- गुप्तकालीन आर्थिक व समाजिक स्थिति से अवगत कराना।
- गुप्तकालीन नगर केन्द्रों के विकास की जानकारी देना।

- गुप्तकालीन कला व स्थापत्य प्राचीन भारत के इतिहास में वि"ाष्ट स्थान रखते है से पाठक को अवगत कराना। और एक स्वतंत्र शासक के रूप में गुप्त संवत् (319–20 ई.) चलाया।
- गुप्तकालीन साहित्य, ज्ञान–विज्ञान व कला–संस्कृति के उच्च विकास के कारण इसे प्राचीन भारत का स्वर्ण युग क्लासिक युग/पैराक्लीन युग की संज्ञा से संबोधन के कारणों की समीक्षा कर सकेंगे।
- गुप्तकाल के पतन के कारणों पर प्रका"ा डाल सकेंगे।

6-2 ifjp; **(Introduction) :-** प्राचीन भारत के इतिहास में मोंर्यो के बाद कुषाण साम्राज्य के अव"ोष पर तीसरी सदी के अन्त मे जिस वि"ााल नवीन साम्राज्य का उद्य हुआ वह गुप्त साम्राज्य था। गुप्तों के उत्थान से प्राचीन कालीन इतिहास में एक नवीन युग का आरंभ हुआ। गुप्त वं"ा के प्रारंभिक दो शासकों –संस्थापक श्रीगुप्त व इनके पुत्र घटोत्कच ने महाराज की उपाधि धारण की जो उस समय सांमत शासकों की होती थी। इससे पता चलता है कि गुप्त कुषाणों के सांमत थे । कुषाणकालीन साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, कला–संस्कृति द"ान व व्यापार–वाणिज्य के विस्तार पर आधारित आर्थिक नीति व मजबूत प्र"ाासनिक नीति को गुप्त वं"ा के शासकों ने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया। गुप्तकाल में भारतीय राजनीति और संस्कृति चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी। इसीलिए भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को स्वर्ण युग या क्लासिकल युग कहा जाता है। गुप्त वं"ा के प्रसिद्ध शासकों ने अपने विस्तारवादी व सुदृढ़ प्र"ाासनिक नीतियों के द्वारा इसे भारत के चारों कोनों तक फैला दिया। चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वं"ा के प्रथम शासक थे जिन्होनें महाराजधिराज की उपाधि धारण की। प्रसिद्ध विस्तारवादी गुप्त शासक समुन्द्रगुप्त के समय इस साम्राज्य का विस्तार – उत्तर भारत में गंगा–जमुना, दो–आव व दक्षिण भारत में कावेरी नदी क्षेत्र तक तथा पूर्व में नेपाल, असम, बंगाल व प"िचम में वल्लभी (गुजरात) तक विस्तृत हो गया। समुन्द्रगुप्त के बाद सांस्कृतिक विकास के लिए प्रसिद्ध गुप्तवं"ाीय शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने सुदृढ़ नीतियों के द्वारा शकों पर विजय प्राप्त करके इस साम्राज्य को अत्यंत मजबूत आधार प्रदान किया। भारत के प्राचीन इतिहास में विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाले चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य, संस्कृति, कला, द"ान, खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा विज्ञान आदि को "िाखर पर पहुंचाने वाले ज्ञानी, विज्ञानी, विद्वतजनों को आश्रय देने वालों के रूप में अग्रगण्य रहे है। विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने शासनकाल में उत्पन्न कई चुनौतियों का साहसपूर्ण तरीके से सामना करते हुए गुप्त साम्राज्य को जो मजबूत आधार प्रदान किया इसका पूरा फायदा उठाते हुए कुमारगुप्त ने वि"वविख्यात नालन्दा वि"वविद्यालय की स्थापना की। जिसमें दे"ा–विदे"ा से जिज्ञासु पाठक "िाक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। जिसका विवरण हमें चीनी यात्री फाहियान के वर्णन से मिलता है। यह वि"वविद्यालय इतना प्रसिद्ध था कि गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भी 1193 ई. में बख्तियार खिलजी द्वारा नष्ट किये जाने तक अपने अस्तित्व को बनाये रखा। गुप्तवं"ा का अंतिम प्रतापी शासक स्कंदगुप्त ने विदे"ाी शासक हुणों के आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया और इन्हे परास्त किया। स्कंदगुप्त ने नालंदा वि"वविद्यालय को पर्याप्त संरक्षण प्रदान करके गुप्त वं"ा की द"ान, ज्ञान–विज्ञान, साहित्य रचना व अन्य सांस्कृतिक विकास की परंपरा को बनाये रखा।

स्कन्दगुप्त ने चीन के साथ मित्रतापूर्ण सम्पर्क बनाए रखा तथा व्यापार व वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए 466 ई. में एक राजदूत को चीन के सांग सम्राट के दरबार में भेजा। स्कंदगुप्त के बाद के शासक कमजोर हुए जिन्हे प्राचीन भारत के इतिहास में परवर्ती गुप्त शासक के रूप में जानते है। परवर्ती गुप्त शासकों के कमजोर होते हुए भी पूर्ववर्तो गुप्त शासकों की मजबूती के कारण यह साम्राज्य समाप्त होते–होते भी 550 ई. तक अपने अस्तित्व को बनाये रखा। मौर्य काल में आज के बिहार राज्य में जो नगर उत्थान का केन्द्र बिन्दु था जिसमें पाटलिपुत्र (आधुनिक

पटना) प्रसिद्ध था गुप्त साम्राज्य में नगर का यह केन्द्र अपना प्रभाव खोने लगा और गुप्तकाल के अन्तिम दिनों में तो पाटलिपुत्र नगर का अंत ही हो गया। गुप्त अभिलेखों से पता चलता है कि इस वं”ा के शासकों ने नगर केन्द्र के रूप में आज के उत्तर प्रदे”ा में कौ”ाम्बी, प्रयाग, साकेत (आधुनिक अयोध्या), कन्नौज तथा आज के मध्य प्रदे”ा में स्थित विदि”ाा व उज्जैन को अत्यधिक विकसित किया । ये नगर केन्द्र कला, संस्कृति व व्यापार–वाणिज्य के दृष्टिकोण से गुप्त काल में ि”ाखर पर थे।

गुप्तकालीन प्र”ाासन–पद्धति के अर्न्तगत प्र”ाासनिक इकाइयों का विभाजन, अधिकारियों के विभागीय दायित्व व राजकाज चलाने के लिए राजस्व संग्रह की प्रणाली की एक सुनि”िचत व्यवस्था थी। गुप्तकाल में मुद्राप्रणाली के अन्तर्गत चांदी व सोने के सिक्के प्रसिद्ध थे। प्राचीन भारत में स्वर्णमुद्रा की बहुतायत के लिए गुप्तकाल प्रसिद्ध था। नगर में अलग–अलग व्यवसाय को चलाने वाले व्यवसायियों, ि”ाल्पियों व कामगारों के सुसंगठित श्रेणियां थी। गुप्तकालीन व्यापार व कृषिमूलक अर्थव्यवस्था की जानकारी हमें चीनी बौद्ध यात्री फाहियान के विवरण से मिलता है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर आधारित गुप्तकालीन समाज वर्ण, जातियों व उपजातियों मे बंटा था। फाहियान के विवरण से पता चलता है कि गुप्त काल में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बनी रही। जिससे समाज में धार्मिक स्तर पर भागवत् संप्रदाय का उद्‌भव और विकास ि”ाखर पर था। बौद्ध धर्म का जो उत्कर्ष अ”ाोक और कनिष्क के समय में था गुप्तकाल में राज्य का संरक्षण नही मिलने के कारण वह समाप्त हो गया।

ब्राह्मण धर्म की उत्कृष्टता के कारण इस काल में पुराणों स्मृतियों व ‘ाड्‌द”ान के संकलन का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। ये संकलन आज भी महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। इस काल में विष्णु और ि”ाव आराध्य देव के रूप में समाज में अधिक प्रसिद्ध हुए। मन्दिर निर्माण की कला का आरंभ गुप्त काल में हुआ।

कला की इन उत्कृष्टताओं के बावजूद गुप्तकालीन ऐतिहासिक साक्ष्य से पता चलता है कि एक और जहां शुद्रो को, स्त्रियों को रामायण, महाभारत, पुराण व द”ान के पठन–पठान का अधिकार था वही दूसरी और पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, नियोगप्रथा, चाण्डाल को अस्पृ”य मानने की प्रथा आदि स्त्रियों व शूद्रों के दयनीय स्थिति का सूचक था।

6-3- vk/;k; dk eq[; fcUnq **(Main body of Text)**

6-3-1- xqIrdkyhu ,frgkfld L=ksr **(Historical sources of the Guptas) :-**

प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिए इसके समुचित अध्ययन के लिए शुद्ध ऐतिहासिक साहित्यिक सामग्री अन्य दे”ाों की तुलना में हमारे यहां कम उपलब्ध हैं। ऐसे में अतीत का सही चित्रण प्रस्तुत करने के लिए इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध पुरातत्विक सामग्री को वि”ोष महत्व देते हैं। गुप्त काल के संदर्भ में भी इसका अत्यधिक महत्व है। यद्‌पि गुप्त काल के अध्ययन के लिए पर्याप्त साहित्यिक साधन व विदे”ाी यात्रियों के वृतांत भी उपलब्ध हैं फिर भी रचनाकारों में दृष्टिकोण की भिन्नता व भारतीय ग्रन्थों का रचना–काल ठीक से ज्ञात नहीं होने के कारण यह सही चित्र प्रस्तुत करने में बाधक हो जाता है। पुरातत्विक सामग्री का वैज्ञानिक महत्व है। प्राचीन भारत के इतिहास को जानने में अधिक योगदान है अतः गुप्तकालीन ऐतिहासिक रत्रोत के अध्ययन से पूर्व पाठक के लिए यह जानना आव”यक है कि पुरातत्विक रत्रोत के अन्तर्गत किन–किन साधनों को शामिल किया जाता है।

¼d½ iqjkrkfRod L=ksr **(Archaeological Sources)**& इन्हें हम निम्न

रेखाचित्र के माध्यम से सुविधाजनक तरीके से समझ सकते है :–

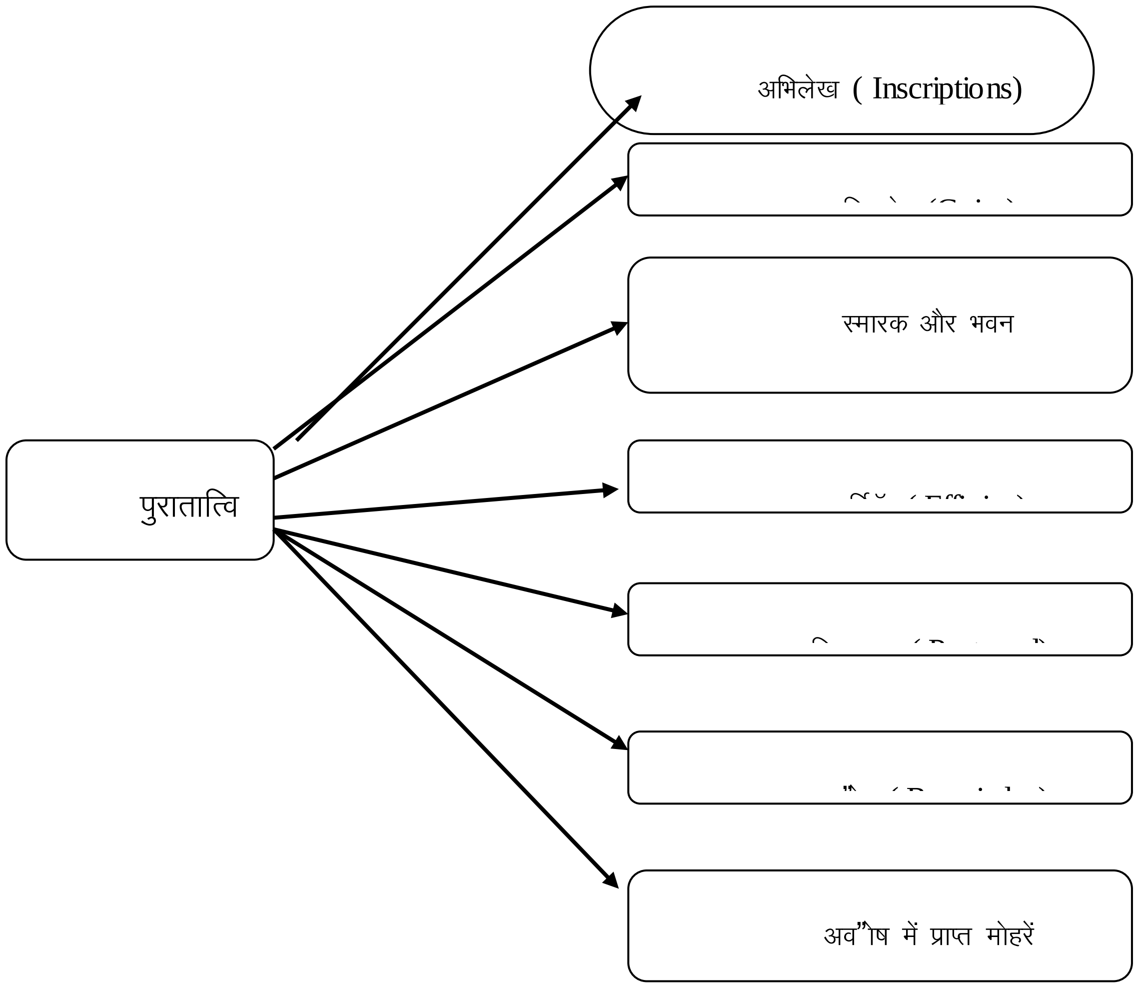

budk lf{kIr fooj.k fuEu i dkj l g &

¼1½ vfHkys[k **(Record) :-** गुप्तकालीन इतिहास को जानने के लिए अनेक रत्रोत उपलब्ध है। इनमें पुरातात्विक रत्रोत के रूप में अभिलेख एक अति महत्वपूर्ण त्रोत है। हमें गुप्त काल के अलग–अलग शासकों के अभिलेख अत्यधिक संख्या में प्राप्त हुए है। ये अभिलेख ाि"ालाओं, स्तंभों एवं ताम्रपत्रों पर खुदे मिलते है। गुप्तकालीन इन अभिलेखों की भाषा संस्कृत है। इन अभिलेखों से हमें गुप्ताकालीन अतीत के विभिन्न प्र"नों–राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि की बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ समुन्द्रगुप्त का इलाहबाद स्तंभ अभिलेख जिसे प्रयाग प्र"ास्ति के नाम से भी जाना जाता है से हमें समुन्द्रगुप्त को भरी सभा में चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा राज्य प्रदान करने तथा समुद्रगुप्त की राज्य विस्तार व राज्य को मजबूत करने की नीति का पता चलता है। इसे समुन्द्रगुप्त के राजकवि हरिषेण द्वारा लिखा गया था। यह अभिलेख समुद्रगुप्त के पिता व गुप्त साम्राज्य को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापना करने वाले चन्द्रगुप्त प्रथम के ऊपर भी प्रका"ा डालता है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319–20 ई. में गुप्त संवत् चलाया इसका सर्वप्रथम प्रयोग चन्द्रगुप्त द्वितीय के मथुरा अभिलेख में हुआ है। यह चन्द्रगुप्त द्वितीय का पहला अभिलेख है। उद्यगिरी गुहा लेख चन्द्रगुप्त द्वितीय के संधिविग्रहक कवि वीरसेन शैव का है। इस

अभिलेख से चन्द्रगुप्त द्वितीय के दिग्विजय करने का पता चलता है। गुप्त वं"ा के इस शासक का सबसे महत्वपूर्ण अभिलेख है – मेहरोली लौह स्तम्भ लेख (दिल्ली में)। यह अभिलेख आज भी मौजूद है। इससे चन्द्रगुप्त के विजित क्षेत्र व उत्कृष्ट तकनीकी विकास का पता चलता है। कदम्ब वं"ा– तालगुन्ड अभिलेख से यह पता चलता है कि किस प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय वैवाहिक संबन्धों द्वारा अपने राज्य को मजबूत आधार प्रदान किया।

कुमारगुप्त के बिलसद, गढ़वा (उत्तर प्रदे"ा), मन्दसौर (मालवा मध्य प्रदे"ा) अभिलेखों से इसके काल के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है। स्कंदगुप्त के जूनागढ़ (सौराष्ट गुजरात) एवं भीतरी स्तम्भलेख (गाजीपुर उत्तर प्रदे"ा) से हमें स्कंदगुप्त द्वारा हूणों की पराजय संबन्धी पता चलता है। गुप्तकाल के अनेक भूमिदान अभिलेख गुप्त शासकों की दानशीलता को द"ााते हैं। भानुगुप्त का एरण अभिलेख (510 ई.) प्रसिद्ध हैं । इसमें हुण आक्रमण का उल्लेख है जिनसे लड़ते हुए भानुगुप्त का सेनापति गोपराज मर गया था। गोपराज की पत्नी सती हो गयी। यह सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है।

¼2½ flDd **(Coins) :-** गुप्तकाल के इतिहास के लिए सिक्कों का बड़ा महत्व है। कयोंकि गुप्त शासकों ने बड़ी मात्रा में सिक्कें जारी किए। इन सिक्कों मे सर्वाधिक मात्रा सोने के सिक्कों की है। इसके अलावा कुछ सिक्के चांदी व तांबे के भी जारी किए। इन सिक्कों में गुप्त शासकों के नाम उपाधियां, शासनकाल, चरित्र, सफलताएं, कलां, भाषा, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति की प्रामाणिक जानकारी मिलती है। उदाहरणार्थ चन्द्रगुप्त प्रथम के राजा–रानी नामक सिक्कों पर उसकी तथा रानी कुमार देवी की प्रतिमा खदी हुई है। इसी सिक्के के दूसरी तरफ लिच्छवय शब्द खुदा हुआ है। इससे चन्द्रगुप्त के लिच्छवियों के साथ वैवाहिक संबन्ध की जानकारी उपलब्ध होती है। समुन्द्रगुप्त संगीत प्रेमी थे। इस बात की जानकारी उनके द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर उत्कीर्ण वीणा के चित्रों से पता चलता है। इस प्रकार पता चलता है कि गुप्त वं"ा की आर्थक स्थिति सुदृढ़ थी।

¼3½ Lekjd **(Monuments) :-** गुप्तकाल के स्मारकों से तत्कालीन गुप्त वं"ा के कला के क्षेत्र में हुए विकास एवं गुप्तकालीन शासकों की धार्मिक नीति का ज्ञान प्राप्त होता है। ये स्मारक गुप्तकाल के विभिन्न पक्षों पर प्रका"ा डालने वाले है। गुप्तकाल में निर्मित मंदिरों में देवगढ़ का द"ाावतार मंदिर, भूमरा का f"ाव मंदिर, नचना का पार्वती मंदिर, भीतरगांव मंदिर, लिंगवा का विष्णु मंदिर आदि मंदिर उल्लेखनीय है। ये मंदिर अपनी उत्कृष्ट कला के लिए जाने जाते है। गुप्तकाल मे मथुरा एवं सारनाथ में बनी मूर्तिया गुप्त वं"ा के शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की प्रतीक है। अंजता एलोरा एवं बाघ की गुफाओं में बने चित्र तत्कालीन जन–जीवन की झांकी प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार से पुरातात्विक स्त्रोत की अहम भूमिका है।¼[k½ lkfgR;d j=kr **(Literary Sources) :-**

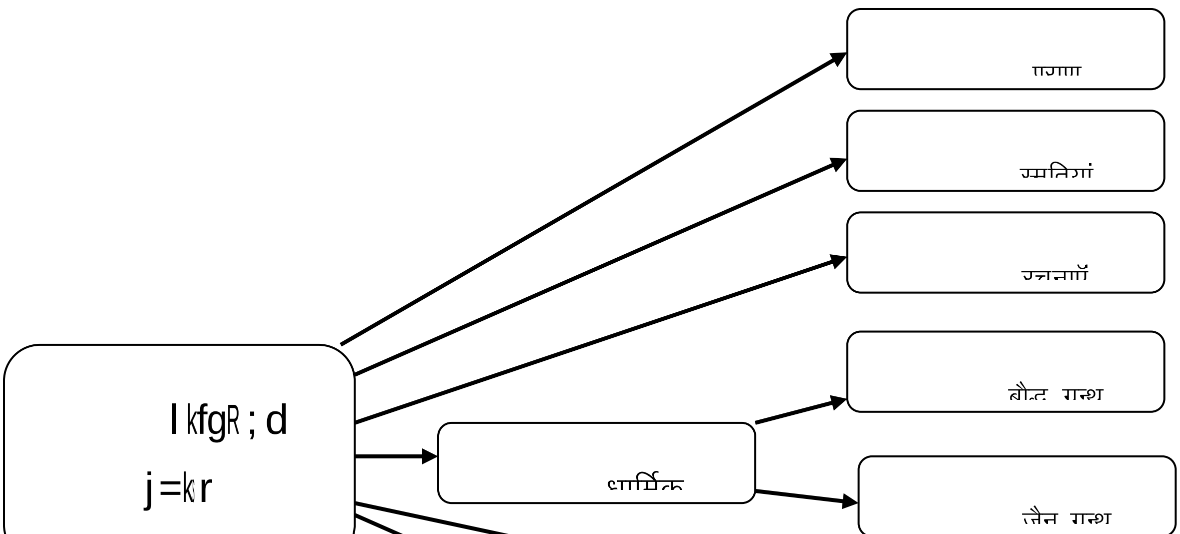

budh lkfgR; tkudkjh bl idkj g &

¼1½ iqjk.k **(Purans) :-** गुप्त वं"ा के इतिहास को जानने के लिए पुराणों का अध्ययन आव"यक है। पुराणों का अन्तिम रूप से संपादन गुप्त काल में ही हुआ था। भारत के दो प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण एवं महाभारत गुप्त काल में पूरे हो चुके थे। वायु पुराण, मत्स्यपुराण, ब्राह्मण, विष्णु, भागवत आदि पुराणों के ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व है इनमें गुप्तकाल की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

¼2½ Lefr;k **(Smritiyans) :-** गुप्तवं"ाीय शासकों के बारे में जानकारी स्मृतियों से भी मिलती है। गुप्तकाल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति आदि स्मृतियों की रचना की गई इनमें याज्ञवल्क्य स्मृति सबसे महत्वपूर्ण है। इन स्मृति ग्रन्थों ने आचार, व्यवहार, प्राय"िचत आदि का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसी काल में हीनयान शाखा के प्रसिद्ध विद्वान बुद्धघोष ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा। जैन आचार्य सिद्धसेन ने इसी काल में न्यायद"ान पर 'न्यायावताम' ग्रन्थ की रचना की।

¼3½ jpuk,a **(Compositions) :-** गुप्तकाल को साहित्यिक दृष्टि से भी सुदृढ़ बनाया गया काव्य रचनाओं के साथ नाटकों की भी रचना हुई। साहित्यिक दृष्टि से bl dky dk le) cukus e fuEu jpukdkjksa dk ljkguh; ;kxnku vfoLej.kh; jgk dkfynkl – मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्, रघुवं"ाम्, ऋतुसंहारम्, विक्रमोर्व"ाीयम् fo"kk[kknÙk–मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्, nf.Mu–द"ाकुमारचरित, काव्यद"ान, fl)lsu –न्यायावताम्, Hkkl – स्वप्नवासवदत्ता, चारूदत्ता, fo**शणु"**kek–पंचतंत्र, चरक–सरकसंहिता, **बुद्धघोश**– वि"ुद्धिमग्ग vlax–योगाचार, Hkkjfo–किरातार्जुनीयम, vejflag–अमरकोष, oRlHkêh–रावणवध, pUnxkfeu–चन्द्रव्याकरण, ojkgfefgj–वृहत संहिता, पंचसिद्धान्तिका। vk;HkV–आर्यभट्टीयम्। **भाुद्रक**–मृच्छकटिकम्

¼4½ /kkfed lkfgR; **(Religious Literature) :-** गुप्तकाल में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू धर्म के ग्रन्थों की रचना हुई। रामायण, महाभारत, बुद्धघोष, जैनग्रन्थ–तत्वसारिणीत्वार्थ आदि। पाणिनि और पंतजलि के ग्रन्थों के आधार पर संस्कृत व्याकरण की रचना।

¼5½ dFkk&lkfgR; **(Fiction)** :– गुप्तकाल में कथा साहित्य का विकास हुआ। विष्णु”ार्मा ने 'पंचतंत्र' एवं 'दितोपदे”ा' कथा साहित्य की रचना की थी।

¼6½ xf.kr ,oa foKku **(Mathematics & Science) :-** आर्यभट्ट गुप्त काल के प्रसिद्ध गणितज्ञ थे उन्होनें आर्य भट्टीय, ज्योतिष, आर्यभट्टीय में यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी गोल है जो अपनी धुरी के चारों और परिभ्रमण करती है इसी के कारण ग्रहण लगता है। विज्ञान के क्षेत्र में शून्य के सिद्धान्त एवं द”ामलव प्रणाली।

¼7½ fpfdRlk xzUFk **(Medical Texts):-** चिकित्सा का विकास भी गुप्तकाल में हुआ वाग्यभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांग हृदय' की रचना की थी। शल्य चिकित्सा शास्त्र के प्रवर्तक सुश्रत और नागार्जुन थे। गुप्त काल में अणु सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। नक्षत्र–विद्या, वनस्पति शास्त्र भौतिक भूगोल आदि।

इस प्रकार से गुप्तकाल के बारे में जानकारी उसके पुरातात्विक एवं साहित्यिक रत्रोत का अध्ययन करने से प्राप्त होती है।

6-3-2 xqIr dkyhu jkT;: LFkkiuk ,o foLrkj (**Guptas State: Establishment and Expansion):-**

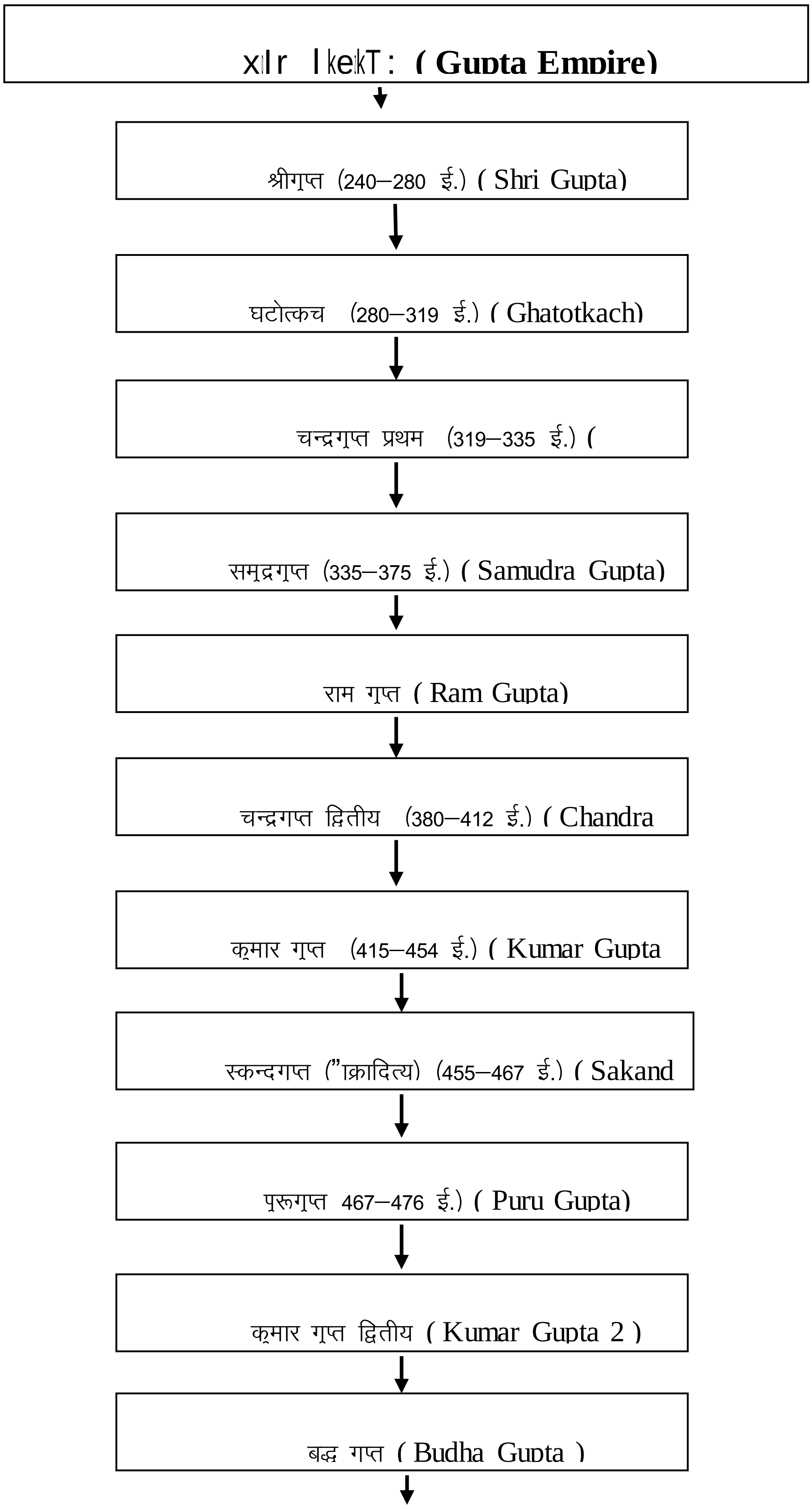

नरसिंह गुप्त (Narsingh Gupta)

↓

भानु गुप्त (Bhanu Gupta)

budk lf{kIr fooj.k bl izdkj ls g %&

¼1½ Jhxqlr **(Shri Gupta)** ¼240&280 b0½ & प्रभावती गुप्त के पुना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में श्री गुप्त को आदिराज के रूप में में अभिहित किया गया है। इस वं"ा का आरंभिक राज्य उत्तर प्रदे"ा और बिहार में था। गुप्त शासकों के लिए उत्तर प्रदे"ा बिहार की अपेक्षा अधिक महत्व वाला राज्य था। अतएवं गुप्त शासक यहीं से राज्य संचालन करते रहे और आगे बढ़ते गए इनका आधिपत्य प्रयाग, साकेत और मगध पर स्थापित रहा। श्रीगुप्त शासनकाल 240–280 ई तक रहा। श्रीगुप्त ने 'महाराज' की उपाधि धारण की श्रीगुप्त के द्वारा धारण की गई महाराज की उपाधि सामन्तों द्वारा धारण की जाती थी। इससे पता चलता है कि श्रीगुप्त किसी अन्य शासक के अधीन शासन करता था।

¼2½ ?kVksRdp **(Ghatotakach)** ¼280&319 b0½ & 280 ई के आस–पास श्री गुप्त ने घटोत्कच को अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसने भी महाराज की उपाधि धारण की। प्रभावती के पुना तथा रिद्धपुर स्थित ताम्रपत्र अभिलेखों में इसे गुप्त वं"ा का प्रथम शासक माना गया है। घटोत्कच का शासन मगध के आस–पास तक ही सीमित रहा। घटोत्कच ने 319 ई. तक शासन किया।

¼3½ pUnzxqlr izFke **(Chandra Gupta First)** ¼319&335 b0½ & घटोत्कच के उत्तराधिकरी के रूप में सिंहासन पर विराजमान चन्द्रगुप्त प्रथम एक प्रराक्रमी राजा था। चन्द्रगुप्त प्रथम ने तत्कालीन प्रसिद्ध लिच्छवि कुल की कन्या कुमार देवी से विवाह किया। इसने महाराजधिराज की उपाधि धारण की। चन्द्रगुप्त प्रथम ने एक संवत गुप्त संवत के नाम से चलाया। समुद्रगुप्त को सिंहासन सौंप कर चन्द्रगुप्त ने सन्यास ग्रहण कर लिया।

¼4½ leqnzxqlr **(Samudra Gupta)** ¼335&375 b0½ & चन्द्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (335–375) ने राज्य का अत्याधिक विस्तार किया समुद्रगुप्त के बारे में जानकारी स्वरचित प्रयाग प्र"ास्ति से मिलती है जिसे इलाहाबाद स्तम्भलेख भी कहते है। समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि हरिषेण ने राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार आदि के विषय में उपयोगी जानकारी मिलती है। महाराजधिराज की उपाधि धारण की और कला का विकास किया। वी.ए.स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है क्योकि समुद्रगुप्त ने कभी हार का मुंह नही देखा और वह एक अच्छा कु"ाल योद्धा, शासक था। समुद्रगुप्त अपने को लिच्छवी दौहित्र कह कर गर्व का अनुभव करता था। समुद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य को पांच भागो में बांट रखा था।

¼5½ jkexqIr **(Ram Gupta)** & समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र रामगुप्त मगध शासक बना। वह कमजोर शासक था इससे उसके छोटे भाई को ईर्ष्या थी उसने स्त्री के वे"ा में जाकर उसकी हत्या कर दी फिर रामगुप्त की पत्नी ध्रुवदेवी से विवाह कर मगध का सिंहासन अपना लिया।

¼6½ pUnzxqIr f}rh; **(Chandra Gupta Second)** ¼380&412 bZ-½ & चन्द्रगुप्त के समय (380–412 ई.) में गुप्त साम्राज्य का विकास बहुत तेजी से हुआ। इसके लिए उसने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह एक ब्राह्मण जाति के वाकाटक राजकुमार से किया जो मध्य भारत का सम्राट था। अपने दामाद की मृत्यु के बाद उसने वहां का साम्राज्य अपने पुत्र अल्पायु को उत्तराधिकारी के रूप में सौंप दिया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों से युद्ध करके प"चमी मालवा और गुजरात पर अधिकार किया एवं कुषाणों से मथुरा को जीता था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर रखी थी इसलिए इन्हे विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है। गुप्त साम्राज्य की सीमा काफी दूर फैली होने का प्रमाण ताम्र मुद्राओं तथा महरौली के स्तम्भ के लेख से इसकी जानकारी मिलती है।

उत्तर दक्षिण सीमा में (क"मीर तक)

पूर्व तक सीमा में (बंगाल) प"चम सीमा में (पंजाब)

दक्षिण सीमा में (काठियावाड़ तथा गुजरात तक)

इस प्रकार चन्द्रगुप्त द्वितीय की गणना भारत के महान सम्राटों में की जाती है। इसलिए इनके शासन काल को प्राचीप भारतीय इतिहास में 'स्वर्णयुग' के नाम से जाना जाता है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल में चीनी यात्री फाहियान (319–414 ई.) तक भारत का भ्रमण किया यहां के लोगों की जीवन"ैली कर काफी विस्तृत चर्चा को अपने विवरण में लिखा। इनके राज्य में महान विद्वान – हरिषेण, कालिदास, अमर सिंह, शंकु, धनवंतरी आदि।

¼7½ dqekj xqIr iFke **(Kumar Gupta)** ¼415 bZ- ls 455 bZ-½ & कुमार गुप्त ने लगभग 40 वर्षो तक लगातार शासन किया। इसकी मुद्राओं पर श्रीमहेन्द्र, महेन्द्रादित्य आदि उपाधियां मिलती है। एवं स्वर्ण सिक्कों पर उसे गुप्तकुलामल चन्द्र, गुप्तकुल व्योमरा"ा भी कहा गया है। कुमार गुप्त एक महान योद्धा एंव सफल शासक था। शक्रादित्य को कुमार गुप्त की उपाधि महेन्द्रादित्य के समानार्थी मानी गई है। इससे शत्रुओं को दबाने तथा शांति स्थापित करने के लिए अवमेघ यज्ञ किया। इसने नालंदा वि"वविद्यालय की स्थापना की और विभिन्न प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए। कुमार गुप्तवैष्णव मत को मानता था और सभी धर्मो के प्रति सहन"ीलता की नीति अपनाई। कुमार गुप्त के समय सबसे अधिक गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त हुए जो संख्या में 18 है। राजस्थान के भरतपुर जिले से बयाना मुद्रा भण्डार स्वर्ण मुद्राओं का सबसे बडा भण्डार जिसमें 623 मुद्राएं प्राप्त हुई थी। इन मुद्राओं मे मयूर शैली सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी।इसने गुप्त साम्राज्य की निरंतरता को बनाए रखा।

¼8½ LdUnxqIr **(Skand Gupta)** & कुमार गुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र स्कन्दगुप्त सिंहासनारूढ़ हुआ। इसका सिंहासन पर बैठना शांतिपूर्ण नही था क्योंकि इसके भाई पुरूगुप्त ने चुनौती दी थी। स्कन्दगुप्त को शक्रादित्य के नाम से भी जाना जाता है इसका शासनकाल 455–467 ई. था स्कन्दगुप्त गुप्त वं"ा का अन्तिम सफल शासक था। हूणों का गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण स्कन्दगुप्त के शासनकाल में हुआ था। इन्होनें हिन्दूकु"ा पर्वत को पार करके गन्धार प्रदे"ा पर आक्रमण किया और गुप्त साम्राज्य के कुछ हिस्से पर अधिकार कर लिया। इस परिस्थिति में स्कन्दगुप्त ने बहादुरी के साथ हूणों को पराजित किया। हूण इसके साहस को देखकर दंग रह गए। यह युद्ध और शान्ति स्थापित करने में महान था। इसके लेख में गिरनार के प्र"ाासक चक्रपालित द्वारा सुद"ान झील के बांध की मरम्मत करवाई। जिसका निर्माण मौर्य शासनकाल में किया गया था।

¼9½ iq:xqIr ¼467 ls 476 b½**(Puru Gupta)** & स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद उसका सौतेला भाई पुरूगुप्त राजगद्दी पर बैठा। यह कुमार गुप्त का प्रथम पुत्र था। स्कन्दगुप्त के संतानहीन होने के कारण सत्ता पुरूगुप्त के हाथों मे आ गई। भीतरी मुद्रालेख में पुरूगुप्त की माता का नाम महादेवी अनंतदेवी तथा पत्नी का नाम चन्द्र देवी मिलता है। वृद्धावस्था में शासक बनने के कारण पुरूगुप्त का शासन अल्पकालीन रहा। पुरूगुप्त के शासन काल ने गुप्त साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया।

¼10½ dqekj xqIr f}rh; **(Kumar Gupta 2) :-** कुमार गुप्त द्वितीय के सारनाथ से गुप्त संवत् (154 ई. अर्थात 473 ई.) का उल्लेख मिलता है । कुमार गुप्त के ही शासन काल मे कुमार गुप्त प्रथम द्वारा निर्मित द"ापुर स्थित सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ सारनाथ लेख में सुनि"चत कुमार गुप्त उत्कीर्ण मिलता है।

¼11½ cq) xqIr f}rh; **(Budha Gupta Second) :-** बुद्ध गुप्त ने 20 वर्ष तक शासन किया। का"ाी तथा उत्तरी बंगाल के प्रदे"ा इसके साम्राज्य में सम्मिलित थे। गुप्त संवत् 157 अर्थात 477 ई. का उसका सारनाथ से लेख मिलता है यह उनके शासनकाल की ज्ञात तिथि है। स्कन्दगुप्त के उत्तराधिकारियों ने बुद्ध गुप्त सर्वाधिक शक्ति"ााली शासक था जिसने सबसे विस्तृत प्रदे"ा पर शासन किया। स्वर्ण मुद्राओं पर उसकी उपाधि श्रीविक्रम मिलती है।

¼12½ ujflag xqIr **(Narsing Gupta) :-** नरसिंह गुप्त बुद्ध गुप्त का छोटा भाई था जो उसकी मृत्यु के बाद शासक बना। भीतरी मुद्रालेख में इनकी माता का नाम महादेवी चन्द्रदेवी प्राप्त होता है। इसे बालादित्य के नाम से भी जाना जाता है। ह्वेनसाग के विवरण में उल्लेख मिलता है कि हूण राजा मिहिरकुल बड़ा क्रूर और अत्याचारी शासक था। उसने मगध के शासक नरसिंह गुप्त पर आक्रमण किया पराजित हुआ तथा बन्दी बना लिया किन्तु नरसिंह गुप्त ने अपनी माता के कहने पर मुक्त कर दिया। नरसिंह गुप्त बौद्ध मतावलम्बी था। वह वसुबन्धु का "िाष्य था इसे नालंदा मुद्रलेख में परमभागवत कहा गया है।

¼13½ Hkkuq xqIr **(Bhanu Gupta) :-** इसके शासन काल में गुप्तवं”ा का तेजी से पतन हुआ। हूणों के द्वितीय आक्रमण इसके शासनकाल की बड़ी घटना थी। उसी का अन्त करने के लिए भानुगुप्त ने युद्ध किया। भानुगुप्त को इस युद्ध में अच्छी सफलता मिली। इस युद्ध को स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी गई।

¼14½ oSU; xqIr **(Vainya Gupta) :-** वैन्यगुप्त के बारे में जानकारी बंगलादे”ा के कोमिला में स्थित ताम्रपत्र है जो गुप्त संवत 188 अर्थात 507 ई. का है। इसमें बौद्ध विहार के लिए दी गई दान की भूमि का विवरण मिलते हैं।

¼15½ dqekj xqIr r`rh; **(Kumar Gupta Third) :-** कुमार गुप्त तृतीय की माता का नाम महादेवी, मित्रदेवी था। परमदैवत परमभट्टारक महाराजाधिराज की उपाधि मिली हुई थी। इसके नाम का केवल कु प्राप्त होता है जिसके आधार पर कुमार गुप्त तृतीय माना गया है।

(16) विश्णु गुप्त (Vishnu Gupta) :- नालंदा से प्राप्त एक मुद्रालेख में विष्णु गुप्त का लेख प्राप्त हुआ है जिसमें 550 ई. तक शासनकाल माना गया है। इसके बाद साम्राज्य बिखर गया। यह गुप्त वं”ा का अंतिम प्रतापी शासक था।

6-3-3- **गुप्तकालीन भाासन (Administration of the Guptas) :-** गुप्त सम्राटों द्वारा शासन को सुदृढ़ एवं मजबूत बनाने के लिए अनेकों तरीके अपनाए गए। गुप्त शासकों ने वि”ााल साम्राज्य के संचालन के लिए उच्चकोटि की शासन व्यवस्था का प्रबन्ध किया क्योंकि गुप्त शासकों के प्र”ाासन का प्रमुख उद्दे”य एवं लक्ष्य जनता की भलाई करना था। गुप्तकालीन शासन की वि”ोषताएं निम्नलिखित थी :–

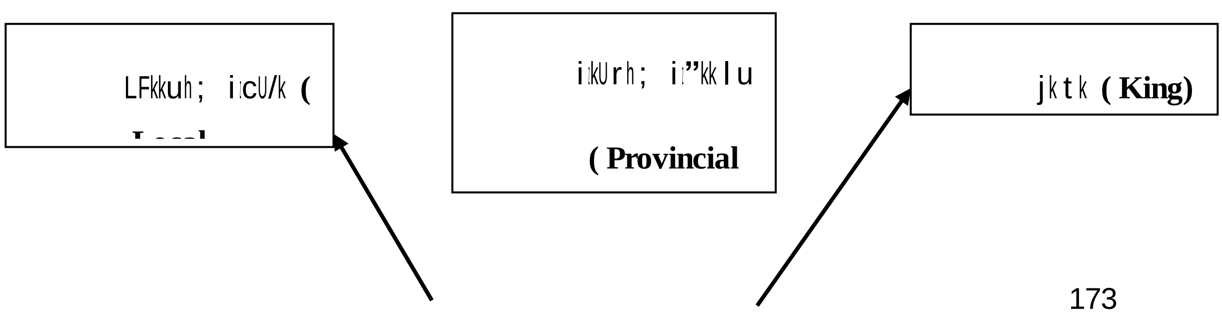

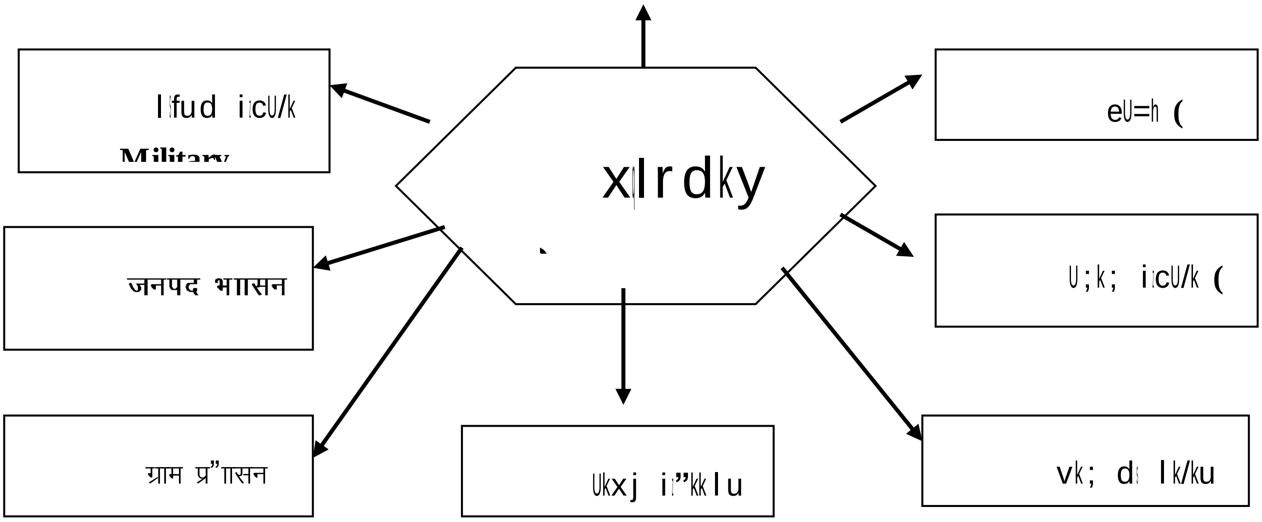

कु”ाल प्र”ाासन के लिए वि”ााल गुप्त साम्राज्य को कई प्रान्तों मे बांटा गया। प्रान्तों को दे”ा भुक्ति कहा जाता था।

budk laf{kIr fooj.k fuEu izdkj ls g\ &

¼1½ jktk **(King) :-** राजा का पद गुप्तकाल में पैतृक होता था। पिता की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन का उत्तराधिकारी होता था। योग्य न होने पर किसी अन्य पुत्र को सत्ता सौंप दी जाती थी। जैसे समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त ज्येष्ठ पुत्र नहीं था। समस्त शक्तियां अधिकार राजा के पास होते थे। ये उपाधियां धारण करके इनके नाम सिक्कों पर उत्कीर्ण करवाते थे। प्रजा का कल्याण राजा का धर्म होता था इसलिए प्रजा राजा की देवता की तरह पूजा करती और सम्मान देती थी।

(2) जनपद भाासन (District Administration) :- प्रान्तों (भुक्ति) का विभाजन जनपदों में किया गया। जिसका प्रधान अधिकारी विषयपति होता था। क्योंकि जनपदों को विषय कहा जाता था। विषयपति एक समिति गठित करता था। जिसमें निम्नवर्ग के सदस्य शामिल होते थे – (1) नगर श्रेष्ठ (2) सार्थवाह (3) प्रथम कुलिक (4) कायस्थ।

¼3½ uxj iz”kklu **:-** नगर प्र”ाासन नगर महापालिकाओं द्वारा चलाया जाता था। नगर का मुख्य अधिकारी दुर्गपाल होता था। नगर प्र”ाासन के लिए बनाई गई समिति पौर कहलाती थी।

¼4½ xzke iz”kklu (Gram Administration) **:-** यह प्र”ाासक की सबसे छोटी इकाई थी इसका संचालन ग्राम सभा द्वारा किया जाता था। ग्राम सभा का मुखिया ग्रामिक कहलाता था। इसके सदस्य महत्तर कहा जाता था। गुप्तकालीन अभिलेखों से पता चलता है कि ग्राम सभा को 'ग्राम जनपद' या पन्च मंडली' कहा गया है।

¼5½ ikrh; i”kklu (Provincial Administration) **:-** वि”ााल साम्राज्य होने के कारण गुप्त शासकों ने इसे कई प्रान्तों में बांट दिया था। प्रान्तों को दे”ा भुक्ति अथवा अवनी के नाम से जाना जाता था। भुक्ति के प्र”ाासक को उपरिक व उपरिक महाराज कहा जाता था। इन शासकों को पांच वर्ष के लिए नियुक्त किया जाता था। उपरिक का कार्य अपने क्षेत्र में शांति स्थापित करना एवं विदे”ाी आक्रमणों से रक्षा करना। जनता के लिए जनकल्याण के कार्य करना तथा सम्राट के आदे”ाों को लागू करवाना।

- l-	ikUr	dky	ikUrh; i”kkld
	तीरभुक्ति	चन्द्रगुप्त द्वितीय	तीरभुक्ति
	पूर्वी मालवा	कुमारगुप्त	पूर्वी मालवा
	सौराष्ट्र	स्कन्दगुप्त	सौराष्ट्र
	उत्तरी बंगाल	कुमारगुप्त	उत्तरी बंगाल

¼6½ ea=h **(Ministers) :-** शासन व्यवस्था को अच्छी तरह चलाने के लिए मंत्री नियुक्त किए हुए थे इन मंत्रियों में योग्य व्यक्ति व उसकी योग्यता के आधार पर नियुक्ति की जाती थी। इन मंत्रियों की सभा को मंत्रिपरिषद् कहा जाता था। राजा समय–समय पर इन मंत्रियों के साथ वार्तालाप करके इनके विचार एवं सुझाव लेते थे।

¼7½ LFkkuh; icU/k **(Local Administration) :-** स्थानीय शासन को चलाने के लिए उसे विभिन्न इकाइयों में बांटा गया। इन इकाइयों को विभिन्न अधिकारियों की सहायता से चलाया जाता था :–

Øe l[;k	lk”kklfud bdkbZ	vf/kdkjh dk uke
1	दे”ा	गोपत्री (गोरना)
2	भुक्ति	उपरिक
3	विषय	विषयपति
4	पेठ	पेठपति

5	ग्राम	ग्रामपति या महन्तर

इस प्रकार प्रत्येक इकाई का अधिकारी होता था। पूर्वी भारत में प्रत्येक विषय को बीथियों में बांटा गया था और वीथियों ग्रामों में बांटी गई थी।

¼8½ U;k; izcU/k **(Judicial Administration) :-** राजा सर्वोच्च न्यायाधी"ा होता था। इसके अतिरिक्त अन्य न्यायाधी"ा भी होते थे। गुप्तकाल में पहली बार दीवानी एवं फौजदारी कानूनों को अलग किया गया। राजा का न्यायालय दे"ा का सर्वोच्च न्यायलय होता था। गुप्तकालीन अभिलेखों में न्यायाधी"ाों का उल्लेख 'महादण्डनायक' सर्वदण्डनायक तथा महासर्वदण्डनायक नामक न्यायाधी"ा होता था। नास्दस्मृति के अनुसार उस समय न्यायालय के चार वर्ग थे (1) राजा न्यायालय (2) पूग (3) श्रेणी (4) कुल।

चोरी को फौजदारी कानून में शामिल किया गया एवं सम्पति से सम्बन्धित विवाद को दीवानी कानून में शामिल किया गया।

¼9½ lSfud izcU/ku **(Military Administration) :-** गुप्त सम्राटों ने अपने साम्राज्य के विस्तार एवं सुरक्षा के लिए सेना की तरफ वि"ोष ध्यान दिया और सेना को विभिन्न भागों में बांट दिया था – (1) पदाति सेना (2) गजसेना (3) रथ सेना (4) अ"वारोही सेना (5) जल सेना साधारण सेना को याट कहा जाता था, गजसेना के प्रमुख को 'कटुक' तथा अ"वारोही सेना के प्रमुख को 'भटा"पति' कहा जाता था।

¼10½ vk; ds lk/ku **(Sources of Income) :-** गुप्तकाल में आय स्त्रोत 'कर' थे जो निम्न है – (1) भोग – राजा को प्रतिदिन फूल एवं सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर। (2) व्यापारिक कर (3) अपराधियों को दंड (4) भूमि, रत्न, खाने, गुप्त धन, नमक आदि। इन पर राजा का सीधा अधिकार होता था। इस प्रकार राज्य के आय के स्त्रोत थे।

6-4- **विशयवस्तु का पुनः प्रस्तुतीकरण (Further main body of the text) :-**

6-4-1- xqIrdkyhu lekt **(Society of the Guptas) :-**

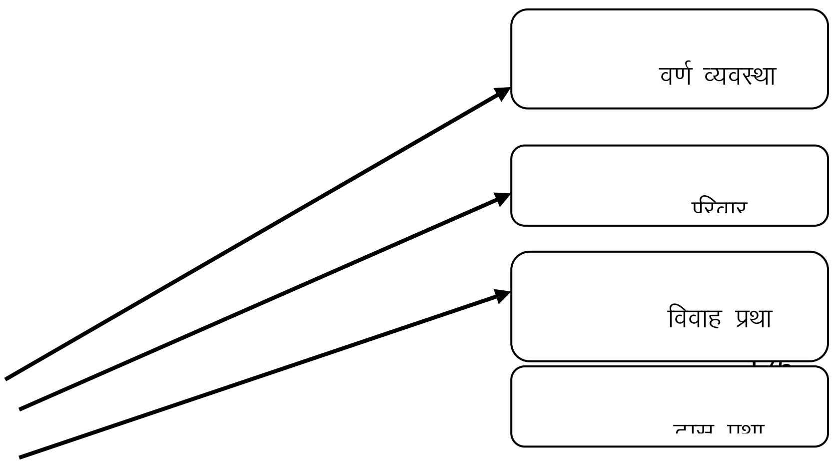

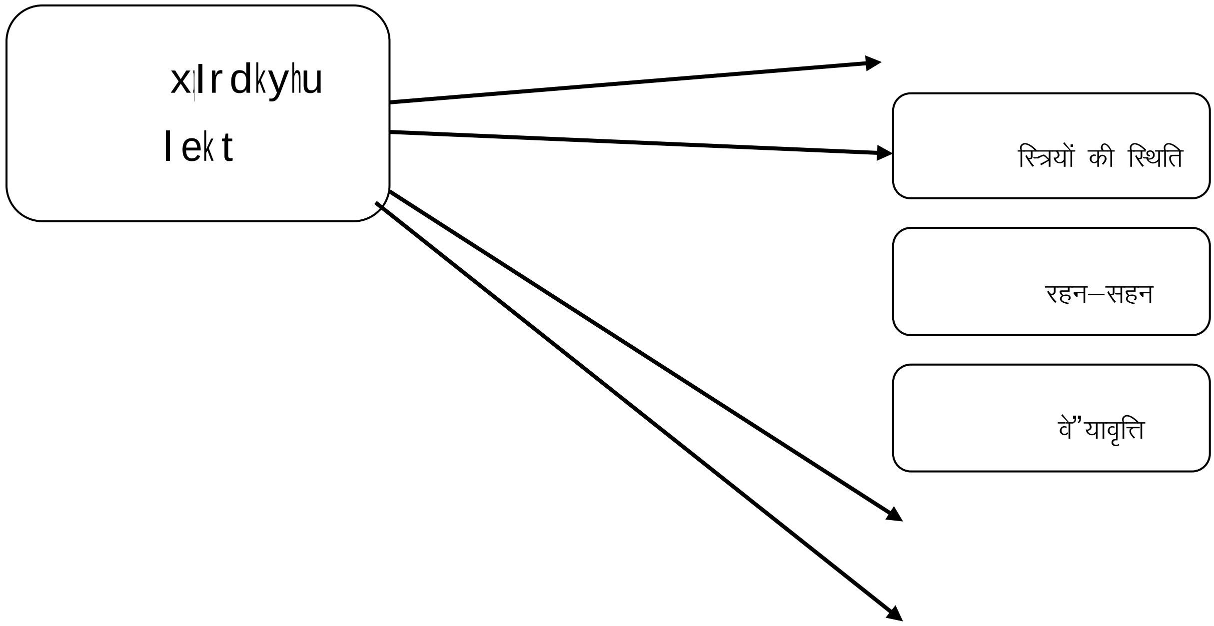

¼1½ o.kZ 0;oLFkk ¼& गुप्तकाल का समय परम्परागत रूप से चार वर्णो में बंटा हुआ था – (1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वै”य (4) शूद्र। गुप्तकाल में ब्राह्मणों को बड़े पैमाने पर भूमि दी गई जिससे उनके वर्चस्व में वृद्धि हुई। गुप्त मूल रूप से वै”य थे जिन्हे ब्राह्मणों ने क्षत्रिय कहना शुरू कर दिया था ब्राह्मणों के छः कार्य – अध्ययन, अध्यापन, पूजा–पाठ, यज्ञ करना, दान देना और दान लेना माना जाता था। वर्ण कई जातियों–उपजातियों में बंट गए, जिसके दो कारण थे। बडी संख्या में आए विदे”ी लोग भारतीय समाज में ही घुल–मिल गए, जिससे विदे”ायों के प्रत्येक समूह अलग–अलग जाति बन गऐ। इस काल में शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ। 17 वीं शताब्दी में इनकी पहचान कृषक के रूप में की गई।

¼2½ ifjokj ¼& संयुक्त परिवार को उच्चतम समझा जाता था जिसमें माता–पिता, भाई बहन, दादा–दादी, ताऊ–ताई, बुआ आदि एक साथ मिलकर रहते थे। संयुक्त परिवार का गुप्त काल में बहुत महत्त्व था।

¼3½ fookg iFkk ¼& गुप्तकाल में अर्न्तजातीय विवाह भी होते थे। विधवा विवाह और सती प्रथा का प्रचलन था। बहु–विवाह प्रथा भी प्रचलित थी। अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह भी प्रचलित थे। जैसे ऊंच जाति का पुरूष नीची जाति की महिला से विवाह करे उसे अनुलोम विवाह एवं ऊंच जाति की स्त्री नीची जाति के पुरूष के साथ विवाह करे तो प्रतिलोम विवाह कहते थे।

¼4½ nkl iFkk ¼& गुप्तकाल में दास प्रथा प्रचलित थी। दास कई प्रकार के होते थे – ऋणीदास, क्रय किए गए दास, दास पुत्र, युद्ध बंदी दास, जुए में हारे हुए दास। दासता में ब्राह्मणों को दास नहीं बनाया जाता था। दासता से मुक्ति के लिए अनुष्ठान का उल्लेख नारद

स्मृति में मिलता है। नारद ने 18 प्रकार के दासों का उल्लेख किया। गुप्त काल में दासियों का भी उल्लेख मिलता है।

¼5½ jgu&lgu ¼& आमतौर पर लोग शुद्ध सात्विक भोजन करते थे। जो लोग मांस मदिरा आदि का प्रयोग करते वे चण्डाल कहलाते थे। शारीरिक सौंदर्य की वृति के लिए आभूषण भी धारण करते थे। सामान्यतः लोग ऋंगारप्रिय थे। भोग विलासिता की वस्तुओं का खूब प्रयोग किया जाता था।

¼6½ dk;LFk ¼& कायस्थ एक वर्ग था जिसका पे"ाा लेखन कार्य का था। कायस्थ के उद्‌भव से ब्राह्मण प्रभावित हुए। क्योंकि ब्राह्मणों के लेखन कार्य पर प्रभाव पड़ा। गुप्त अभिलेखों में प्रथम कायस्थ शब्द का उल्लेख पहली बार मिलता है। राजतरंगिणी में कायस्थों के अत्याचार का विवरण मिलता है।

¼7½ efgykvksa dh fLFkfr ¼& इतिहासकार रोमिला थापर ने गुप्तकालीन महिलाओं की स्थिति पर प्रका"ा डालते हुए कहा है कि साहित्य और कला में तो नारी का आद"ार्ि रूप झलकता है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से उसका स्थान गौण था। उस समय समाज पितृ प्रधान था और पत्नी को व्यक्तिगत सम्पति समझा जाता था। दुर्भाग्य से यदि पति पहले मर जाय तो पत्नी को सती होने के लिए प्रेरित किया जाता था। अल्पायु में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था।

¼8½ o";kof`Ùk **(Prostitution)** ¼& गुप्तकालीन समाज में वे"यावृत्ति के भी प्रमाण मिलते हैं किन्तु इसे निन्दनीय समझा जाता था। इस काल में वे"यावृत्ति करने वाली महिला को 'गणिका' कहा जाता था। जो वे"याएं वृद्ध हो जाती थी उन्हे कुटनी कहा जाता था। कात्यायन ने महिलाओं को अचल सम्पति की स्वामिनी माना है। बृहस्पति ने महिला को पति की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना है।

¼9½ tuthou ¼& गुप्तकाल के लोगों का जनजीवन सुखी एवं समृद्ध था जिसका मुख्य कारण भोजन, जीवन, आवास आदि में साधारणतः लोगों का आपसी व्यवहार बहुत था एक दूसरे के साथ लोग प्रेम पूर्वक रहते थे। मांस–मदिरा का सेवन केवल चांडाल लोग ही करते थे। लोग आपस में गरीब असहायों की मदद करते थे। इसके साथ–साथ लोग सामाजिक कार्य भी करते थे जैसे मन्दिर, प्याऊ, धर्म"ाालाएं आदि का निर्माण करवाते थे। समाज में नैतिकता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी।

6-4-2- xqIrdkyhu vkfFkZd fLFkfr **(Econimic condition of the Guptas)** :– गुप्तकालीन भारत में आर्थिक स्थिति अच्छी थी। उनके साम्राज्य में शान्तिपूर्वक व्यवस्था चल रही थी। जिसके पीछे निम्न पहलुओं की भूमिका रही –

(1) कृशि (Agriculture) ¼& गुप्तकाल के लोगों का व्यवसाय कृषि था। कृषि का विकास तेजी से हो रहा था। उस समय तीन फसलों का उल्लेख मिलता है। रवी, खरीफ़ और जायद। अमरकोष में ऐसी फसलों का भी उल्लेख मिलता है जो बहुत कम समय में तैयार

हो जाती थी। गुप्तकाल में गेहूं, जौ, चावल, बाजरा, ज्वार, मक्का, कपास, तिलहन, दाल, सरसों, अलसी, मटर, बाजरा, अदरक, काली मिर्च, इलायची, लौंग, सेब, अंगूर, अनार, कटहल आदि फसल होती थी। गुप्तकाल में छोटे–छोटे कृषक होते थे। खेती का कार्य परमपरागत तरीके से किया जाता था। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर थे। इसके अतिरिक्त कुओं, तालाबों, झीलों तथा जला"ायों से भी सिचाई की जाती थी। जो भूमि बेकार पड़ी रहती थी वह राज्य की संपत्ति समझी जाती थी। गुप्तकाल के अभिलेखों मे कई प्रकार की भूमि के बारे में चर्चा मिलती है जैसे–

(i) pjkxkg Hkfe ¼& प"ुओं को चराने के लिए निजी या सरकारी भूमि जो खाली छोड़ी गई हो उसे चरागाह या गोचर भूमि कहते थे।

(ii) {ks= Hkfe ¼& खेती करने योग्य भूमि को क्षेत्र कहा जाता था। जिस पर किसान आसानी से खेती कर सके।

(iii) vijgr Hkfe ¼& यह जंगली भूमि होती थी जिस पर प्राकृतिक जड़ी बूटियां उत्पन्न होती थी और मनुष्य की आव"यकताओं को पूरा करने में मदद करती थी।

(iv) f[ky Hkfe ¼& यह भूमि उबड–खाबड़ होती थी जो कृषि करने योग्य नहीं होती ये टीले या गड्ढे के रूप में हो सकती है

(v) okLr¦ Hkfe ¼& इस भूमि पर रहने के लिए मकान आदि बनाए जा सकते है अर्थात जिस भूमि पर लोग निवास करते है जिस पर मकान, चिकित्सालय, विद्यालय, धर्म"ाालाएं आदि बनाए जाते है।

भूमि मापने की इकाइयों अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग थी। गुप्तकाल में अनाज का उत्पादन बढ़ाने वाले किसानों को वि"ोष पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता था।

¼2½ m|kx **(Industries)** ¼& गुप्तकाल में लागों का दूसरा मुख्य व्यवसाय उद्योग था। दे"ा के विभिन्न भागों में सूत की कताई एवं कपड़े की बुनाई के कार्य किए जाते थे। इसी के साथ ऊनी वस्त्र व मलमल वस्त्र भी तैयार किये जाते थे। बढ़ई, लुहार, कुम्हार आदि का कार्य करने वाले लोग भी अपने–अपने व्यवसायों में लगे रहते थे। इस काल में धातु उद्योग भी विकास की गति पर था। तांबे एवं कांसे की मूर्तियां तथा बर्तन बनाए जाते थे। सोना, चांदी, मोती आदि के सुन्दर आभूषण तैयार किए जाते थे। दिल्ली के पास का लौह स्तंभ लोहकला का सर्वोत्तम नमूना था। उस समय लोहा व्यवसाय अपने चरम विकास पर था। लोहे का कार्य करने वाले लोहार अपने कार्य में दक्ष थे। उस समय वस्त्र उद्योग कुछ प्रमुख केन्द्र काफी प्रसिद्ध थे जैसे गुजरात, बंगाल, मथुरा, वाराणसी आदि। मेहरौली का लौहस्तंभ उस समय के धातु f"ाल्पकला के उत्तम नमूनें का एक उदाहरण है। इस काल में रत्न परीक्षा का विज्ञान भी विद्यमान था। इन उद्योगों के अतिरिक्त पोत निर्माण, हाथी दांत तथा चमड़े के उद्योग मुख्य थे।

¼3½ Ik"kqikyu **(Animal Rearing)** ¼& गुप्तकाल में प"ुपालन भी निर्वाह का मुख्य साधन था। 'मन' के अनुसार गोपालन कार्य एवं व्यवसाय वै"यों का था। अमरकोष में पालतु प"ु के रूप में भैंस, ऊंट, भेड़–बकरी, गधा, कुत्ता, घोड़ा आदि थे। इस प्रकार प"ु व्यवसाय भी एक आय का अच्छा स्त्रोत था।

¼4½ 0;kikj **(Trade)** ¼& गुप्तकाल में व्यापार उन्नत स्तर पर था। दे"I के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थल व जल के माध्यम से व्यापार होता था। प्रयाग, बनारस, वै"ााली, कौ"ााम्बी, मथुरा, पे"ाावर आदि नगर आपस में एक दूसरे वस्तुओं का व्यापार करते थे। व्यापार के लिए सिंधु, रावी, चैनाब, गंगा, यमुना आदि में नावें चलाते थे। व्यापार के लिए व्यापारिक संघ भी बने हुए थे। सभी को उनके नियमों का पालन करना पड़ता था। बंदरगाहों के द्वारा श्रीलंका, चीन, अरब, ईरान, यूनान, रोम, जावा, बर्मा, सीरिया आदि दे"ाों के साथ व्यापार किया जाता था।

bl i!dkj ge dg ldr! g! fd x|Ir dky dh vkfFkd fLFkfr etcr FkhA ykx viuk vPN! <x l! thou 0;rhr djr! FkA

6-4-3- x|Irdkyhu dyk ,o LFkkiR; ¼okLr|dyk½ (Art and architecture of the Guptas) ¼&

गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग अर्थात् क्लासिकी युग कहा जाता है। स्थापत्य एवं कला के क्षेत्र में विकास की चरम सीमा गुप्त काल में प्राप्त होती है लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि वास्तुकला सर्वोच्तम रूप गुप्त काल में ही था। दुःख कि यह बात है कि गुप्त काल में कला के क्षेत्र में उपलब्धियों के अव"ोष बहुत कम प्राप्त हुए हैं। गुप्तकाल में कला की विभिन्न विधाओं के उदाहरण देखने को मिलते है जैसे– भवन निमार्ण कला, चित्रकला, मन्दिर निर्माण कला का उदय, वास्तु, स्थापत्य, मूर्तिकला, धातुकला, मुद्राकला, संगीत, नृत्य, अभिनय कला, मृदभांड कला आदि के सर्वोच्च उदाहरण तत्कालीन मंदिर थे।

¼1½ Hkou fuek.k dyk ¼& गुप्तकाल में भवन निर्माण कला में ईंटों और पत्थरों का प्रयोग किया जाता था। इससे पहले भवनों का निर्माण लकड़ियों से किया जाता था। उपलब्ध अभिलेखों से पता चलता है कि गुप्त शासकों ने अनेक नगरों तथा उन नगरों में वि"ााल भवनों के निर्माण करवाए थे। दुर्भाग्य यह रहा कि हूणों से लेकर तुर्कों तक जितने भी आक्रमण भारत पर हुए उनमें गुप्तकालीन स्थापत्यों को भारी क्षति पहुंचाई गई। यद्यपि उन आक्रमणों के कारण गुप्तकाल के अनेक स्थापत्यों का विना"I हो गया तथापि कुछ नमूने आज भी सुरक्षित है जैसे भुमरा का f"ाव मंदिर, झांसी जिले का देवगढ़ मंदिर, तिगवा का विष्णु मंदिर, नाचना कुठार का पार्वती मंदिर आदि गुप्तकालीन स्थापत्य के अद्भुत नमूने है। ये मंदिर आकार में छोटे तथा इनकी छतें चपटी है। गुप्तकाल में मठों व स्तूपों का निर्माण किया गया। सॉची तथा गया के स्तूप अनुपम उदाहरण हैं। गुप्तकाल में गुफा कला का चरम विकास हुआ। अजंता की गुफाएं भिलसा के निकट उद्‌यगिरी का गुफा मंदिर गुफा कला का सर्वोत्तम नमूना है।

¼2½ fp=dyk ¼& कामसूत्रकार वात्स्यायन के अनुसार चित्रकला की गणना चौसठ कलाओं में की जाती है। गुप्तकालीन साहित्यों से ज्ञात होता है कि कुलीन तथा सुf"ाक्षित वर्ग स्त्री–पुरूष सभी इस कला को ग्रहण करते थे। चित्रकला का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन–अध्यापन होता था। गुप्तकालीन चित्रकला का सर्वोत्तम उदाहरण अजंता से प्राप्त भित्तिचित्र है। अंजता के भित्ति चित्रों को सर्वोत्कृष्ट कलाकृतियों का रूप प्रदान किया गया है। अजंता के चित्रों के तीन विषय है।

(i) छतों और कोनों को सजाने हेतु नैसर्गिक सौन्दर्य :– नदी–झरने, पशु–पक्षी, फूल–वृक्ष खाली स्थानों को सजाने के लिए गन्धर्वों, अपसराओं, यक्षों के चित्रों का प्रयोग किया गया है।

(ii) तथागत तथा बोधिसत्व के चित्र

(iii) जातक कथाओं के वर्णन योग्य दृश्य।

भय, लज्जा, करूणा, मैत्री, चिन्ता, उल्लास, हर्ष, घृणा आदि मानवीय संवेगों को चित्रकला के माध्यम से उत्कीर्ण किया गया है। तकनीकी दृष्टि से ये भित्तिचित्र संसार में सर्वोत्तम स्थान पर आते है। इनमें विविध रंगों, प्राकृतिक दृश्यों, मनुष्य, देवी–देवताओं का चित्रण किया गया है। अजंता की चित्रकला सर्वोत्तम उदाहरण है पद्मपाणि अवलोकितेश्वर, बालक श्रवण के साथ उनके अंधे माता–पिता, मरणासन्न राजकुमारी, ज्ञान प्राप्ति के बाद यशोधरा–राहुल का मिलन तथागत द्वारा सन्यास की घोषणा , बुद्ध के स्वागत के लिए इन्द्र की उड़ान। छतों के खम्भों, खिड़कियों, दरवाजों तथा चौखटों की सजावट आदि देखते ही बनते हैं। बाघ की गुफाओं के भित्ति चित्रों को भी गुप्तकालीन माना गया है। अजंता की चित्र आकृतियां धार्मिक विषयों पर आश्रित है परन्तु बाघ के चित्रों में लौकिक जीवन को दर्शाया गया है। बाघ गुफा के चित्रों मे केश–विन्यास, अलंकार–प्रसाधन की शिक्षा प्राप्त होती है। बाघ की गुफाओं में विहार, चैत्य, स्तूप तथा सभागृह हैं परन्तु अधिकांश चित्र धर्म निरपेक्ष है जैसे नाचगाना, भव्य राजकीय जुलूस, शोकसंतप्त, अंगक्षाएं और हाथियों की दौड़ आदि दृश्य है।

(3) शिल्पकला :– गुप्तकाल में शिल्पकला अपने चरम विकास पर आरूढ़ थी। विशेषतः मूर्ति निर्माण कला अद्वितीय थी। गुप्तकाल से पहले पशुओं की ही मूर्तियां बनाई जाती थी किन्तु गुप्त काल में मूर्तियों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। मूर्तियों में नग्नता के चित्रण में कमी आई। इस काल में ज्यादातर मूर्तियां बुद्ध तथा बौद्धिसत्व की बनाई गई। इन मूर्तियों में घुंघराले बाल, अनेक प्रकार के अलंकार तथा आध्यात्मिक भावों की अभिव्यक्ति हुई। विष्णु, सूर्य, शिव आदि की मूर्तियों का भी निर्माण हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भी शिल्प कला का अस्तित्व कायम रहा। इस प्रकार भारत के बाहर बाली, जावा , सुमात्रा, कम्बोडिया, बोनियों, आदि देशों में भी हुआ।

(4) मूर्तिकला :– मूर्तिकला की दृष्टि से गुप्तकाल में बहुत विकास हुआ। गुप्तकाल की मूर्तियां संयमित और नैतिक थी। कुषाणकाल में मूर्तियों में शरीर के सौन्दर्य का जो चित्रण किया गया उस नग्नता का गुप्तकाल की मूर्तियों में कोई स्थान नहीं था। गुप्तकाल की मूर्तियों में मोटे दुपट्टे का प्रदर्शन किया गया। सारनाथ की मूर्तियों पर गांधार कला का कोई प्रभाव नहीं था। गुप्तकाल की मूर्तियों में प्रभावमण्डल दर्शाया जाता था। वैष्णव धर्म के विकास के कारण वैष्णव मूर्तियों का बड़ी मात्रा में निर्माण हुआ। गुप्तकाल की शिल्पकला का जन्म मथुरा शैली के मानकों पर आधारित था। प्रमुख रूप से विष्णु के अवतारों की मूर्तियां बनाई गई । शिव संप्रदाय में लिंग पूजा के कारण मूर्तिकला के विकास की कम संभावनाएं थी। विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति देवगढ़ के दशावतार मंदिर में है। जिसमें विष्णु को शेषनाग की शैया पर दर्शाया गया है। उद्यगिरि में एक मूर्ति मिली है जिसमें शरीर तो मनुष्य का है पर मुख वराह का। यह मूर्ति गुप्ताकालीन प्रतिमा निर्माताओं का स्मारक है। गुप्तकाल की बौद्ध मूर्तियों में संजीवता और मौलिकता मिलती है।

¼5½ /kkrqdyk ¼& धातुकला के अर्न्तगत अनेक धातुओं को पिंघलाकर उन्हें मिलाकर अनके वस्तुएं एवं मूर्तियां बनाई जाती थी। तांबे की प्रतिमाएं बहुतायत मात्रा में बनाई जाती थी। नालंदा की 80 फीट ऊंची कांसे की बुद्ध प्रतिमा और महरौली का लौह स्तंभ गुप्त काल की धातु कला का अनुपम उदाहरण है।

¼6½ eqnzkdyk ¼& गुप्तकाल में भारतीय ढंग से सोने और चांदी के सिक्के ढालने का काम तीव्र गति से हुए। इन सिक्कों के ऊपर गुप्तवं"ाीय नरे"ाों की मूर्तियां, लक्ष्मी गरूड़ध्वज और सिंह की आकृतियां अंकित की गई है। इन पर गुप्त सम्राटों का गौरव गाथाएं द"ाायी गई हैं। इस प्रकार गुप्तकाल में भारतीय समाज कला, साहित्य, द"ान, विज्ञान ललित कला आदि के क्षेत्र में अवर्णनीय उन्नति हुई इसी कारण से गुप्तकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी गई।

¼7½ laxhrdyk ¼& गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त स्वयं संगीत प्रेमी और इस कला के संरक्षक थे। प्रयाग प्र"ास्ति से पता चलता है कि समुद्रगुप्त नारद और तुम्बारू से भी सुन्दर वीणावादन करते थे। महिला और पुरूष दोनों गाते व नृत्य करते थे। इस युग में भेरी, झांझ, टिपरी बांसुरी आदि यंत्रों का बहुतायत मात्रा में प्रयोग किया जाता था। रंग मंच और नाट्यकला का विकास भी इस युग में हो चुका था। गुप्तकाल में सम्राट के साथ–साथ साधारण जन–मानस की संगीत में अभिरूचि थी। गुप्तकाल की अनेक ऐसी मुद्राएं मिली है जिसमें सम्राट समुद्रगुप्त को विविध मुद्राओं में वीणावादन करते द"ााया गया है। सम्राट स्कन्द गुप्त को भी वि"िाष्ट संगीतज्ञ माना जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त प्रथम के सिक्के पूर्ण रूप से भारतीय समाज में सिक्कों की सजावट मनोहरी ढंग से की गई। सिक्कों पर चित्रों तथा अक्षरों का सुस्पष्ट उत्कीर्णन होता है।

6-4-4- xqIr lkezkT; dk iru ¼& गुप्त साम्राज्य के काल को भारतीय इतिहास की अधिकतर पुस्तकों में हिन्दू नवजागरण का युग कहा जाता है परन्तु यह पूरी तरह सत्य नहीं है। समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने अपरिमित पुरूषार्थ से गौरव"ाली राज्य की स्थापना की थी। इसीलिए उनके शासनकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग अर्थात क्लासिकल युग कहा जाता है। इस वि"ाल साम्राज्य का पतन पांचवी शताब्दी में आरंभ हुआ तथा छठी शताब्दी में अंत हो गया। इस शक्ति"ाली साम्राज्य के पतन में अनेक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कारणों की भूमिका रही है। जो निम्न प्रकार से है :–

¼1½ v;kX; mÙkjkf/kdkjh ¼& महान गुप्त साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण स्कन्दगुप्त के कमजोर व अयोग्य शासक थे। जिन्हे शासन प्रबन्ध का सम्यक ज्ञान नही था और जो सुख सुविधाओं में ही उलझे रहते थे। वे अपने साम्राज्य में न तो सुख–"ाांति स्थापित कर सके और न ही बाह्य आक्रमणों से रक्षा कर सके। शनैः–"ानैः महान गुप्त साम्राज्य दिन–प्रतिदिन पतन की और अग्रसर होता चला गया।

¼2½ mÙkjkf/kdkjh dk lacU/k esa fuf"pr fu;e u gksuk ¼& गुप्तकाल में उत्तराधिकारियों के लिए कोई नि"िचत नियम या कानून कायदे नहीं थे इसलिए राजा के स्वर्ग सिधार जाने पर सिंहासनरूढ़ होने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। ये परस्पर लड़ना राज्य के पतन का मुख्य कारण रहा क्योंकि बाह्य शासकों ने इस अन्तर्द्वन्द्व का लाभ उठाया।

¼3½ foLr`r lkezkT; ¼& महान सम्राट समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त द्वितीय जैसे शासकों ने एक वि"ााल गुप्त साम्राज्य की स्थापना की थी। इतने विस्तृत साम्राज्य को चलाना कु"ाल शासक के बिना संभालने की कल्पना उसी प्रकार जिस प्रकार मजबूत नींव के बिना वि"ााल भवन। इस कारण गुप्त साम्राज्य का पतन होना स्वाभाविक था।

¼4½ vkUrfjd fonzksg **(Internal Revolts)** ¼& गुप्त"ाासकों के आन्तरिक विद्रोह के कारण चारों तरफ अ"ाान्ति फैल गई। जिससे जगह–जगह पर विद्रोह को बढ़ावा मिला इसके तहत आने वाले दूसरे शासकों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी परिणामस्वरूप मालवा, कन्नौज तथा वल्लभी आदि अधीनस्थ राज्य गुप्त साम्राज्य की मुख्य धारा से विलग हो गए। जिसका प्रभाव गुप्त साम्राज्य की शक्ति पर पड़ा और गुप्त साम्राज्य पतन की ओर बढ़ गया।

¼5½ lhek lqj{kk ykijokgh ¼& गुप्त "ाासकों ने सीमा सुरक्षा के कार्य में लापरवाही की जिसके कारण उन्होनें उत्तर–प"िचमी सुरक्षा सीमा का नुकसान भोगना पड़ा। बाद में अवसर मिलते ही हूणों ने गुप्त साम्राज्य पर हमला किया।

¼6½ ckS) /keZ dk izHkko **(Effect of Buddhism)** ¼& प्रारंभ गुप्त शासक हिन्दू धर्म में वि"वास रखते थे लेकिन बाद में वे बौद्ध धर्म अनुयायी बन गए। तब उन्होंने अहिंसा का पालन किया। जिसके कारण उनकी सेना ने युद्ध मे भाग लेना कम कर दिया और शान्तप्रिय रहना शुरू कर दिया। यह भी गुप्त साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण रहा है।

¼7½ lsuk dk detksj gksuk ¼& लम्बे समय तक गुप्त काल में शान्ति स्थापित होने के कारण सेना ने युद्ध अभ्यास नहीं किया और न ही किसी युद्ध में भाग लिया जिसके फलस्वरूप सेना "िाथिल पड़ गई। बाद मे सेना को विदे"ाी आक्रमणों का सामना करना पड़ा तो सेना उनके सामने डटकर सामना नही कर पाई। जिससे पतन होना स्वाभाविक था।

¼8½ cqudjksa dk iyk;u ¼& विदे"ाी व्यापार के ह्रास से गुप्त साम्राज्य के आय के स्त्रोत काफी कम हो गए। इस कारण रे"ाम बुनकर अर्थात व्यवसायी संघ (रे"ाम का) ने 473 ई. प्लायन कर लिया और गुजरात से मालवा चले गए वहां जाकर कोई कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

¼9½ foÙkh; ladV **(Financial crisis)** ¼& प्रारंभ में गुप्त साम्राज्य काफी समृद्ध था। लेकिन गुप्त काल के शासकों ने कलाओं व साहित्य पर अनाव"यक खर्च किया। सेना के विस्तार एवं मजबूत बनाने में कम खर्च किया और इसी के साथ अपने साम्राज्य में छोटे–छोटे व्यवसाय थे उनकी तरफ भी काई वि"ोष ध्यान नहीं दिया। जिसके कारण वस्तुओं का उत्पादन हो कम गया और विदे"ाों में जो वस्तुएं निर्यात करते थे वो कार्य भी प्रभावित हुआ। पररिणामस्वरूप आर्थिक व्यवस्था गड़बड़ा गई। जो पतन को रोकने में असफल रही।

¼10½ gw.kksa dk vkØe.k **(Invasion of Hunas)** ¼& चन्द्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारियों को ईसा की पांचवी सदी के उतरार्द्ध में मध्य ए"िाया के हूणों का सामना करना पड़ा। हूण ए"िाया की एक बहुत बड़ी अत्याचारी जाति थी। गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त हूणों को भारत में आगे बढ़ने से रोकने में असफल

रहा। क्योंकि हूणों की सेना घुडसवारी में पूर्णतः कु”ाल थी और वे धातु से बने रकाबों का प्रयोग करते थे। 485 ई. में हूणों ने पूर्वी मालवा को और मध्य भारत के बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया। इस प्रकार से छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य बहुत छोटा हो गया।

Mk- ch-ih- flUgk ds vuqlkj] ^^ gq.kksa ds vkØe.kksa us lkezkT; dh uhao dks fgyk dj j[k fn;k Fkk** **(The Huna invasions shook the empire to its roats, " Dr. B.P. Sinha, dynastic History of Magadha, New Delhi, 1977 (P69)**

इस प्रकार से वि”ााल गुप्त साम्राज्य का पतन हुआ। उपरोक्त सभी कारणों को गुप्त साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है। जिन सभी का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रहा। जिसका परिणाम गुप्त साम्राज्य का पतन रहा।

6-5 izxfr leh{kk **(Check Your Progress) :-**

Hkkx ¼d½ fjDr LFkkuksa dh iwfr dhft, **(Fill in the blanks) :-**

XVI. गुप्त वं”ा का वास्तविक संस्थापक .... था।

XVII. चीनी यात्री फाहियान ने .... के शासन काल में भारत का भ्रमण किया।

XVIII. चन्द्रगुप्त द्वितीय ने .... को द्वितीय राजधानी बनाया।

XIX. .... के शासनकाल में नालन्दा वि”वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

XX. भीतरी मुद्रालेख में नरसिहं गुप्त की माता का नाम .... मिलता है।

XXI. हल पर लगने वाले कर .... कहा जाता था।

XXII. गुप्तकाल में बनी दो मीटर से भी ऊंची बुद्ध की कांस्यमूर्ति .... के निकट .... में प्राप्त हुई।

XXIII. गुप्तवं”ा का अंतिम सफल शासक .... था।

Hkkx **(Part)** ¼[k½ fuEu dFkuksa dk mÙkj ¼gk@ugha½ **(Yes/No)** esa nhft, %&

XVI. ग्राम प्र”ाासन की सबसे छोटी इकाई थी। (हां/नहीं)

XVII. खेती करने योग्य भूमि क्षेत्र को अरहत भूमि कहा जाता था। (हां/नहीं)

XVIII. गुप्तकाल के लोगों का प्रथम व्यवसाय उद्योग था। (हां/नहीं)

XIX. गुप्तकाल में पाटलिपुत्र, मथुरा, बनारस, नासिक, बल्लभी, साकेत आदि f”k्षा के प्रमुख केन्द्र थे। (हां/नहीं)

XX. नालंदा से प्राप्त एक मुद्रालेख में विष्णुगुप्त का लेख प्राप्त हुआ। (हां/नहीं)

XXI. मन के अनुसार गोपालन कार्य वै”यों का था। (हां/नहीं)

XXII. मृच्छकटिकम् रचना कालिदास की है। (हां/नहीं)

XXIII. अभिज्ञान”ााकुन्तलम नाटक वि”ााखादत्त की रचना है। (हां/नहीं)

XXIV. गुप्तवं"ाीय शासकों के बारे में जानकारी स्मृतियों से मिलती है।
(हां / नहीं)

XXV. गुप्तकाल में भारतीय ढंग से सोने और चांदी के सिक्कों को ढालने का कार्य तीव्रगति से हुआ।
(हां / नहीं)

XXVI. घटोत्कच का शासनकाल 319–335 ई. तक था। (हां / नहीं)

XXVII. गुप्त साम्राज्य का संस्थापक रामगुप्त को माना गया है।
(हां / नहीं)

6-6 lkjk"k (Summary) :-

- प्राचीन भारतीय इतिहास में मौर्यो के बाद कुषाण साम्राज्य के अव"ोष पर तीसरी शताब्दी के अन्त में जिस वि"ााल नवीन साम्राज्य का अभ्युदय हुआ वह गुप्त साम्राज्य था। इस साम्राज्य ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को 320–455 ई. तक यानि एक सदी से अधिक समय तक राजनैतिक एकता के सूत्र मे पिरोकर रखा।
- प्रभावी गुप्त के पुना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में श्री गुप्त का उल्लेख गुप्त वं"ा के आदि राजा के रूप में किया गया है। इसका शासन काल 240–280 ई. तक रहा। अभिलेखों में इसका गौत्र धारण बताया गया है क्योंकि श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की थी।
- पुराणों से गुप्त साम्राज्य, उसके विभिन्न प्रान्त तथा सीमाओं की जानकारी प्राप्त होती है स्मृतियों में नारद और बृहस्पति स्मृति से गुप्तकालीन इतिहास की उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। गुप्तकालीन साहित्यकारों में कालीदास, शूद्रक, वात्स्यायन आदि की अमर कृतियों से गुप्तकालीन इतिहास के विविध पक्षों की जानकारी प्रदान करते है। डां. राय चौधरी व डां. रामगोपाल के अनुसार गुप्त ब्राह्मण थें। डां. जायसवाल के मतानुसार गुप्त शुद्र थे।
- गुप्तवं"ा का सबसे अधिक प्रसिद्ध शासक चन्द्रगुप्त था। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद के वि"ााल ि"ालालेख मे उत्तरी भारत के कम से कम 9 राजाओं के शक्तिपूर्वक उन्नमूलन करने तथा उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में शामिल करने का विवरण मिलता है। चन्द्रगुप्त प्रथम में लिच्छवी राजकुमारी देवी से विवाह किया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटकों के राजा रूद्रसेन के साथ हुआ था। चन्द्रगुप्त प्रथम का दरबारी शासक हरिषेण था। चन्द्रगुप्त प्रथम ने 320 ई में एक नवीन सम्वत् चलाया था, जो गुप्त सम्वत् के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- बी.ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारतीय नेपोलियन की संज्ञा प्रदान की हैं समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमार गुप्त तथा स्कन्दगुप्त शासक हुए। स्कन्दगुप्त गुप्त वं"ा का अन्तिम शक्ति"ााली शासक था। इसके बाद गुप्त वं"ा का पतन हो गया था। गुप्तकालीन समाज चार वर्णो में बंटा हुआ था ।
- गुप्तकालीन समाज में दास प्रथा थी। युद्धबंदियों को दास बनाकर रखा जाता था। गुप्तकाल में कृषक, प"ाुपालक, धातुकार, जुलाहे, माली अनेकों जातियां अस्तित्व में आई। गुप्तकाल में सती प्रथा की शुरूआत हुई।
- गुप्त काल में केवल ब्राह्मणों को ही भूमि दान दी जाती थी। नृत्य एवं संगीत में निपुण तथा कामशास्त्र में पारगंत महिलाओं को गणिका कहा जाता था।

- गुप्तकाल में हिन्दू धर्म की दो मुख्य शाखायें प्रचलित थी एक वैष्णव तथा दूसरी शैव।
- गुप्तकाल में दे"ा सम्राटों द्वारा स्वयं शासित क्षेत्रों की सबसे बडी प्रादेि"ाक इकाई थी। 'अमरकोष' में 13 प्रकार की भूमि का उल्लेख मिलता है। चौथी शताब्दी में मयूर"ार्मन ने 18 बार अ"वमेघ यज्ञ का आयोजन किया।
- गुप्ताकालीन सेना को तीन भागों में बांटा गया था – पैदल सेना, अ"वसेना व ह्स्ति सेना। गुप्तकाल में प्रान्त को दे"ा अथवा भुक्ति कहा जाता था। गुप्तकाल में प्रान्तीय शासक को 'भोगपति' 'योगपति' गोप्ता आदि कहा जाता था। ग्राम प्र"ाासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम के मुखिया को ग्रामिक अथवा महत्तर कहा जाता था।

6-7 lidr lipd (Key Words):-

भाब्द (Words)	vFk (Meaning)
• अभिहित	संबोधित
• उत्कीर्ण	खुदा हुआ
• संपादन	संकलन
• सिहासनारूढ़	राजगद्दी पर बैठना
• नगर श्रेष्ठ	पूंजीपति वर्ग का नेता
• सार्थवाद	विषय के व्यापारियों के नेता
• कुलिक	ि"ाल्पियों व व्यवसायियों के मुखिया को
• कायस्थ	लेखक का कार्य करने वाले

6-8- Lo&eY;kdu ijh{kk **(Self assessment Test)(SAT)**

Hkkx ¼d½ **(Part –A)** nh?kZ mÙkjh; iz"u **(Long Answer types Question) (LAQS)**

iz"u 1- xqIrdky dh ,d ^Lo.kZ;qx* ds :Ik esa foospuk djsaA

(Discuss Gupta period as a 'Goldenage) (M.D. Univ. Rohtak, 2014 , Bhagalpur Univ, 2014, 2016, 2018)

iz"u 2- xqIrdkyhu lekt] vkfFkZd fLFkfr] uxj dsUnzksa dh O;k[;k dhft,A

(Explain the Society of the Guptas, Economic conditions, Urban centres.)

iz"u 3- xqIr lkezkT; dk iru] iz"kklu] j=kr ij lafIr fVIi.kh fyf[k,A

(Write a short notes on decline of the Gupta Empire, Administration, Sources)

Hkkx ¼[k½ y?kq mÙkjh; iz”u **(Short Answer Type Question)(SAQS)**

(I) न्याय प्रबन्धन (Judicial Administration) (II) नरसिंह गुप्त (Narsingh Gupta)

(III) रामगुप्त (Ram Gupta) (IV) अभिलेख (Record)

(V) समुद्रगुप्त (Samudra Gupta) (VI) सिक्के (Coins)

6-9 izxfr leh{kk gsrq iz”ukÙkj **(Answer to check your Progress) :-**

Hkkx ¼d½& (I) चन्द्रगुप्त (II) चन्द्रगुप्त द्वितीय (III) उज्जैन (IV) कुमार गुप्त प्रथम (महेन्द्रादित्य) (V) महादेवी चन्द्रदेवी (VI) हलदण्ड (VII) भागलपुर, सुल्तानगंज (VIII) स्कन्दगुप्त (Skand Gupta)

Hkkx ¼[k½& (I) हां (II) नहीं (III) नहीं (IV) हां (V) हां (VI) हां (VII) नहीं (VIII) नहीं (IX) हां (X) हां (XI) नहीं (XII) नहीं

4-10- lanHkZ xzUFk ,oa lgk;d v/;;u lkexzh **(References /Suggested Reading):-**

- f}tsन्द्रनारयण झा एवं कृश्ण मोहन श्रीमाली : प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम dk;kZUo; funs”kky; fnYyh ek/;e dk;kZUo;u funs”kky; fnYyh fo”ofo|ky;] uoEcj] 2018
- egs”k dqekj o.kZeky ¼ lfa{kIr bfrgkl &,u-lh-vkj-Vh- lkj] dkS’kYk lekx] ifCyds”ku] e[kth uxj] fnYyh] tUkojh] 2019
- LiSDVªe ifCyds”ku & lkekU; v/;;u] jkthho vfgj uxj] ubZ fnYyh
- Mk- fou; dqekj flag] dk;Zdkjh lEikndh] ;uhd lkekU; v/;;u] ;uhd ifCyds”kUl ubZ fnYyhA
- **jke”ारण भार्मा : भारत का प्राचीन इतिहास, ऑक्सबोर्ड युनिवर्सिटी प्रैस द्वारा भारत प्रकाि”kr &** 2@11 Hkkry] valkjh jksM] nfj;kxat] ubZ fnYyh] pkSFkk fgUnh laLdj.k] 2019
- **Manjeet Singh Sodhi : Themes in Indian History, Modern's Publishers, Railway Road, Jalandhar, first Edition : 2009**

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER- 1	
COURSE CODE : HIST. - 101	AUTHOR & UPTATED:
LESSON NO : 7	MR. MOHAN SINGH BALODA

gMlik lH;rk d LFky

(SITES OF HARPPAN CIVILIZATION)

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

7.1 अधिगम उद्देश्य(Learning Objective)

7.2 परिचय(Introduction)

7.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु(Main body of Text)

7.3.1 हड़प्पा सभ्यता के मुख केन्द्र (Main Centres of Harppan Civilization)

7.3.2 हड़प्पा सभ्यता के भौगोलिक विस्तार (Geographical Extent of Harppan Civilization)

7.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

7.4.1 हड़प्पा सभ्यताके स्थल(Site of Harppan Civilization)

7.4.2 हड़प्पा सभ्यत के स्थल का मानचित्र (Map of Harppan Sites)

7.5 प्रगति समीक्षा(Check Your Progress)

7.6 सारांश/सक्षिप्तिका(Summary)

7.7 संकेत–सूचक(Key-words)

7.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा(Self Assessment Test SAT)

7.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर(Answer to Check your Progress)

7.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ(References)

7-1 vf/kxe mn~n' ; **(Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- अधिगमकर्त्ताओंको हड़प्पा सभ्यता के भौगोलिक विस्तार से परिचित करवाना।
- विद्यार्थी हड़प्पा सभ्यता के स्थलों की पहचान कर सकेंगे।
- हड़प्पा सभ्यताके स्थलों से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुओं के बारे में वे आपस में चर्चा कर सकेंगे।
- विद्यार्थी हड़प्पा सभ्यताके स्थलों से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुओं के आधार पर उस काल के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन के संदर्भों में अनुमान लगा सकेंगे।
- भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र पर वे हड़प्पा सभ्यता के स्थलों को चिन्हित कर सकेंगे।

7-2 ifjp; **(Introduction)**

आद्य ऐतिहासिक काल में सिंधु घाटी क्षेत्र में जिस सभ्यता का विकास हुआ उसे सैंधव सभ्यता का नाम दिया है। यह सिंधु घाटी सभ्यता कांस्य युगीन सभ्यता थी। इसका निश्चित रूप से काल निर्धारण कठिन है। सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में फैला हुआ था। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि यह एक नगरीय सभ्यता थी। आरंभ में इस सभ्यता के नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं अतः इतिहासकारों ने इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता का नाम दिया, क्योंकि ये क्षेत्र सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं। परंतु बाद में भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े विस्तृत क्षेत्र में इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे। अतः इतिहासकारों द्वारा इस सभ्यता के मुख्य केंद्र के रूप में जिस नगर की खोज सबसे पहले हुई वह हड़प्पा थी। इस कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता नाम दिया। सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्स मैसन ने सर्वप्रथम हड़प्पा के टीले के बारे में जानकारी दी। इसके बाद 1921 ई. में रायबहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा नगर की खोज की तथा 1922 ई. में राखालदास बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ों की खोज की गई। विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह निश्चित किया गया है कि सिंधु घाटी सभ्यता अथवा हड़प्पा–सभ्यता 2500 ई. पूर्व में अपनी पूर्ण विकसित अवस्था में थी। जबकि भारत में विभिन्न साहित्यिक व पुरातात्विक स्त्रोतों के आधार पर वैदिककाल की तिथि 1500–600 ई. पूर्व के बीच निर्धारित होती है। अतः इस दृष्टि से हड़प्पा सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता थी।

इस सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार क्षेत्र में लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर में फैला था। उत्तर में भांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक तथा पश्चिम में सुत्कागेनडोर से लेकर पूर्व में

आलमगीर पुर (मेरठ) तक था। रेडियो कार्बन–14 पद्धति के अनुसार हड़प्पा सभ्यता की सर्वमान्त तिथि 2500–1750 ई. पूर्व मानी गयी है। यद्यपि सैंधव सभ्यता का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के बहुत बड़े क्षेत्र में पाया गया फिर भी ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह पता चलता है कि मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा जो आज पाकिस्तान में स्थित हैं महान व्यापारिक केन्द्र थे जहां विभिन्न देशों एवं जातियों के लोग आया तथा रहा करते थे। सैंधव सभ्यता के निर्माताओं या निवासियों के निर्धारण का महत्त्वपूर्ण स्रोत वहाँ से प्राप्त मानव कंकाल है जो बहुतायत में मोहनजोदड़ो नगर से पाये गये हैं। इसलिए मोहनजोदड़ो को 'मृतकों का टीला' भी कहा जाता है। इन मानव कंकालों के परीक्षण से पुरातत्वविदों ने यह निष्कर्ष निकाला कि सिंधु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थीं – भूमध्यसागरीय, प्रोटो–ऑस्ट्रेलॉपड, अल्पाइन तथा मंगोलॉयड। इनमें सबसे ज्यादा भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग थे। सैंधव सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता इसकी उन्नत नगर–नियोजन व्यवस्था थी। नगरों में ग्रीड पद्वति पर आधारित निवास स्थान, समकोण पर काटली सड़कें, ढकी नालियां, उन्नत जल–प्रबंधन व्यवस्था, समुचित जल–निकासी ये सभी बताते हैं कि इनकी संपूर्ण नगरीय व्यवस्था पर्यावरण के अनुकूल थी। इस अर्थ में हड़प्पा सभ्यता के नगर नियोजन के लिए एक दर्पण की तरह है।

हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि हड़प्पा समाज के परिवार में माता की प्रधानता रही होगी। अर्थात् हड़प्पा समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था। समाज में विद्वान (पुरोहित), योद्धा, व्यापारी व श्रमिक वर्ग आदि प्रायः हर वर्ग के लोग निवास करते थे। यहाँ के स्त्री पुरूष साज–सज्जा, मनोरंजन के शौकीन थे। यहाँ के लोग विभिन्न प्रकार के उद्योग–धंधे, माप–तौल प्रणाली, धातुओं को गलाने की कला, गृह–नक्षत्र, मौसम विज्ञान व सामान्य गणितीय प्रणाली की जानकारी रखते थे। इस प्रकार उनका आर्थिक जीवन उन्नत कृषि तथा व्यापार दोनों पर आधारित था। विभिन्न प्रकार के अनाज गेहूँ, जो, राई, मटर, तिल, सरसों, कपास, चावल आदि उगाते थे। सर्वप्रथम कपास उगाने का श्रेय हड़प्पावादी को ही दिया जाता है। ये लोग तरबूज, खरबूज, नारियल, अनार, नींबू, केला जैसे फलों से भी परिचित थे।

इनका प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ तथा जौ था। इस काल में कृषि की उन्नति के साथ–साथ पशुपालन के विकास का भी समुचित प्रमाण मिलता है।

हड़प्पावासियों के धार्मिक–सांस्कृतिक, परंपरा, विश्वास के बारे में भी इतिहासकारों ने प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर अनुमान लगाये हैं।

मातृदेवी, पशुपतिनाथ, प्रकृति–पूजा, सूर्योपासना, अग्नि व स्वास्तिक की पूजा के अस्तित्व में होने का अनुमान लगाया जाता है। वृषभ अर्थात् कूबड़वाला बैल व पीपल को ये लोग पूज्य मानते थे। विशाल स्नानागार का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठान के लिए करते होंगे ऐसा अनूमान लगाया जाता है। अग्निकुंड के साक्ष्य भी मिले हैं। इनका

पुनर्जन्म में विश्वास होने का अनुमान भी लगाया जाता है। पूर्ण शवाधान, आंशिक शवाधान एवं कलश शवाधान तीन प्रकार के दाह संस्कार अस्तित्व में होने के प्रमाण मिलते हैं। मृण्मूर्ति, पशुपति नाथ की मुहरें आदि के मिलने से यह पता चलता है कि हड़प्पावासी मूर्ति पूजा में भी विश्वास रखते थे।

हड़प्पा सभ्यता के राजनीतिक संगठन के संबंध में कोई स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। इतिहासकार हंटर के अनुसार, "मोहनजोदड़ों का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।"

मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार, "सिंधु सभ्यता के लोगों का शासन मध्यवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन था और उसमें धर्म की महत्ता थी।"

इस प्रकार हड़प्पा काल में राजतंत्रात्मक व जनतंत्रात्मक दोनों प्रकार के शासन पद्धति के होने का अनुमान लगाया जाता है। हड़प्पा की लिपि के भाव चित्रात्मक माना जाता है। जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका। इतिहास में इस सभ्यता का प्रमुख देन सुनियोजित नगर–व्यवस्था है तथा इस सभ्यता के बहुत सी परंपरायें बाद के कालों में भी निरंतर रही और हम इसे आज के समाज में भी परिवर्तन के साथ देखते हैं। अंततः इस प्रकार एक उन्नत सभ्यता अनेक कारणों से पतन की ओर उन्मुख होते हुए नगरीय सभ्तया से ग्रामीण सभ्यता में पहुँच गयी।

7-3 v/;k; d: e|[; fcUn| **(Main body of Text)**

7-3-1 gMlik lH;rk d: e|[; dUn| **(Main Centres of Harppan Civilization)**

हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी। भारतीय उपमहाद्वीप में त्रिभुजाकार स्वरूप में लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में इस सभ्यता का फैलाव पाया गया। परंतु इस सभ्यता के मुख्य केन्द्र जहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस सभ्यता के बारे में हमें जानकारी प्राप्त होती है उन मुख्य केन्द्रों का विवरण इस प्रकार है –

gMlik &सैंधव सभ्यता के जिस नगर की खोज सबसे पहले की गई वह नगर हड़प्पा है। इसलिए सैंधव सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से जानते है। हड़प्पा नगर की खोज 1921 ई. में रायबहादुर दयाराम साहनी के द्वारा किया गया। वर्तमान में यह नगर रावी नदी के बायें तट पर पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के भांटगामरी जिले में स्थित है। यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर स्टुअर्ट पिग्गर ने इसे अर्द्ध–औद्योगिक नगर कहा है। यहाँ के आबादी का एक बहुत बड़ा भाग व्यापार, उद्योग–धन्धों, तकनीकी उत्पाद व धर्म के कार्यों में संलग्न था। हड़प्पा में दो टीलों के अवशेष प्राप्त हुये हैं जिन्हें पूर्व में नगर टीला तथा पश्चिम में दुर्ग टीला के नाम से संबोधित किया गया है। इतिहासकार व्हीलर ने माउंड–ए–बी (Mound A-B) के नाम से इस दुर्ग टीला को चिन्हित किया है।

हड़प्पा के नागरिक आवास क्षेत्र में दक्षिण तरफ एक कब्रिस्तान का अवशेष मिला है जिसे पुरातत्वविदों ने समाधि आर–37 का नाम दिया है। यहीं से 1934 ई. में एक अन्य समाधि का पता चला जिसे समाधि (H) नाम दिया गया था।

स्टुअर्ट पिग्गर ने हड़प्पा व मोहनजोदड़ों को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी' कहा था।

ekgu tksnMks & मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ है – 'मृतकों का टीला'। यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत के नरकाना जिलें में सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित है। इसकी खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 ई. में की थी। मोहनजोदड़ों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल वृहद् स्नानागार (ग्रेट बाथ) को माना जाता है। जिसका सार्वजनिक रूप से धार्मिक अनुष्ठान के लिए प्रयोग किया जाता था। मोहनजोदड़ों को शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक थी। मोहनजोदड़ों नगर में तांबे और टिन को मिलाकर काँसे का निर्माण–उद्योग बड़े पैमाने पर चलता था। यहाँ से काँसे की नर्तकी की मूर्ति पायी गई है जिससे उसकी पुष्टि होती है। मोहनजोदड़ो के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग टीले को स्तूप टीला भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ पर कुषाण शासकों ने एक स्तूप का निर्माण करवाया। सबसे अधिक मानव–कंकाल के अवशेष मोहनजोदड़ो से ही मिले हैं। जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ की अधिकांश आबादी भूमध्यसागरीय प्रजाति की थी। वास्तव में सैंधव सभ्यता का सर्वाधिक प्रमुख केन्द्र हड़प्पा और फिर मोहनजोदड़ो नगर ही था। यहाँ से प्राप्त पशुपति शिव की मुहरों से पता चलता है कि हड़प्पावासी शिव की उपासना करते थे। यहाँ से प्राप्त अवशेष में सूती वस्त्र की मौजूदगी वस्त्र–उद्योग के विकास को दर्शाता है।

pUgqnMks & यह नगर भी मोहनजोदड़ो से लगभग 130 कि.मी. की दूरी पर पाकिस्तान में सिंध प्रांत में ही स्थित है। इसकी खोज सर्वप्रथम 1931 ई. में एन. गोपाल मजूमदार ने की थी तथा 1935 ई. में अर्नेस्ट मैके द्वारा यहाँ उत्खनन करवाया गया। गुड़ियों के निर्माण के कारखाना के लिए प्रसिद्ध चन्हूदड़ों में सौंदर्य–प्रसाधन लिपिस्टिक का पाया जाना यहाँ के लोगों का साज–सज्जा के प्रति विशिष्ट रूचि को दर्शाता है। चन्हूदड़ों से पूर्वोत्तर हड़प्पा संस्कृति के अवशेष भी मिले हैं। विभिन्न उद्योगों–मणिकारी, महुर बनने, भार–माप के बटखरे बनाने आदि से पता चलता है कि यह नगर हड़प्पा सभ्यता का एक औद्योगिक केंद्र था।

ykFky & हड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख बंदरगाह नगर के रूप में प्रसिद्ध लोथल बंदरगाह से पश्चिम एशिया को व्यापार होता था। इसकी खोज सर्वप्रथम डॉ. एस. आर. राव ने 1955 ई. में की थी। यह नगर गुजरात प्रांत के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित है। संपूर्ण लोथल नगर सुरक्षा के दृष्टिकोण से एक ही रक्षा प्राचीर से दुर्गीकृत किया गया था।

jk[khx<h & हरियाणा के हिसार जिले में स्थित यह नगर हड़प्पा सभ्यता का आज सबसे विस्तृत व बड़ा क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा है। इसकी खोज सर्वप्रथम 1969 ई. में सूरजभान ने की। इसके बाद 1997–99 ई. में अमरेंद्र नाथ के द्वारा भी इसका उत्खनन कार्य किया गया। वर्तमान समय में भी इसके उत्खनन का कार्य चल रहा है।

2012 ई. में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे विरासत–स्थलों की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

यहाँ से अन्नागार एवं रक्षा प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं। इसके अलावा यहाँ से तांबे के उपकरण तथा हड़प्पाई लिपि में अंकित एक मुहर भी मिली है।

dkyhcxk & हड़प्पा सभ्यता का यह नगर राजस्थान प्रांत के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बायें तट पर स्थित है। इसकी खोज सर्वप्रथम 1951 ई. में अमलानंद घोष द्वारा की गई तथा 1961 ई. में इसकी व्यापक खुदाई बी.बी. लाल और बी. के. थापर के द्वारा की गई। कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ "काले रंग की चूड़ियाँ" हैं। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा के विपरीत यहां से कच्ची ईंटों के प्रयोग का प्रमाण मिला है। इसके साथ ही यहां से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य भी मिले हैं। हड़प्पा सभ्यता के कालीबंगा नगर की सर्वप्रमुख विशेषता जुते हुए खेत का साक्ष्य का मिलना है। अग्निकुंड प्राप्त होने के अवशेष से यह पता चलता है कि हड़प्पावासी आज के समाज की भांति अग्नि की उपासना करते थे। कालीबंगा में तीनों ही प्रकार के अत्येष्टि संस्कार – पूर्ण समाधीकरण, आंशिक समाधीकरण एवं दाह–संस्कार मौजूद थे।

cukoyh & हड़प्पा सभ्यता का महत्वपूर्ण नगर बनावली की खुदाई का कार्य 1973–74 ई. में रवीन्द्र सिंह विष्ट के नेतृत्व में की गयी। यहाँ से प्राक्, विकसित व उत्तर तीनों ही संस्कृति के सैंधव सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुये है। यहाँ की नगर–योजना शतरंज के विसात की भांति ग्रीड पद्धति पर आधारित थी। सैंधव सभ्यता के नगर की सर्वप्रमुख विशेषता जल विकास प्रणाली का यहाँ अभाव दिखाई देता है।

बनावली से मिट्टी के बर्तन, गोलियाँ, मनके, तांबे के बाणाग्र, हल की आकृति के खिलौने, मनके आदि के अवशेष मिले हैं। अनाज में यहाँ से अधिक मात्रा में जौ मिला है। हड़प्पा सभ्यता का यह बनावली नगर हरियाण के हिसार जिले में स्थित है।

/kkykohjk & हड़प्पा सभ्यता में उन्नत जल–प्रबंधन के लिए प्रसिद्ध यह नगर हड़प्पा सभ्यता के सबसे विस्तृत व विशाल क्षेत्रों में से एक है। यह नगर गुजरात के कच्छ में स्थित है। इसकी खोज 1967 ई. में जे. पी. जोशी ने की थी। धौलावीरा हड़प्पा सभ्यता का एकमात्र स्थल है जहाँ से खेल का मैदान अर्थात् स्टेडियम मिला है। हड़प्पा सभ्यता के इस नगर का नगर–नियोजन बड़ी ही सुंदर तरीके से तीन भागों में विभाजित था। ये भाग थे – दुर्ग भाग, मध्यम नगर तथा निचला नगर।

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केंद्र के रूप में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ों, लोथल, राखीगढ़ी, कालीबंगा, बनावली, धौलावीरा प्रमुख नगर हैं जिनके माध्यम से इस सभ्यता का सम्पूर्ण चित्र खींचा जाता है। फिर भी इन नगरों के अलावा गुजरात में सुरकोटदा, रंगपुर, रोजरी, प्रभासपाटन का भी नाम आता है। भारत के पंजाब प्रांत में सतलुज नदी के किनारे स्थित रोपड़ का नाम भी हड़प्पा सभ्यता के नगर के प्रमुख रूप से लिया जाता है। इसकी खोज यज्ञदत्त शर्मा ने 1953–56 ई. में की। यहाँ से प्राप्त वस्तुएं है – भृद्माण्ड, आभूषण, चर्ट, फलक एवं तांबे की कुल्हाड़ियां। पाकिस्तान में हड़प्पा, मोहनजोदड़ों व चन्हूदड़ों के अतिरिक्त बालाकोट, कोटदीजी, सुरकांगेनडोर का भी नाम आता है।

7-3-2 gM+lik lH;rk dk Hkkxksfyd foLrkj

भारतीय उपमहाद्वीप में विस्तृत हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। सम्पूर्ण क्षेत्र अपने त्रिभुजाकार स्वरूप में 12,99,600 वर्ग कि.मी. अर्थात् लगभग 13 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला हुआ था। सिंधुघाटी सभ्यता जिसे बाद में हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना गया कांस्ययुगीन सभ्यता थी। इसका उद्‌भव ताम्रपाषाण काल में भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ था और इसका विस्तार भारत के अलावा पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में भी था। सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्स मैसन ने सैंधव सभ्यता का पता लगाया। आरंभ में इस सभ्यता के हड़प्पा और मोहनजोदडों की खुदाई की गई थी। यहाँ से मिले प्रमाण के आधार पर इसे नगरीय सभ्यता बताया और इसका नाम दिया सिंधु घाटी सभ्यता क्योंकि ये क्षेत्र सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं, पर बाद में गुजरात प्रांत के लोथल, रंगपुर, सरकोटदा, धौलावीरा, पंजाब प्रांत के रोपड़, राजस्थान प्रांत के कालीबंगा, हरियाणा प्रांत के बनावली, राखीगढ़ी, मिताथला आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे। परंतु इतने बड़े क्षेत्र में फैले सैंधव सभ्यता का प्रमुख केंद्र हड़प्पा होने के कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता का नाम दिया गया। आज सैंधव सभ्यता को इसी हड़प्पा सभ्यता के नाम पर एक नागरीय सभ्यता के रूप का अध्ययन करते है।

सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक था। इसके भौगोलिक विस्तार को निम्न रेखाचित्र द्वारा दर्शाया जा सकता है।

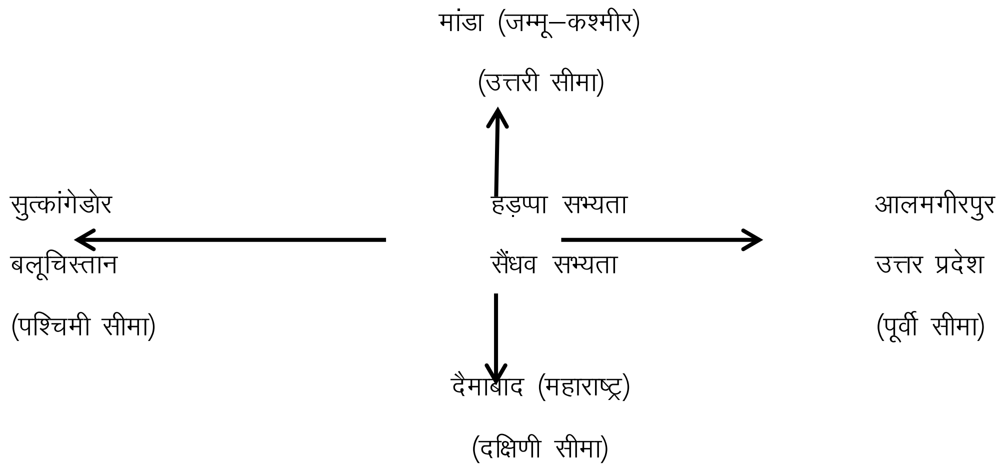

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हड़प्पा इस सभ्यता का सर्वप्रथम खोजा गया नगर था। हड़प्पा सभ्यता के विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र में यह नगर सर्वप्रथम नगर था। जिनके भवनों में पक्की एवं कच्ची दोनों प्रकार के ईंटों का प्रयोग किया गया था। हड़प्पा नगर रावी नदी के बायें तट पर सुनियोजित नगर के रूप में फैला था।

जबकि पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी क्षेत्र में मोहनजोदड़ों, चन्हूदड़ों, कोटदीजी, अमरी, अलीमुराद थे। सभी हड़प्पा सभ्यता के नगर अवस्थित थे।

इसके अलावा हड़प्पा सभ्यता के पश्चिमी छोर पर पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में सुत्कांगेडोर एक बंदरगाह नगर के रूप में था। यहाँ से हड़प्पा सभ्यता की विकसित अवस्था के अवशेष उपलब्ध हुए हैं। सुत्कांगेडोर की खोज 1927 में आरेल स्टीन ने की थी।

आगे पाकिस्तान के इसी बलूचिस्तान प्रात में 1979–81 के बीच जार्ज एफ डेल्स ने एक और बंदरगाह नगर बालाकोट की खोज की। यह नगर उस समय सीप उद्योग के लिए प्रसिद्ध था।

हड़प्पा सभ्यता की उत्तरी सीमा पर स्थित जम्मू–कश्मीर में स्थित मांडा से प्राक् सैंधव, विकसित सैंधव तथा उत्तरकालीन सैंधव तीनों स्तर के संस्कृति प्राप्त हुये हैं। चेनाव नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित माण्डा की खोज 1982 में जे.पी. जोशी ने की थी।

हड़प्पा सभ्यता के सबसे दक्षिण में स्थित दैमाबाद आज के महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में प्रवरा नदी के किनारे स्थित है।

उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले में हिण्डन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर को हड़प्पा सभ्यता की पूर्वी सीमा के रूप में निर्धारित किया गया है। 1958 ई. में इसकी खोज यज्ञदत्त शर्मा ने की थी। यहाँ से प्राप्त अवशेषों से यह अनुमान लगाया जाता है कि इसका विकास हड़प्पा सभ्यता के अंतिम चरण में हुआ था। उत्तर प्रदेश में हड़प्पा सभ्यता के भौगोलिक विस्तार के अंतर्गत पूर्वी सीमा के रूप में आलमगीरपुर के अलावा सहारनपुर जिले के हुलास में भी इस सभ्यता के उपस्थिति का प्रमाण प्राप्त होता है।

हड़प्पा सभ्यता का भौगोलिक विस्तार गुजरात प्रांत के एक बड़े क्षेत्र में लोथल, सुटकोलड़ा, धौलावीरा, रंगपुर रोजदी, कुन्तासी, देसलपुर आदि नगरों के रूप में विस्तृत था। इनमें लोथल हड़प्पा–सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह नगर था। हड़प्पा सभ्यता के गुजरात प्रांत में स्थित धौलावीरा नगर को अब तक प्राप्त इस सभ्यता के सभी नगरों में सबसे विस्तृत, व्यापक व बड़े नगर के रूप में जाना जाता है।

भारत के उत्तर–पश्चिम में स्थित हरियाणा प्रांत में इस सभ्यता का भौगोलिक विस्तार भगवानपुरा, राखीगढ़ी, बनावली, मिताथल आदि स्थलों पर पाये गये हैं। हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले में सरस्वती नदी के किनारे पर स्थित भगवानपुरा से हड़प्पा सभ्यता के पतनोन्मुख काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता का उत्खनन जे.पी. जोशी के नेतृत्व में करवाया गया था।

राजस्थान प्रांत में हड़पा सभ्यता के भौगोलिक विस्तार के अंतर्गत इस सभ्यता की उपस्थिति का प्रमाण काले रंग की चूड़ियों के नाम से प्रसिद्ध कालीबंगा नगर रहा। यह नगर गंगानगर जिले में घग्घर नदी के किनारे इस सभ्यता का प्रमुख नगर था।

पंजाब प्रांत में हड़प्पा सभ्यता का अवशेष रोपड़ नगर से प्राप्त होता है। सतलुज के किनारे इस अवस्थित इस नगर की खोज 1953–56 मे यज्ञदत्त शर्मा ने की थी।

7-4 v/;k; dk vkxs dk eq[; Hkkx (Further Main body of Text)

7-4-1 gMIik lH;rk ds LFky (Sites of Harppan Civilization)

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल निम्नलिखित है।

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मांटगोमती जिले में रावी नदी के बायें तट पर स्थित है। इस नगर के उत्खनन का कार्य दयाराम साहनी ने 1926–27 से 1933–34 तक माधोस्वरूप वत्स के निर्देशन में किया था। हड़प्पा नगर से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ इस प्रकार हैं – कब्रिस्तान आर–37 या समाधि आर–37, समाधि एच (H), शंख का बना बैल, पीतल का बना इक्का, अन्नागार, स्वास्तिक एवं चक्र के साक्ष्य, उर्वरता की देवी के रूप में स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा, गेहूँ व जौ के दाने, सीपी का पैमाना, शवाधान पेटिका, श्रमिक आवास इत्यादि।

ekgu tksnMks & पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित है। इसकी खोज 1921 ई. में राखालदास बनर्जी ने की थी। मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ है – मृतकों को टीला। यहाँ से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ है – वृहद् स्नानागार (ग्रेट बांध, मातृदेवी की मूर्ति, काँसे की नर्तकी की मूर्ति, मुद्रा पर अंकित पशुपति नाथ की मूर्ति, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खंड, कुंभकारों के 6 भट्ठों के अवशेष, मिट्टी का तराजू, गले हुए तांबे का ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी, सबसे बड़ी ईंट का साक्ष्य, विशाल अन्नागार आदि।

pUgnMks & पाकिस्तान के सिंध प्रांत में ही मोहनजोदड़ों के दक्षिण में यह नगर स्थित हैं। इसकी खोज अर्नेस्ट मैके ने की थी। चन्हूदड़ों से प्राप्त अवशेष वस्तुओं में शामिल हैं – गुडियां निर्माण का कारखाना, मनके बनाने का कारखाना, सौन्दर्य प्रसाधन में प्रयुक्त लिपिस्टिक, अंलकृत हाथी, वक्राकार ईंटें, कंघा, चार पहियों वाली गाड़ी आदि।

dkyhcaxk & कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ – काले रंग की चूड़ियाँ। यह राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित है। इसकी खोज बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर ने की थी। यहाँ से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ है – अग्निवेदी, जुते हुए खेत के साक्ष्य, काँच व मिट्टी की चुड़ियाँ, सिलबट्टा, सूती कपड़े की छाप, बेलनाकार मुहरें, माणिक्य एवं मिट्टी के मनके, मिट्टी के खिलौने, अलंकृत ईंटे आदि।

ykFky & यह नगर गुजरात के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज एस. आर. राव ने की थी। इसे हड़प्पा सभ्यता के प्रसिद्ध बंदरगाह नगर के रूप में जाना जाता है। लोथल नगर से प्राप्त

अवशेष एवं वस्तुएँ इस प्रकार है – बंदरगाह, धान (चावल), बाजरा, फारस की मुहर, मनका–उद्योग, छोटा दिशा मापक यंत्र, बाट तथा माप, तांबे का कुत्ता आदि।

l|jdkVnk & हड़प्पा–सभ्यता का यह स्थल गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। इसकी खोज 1964 ई. में जगपति जोशी ने की थी। यहाँ से प्राप्त अवशेषों में घोड़े की अस्थियाँ एवं एक विशेष प्रकार का कब्रगाह आदि है।

cukoyh & हरियाणा प्रांत के हिसार जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1973 ई. में आर.एस. विष्ट ने की थी। यहाँ से हड़प्पा–पूर्व एवं हड़प्पाकालीन दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।

यहाँ से प्राप्त अवशेषों में शामिल है – हल की आकृति वाले मिट्टी के खिलौने, जौ, तांबे के बाणाग्र आदि। हड़प्पा सभ्यता के नगर की सर्वप्रमुख विशेषता उन्नत जल–निकास प्रणाली का यहाँ अभाव था।

jk[khx<h &हरियाणा के हिसार जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1969 में सूरजभान ने की थी। इसका उत्खनन वर्तमान में भी चल रहा है। गुजरात के धौलावीरा के बाद हड़प्पा सभ्यता के सबसे बड़े नगर के रूप में इसकी पहचान की जा रही है। यहाँ से अन्नागार एवं रक्षा प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं।

jkiM & पंजाब प्रांत के रोपड़ जिले में सतलुज नदी के किनारे स्थित है। यहाँ पर हड़प्पा पूर्व एवं हड़प्प कालीन संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं। इस स्थल की खुदाई 1953–56 में यज्ञदत्त शर्मा द्वारा की गई। यहाँ से प्राप्त अवशेषों से यह अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के मकान पत्थर एवं मिट्टी से बनाये गये थे। हड़प्पा–सभ्यता के इस नगर से मिट्टी के बर्तन, आभूषण, चाट, फलक एवं तांबे की कुल्हाड़ी आदि महत्वपूर्ण वस्तुएँ प्राप्त हुए हैं।

j|xi|j & गुजरात प्रांत के काठियावाड़ प्रायद्वीप में हड़प्पा सभ्यता का यह नगर मादर नदी के समीप स्थित है। प्राक् हड़प्पा सभ्यता के अवशेष की उपस्थिति का अनुमान यहाँ से प्राप्त अवशेषों के आधार पर लगाया जाता है। इसके साथ ही उत्तरोतर हड़प्पा सभ्यता के साक्ष्य भी यहाँ मिलते हैं। इस स्थल की खुदाई 1953–54 में रंगनाथ राव द्वारा की गई। यहाँ से प्राप्त वस्तुओं में कच्ची ईंटों के दुर्ग, नालियां, मृद्माण्ड, बाँट, पत्थर के फलक, धान की भूसी के ढ़ेर आदि महत्त्वपूर्ण है।

vkyexhji|j & यह स्थल हड़प्पा–सभ्यता के सबसे पूर्वी छोर पर स्थित है। इसकी खोज 1958 में यज्ञदत्त शर्मा द्वारा की गयी। यह उत्तरप्रदेश राज्य के मेरठ जिले में यमुना की सहायक नदी हिण्डन नदी पर स्थित है। यह स्थल हड़प्पा सभ्यता की अंतिम अवस्था को सूचित करता है। यहाँ से मिट्टी के बर्तन, मनके एवं पिण्ड मिले हैं।

7.4.2 हड़प्पा सभ्यत के स्थल का मानचित्र (Map of Harppan Sites)

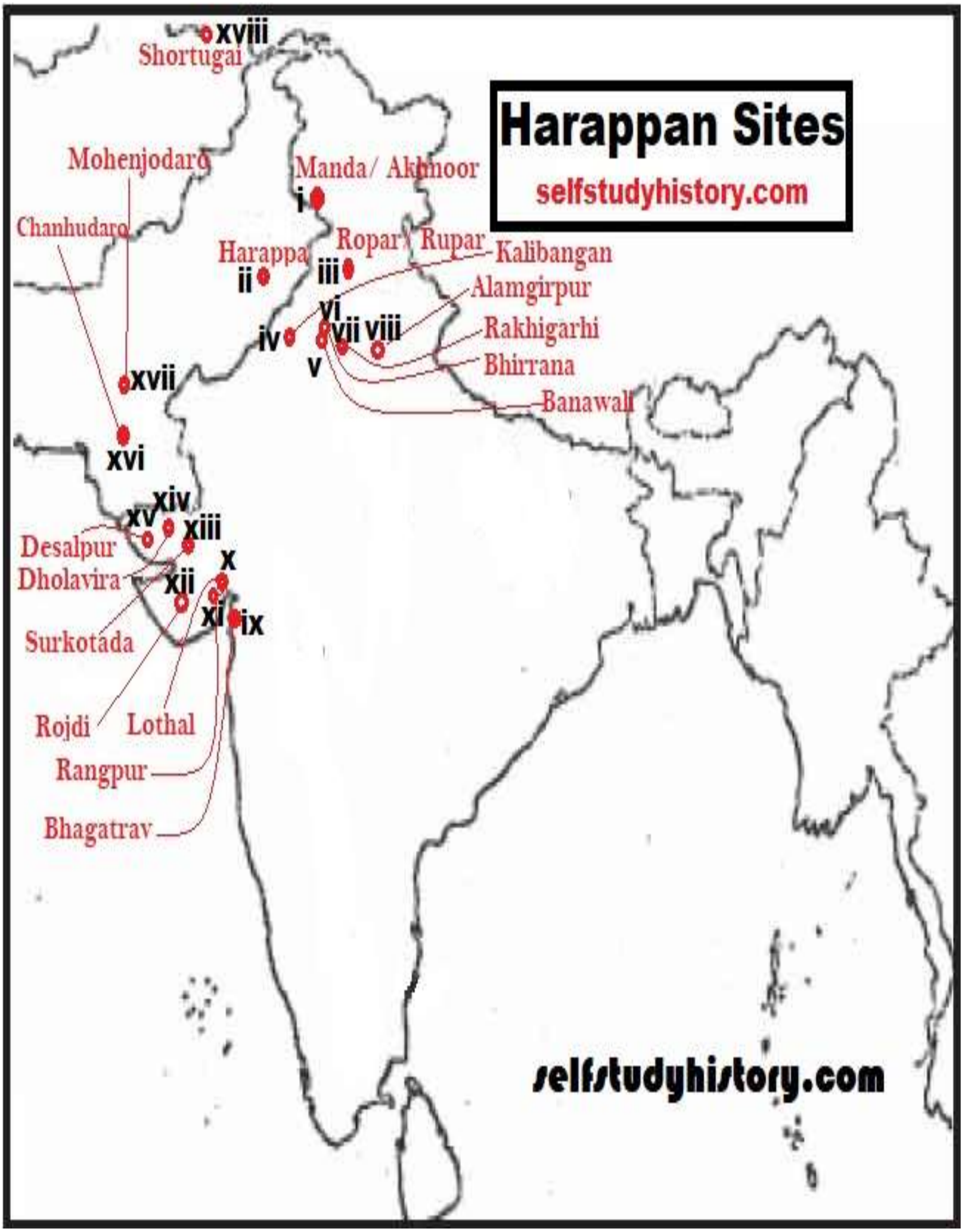

Source:-selfstudyhistory.com

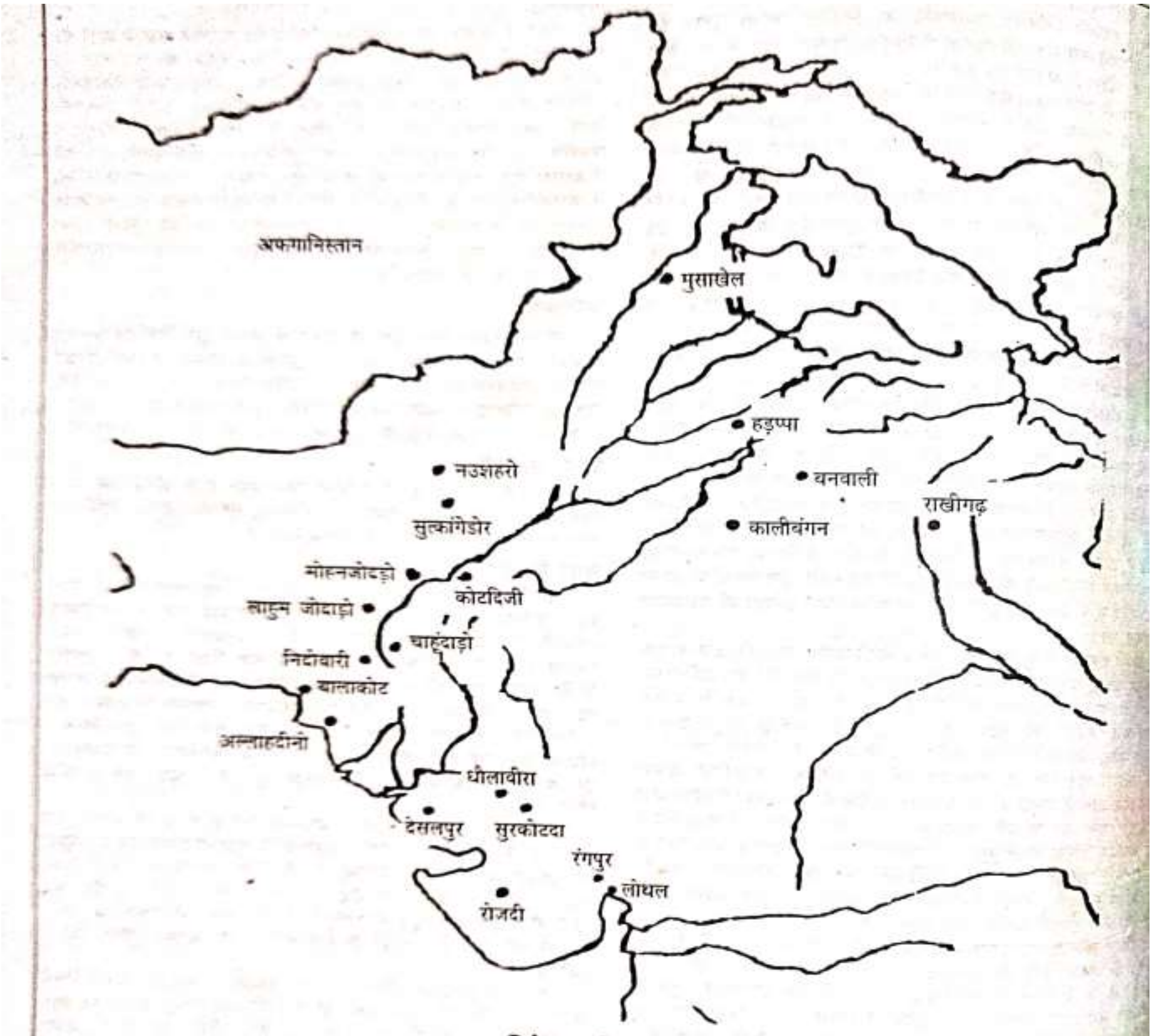

सिंधुघाटी सभ्यता

Source: Samanya Aadhyan spectrum publication delhi p16

7-5 Áxfr leh{kk (Check your Progress):

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।(Fill in the blanks)

(i) सैंधव सभ्यता के लोग .... धातु से परिचित नहीं थे।

(ii) हड़प्पा सभ्यता के .... और .... स्थानों से यज्ञीय वेदियां प्राप्त होती है।

(iii) मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत .... थी।

(iv) मोहनजोदड़ों का सबसे महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल .... को माना जाता है।

(v) मैसोपोटामियाई अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र का प्राचीन नाम .... पाया जाता है।

(vi) हड़प्पा संस्कृति .... काल से संबंधित मानी जाती है।

(vii) ऋग्वेद में हड़प्पा सभ्यता को .... कहा गया।

(viii) हड़प्पा सभ्यता के अन्तर्गत केवल .... स्थान से नक्काशीदार ईंटों के प्रमाण मिले है।

(ix) बुने हुए सूती कपडे का एक टुकड़ा हड़प्पा सभ्यता के .... स्थल से मिला है।

(x) हड़प्पा सभ्यता के लगभग सभी मकान .... आकार में पाए गए हैं।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न :–

(True-False Statements bases questions)

(i) स्वतंत्रता के पश्चात् हड़प्पा सभ्यता के सर्वाधिक स्थल गुजरात में खोजे गए हैं। (   )

(ii) हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त मिट्टी से निर्मित मृण्मूर्तियों में सर्वाधिक नारी मृण्मूर्तियां मिली है। (   )

(iii) हड़प्पावासी गाय को महत्त्वपूर्ण मानते थे। (   )

(iv) हड़प्पा सभ्यता में सड़कों का निर्माण मिट्टी से किया गया था, किंतु सड़कों के दोनों और नालियों का निर्माण पक्की ईंटों द्वारा किया गया है। (   )

(v) हड़प्पा सभ्यता का प्रमुख बंदरगाह नगर लोथल था। जिस पर मिस्र और मेसोपोटामिया से जहाज आते है। (   )

(vi) मोहनजोदड़ों से प्राप्त बृहत्स्नानागार को इतिहासकार मार्शल ने तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण बताया। (   )

(vii) हड़प्पा–सभ्यता की मुहरें बेलनाकार, वर्गाकार, आयताकार एवं वृत्ताकार रूप में मिली हैं। (   )

(viii) हड़प्पा सभ्यता का मोहनजोदडों नगर रावी के बायें तट पर स्थित था। (   )

(ix) हड़प्पा–सभ्यता का राखीगड़ी स्थल गुजरात में स्थित है। (   )

(x) हड़प्पाई लिपि को भाव–चित्रात्मक लिपि के रूप में माना जाता है जिसको अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। (   )

7-6 lkjk'k@ lf{kflrdk**(Summary):-**

- मोहनजोदड़ों से प्राप्त बृहत्स्नानागार की खोज सर्वप्रथम जॉन मार्शल ने की थी।
- स्वास्तिक चिन्ह के अवशेष सर्वप्रथम हड़प्पा सभ्यता से ही प्राप्त होते हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है ये लोग सूर्योपासक थे।
- पहली बार कपास उगाने का श्रेय हड़प्पावासियों को है।
- हड़प्पा–सभ्यता के लोगों की मुख्य फसल गेहूँ व जौ थी।
- हड़प्पावासी जौ की दो किस्में व गेहूँ की तीन किस्में उगाते थे।
- चावल (धान) उत्पादन के लक्ष्य लोथल एवं रंगपुर से प्राप्त होते हैं।
- हड़प्पा–सभ्यता के अधिकांश मुहरों का निर्माण सेलखड़ी (Stealite) से हुआ है।
- इसके अलावा कुछ मुहरें काचली मिट्टी (Faience) गोमेद, चर्ट और मिट्टी की बनी हुई भी प्राप्त हुई है।
- अधिकांश मुहरों पर संक्षिप्त लेख, एक श्रृंगी सांड, भैंस, बाघ, गैंडा, हिरन, बकरी एवं हाथी के चित्र उकेरे गये है।
- मुहरों पर सर्वाधिक उत्कीर्ण आकृतियां एक श्रृंगी सांड़ की मिली है।
- हड़प्पा–सभ्यता से प्राप्त मृण्मूर्तियों का निर्माण मिट्टी से किया गया है।
- हड़प्पा–सभ्यता से प्राप्त मृण्मूर्तियों पर मानव के अतिरिक्त पशु पक्षियों में बैल, भैंसा, भेड़ा, बकरा, बाघ, सुअर, गैंडा, भागू, बंदर, मोर, तोता, बतख एवं कबूतर की मृण्मूर्तियां मिली हैं।
- धातु की बनी मूर्तियां अब तक मोहनजोदड़ों, चन्हूदड़ो लोथल एवं कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- मोहनजोदड़ों से घोड़े के दांत, लोथल से घोड़े की लघु मृण्मूर्तियों एवं सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अवशेष मिले हैं।
- हड़प्पाकालीन पुरास्थलों में कालीबंगा एवं लोथल से हवन कुण्ड के साक्ष्य मिले हैं।
- ऋग्वेद को हड़प्पा सभ्यता को हरियूपिया कहा गया है।
- सिंधु क्षेत्र का प्राचीन नाम 'मेलुहा' मेसोपोटामिया में मिलता है।
- मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुहर पर पशुपति शिव की आकृति बनी है।
- नाव का चित्र वाला मुहर मोहनजोदड़ों एवं लोथल से मिला है।
- इतिहासकार मार्शल ने बृहत्स्नानागार को तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण बताया है।
- हड़प्पा की लिपि–भाव–चित्रात्मक लिपि है।

- हड़प्पाई लिपि का सर्वाधिक पुराना नमूना 1853 ई. में मिला था।
- हड़प्पाई लिपि में लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं।
- हड़प्पाई लिपि खेलखड़ी की आयताकार मुहरों, तांबे की गुटिकाओं आदि पर मिलते हैं।
- हड़प्पा से आटा पीसने की चक्कियों के अवशेष मिले है।
- सर जॉन हटन सिंधु सभ्यता के निर्माता के रूप में द्रविड़ को माना है और इनकी पहचान ऋग्वेद में वर्णित अनार्थों से की है।
- लिंग पूजा का प्रमाण मोहनजोदड़ों से प्राप्त होता है।
- लोथल से दो जलपोत प्राप्त हुए हैं।
- सैंधव सभ्यता के मुद्रा अधिकांशतः सेलखड़ी के बने होते थे।
- हड़प्पा की प्रमाणित मुद्रा चौकोट अथवा आयताकार होती थी।
- हड़प्पा के टीले के बारे में सबसे पहले 1826 ई. में चार्ल्स मैसन ने बताया।
- सुत्कागेनडोर दाशक नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।
- सोत्काकोह शादीकौर नदी की घाटी में सुत्कागेनडोर से पूर्व में स्थित है।
- मोहनजोदड़ो का अर्थ सिंधी भाषा में 'मृतकों का टीला' है।
- प्राक् हड़प्पाकालीन मृद्मांड सर्वप्रथम सोधी नामक स्थान से प्राप्त हुआ।
- हड़प्पाकालीन शहरों एवं नगरों को आयताकार खण्डों में बांटा गया था।
- उत्तर हड़प्पा अवस्था काल के चिन्ह रंगपुर और रोजदी (गुजरात) से प्राप्त होते हैं।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी –

  अनाज रखने का कोठार अर्थात् अन्नागार
- प्राक् हड़प्पा अवस्था के कूंड (हलरेखा) का पता कालीबंगा से प्राप्त अवशेष से चलता है।
- हड़प्पाई लोग लकड़ी के बने हल का प्रयोग करते थे।
- हड़प्पाई लोग फसल काटने के लिए पत्थर के बने हंसिये का प्रयोग करते थे।
- कपास को यूनान के लोग सिंडन नाम से पुकारते थे।
- मेसोपोटामिया के पुरालेखों में दिलमुन व माकन दो मध्यवर्ती व्यापार–केंद्रों का उल्लेख मिलता है।
- हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले के भगवानपुरा स्थल से उत्तर हड़प्पाई अवस्था में पकाई हुई ईंटों के प्रमाण मिले है।

- भारत में सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल था – धौलावीरा (गुजरात)
- एकमात्र हड़प्पाकालीन स्थल जो त्रि–स्तरीय (प्राक्, समकालीन व उत्तरकालीन) था वह धोलावीरा है।
- हड़प्पाकाल की ज्यादातर मुहरों की आकृति थी –वर्गाकार
- इतिहासकार 'पिग्गट' ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को "एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वां राजधानियां" कहा है।
- इतिहासकार सर जान मार्शल, गार्डन चाइल्ड एवं ह्वीलर का मानना है कि सैंधव सभ्यता की उत्पत्ति मैसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हुई थी।
- सैंधव सभ्यता के लोग लोहा धातु से परिचित नहीं थे।
- मोहनजोदड़ों के निवासी अधिकांशतः भूमध्यसागरीय जाति के थे।
- अधिकांश विद्वानों के अनुसार सैंधव सभ्यता के निर्माता द्रविड़ भाषा से संबंधित थे।
- सैंधव सभ्यता में मोहनजोदड़ों को स्तूप टीला की संज्ञा दी गई है क्योंकि इस स्थल से कुषाणकालीन स्तूप प्राप्त हुआ है।
- सैंधव संस्कृति में प्रायः सभी मकान पीछे की गली में खुलते थे परंतु इसका एक अपवाद लोथल नगर था।
- पुरातत्वविदों के अनुसार हड़प्पा–सभ्यता का मोहनजोदड़ों स्थल सात बार उजड़ कर बसा था।
- हड़प्पा–सभ्यता का वह स्थल जहाँ से एक भी मुहर प्राप्त नहीं हुई है वह है – आलमगीरपुर

l¡/ko lH;rk d¢ iru l¢ tqM+s bfrgkldkjk¢a dk er &

- "प्रशासनिक शिथिलता के कारण इस सभ्यता का विनाश हुआ" – जॉन मार्शल
- "जलवायु में हुए परिवर्तन के कारण यह सभ्यता नष्ट हुई" – ऑरेन स्टाइन
- "सिंधु सभ्यता बाढ़ के कारण नष्ट हुई।" – अर्नेस्ट मैके एवं जॉन मार्शल
- "सैंधव सभ्यता विदेशी आक्रमण व आर्यों के आक्रमण से नष्ट हुई।" – गार्डन चाइल्ड एवं ह्वीलर
- "मोहनजोदड़ों के लोगों की आग लगाकर हत्या कर दी गयी।" – डी.डी. कौशाम्बी
- "भू–तात्विक परिवर्तन के कारण यह सभ्यता नष्ट हुई।" – एम. आर. साहनी, राइक्स एवं डेल्स
- सैंधववासी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- हड़प्पावासी मातृदेवी, पशुपतिनाथ (रूद्र देवता) लिंग योनि, सूर्य, अग्नि आदि की पूजा करते थे।
- इस सभ्यता के लोग भूत–प्रेत, तंत्र–मंत्र, जादू–टोने आदि में विश्वास करते थे।
- इतिहासकार हंटर के अनुसार, "मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।"

- ह्वीलर के अनुसार, "सिन्धु सभ्यता के लोगों का शासन मध्यवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन था और उसमें धर्म की महत्ता थी।

7-7 ladsr&lwpd (Key-words)

- भारतीय उपमहाद्वीप – भारतीय उपमहाद्वीप Indian Sub-continent के अंतर्गत भारत, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और पाकिस्तान सहित कुल पाँच देश आते हैं।
- आद्य ऐतिहासिक काल (Proto-Historic Period) – इतिहास के जिस काल का लिखित विवरण तो उपलब्ध है, किन्तु उसे पढ़ा नहीं जा सका उसे आद्य ऐतिहासिक काल कहते हैं।
- वृषभ – कूबड़ वाला बैल अर्थात् सांड़
- राजतंत्रात्मक – राजा की प्रधानता वाला शासन।
- गणतंत्रात्मक – गण अर्थात् लोगों के संगठित–तंत्र द्वारा शासन।
- जनतंत्रात्मक – जनता के प्रतिनिधि का शासन।
- उत्खनन – खुदाई
- सौंदर्य–प्रसाधन – साज–सज्जा से संबंधित सामग्री।
- अन्नागार – अन्न भंडार गृह अर्थात् अनाज रखने का कोठार

7-8Lo&eY;kadu dsfy, ijh{kk (Self Assessment Test SAT)

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई गई मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण नहीं हुआ है ?

(क) गाय (ख) हाथी (ग) गैंडा (घ) बाघ

(ii) निम्नलिखित में से कौन–सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है ?

(क) सिंकदरिया (ख) लोथल (ग) महास्थानगढ (घ) नागपट्टनम

(iii) हड़प्पा–सभ्यता में उन्नत जल–प्रबंधन का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है ?

(क) आलमगीरपुर (ख) धौलावीरा (ग) कालीबंगा (घ)लोथल

(iv) हड़प्पा–सभ्यता की मुद्राएं किस से निर्मित की जाती थी ?

(क) तांबा (ख) सोना (ग) मिट्टी (घ)कांस्य

(v) हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता निम्न में से कौन सी है ?

(क) स्नानागार (ख) धार्मिक स्थल (ग) नगर नियोजन (घ) अन्नागार

(vi) सैन्धव निवासियों का प्रिय पशु कौन–सा था ?

(क) कुत्ता (ख) सांड़ (ग) घोड़ा (घ) ऊंट

(vii) अब तक सिंधु सभ्यता में कुल कितनी फसलों के उगाये जाने का संकेत मिल चुका है ?

(क) 3 (ख) 5 (ग) 9 (घ)11

(viii) उत्तरोत्तर हड़प्पा संस्कृति के अवशेष कहां से मिलते हैं ?

(क) रंगपुर (ख) कालीबंगा (ग) लोथल (घ)रोपड़

(ix) हड़प्पा सभ्यता से संबंधित तथ्यों के संदर्भ में सूची–1 को सूची–II से सुमेलित कीजिए।

सूची–1	सूची–II
(अ) महत्त्वपूर्ण पशु	1. स्नानागार
(ब) महत्त्वपूर्ण देवी	2. वृषभ
(स) महत्त्वपूर्ण वृक्ष	3. मातृदेवी
(द) महत्त्वपूर्ण भवन	4. पीपल

		अ	ब	स	द
(क) कुषाण		1	3	2	4
(ख) गुप्त	2	3	4	1	
(ग) शक	2	4	3	1	
(घ) सातवाहन		2	1	4	3

(x) मोहनजोदड़ों से प्राप्त विशाल स्नानागार के लिए जल की आपूर्ति कहां से होती थी ?

(क) नहर (ख) झील (ग) तालाब (घ)कुआँ

भाग (ख) (Part-B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(i) हड़प्पा सभ्यता के मुख केन्द्रों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(Describe the main centres of Harappan Civilization in details.)

(ii) हड़प्पा–सभ्यता के भौगोलिक विस्तार का वर्णन करें।

(Describe the geographical Extention of Harappan Civilization.)

(iii) हड़प्पा सभ्यता की स्थलों की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

(Describe the main features of places of Harappan Civilization.)

(iv) हड़प्पा सभ्यता के महत्त्वपूर्ण स्थलों को दिखाने के लिए मानचित्र पर रूपरेखा को चिन्हित कीजिए।

(Mark/Label on the outline map of the world Show/Locate important sites of Harappan Civilization).

भाग (ग) (Part-C) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) विशाल स्नानागार(The Great Bath)

(ii) हड़प्पा सभ्यता का भौगोलिक विस्तार (Geographical Extention of Harrappan Civilization)

(iii) हड़प्पा–सभ्यता का बंदरगाह नगर लोथल (Port City of Harappan Civilization Lothal)

(iv) हड़प्पाई लिपि (Harappan-Script)

(v) धौलावीरा (Dhholavira)

(vi) अन्नागार(The grainary-house)

(vii) मोहनजोदड़ों (Mohanjodro)

(viii) नगर–नियोजन (Town-Planning)

(ix) हड़प्पावासियों के धार्मिक–विश्वास (Religious faith of Harappan's People)

(x) राखीगढ़ी (Rakhigari)

7-9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress):-

7.5 भाग (क) के उत्तर :–(i) लोहा (ii) लोथल और कालीबंगा (iii) अन्नागार (iv) विशाल स्नानागार (v) मेलुहा (vi) कांस्य (vii) हरियूपिया (viii)कालीबंगा(ix) मोहनजोदड़ों (x) आयताकार

7.5 भाग (ख) का उत्तरः–(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य(iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य (vii) सत्य (viii)असत्य(ix) असत्य(x) सत्य

7.8 भाग (क) का उत्तरः–(i) क(ii) ख (iii) ख (iv) ग(v) ग (vi) ख (vii) ग (viii)क (ix) ख(x) घ

7-10 lgk;d lnHk xFk (References):-

- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय संस्करण) दृष्टि पब्लिकेशन, 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
- स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन–सामान्य अध्ययन, राजीव अहीर, नई दिल्ली।
- यूनीक सामान्य अध्ययन – डॉ. विनय कुमार सिंह, यूनिक पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- रामशरण शर्मा – भारत का प्राचीन इतिहास, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली द्वारा चौथा हिन्दी संस्करण, भारत में प्रकाशित

SUBJECT : HISTORY PART-1, SEMESTER-1	
COURSE CODE : HIST- 101	Author : Sh. Mohan Singh Baloda
Lesson No. : 8	
Ekk;l o ek;kÙkjdkyhu lkezkT; (Mauryan and Post Mauran Empire)	

अध्याय संरचना **(Structure Lesson)**

8-1- vf/kxe mís”; **(Learning Objectives)**

8-2- ifjp; **(Introduction)**

8-3- f**oशय वस्तु के मुख्य बिन्दु (Main Body of Text)**

- 8.3.1 अ’ौक के साम्राज्य का विस्तार (Extent of Ashok’ Empire)
- 8.3.2 अ’ौक के स्तंभ (Pollars of Ashoka)
- 8.3.3 अ’ौक के f”ालालेख (Political Causes)
- 8.3.4 प्र’ाासनिक कारण (Edicts of Ashoka)

8-4- v/;k; d vkxs dk eq[; Hkkx **(Further Main Body of the Text)**

- 8.4.1 अ’ौक के अभिलेखों का मानचित्र (Man of Ashoka’s Inserptions)
- 8.4.2. कनिष्क के साम्राज्य का विस्तार (Extent of Knishka’s Empire)
- 8.4.3 कनिष्क के साम्राज्य का मानचित्र (Map of Kanishka’s Empire)

8.5 izxfr leh{kk **(Check your progress)**

8-6- lkjka”k **(Summary)**

8-7- lwdr&lwpd **(Key-Words)**

8-8- Lo&eqY;kadu dh fy, ijh{kk **(Self Assessment Test)(SAT)**

8-9- izxfr leh{kk gsrq iz”ukÙkj **(Answers to check your Progress)**

8-10- lgk;d xzUFk lwph **(References/Suggested Reading)**

8-1 vf/kxe mís”; (Learning Objectives)

- इस अध्याय के अध्ययन के प’चात् विद्यार्थी योग्य होंगे :–
- अधिगमकर्ता मौर्य वं’ा के सर्वाधिक प्रतापी शासक अ’ोक के साम्राज्य के स्तंभ व f”ालालेख प्राप्ति स्थल को विद्यार्थी पहचान सकेंगे।

- विद्यार्थी अ''ोक के अभिलेखों – स्तंभलेख व ि''लालेख जिन स्थानों से प्राप्त हुए है उन्हें मानचित्र पर चिन्हित कर सकेंगे।
- अ''ोक के अभिलेखों से उस काल के जीवन के संबंध में जो संदे''ा प्राप्त होते है उस पर ि''क्षार्थी एक खोजी की भांति चर्चा कर सकेंगे।
- मौर्यात्तरकालीन कुषाण वं''ा के प्रसिद्ध शासक कनिष्क के साम्राज्य विस्तार का विद्यार्थी वर्णन कर सकेंगे।
- कनिष्क के साम्राज्य विस्तार का मानचित्रात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

8-2 ifjp; **(Introduction) :-** सिंकदर के आक्रमण और नंद वं''ा के पतन के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू विष्णुगुप्त अथवा चाणक्य के मार्गद''र्ान में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। अपने गुरू चाणक्य की सहायता से नंद वं''ा के अंतिम शासक घनानंद को पराजित किया था। अपने ग्रंथ अर्थ''ास्त्र में राजकाज चलाने के सप्तांग सिद्धांत देने वाले चाणक्य ने चंद्रगुप्त को राजकार्य की जिम्मेदारी संभालने के योग्य बनाया। चाणक्य की प्रेरणा से ही चंद्रगुप्त ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस को पराजित किया और मौर्य साम्राज्य का विस्तार उत्तर–पि''चम में अफगानिस्तान तक कर दिया। इस प्रकार एक तरफ चंद्रगुप्त ने दे''ा को यूनानियों के विदे''ाी शासन से मुक्त कराया तो दूसरी ओर नंदी के घृणित एंव अत्याचारपूर्ण शासन को समाप्त करके मगध साम्राज्य का विस्तार करना आरंभ किया। 322 ईसा पूर्व से 298 ईसा पूर्व के बीच चाणक्य के मार्गद''र्ान में चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य संपूर्ण भारत में विस्तृत होने लगा था। मगध साम्राज्य के विस्तार की जो प्रक्रिया बिम्बिसार ने नींव के रूप में आरम्भ की थी उसे चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने शासनकाल में ि''खर पर पहुंचा दिया। सिकंदर के आक्रमण से संबंधित साहित्यिक व पुरातात्विक साक्ष्य, मेगस्थनीज की इंडिका, गिरनार अभिलेख तथा जैन एंव तमिल ग्रंथों से प्राप्त जानकारी के अनुसार चंद्रगुप्त के समय मौर्य साम्राज्य का विस्तार पूर्व में मगध से लेकर पि''चम में सौराष्ट्र तक तथा उत्तर में अफगानिस्तान से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक विस्तृत था। अपने जीवन के अंतिम समय में चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन मुनि भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा लेकर श्रवणबेलगोला (मैसूर, मर्नाटक) में उपवास के द्वारा शरीर का त्याग कर दिया।

चंद्रगुप्त मौर्य के बाद उसका पुत्र बिंदुसार जो आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था 298–272 ईसा पूर्व के बीच मौर्य साम्राज्य के शासक के रूप में मगध पर राज किया। अमित्रघात अर्थात् शत्रुओं का ना''ा करने वाला के नाम से प्रसिद्ध बिंदुसार ने अपने पिता चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा विजित क्षेत्रों को मगध साम्राज्य में बनाये रखने में सफल रहा। बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान से यह पता चलता है कि उसके साम्राज्य के एक भाग तक्षि''ाला में हुए दो विद्रोहों को बिंदुसार ने अपने पुत्र अ''ोक और फिर सुसीम को भेजकर सफलतापूर्वक समाप्त किया था। विदे''ाी इतिहासकार स्ट्रैबो व प्लिनी के रचना से यह पता चलता है कि बिंदुसार का यूनान, सीरिया व मिस्श्र के दे''ाों के साथ राजदूत स्तर का संबंध कायम था। बिंदुसार को भी चंद्रगुप्त मौर्य की तरह प्रधानमंत्री के रूप में चाणक्य का मार्गद''र्ान प्राप्त होता रहा। बिंदुसार ने लगभग 25 वर्षो तक शासन किया और उसकी मृत्यु लगभग 273 ई0 पूर्व में हो गई।

273 ईसा पूर्व में बिंदुसार की मृत्यु के बाद अ''ोक वि''ााल मौर्य साम्राज्य का शासक बना। यद्यपि अपने पिता बिंदुसार की मृत्यु के उपरांत ही अ''ोक 273 ईसा पूर्व में गद्दी पर बैठा किंतु उसका वास्तविक राज्याभिषेक 269 ईसा पूर्व में हुआ। इससे पहले अ''ोक उज्जैन का राज्यपाल था। बौद्ध भिक्षु उपगुप्त ने

अ''ोक की बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। ईरानी शासक डेरियस या दारा प्रथम से अ''ोक को अभिलेखों के माध्यम से प्रजा को संदे''ा देने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी। अधिकां''ा अभिलेखों में अ''ोक का नाम देवानांपिय पियदसि (देवों का प्यासा) मिलता है। महान शासक अ''ोक का नाम अ''ोक मास्की व गुर्जरा अभिलेखों में ही मिलता है। राज्याभिषेक से संबंधित मास्की के लघु ि''ालालेख में अ''ोक ने स्वयं को बुद्ध शाकय कहा है। पुराणों में अ''ोक का नाम अ''ोकवर्धन मिलता है। अ''ोक ने अपनी साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति के अंतर्गत लगभग 261 ईसा पूर्व में स्वतंत्र कलिंग राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। इसका वर्णन हमें कलिंग के शासक खरवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख व अ''ोक के 13 वें ि''ालालेख से प्राप्त होता है। कलिंग युद्ध में हुए धन–जन की क्षति से आहत अ''ोक ने सरा के लिए युद्ध नीति को त्याग कर धम्म की नीति का मार्ग अपनाया। अपने धम्म नीति के तहत अ''ोक ने अपने शासन के समस्त तंत्र को प्रजा के नैतिक उत्थान व कल्याण में समर्पित कर दिया। इसके बाद अ''ोक ने भारत व भारत के बाहर बौद्ध धर्म को फैलाने का अभियान चलाया। अपने पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भेजा। अ''ोक ने नेपाल में ललितपत्तन नामक नगर व उसकी पुत्री चारूमती ने देवपत्तन नगर बसाया। क''मीर में श्रीनगर नामक नगर भी अ''ोक के द्वारा ही बसाया गया। अ''ोक के कई अभिलेखों से पता चलता है कि उसका साम्राज्य उत्तर–पि''चमी सीमा प्रांत (अफगानिस्तान) से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तथा पि''चम में काठियावाड़ (गुजरात) से लकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत था। भारतीय इतिहास में अ''ोक जिस बात को लेकर सर्वाधिक चर्चित है वह उसकी धम्मनीति ही है। अ''ोक के संबंध में सम्पूर्ण जानकारी उसके अभिलेखों से प्राप्त होती हैं अ''ोक के अभिलेख को तीन भागों – ि''ालालेख, स्तंभलेख व गुहालेख में विभाजित किया जा सकता है। यद्यपि अ''ोक के अभिलेखों में ब्राह्मी, ग्रीक, आर्मेइक, खरोष्ठी लिपियों का प्रयोग किया गया फिर भी अधिकां''ा अभिलेख ब्राह्मी लिपि व प्राकृत भाषा में है। अ''ोक के अभिलेखों का पता 1750 ई0 में सर्वप्रथम टीफेथैलर ने लगाया किंतु अ''ोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई0 में पढ़ा।

अ''ोक ने लगभग 37 वर्षों तक शासन किया और 232 ईसा पूर्व में उसकी मृत्यु हो गई। केंद्रीकृत प्र''ाासन पर टिका एकतंत्रीय स्वरूप वाला मौर्य साम्राज्य का विस्तार उसका राजनैतिक संगठन व शासन प्रबंध का आधार सुयोग्य एवं दूरद''ीं शासक पर निर्भर था। जिस पर सुयोग्य शासक अ''ोक खरा उतरता था। किंतु 232 ई. पूर्व में अ''ोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य की नींव अयोग्य शासक के कारण हिलाने लगी और अंततः 185 ई. पूर्व में अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति प्रष्यमित्र शुंग के द्वारा कर दी गयी और इसके साथ ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

8-3 v/;k; dk e[; fcUnq (Man body of text)

8-3-1 v"kksd dk lkezkT; dk foLrkj (Extent of Ashoka's Empire)

हर्यक वं''ा के शासक बिम्बिसार के समय में मगध साम्राज्य के विस्तार की जो प्रक्रिया शुरू हुई थी, उसे मौर्य वं''ा के प्रथम शासक के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने पराक्रम द्वारा ि''ाखर पर पहुंचा दिया। चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने प्रधानमंत्री चाणक्य की सहायता से न केवल दे''ाी शासकों के अत्याचार बल्कि विदे''ाी शासकों को भी अपदस्त करके साम्राज्य का विस्तार किया। विविध ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि चंद्रगुप्त

मौर्य ने अपने साम्राज्य को पूर्व में मगध से लेकर प''िचम में सौराष्ट्र तक तथा उत्तर में अफगानिस्तान से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैला दिया था। चंद्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी के रूप में बिंदुसार ने न केवल साम्राज्य के विस्तार को बरकरार रखा बल्कि पूर्वी व प''िचमी समुन्द्रों के बीच के सम्पूर्ण भाग पर अपने अधिकार की स्थापना के लिए कई राज्यों तथा उसके शासकों को नष्ट कर दिया। इस प्रकार हम देखते है कि चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित मौर्य साम्राज्य जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी यह अपने समय के सबसे बडे साम्राज्यों में से एक बन गया।

इस साम्राज्य को बिंदुसार ने मजबूत रखते हुये अपने पुत्र अ''ोक को सौंपा।

देवायांपिय पिचदसि (देवों का प्यारा) के नाम से प्रसिद्ध मौर्यवं''ा का सर्वाधिक प्रतापी शासक अ''ोक को साम्राज्य विस्तार बेहतर कु''ाल प्र''ासन तथा भारत व भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए सर्वाधिक जाना जाता है। अपने पिता बिंदुसार की मृत्यु के बाद सत्ता संभालते ही अ''ोक ने पूर्व तथा प''िचम दोनों दि''ाा में अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारंभ कर दिया। कु''ाल सैन्य प्रबंधन व अपनी दृढ़ नीति के द्वारा उसने केवल आठ वर्षों में आधुनिक असम से ईरान की सीमा तक साम्राज्य को फैला दिया।

अ''ोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष लगभग 261 ई0 पूर्व में कलिंग पर आक्रमण किया और कलिंग की राजधानी तोसली पर अधिकार कर लिया। यह वर्तमान ओडि''ाा के दक्षिणी भाग में स्थित है। अ''ोक के 13 वें अभिलेख व हाथीगुफा अभिलेख से कलिंग युद्ध के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। इतिहासकारों द्वारा कलिंग युद्ध के कई कारण बताये जाते है जिनमें प्रमुख कारण है–

1. अ''ोक ने अपनी साम्राज्यवादी व विस्तारवादी नीति के तहत कलिंग को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाया।
2. कलिंग को व्यापार–व्यवसाय की दृष्टिकोण से खासकर समुद्र तट के नजदीक होने के कारण इसकी महत्ता विदे''ाी व्यापार के लिए अधिक थी इस कारण कलिंग को जीतना आव''यक था।
3. हाथियों के लिए प्रसिद्ध कलिंग को जीतकर हाथियों को प्राप्त करना था।

इस प्रकार कारण जो भी रहा हो अ''ोक ने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुये कलिंग को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

भारत व भारत के बाहर विभिन्न स्थानों पर पाये गये अ''ोक के अभिलेख अ''ोक के साम्राज्य विस्तार की सूचना देते है।

अ''ोक के खरोष्ठी लिपि के अभिलेख शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा (पाकिस्तान) से मिले है। जबकि भारत के लगभग सभी भागों में अ''ोक के अभिलेख मिले है। अ''ोक के अभिलेखों को ि''ालालेख, स्तंभलेख व गुहालेख (अर्थात् गुफाओं में उत्कीर्णलेख) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अ''ोक के वृहद ि''ालालेखों की संख्या चौदह है जो आठ स्थानों से प्राप्त हुए हैं। ये सभी स्थान अ''ोक के साम्राज्य विस्तार की सूचना देते है। अ''ोक के दूसरे ि''ालालेख में दक्षिण भारत के चोल, पांडय व चेर राजवं''ाों की चर्चा का विवरण मिलता है। इससे पता चलता है कि अ''ोक के साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत के इन राज्यों तक था।

अ’’ोककालीन प्रांत व उसकी राजधानी भी हमें अ’’ोक के साम्राज्य विस्तार की जानकारी प्रदान करते है। जैसे – उत्तरापथ की राजधानी तक्ष’’ोला, अवंति राष्ट्र की उज्जयिनी, कलिंग प्रांत की तोसली, दक्षिणापथ की सुवर्णगिरी तथा प्राची की राजधानी पाटलिपुत्र।

इन प्रांतों व इनकी राजधानियों से चारों दि’’ााओं में विस्तृत अ’’ोक के साम्राज्य का पता चलता है।

इस प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक स्त्रोतों से हम पतो है कि मौर्य राजवं’’ा के चक्रवर्ती सम्राट अ’’ोक के राज्य का विस्तार उत्तर में हिंदुकु’’ा तक्ष’’ोला की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी, सुर्वणगिरी पहाड़ी के दक्षिण तथा मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादे’’ा, पाटलिपुत्र से प’’िचम में अफगानिस्तान, ईरान, बनुचिस्तान तक पहुंच गया था। सम्राट अ’’ोक का साम्राज्य आज का लगभग संपूर्ण भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादे’’ा, भूटान, भ्यान्मार (बर्मा) के अधिकां’’ा भूभाग पर था।

अ’’ोक के सात स्तंभ लेख भी छः अलग–अलग स्थानों से पाये गये है। ये सभी स्थान अ’’ोक के साम्राज्य विस्तार की कहानी कहते है। इन सब स्थानों पर अ’’ोक के साम्राज्य का प्रभाव रहा है।

अ’’ोक ने अपने धम्मनीति के तहत धम्म के प्रचार के लिए व बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अपने अधिकारियों व परिवारी जनों को यात्रा पर भेजे। इनके यात्रा–पथ भी हमें अ’’ोक के साम्राज्य विस्तार की जानकारी देते है।

8-3-2 v”kkd d LrHk (Pillars of Ashoka)

प्राचीन भारत के इतिहास में हमें भारत में यथार्थ रूप में सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य वं’’ा के प्रसिद्ध शासक अ’’ोक के है। सम्राट अ’’ोक को अभिलेखों क माध्यम से प्रजा को संदे’’ा देने की प्रेरणा ईरानी शासक डेरियस या दारा प्रथम से मिली थी। सम्राट अ’’ोक पहला शासक था जिसने भारत के इतिहास में अभिलेखों के द्वारा जनता को संबोधित किया था। अ’’ोक द्वारा जारी किये गए अभिलेख राज्यादे’’ा के रूप में थे। वास्तव में भारत के इतिहास में अभिलेख का प्रचलन सर्वप्रथम अ’’ोक के द्वारा ही किया गया।

अ’’ोक के अभिलेखों को तीन भागों में बांटा गया है –

1. f”kykys[k 2- LrHkys[k 3- xqgkys[k

f”kykys[k dh l[;k 14] LrHkys[k dh l[;k 7 rFkk xqgkys[k dh l[;k e 5 gA

स्तंभ पर अर्थात् खंभे पर उत्कीर्ण लेख को स्तंभलेख के नाम से जानते है। अ’’ोक ने अपने धम्म नीति के अंतर्गत प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए अभिलेखों के माध्यम से जो संदे’’ा दिये उनमें स्तंभलेख का महत्वपूर्ण स्थान है। अ’’ोक के 7 स्तंभलेखों में दूसरे एवं सातवें स्तंभ लेखों में धम्म के गुणों को बताया गया है, जो इस प्रकार है –

साधुता, मृदुता, पवित्रता, सत्यवादिता, दान, दया, कल्याण आदि।

अ’’ोक के स्तंभ लेख को दो भागों – वृहत् स्तंभ लेख और लघु स्तंभ लेख में बांटा गया है। स्तंभ लेख में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया गया है। स्तंभ लेख में उत्कीर्ण लेख प्राकृत भाषा में लिखे गये है। ये सभी 7 स्तंभ लेख जिन स्थानों से प्राप्त हुए है, वे निम्न प्रकार है –

1. टोपरा (अम्बाला, हरियाणा) में स्थित अ’’ोक के इस स्तंभलेख को फिरोज’’ााह तुगलक ने लाकर दिल्ली में स्थापित करवाया था।
2. मेरठ (उत्तर प्रदे’’ा) में स्थित अ’’ोक के इस स्तंभ लेख को भी फिरोज’’ााह तुगलक ने लाकर दिल्ली में स्थापित करवाया था।
3. को’’ाम्बी (उत्तर प्रदे’’ा) में स्थित अ’’ोक के इस स्तंभ लेख को अकबर ने इलाहाबाद (प्रयागराज) के किले में स्थापित करवाया था।

4. रामपुर्वा (चम्पारण) बिहार में स्थित है।
5. लौरिया–नन्दगढ़ (चम्पारण) बिहार में स्थित है।
6. लौरिया–अरराज (चम्पारण) बिहार में स्थित है।
7. महरौली (दिल्ली) में स्थित है।

अ’’ोक के 7 वृहत् स्तंभ लेखों के विषय वस्तु का वर्णन निम्न प्रकार है –

igyk LrEHk ys[k – धम्म के अनुसार प्रजा की रक्षा व राज्य के द्वारा उन्हें सुख उपलब्ध कराने या देने का वर्णन किया गया है।

nwljk LrEHk ys[k & इस स्तंभ लेख में अ’’ोक के धम्म पद की व्याख्या की गयी है। इसमें दोषों से दूर रहकर बहुत से अच्छे कार्यो को अपने जीवन में अपनाना जैसे– दया, दान, सत्यता व पवित्रता के पालन को धर्म की संज्ञा दी गयी है।

rhljk LrEHk ys[k & जन–सामान्य को उनके बुरे कर्मों पर ध्यान केंद्रित कराना ताकि वे इनसे बच सकें।

pkSFkk LrEHk ys[k & इस स्तंभ लेख में अ’’ोक ने धम्म के प्रचार–प्रसार के लिये नियुक्त रज्जुकों के कार्यों का वर्णन किया है। जिनमें इन्हें आज्ञा दी गई थी कि वे प्रत्येक पांचवें वर्ष राज्य का भ्रमण करें और जनता के नैतिक उत्थान के लिए धर्मोपदे’’ा उपलब्ध करायें।

इन धर्मोपदे’’ा को अभिलेखों में अनुसंधान कहा गया है।

ikpok LrEHk ys[k & इस स्तंभ लेख में जीवों के प्रति दया का भाव प्रकट करते हुये अवध्य जीवों का वर्णन किया गया है तथा कैदियों के प्रति सुधार का भाव रखते हुए उन्हें सुधरने का अवसर प्रदान करने हेतु 25 बार छोड़े जाने का उल्लेख है।

NBk LrEHk ys[k & छठे स्तंभ लेख में राज्याभिषेक के 12 वर्ष बाद प्रजा के नैतिक विकास के लिए राजा द्वारा धम्मलेख उत्कीर्ण करवाने का वर्णन किया गया है।

Lkkrok LrEHk ys[k & अ’’ोक ने इस स्तंभ लेख में इस बात का जिक्र किया है कि शासन प्र’’ासन तंत्र किस प्रकार धम्म नीति का प्रचार प्रसार करेगा।

अ’’ोक के स्तंभलेख के अंर्तगत लघु स्तंभलेख सांची (मध्य प्रदे’’ा), सारनाथ (उत्तर प्रदे’’ा), रूम्मिनदेई (लुंबिनी, नेपाल) तथा निगलिसागर (बस्ती, उत्तर प्रदे’’ा) से प्राप्त हुए है। इन सभी स्तंभ लेखों में बौद्ध धर्म से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराये गये हैं। इनमें बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थलों को चिन्हित किया गया ताकि जन सामान्य की इनके प्रति आकर्षित हों। तीर्थ यात्रों का वर्णन किया गया है। इनमें वि’’ोष रूप से बौद्ध धर्म में उत्पन्न मतभेदों के निराकरण का भी उल्लेख किया गया है ताकि जन सामान्य में कोई संदेह न हो।

रूम्मिनदेई स्तंभ लेख में महात्मा बुद्ध के जन्म स्थान पवित्र स्थल लुंबिनी की यात्रा का वर्णन किया गया।

मिगविसागर स्तंभ लेख में बौद्ध भिक्षु कनकमुनि के अव’’ोष पर बनाये गये स्तूप के द’’ान का वर्णन किया गया है। यह ध्यान रहे कि महात्मा बुद्ध व अन्य बौद्ध भिक्षुओं के अव’’ोष पर बनाये उल्टे कटोरानुमा आकृति करे स्तूप कहते है जिसे पवित्र मानते हुये श्रद्धालु भक्ति भाव से इसकी परिक्रमा करते है।

सांची, सारनाथ, व कौ’’ाल के तीन पाठों का सम्मिलत पाठ वाला अभिलेख संघभेद स्तंभ अभिलेख के नाम से प्रसिद्ध है। इन अभिलेखों में अ’’ोक ने संघ के विरूद्ध आचरण करने वालों को कड़ी चेतावनी दी है। दोष स्वीकृति और प्राय’’ि्चत के द्वारा शुद्धिकरण पर बल देते हुए संघ की एकता कायम रखने व दृढ़ता के साथ चिरस्थायित्व रूप में आज्ञा पालन का संदे’’ा दिया गया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इन सभी लघु स्तंभ लेखों पर अ’’ोक की राजकीय घोषणाओं का उल्लेख है जिनका उद्दे’’य बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों – बुद्ध, संघ व धम्म की जन सामान्य को जानकारी उपलब्ध कराना व इनकी आज्ञा में रहने के प्रेरित कराना ताकि संघभेद को समाप्त किया जा सके। स्तंभ लेख की यह महत्वपूर्ण वि’’ोषता है कि इन पर उत्कीर्ण लेख जन–सामान्य की भाषा प्राकृत भाषा में लिखे गये है ताकि वे स्पष्ट रूप से उन्हें संबोधित कर सके।

8-3-3 v’’kksd ds f’’kykys[k (Edicts of Ashoka)

अ’’ोक ने अपने धम्म नीति के अंतर्गत प्रजा के कल्याण के लिए पत्थरों पर जो लेख उत्कीर्ण कराये उन्हें ि’’ालालेख के नाम से जानते है। इनके माध्यम से अ’’ोक ने प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए संदे’’ा दिये है

तथा अपने अधिकारियों को प्रजा के कल्याण में लगे रहने के लिए राजकीय आदे"ा भी दिये गये है। अ"ोक के ये f"ालालेख दो प्रकार के है – दीर्घ f"ालालेख एवं लघु f"ालालेख दीर्घ f"ालालेख की संख्या 14 है। इन f"ालालेखों में वर्णित विषय वस्तु निम्नलिखित रूप से है –

igyk f"kykys[k & प्रथम f"ालालेख में जीवमात्र के प्रति करूणा का भाव दिखाते हुये अ"ोक ने प"ुबलि की निंदा का संदे"ा दिया है।

इस f"ालालेख के दूसरे संदे"ा में अ"ोक ने यह घोषणा किया कि सभी मनुष्य मेरी संतान की तरह है।

nljk f"kykys[k & इस f"ालालेख में दक्षिण भारत के चोल, चेर व पांड्य राजवं"ाों का जिक्र किया गया है। इसके साथ ही प्रजा के हित के लिए शासक तंत्र व जन सामान्य को मनुष्यों व प"ुओं के लिए चिकित्सा केन्द्र, छायादार व औषधीय वृक्षो का रोपण तथा सड़कों के निर्माण के लिए प्रेरित किया गया है।

rhljk f"kykys[k & यह f"ालालेख अ"ोक द्वारा राज्याभिषेक के 12 वर्ष बाद जारी किया गया। इसके द्वारा राजकीय अधिकारियों (युक्त, रज्जुक व प्रादे"िाक) को हर पाँचवें वर्ष सम्पूर्ण साम्राज्य के दौरे करने का आदे"ा दिया गया है। इसके अतिरिक्त धन के अल्प व्यय व वस्तुओं के संग्रह में संयम के लिए सबके हित में निवेदन किया गया है।

pkFkk f"kykys[k & चौथे f"ालालेख में अ"ोक ने भेरीघोष अर्थात् युद्ध, रक्तपात के स्थान पर धम्म घोष को अपनाने पर बल दिया।

ikpok f"kykys[k & इस f"ालालेख में एक ओर जहाँ अ"ोक के द्वारा धम्म महामात्रों की नियुक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त होती है वहीं दूसरी ओर मौर्यकालीन समाज एवं वर्णव्यवस्था का भी उल्लेख किया गया है।

NBk f"kykys[k & छठे f"ालालेख में अ"ोक ने आत्मनियंत्रण की f"ाक्षा देते हुये यह घोषणा किया कि आम जनता किसी भी समय राजा से मिल सकती है। इस f"ालालेख के माध्यम से अ"ोक ने यह संदे"ा दिया कि हर समय प्रजा के हाल की खबर सुनना राजा का परम दायित्व है।

Lkkrok f"kykys[k & अ"ोक का यह f"ालालेख भारतीय संस्कृति के प्राणतत्व को द"ाृता है। इसमें अ"ोक ने सभी संप्रदायों के बीच सहिष्णुता के लिए निवेदन किया है।

vkBok f"kykys[k & अ"ोक ने अपने इस आठवें f"ालालेख में अपने धम्मयात्राओं का उल्लेख किया है। अ"ोक ने पहली धम्मयात्रा शासन के 10 वें वर्ष में बोधगया की थी का वर्णन भी इस f"ालालेख में मिलता है।

ukok f"kykys[k & सच्ची भेंट व f"ाष्टाचार का उल्लेख करते हुए इस f"ालालेख में अनाव"यक लोकप्रिय रीति–रिवाजों के स्थान पर धम्म समारोह के आयोजन पर बल दिया गया है।

nlok f"kykys[k & इसमें अ"ोक ने यह आदे"ा दिया कि राजा तथा उच्च अधिकारी हमे"ाा प्रजा के हित में सोचें। इसके अलावा इस f"ालालेख में प्रसिद्धि एवं गौरव की निंदा करते हुये धम्म नीति की श्रेष्ठता स्थापित करने पर बल दिया गया है।

X;kjgok f"kykys[k & ग्यारहवें f"ालालेख में धम्म नीति की व्याख्या की गयी है।

Ckkjgok f"kykys[k & सभी प्रकार के विचारों के सम्मान पर बल देते हुये सर्वधर्म समभाव व स्त्री महामात्र की चर्चा भी अपने इस f"ालालेख में अ"ोक ने किया है।

Rkjgok f"kykys[k & अ"ोक के इस अभिलेख में कलिंग विजय का वर्णन किया गया है। अत्याचार करने वाले आरविक जातियों का भी उल्लेख तेरहवें f"ालालेख में मिलता है। इस f"ालालेख में सबसे महत्वपूर्ण बात अ"ोक के हृदय परिवर्तन का है जिसमें वह युद्ध व हिंसा के स्थान पर धम्म द्वारा विजय का उल्लेख करता है। दक्षिण भारत में व भारत के बाहर धम्म विजयों का उल्लेख भी इस f"ालालेख से प्राप्त होता है।

pkngok f"kykys[k & अपने चौदहवें f"ालालेख के द्वारा अ"ोक ने जनता को धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया।

अ''ोक द्वारा 11वें, 12वें और 13 वें ि''ालालेख की जगह दो पृथक् ि''ालालेख भी जारी किए गए थे जिन्हें पृथक ि''ालालेख प्रथम व पृथक् ि''ालालेख द्वितीय के नाम से जानते है।

पृथक ि''ालालेख प्रथम व द्वितीय के द्वारा कलिंग के महामात्रों व अंतमहामात्रों को संबोधित करते हुये अ''ोक ने यह घोषणा किया कि सब प्रजा मेरी संतान है। इसके माध्यम से अ''ोक ने कलिंग के जनता का वि''वास जीतने का प्रयास किया। अ''ोक के ये 14 दीर्घ ि''ालालेख जिन स्थलों से प्राप्त हुए है वे है –

शाहबाजगढ़ी (पे''ावर, पाकिस्तान), मानसेहरा (हजारा, पाकिस्तान), कालसी (देहरादून, उत्तराखंड), गिरनार (जूनागढ़, गुजरात), धौली (पुरी ओडि''ाा), जौगढ़ (गंजाम, ओडि''ाा), सौपारा (थाणे, महाराष्ट्र) एर्रेगुडी (कुर्नूल, आंध्र प्रदे''ा), मास्की (रायचूर, कर्नाटक), गुर्जरा (दतिया, मध्य प्रदे''ा), भाबू (बैराट, राजस्थान) सासाराम (बिहार), गोविमठ (मैसूर, कर्नाटक)।

अ''ोक के लघु ि''ालालेख उसके बौद्ध धर्म में प्रबल वि''वास को प्रकट करता है। इसमें अ''ोक द्वारा बौद्ध धर्म से संबंधित स्थलों के दौरे के समय 246 रातें बिताने का उल्लेख है। इसके अलावा इसमें प्रजा के नैतिक उत्थान की बातें भी की गयी है। इन लघु ि''ालालेखों में जीवन आद''ाr की बातें यथा – माता पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए, प्राणियों पर दया करनी चाहिए, सत्य बोलना चाहिए आदि का भी उल्लेख है। अ''ोक के ये लघु ि''ालालेख रूपनाथ (जबलपुर, मध्य प्रदे''ा), गुजरी (दतिया, मध्य प्रदे''ा), भाबू (जयपुर, राजस्थान), मास्की (रायचूर, कर्नाटक), सासाराम (बिहार), महास्थान (बांग्लादे''ा) आदि स्थानों से प्राप्त हुए है। वि''व इतिहास में नाम दर्ज कराने वाला महान शासक सम्राट अ''ोक की महानता उनके अभिलेखों में वर्णित मानवतावादी सिद्धांतों जिनका सुनियोजित तरीके से न केवल दे''ा के अंदर जन सामान्य में बल्कि दे''ा के बाहर भी बढ़–चढ़कर प्रसार किया गया के कारण है।

8-4- v/;k; d vkx dk e[; Hkkx **(Further Main Body of the Text)**

8.4.1 अ''ोक के अभिलेखों का मानचित्र (Man of Ashoka's Inserptions)

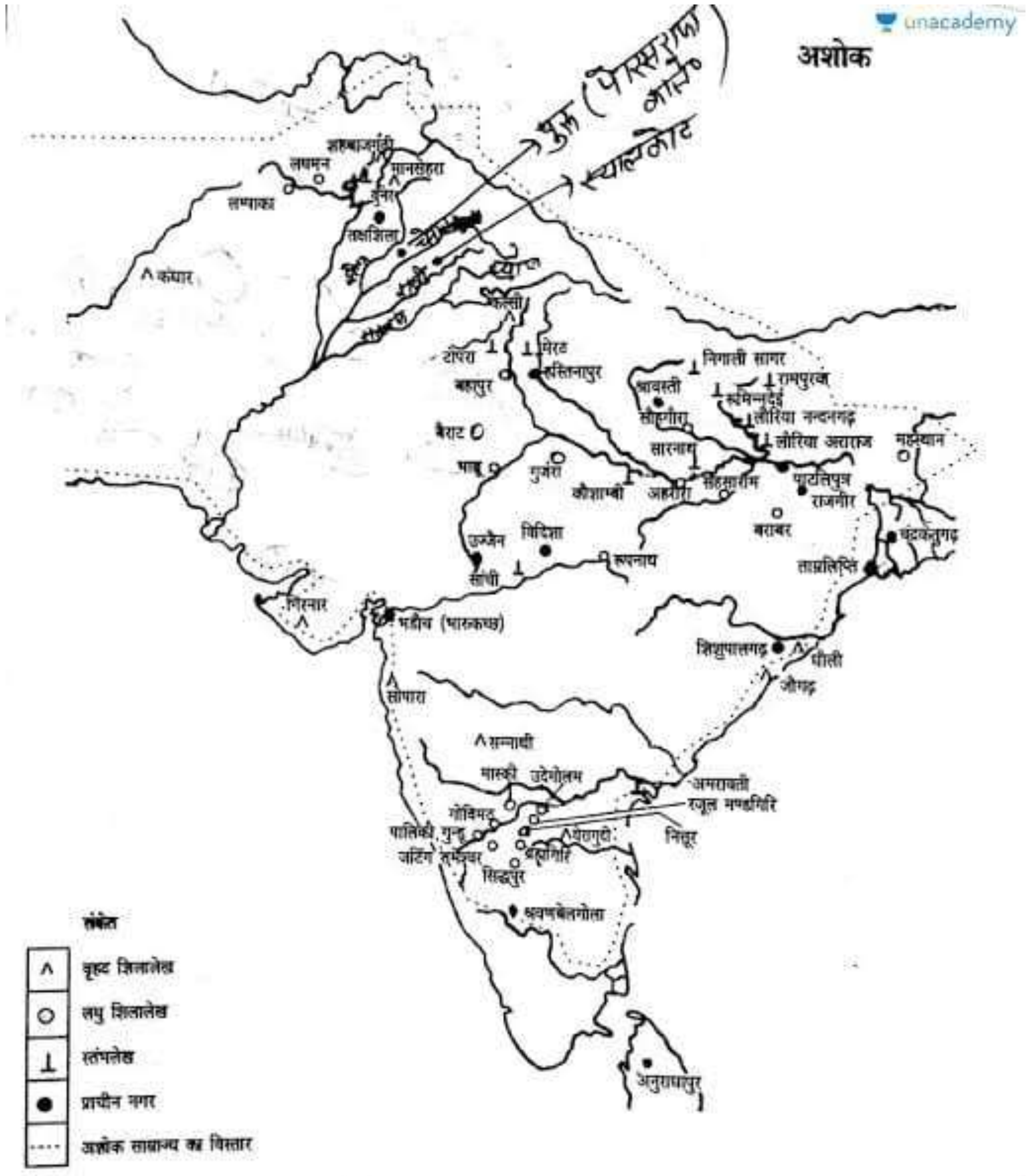

Source : https://m.facebook.com/DIASgeneralStudies/post unacademy

8-4-2 कनिश्क के साम्राज्य का विस्तार (Extent of Kanishka's Empire)

प्राचीन भारत के इतिहास में शक्ति”ााली मौर्य साम्राज्य के अंत होने से भारत की राजनीतिक एकता बिखरने लगी थी। दे”ा के अंदर अलग–अलग स्थानों पर कई सामंतों ने अपनी स्वतंत्र स्थिति की घोषणा कर दी। वि”ााल मगध साम्राज्य जिसका संबंध दे”ा के लगभग हर कोने से था अब उसका प्रभाव हो गया था। दे”ाी वं”ा के शासकों के अतिरिक्त भारत के उत्तरी प”िचमी मार्गों से अनेक विदे”ाी आक्रमणकारी अनेक स्थानों पर अलग–अलग राज्य स्थापित करने लगे। इनमें दे”ाी वं”ा के शासकों में शुंग, कण्व, सातवाहन व कलिंग के चेदि या महामेघवाहन वं”ा के शासक प्रसिद्ध थे तो दूसरी ओर विदे”ाी शासकों के वं”ाों में इण्डो–ग्रीक या हिन्द–यवन, शक या सीथियन, पार्थियन या पहलव तथा कुषाण वं”ा के शासक प्रसिद्ध थे।

जिसके फलस्वरूप अब मगध के वैभव का स्थान साकल, विदि”ाा, प्रतिष्ठान आदि कई नगरों ने ले लिया। प्राचीन भारत के इतिहास में इस काल को मौर्यान्तरकालीन इतिहास के नाम से जाना जाता है।

मौर्यान्तरकालीन भारत में विदे”ाी शासक वं”ाों में सर्वप्रथम इण्डो–ग्रीक / हिन्द यवन शासकों का आगमन हुआ। भारत में प्रवे”ा करने वाला प्रथम इण्डो–ग्रीक शासक डेमेट्रियस था। परंतु इण्डो–ग्रीक शासकों में सबसे महान विजेता शासक मिनेण्डर को माना जाता है। इण्डो–ग्रीक शासकों का साम्राज्य काबुल से लेकर मथुरा तक विस्तृत था। उन्होंने साकल (सियालकोट, पाकिस्तान) को अपनी राजधानी बनाया था। इण्डो ग्रीक शासकों का भारत के विविध क्षेत्रों साहित्य, धर्म, द”ार्न, ज्योतिष विज्ञान व चिकित्सा शास्त्र, मूर्तिकला, स्थापत्य कला व इसके अलावा व्यापारिक व मौद्रिक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं।

इण्डो–ग्रीक शासकों के बाद आये विदे”ाी शासक वं”ा शक या सीथियन में सबसे शक्ति”ााली शासक रूद्रदामन प्रथम हुआ। जिसने सर्वप्रथम वि”ाुद्ध संस्कृत भाषा का अभिलेख जूनागढ़ अभिलेख जारी किया था। शकों ने भारत में क्षत्रय प्रणाली अर्थात् शासन की प्रांतीय प्रणाली की शुरूआत की थी। शकों का साम्राज्य भारत में सिंध, कोकण, नर्मदा घाटी, मालवा काठियावाड़ और गुजरात के एक बड़े भूभाग तक फैला हुआ था।

शक वं”ा के बाद आये पहलवं”ा या पार्थियन वं”ा जो मूल रूप से ईरानी थे का प्रभाव उतना अधिक देखने को नही मिलता है। इस वं”ा का प्रतापी शासक गोण्डोफर्नीज था। इस साम्राज्य का अंत मौर्योन्तरकालीन भारत में सबसे अंत में आये विदे”ाी शासक वं”ा कुषाणों के द्वारा हुआ।

इस प्रकार विदे”ाी शासक वं”ाों में कुषाणों ने पार्थियन साम्राज्य का अंत करके स्वयं की सत्ता स्थापित की। कुषाण वं”ा को इतिहास में यूची या तोखारी के नाम से भी जानते है। कुषाणों का मूल निवास स्थान चीन की सीमा पर स्थित चीनी तुर्किस्तान था।

भारत में कुषाण वं”ा का संस्थापक कुजुल कडफिसस को माना जाता है परंतु वास्तव में भारत में कुषाण शक्ति को विम कडफिसस ने स्थापित किया था।

उसने सिंधु नदी पार करके तक्ष”ािला और पंजाब पर अधिकार करके कुषाण साम्राज्य को स्थापित किया था। परंतु कुषाण वं”ा का सर्वाधिक प्रतापी व महानतम शासक कनिष्क हुआ।

कनिष्क के 78 ई0 में गद्दी पर बैठने के उपलक्ष्य में शक संवत् चलाया। जिसे वर्तमान में भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। यह हिन्दी तिथि के अनुसार चैत्र मास से प्रारंभ होता है। कनिष्क ने पिछले विदे”ाी शासक इण्डो–ग्रीक व शकों के शासन प्रणाली का उपयोग करते हुये भारतीय समाज संस्कृति के साथ घुल–मिलकर अपने साम्राज्य के विस्तार की नीति को आरंभ किया। कुषाण वं”ा के शासकों ने भारतीय समाज की परंपरा के अनुरूप देवपुत्र की उपाधि ग्रहण किया।

कनिष्क से पूर्व के शासक विम कडफिसस ने अपने सिक्कों पर ”ािव, नंदी व त्रि”ाूल की आकृति बनवाये तथा महे”वर की उपाधि धारण की। इससे उनको सामाजिक मान्यता मिली। कनिष्क ने इस परंपरा को और अधिक आगे बढ़ाया। कनिष्क ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया उसका पोषण किया जिससे उसे साम्राज्य विस्तार में काफी सहायता मिली। उसने भारत में शकों की तरह क्षत्रप शासन अर्थात् प्रांतीय प्रणाली का प्रयोग करके साम्राज्य का विस्तार किया। इस प्रांतीय प्रणाली के तहत कनिष्क ने अपनी पहली राजधानी पुरूषपुर (आधुनिक पे”ाावर, पाकिस्तान) एवं दूसरी राजधानी मथुरा में स्थापित की। इससे कनिष्क के साम्राज्य विस्तार नीति का पता चलता है। इसके बाद उसने शक्ति को बढ़ाते हुये क”मीर पर विजय प्राप्त किया और वहाँ पर कनिष्कपुर नामक नगर बसाया। कुंडलवन, क”मीर में वसुमित्र की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया।

एक महान विजेता शासक के रूप में उसने कडफिसेस साम्राज्य को विस्तार देने के लिए जो युद्ध तथा विजय किये थे वे इस प्रकार थे –

1. पूर्वी भारत पर विजय – इस विजय यात्रा के क्रम में उसने पाटलिपुत्र के शासक पर आक्रमण कर उसे बुरी तरह परास्त किया। वै”ााली, बक्सर तथा कुम्रहार आदि पूर्वी क्षेत्रों में कनिष्क के मिले सिक्कों से इन स्थानों पर कनिष्क के आधिपत्य व इसके साम्राज्य विस्तार की पुष्टि होती है।
2. चीन के साथ युद्ध – प्रारंभ में चीन के साथ कनिष्क पराजित हुआ लेकिन बाद में पूर्ण शक्ति के साथ पराजय का बदला लेते हुये थारकंद, खोतान तथा कारागर तक के क्षेत्रों को विजित करते हुये चीनी तुर्किस्तान के क्षेत्र तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। चीनी तुर्किस्तान के अतिरिक्त कनिष्क ने

उत्साह पूर्व अपने साम्राज्य विस्तार नीति को बढ़ाते हुये बैक्ट्रिया, ख्वारिज्म तथा तुरवारा पर भी अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।

3. प''चमोत्तर प्रदे''ों की विजय – इन प्रदे''ों की विजय के क्रम में उसने निचली सिंधु घाटी, कपि''ाा, काबुल और क''मीर के क्षेत्रों को विजित करते हुये अपने साम्राज्य का विस्तार किया। क''मीर में उसका कनिष्कपुर नगर बसाना, चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन करना उसके आधिपत्य व साम्राज्य विस्तार को पुष्ट करता है।

इसके अलावा मध्य ए''ाया से गुजरने वाला व्यापारिक मार्ग रे''ाम मार्ग पर भी कनिष्क ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।

कनिष्क के व्यापारिक मार्ग पर अधिकार व तक्ष''ाला, भडौच या बेरीगाजा (प''चमी तट पर) तथा अरिकाभेड (पूर्वीतट पर) जैसे बंदरगाहों पर अधिकार से भी कनिष्क के साम्राज्य विस्तार का पता चलता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महान शासक द्वितीय अ''ोक के रूप में प्रसिद्ध कनिष्क द्वारा विस्तारित कुषाण वं''ा मौर्योन्तरकालीन भारत का ऐसा साम्राज्य था जिसका प्रभाव सुदूर मध्य ए''ाया, ईरान, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान तक विस्तृत था। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते है कि कनिष्क द्वारा पोषित यह साम्राज्य कला, संस्कृति, वाणिज्य, व्यापार व विद्वानों को सरंक्षण प्रदान करने वाले राज्य के रूप में वि''व के तीन बड़े साम्राज्य – रोम, पार्थिया एवं चीन के समक्ष था।

8-4-3 dfu"d d: lkezkT; dk ekufp= **(Map of Kanishka's Empire)**

Source:-www.sansarlochan.in

8-5 i`xfr leh{kk (Check Your Progress) :-

fjDr LFkkuksa dh iwfrZ dhft, (Fill in the blanks)

XXIV. बिंदुसार .... संप्रदाय का अनुयायी था।

XXV. अ''ोक को बौद्ध धर्म में .... ने दीक्षित किया।

XXVI. अ''ोक के खरोष्ठी लिपि के अभिलेख .... और .... स्थान से प्राप्त हुये।

XXVII. शक् संवत् .... के द्वारा चलाया गया।

XXVIII. कनिष्क ने क''मीर में .... नगर की स्थापना की।

XXIX. दिल्ली में अ''ोक के स्तंभों को खोजने का श्रेय .... को दिया जाता है।

XXX. कनिष्क की दो राजधानियां .... और .... थी।

XXXI. कलिंग युद्ध का वर्णन .... ''िालालेख से प्राप्त होता है।

XXXII. इतिहास प्रसिद्ध सिल्क मार्ग पर .... का अधिकार था।

XXXIII. कलिंग की राजधानी .... थी।

(ख) सत्य – असत्य पर आधारित प्र''न :–

(True –False based Questions) :-

I. इंडिका मगेस्थनीज की रचना है। (   )

II. अपने अंतिम समय में चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन मुनि स्थुलबाहु से जैन धर्म की दीक्षा लेकर कर्नाटक में उपवास द्वारा शरीर का त्याग कर दिया था। (   )

III. अ''ोक के अभिलेखों की भाषा पालि थी। (   )

IV. कुषाण वं''ा के शासकों की उपाधि 'देवपुत्र' थी। (   )

V. पार्थियन या पहलव मूल रूप से ईरानी थे । (   )

VI. कनिष्क के काल में कुंडलवन (क''मीर) में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था। (   )

VII. भारत में इण्डो–ग्रीक शासकों ने क्षत्रण प्रणाली प्रारंभ की थी। (   )

VIII. कुषाण वं''ा का मूल स्थान तुर्किस्तान चीनी था। (   )

IX. शक शासक रूद्रदामन प्रथम ने सर्वप्रथम वि''ाुद्ध संस्कृत भाषा में जूनागढ़ अभिलेख जारी किया था। (   )

X. अ''ोक के स्तंभ लेखों की संख्या 14 थी (   )

8-6 lkjka''k ¼lf{kfIrdk½ (Summary)

- सिंकदर के आक्रमण (326 ईसा पूर्व) के समय मगध पर नंद वं''ा का शासक घनानंद का शासन था।

- अपने गुरू चाणक्य की सहायता से नंद वं’’ा के अंतिम शासक घनानंद को पराजित कर चंद्रगुप्त मौर्य 322 ई0 पूर्व मगध का शासक बना।
- चाणक्य को कोटिल्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जानते है।
- चाणक्य की प्रसिद्ध रचना अर्थ’’ाास्त्र की भाषा संस्कृत है।
- चाणक्य रवित अर्थ’’ाास्त्र में राजकाज चलाने के सप्तांग सिद्धांत का वर्णन किया गया है।
- चंद्रगुप्त मौर्य 322 ई0 पूर्व से 298 ई0 पूर्व तक मौर्य वं’’ा का शासक रहा।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने 305 ईसा पूर्व में सिकंदर के सेनापति सेल्युकस को पराजित किया था।
- सेल्युकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- ‘इण्डिका’ मेगस्थनीज की रचना है।
- चन्द्रगुप्त को जैनमुनि भद्रबाहु ने जैन धर्म में दीक्षित किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम समय में अपने पुत्र बिंदुसार को गद्दी सौंपकर श्रवण बेलगोला (कर्नाटक) जाकर उपवास द्वारा शरीर का त्याग कर दिया।
- बिंदुसार 298 ई. पूर्व से 273 ई. पूर्व तक मगध पर शासन किया।
- बिंदुसार को ‘अमित्रघात’ अर्थात शत्रु विना’’ाक के नाम से जाना जाता है।
- बिंदुसार आजीवक संप्रदाय का अनुयायी था।
- सीरिया के शासक एटियोकस प्रथम ने डाइमेकस नामक एक राजदूत बिंदुसार के दरबार में भेजा।
- मिस्त्र के शासक टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस ने डायनोसिस नामक राजदूत बिंदुसार के दरबार में भेजा।
- आजीवक संप्रदाय का अनुयायी मक्खलि गौ’’ााल था।
- बिंदुसार के बाद उसका पुत्र **अशोक** (273 ई. पूर्व – 232 ई. पूर्व) मौर्य वं’’ा का शासक बना।
- **अशोक** का वास्तविक राज्याभिषेक 269 ई. पूर्व में हुआ।
- इसके पहले **अशोक** उज्जैन का राज्यपाल था।
- राज्याभिषेक से संबंधित भास्की के लघु ि’’ालालेख में **अशोक** ने स्वयं को बुद्ध शाक्य कहा है।
- **अशोक** ने 261 ई. पूर्व में कलिंग पर आक्रमण करके उसकी राजधानी तोसली पर अधिकार कर लिया।
- कलिंग युद्ध का विवरण कलिंग के शासक खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख तथा **अशोक** के 13 वें **शिलालेख** से प्राप्त होता है।
- **अशोक** के अभिलेख का पता सबसे पहले 1750 ई. में टीफेन्थेलेट ने लगाया था किंतु इसको पढ़ने में सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को मिली थी।
- **अशोक** के अभिलेख को तीन वर्गों में –

  शिलालेख, स्तंभलेख व गुहालेख में बांटा गया है।

- अधिकां’ा अभिलेखों में **अशोक** क को देवानांप्रिय प्रियदसि कहा गया है।
- **अशोक** का नाम **अशोक** गुर्जरा व मास्की अभिलेख में मिलता है।
- **अशोक** के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक व आर्मेइक लिपियों में मिलते है।
- **अशोक** के खरोष्ठी लिपि के अभिलेख शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा (पाकिस्तान) से प्राप्त हुए है।
- **अशोक** के **अधिकांश** अभिलेखों की लिपि ब्राह्मी व भाषा प्राकृत है।
- **अशोक** ने आजीवकों में निवास के लिए गया के बराबर की पहाड़ियों में चार गुफाओं– लोमा, ऋषि गुफा, कर्ण चोपार, सुदामा गुफा तथा वि’’व झोपड़ी था।
- **अशोक** को अभिलेखों के माध्यम से प्रजा को संदे’’ा देने की प्रेरणा ईरानी शासक डेरियस (दारा प्रथम) से प्राप्त हुई थी।
- मौर्य वं’’ा के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग के द्वारा दिया गया।
- मौर्य वं’’ा के बाद दे’’ाी शासकों में शुंग वं’’ा, कण्व वं’’ा, सातवाहन वं’’ा व चेदि वं’’ा या महामेघ वाहन वं’’ा अस्तित्व में आये।
- मौर्योत्तरकालीन विदे’’ाी शासकों में सर्वप्रथम इण्डो–ग्रीक शासक डेमेट्रियस प्रथम भारत की सीमा में प्रवे’’ा किया।
- सबसे प्रसिद्ध हिंद यूनानी शासक मिनाण्डर हुआ।
- मिनाण्डर की राजधानी साकल (आधुनिक सियालकोट, पाकिस्तान) ि’’ाक्षा का प्रमुख केन्द्र थी।
- मिनाण्डर का बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ वाद–विवाद हुआ जिसका वर्णन बौद्ध साहित्य मिलिन्दपन्हो में मिलता है।
- इण्डो–ग्रीक शासकों ने भारत में मूर्ति निर्माण की गांधार कला शैली का विकास किया।
- शक मूलतः मध्य ए’’िाया (सीरिया के उत्तर में) के निवासी थे।
- भारतीय ग्रंथों में शकों को सीथियन कहा गया है।
- शकों ने भारत में क्षत्रप प्रणाली अर्थात् प्रांतीय प्रणाली की शुरूआत की थी।
- भारत में शकों का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक रूद्रदामन प्रथम हुआ जिसका संस्कृत का प्रथम अभिलेख जूनागढ़ अभिलेख प्रसिद्ध है।
- पार्थियन या पहलव भारत में मूलतः ईरान से आये थे।
- सर्वाधिक प्रतापी पहलव वं’’ा का शासक गोण्डोफर्नीज था जिसके काल में प्रथम इसाई धर्म का प्रचारक सेंट थामस भारत आया था।
- भारत में विदे’’ाी शासक वं’’ाों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण वं’’ा हुआ।
- कुषाणों का मूल निवास स्थान चीन की सीमा पर स्थित चीनी तुर्किस्तान था।
- कुषाण वं’’ा का सर्वाधिक प्रतापी शासक कनिष्क हुआ।

- कनिष्क ने भारत में 78 ई. में शक सवंत् चलाया।
- कनिष्क की दो राजधानियां – पुरूषपुर (पे''ावर, पाकिस्तान) एवं मथुरा थी।
- कनिष्क के काल में कुंडलवन (**कश्मीर**) में वसुमित्र की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था।
- कनिष्क के काल में ही बौद्ध धर्म दो भागों – हीनयान व महायान में बंट गया।
- कनिष्क महायानवादी था।
- कनिष्क प्राचीन भारत के इतिहास में द्वितीय अ''ोक के नाम से जाना जाता है।
- कनिष्क के काल में मूर्ति निर्माण की गांधार कला व मथुरा कला शैली का विकास चरम पर था।
- भारत में सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने ही जारी किये।
- कनिष्क के दरबार में संरक्षण प्राप्त विद्वान थे –

  अश्वघोष, नागार्जुन, वसुमित्र, चटक ।

8-7 lkdr lpd **(Key Words) :-**

- ek;kSÙkj dkyhu & मौर्य के बाद का समय
- vk;ktd & भाग्य पर वि''वास करने वालों का नियतिवादी संप्रदाय।
- /kEeuhfr & धर्म पर आधारित आचार–विचार
- vfHkys[k & पत्थरों, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों, प्रतिमाओं, आदि पर खुदे ऐतिहासिह दस्तावेजों से युक्त पुरातात्विक स्त्रोत अभिलेख कहलाते है।
- nsok;kfi; fi;jfl & सम्राट **अशोक** का एक नाम जिसका अर्थ है – देवों का प्यारा
- **खरोश्ठी** – खरोष्ठी एक लिपि है जो दांये से बांये लिखी जाती है।
- Xkqgkys[k & गुफाओं में उत्कीर्ण लेख ।
- Lrwi & बौद्ध धर्म से संबंधित स्तूप का शाब्दिक अर्थ ढेर है। महात्मा बुद्ध व अन्य बौद्ध भिक्षुओं के अव''ोष पर बनाये गये उल्टे कटोरानुमा आकृति को स्तूप कहते है।

8-8 Lo;a eY;kadu dks fy, iz'u **(Self assessment Test)**

- Hkkx ¼d½ cgqfodYih; **प्रश्न** & **(Multiple Choice Qusetions)**

(i) अ''ोक के निम्नलिखित अभिलेखों में से किसमें दक्षिण भारतीय राज्यों का उल्लेख हुआ है

(क) तृतीय मुख्य अभिलेख (ख) द्वितीय मुख्य ि''ालालेख

(ग) नवां मुख्य ि''ालालेख (घ) प्रथम स्तंभ अभिलेख

(ii) इंडिका का लेखक ....था –

(क) प्लूटार्क (ख) जस्टिन

(ग) हेरोडोटस (घ) मगेस्थनीज

(iii) प्रसिद्ध रे"ाम मार्ग (सिल्क मार्ग) पर .... वं"ा के शासकों का अधिकार था

(क) मौर्यों का (ख) शकों का

(ग) कुषाणों का (घ) गुप्तों का

(iv) .... राजा के शासन काल में इसाई धर्म प्रचारक सेंट थामस भारत आया।

(क) मिनाण्डर (ख) रूद्रदामन

(ग) गोन्दोफर्निस (घ) कनिष्क

(v) .... वं"ा के शासकों ने भारत में क्षत्रप प्रणाली को प्रारंभ किया।

(क) कुषाणों ने (ख) हिन्द यवनों ने

(ग) शकों ने (घ) ईरानियों ने

(vi) **अशोक** के अभिलेखों की भाषा .... थी।

(क) प्राकृत (ख) पालि

(ग) देवनागरी (घ) ब्राह्मी

(vii) सोने के सर्वाधिक शुद्ध सिक्के .... ने जारी किये।

(क) गुप्तों ने (ख) कुषाणों ने

(ग) शुंगों ने (घ) हिन्द यवनों ने

(viii) कुषाणों के समय में विकसित मथुरा एवं गांधार कला शैली में .... शैली के अंतर्गत बुद्ध की सर्वाधिक मूर्तियों का निर्माण किया गया है।

(क) गांधार कला (ख) मथुरा कला

(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

(ix) कनिष्क .... का अनुयायी था।

(क) हीनयान (ख) महायान

(ग) थेरवाद (घ) कनिष्क

(x) **अशोक** का सबसे छोटा स्तंभलेख .... है

(क) रूम्मिनदेई (ख) मास्की
(ग) निगलीवा (घ) धौली

1. **अशोक** के साम्राज्य विस्तार का उल्लेख करें ?

   (Discuss the Extent of Ashoka's Empire)

2. अ”ोक के ि”ालालेख के क्या महत्व है ?

   (What are the importance of Ashoka's Edicts)

3. अ”ोक के स्तंभ के संदे”ा क्या है ?

   (What are the messages of Ashoka's Pillars)

4. कनिष्क के साम्राज्य – विस्तार की विस्तार से व्याख्या करें ?

   (Explain the Extent of Kanishka's Empire in details)

¼x½ y?kq mÙkjh; iz”u

1. कणिष्क पर टिप्पणी लिखिए

   (Write notes on Kanishka)

2. अ”ोक पर टिप्पणी लिखिए ।

   (Write notes on Ashoka)

3. निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त नोट लिखे :–

   (Write short notes of the following topics)

   (i) अ”ोक के स्तंभ लेख (Pillars of Ashoka)

   (ii) रे”ाम मार्ग (Silk Route)

   (iii) अ”ोक के ि”ालालेख (Edicts of Ashoka)

   (iv) कलिंग युद्ध (The Kalinga War)

8-9 ¼d½ izxfr leh{kk gsrq iz”ukÙkj **(Answer to check your Progress)**

(I) आजीवक (II) उपगुप्त (III) शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा

(IV) कनिष्क (V) कनिष्कपुर (VI) टीफेन्थेलर

(VII) पुरूषपुर व मथुरा (VIII) 13 वें ि”ालालेख

(IX) कुषाण वं”ा (X) तोसली

¼[k½ Hkkx

SUBJECT: HISTORY PART-1, SEMESTER -1	
COURSE CODE:HIST-101	**AUTHOR – MOHAN SINGH BALODA**

(I) सत्य (II) असत्य (III) असत्य

(IV) सत्य (V) सत्य (VI) सत्य

(VII) असत्य (VIII) सत्य

(IX) सत्य (X) असत्य

8-10 lgk;d ,oa lanHkZ xzUFk lwph&

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास
  अविना”ा, चन्द्र अरोड़ा, प्रदीप पब्लिके”ान
  प्रताप रोड, जालांधर शहर – 144008
- दृष्टि पब्लिके”ान्स 641, प्रथम तल, डॉ मुखर्जी नगर, दिल्ली – 09
- सामान्य अध्ययन स्पेक्ट्रम पब्लिके”ान – दिल्ली
- यूनीक सामान्य अध्ययन
  यूनीक पब्लिके”ांस
  प्रयाग पुस्तक भवन, 20 ए, यूनिपर्सिटी रोड़
  इलाहाबाद – 211002 (उत्तर प्रदे”ा) 9812968356

LESSON NO. 9

lenxIr o Ákphu Hkkjr d cnjxkg ,o uxjh; dUn

(Samunragupta and Ports and Urban Centres in Ancient India)

v/;k; lajpuk **(Lesson Structure)**

9.1 अधिगम उद्देश्य(Learning Objective)

9.2 परिचय(Introduction)

9.3 अध्याय के मुख्य बिन्दु(Main body of Text)

9.3.1 समुद्रगुप्त के साम्राज्य का विस्तार (Extent of Sanudragupta's Empire)

9.3.2 समुद्रगुप्त के साम्राज्य का मानचित्र (Map of Samudragupta's Empire)

9.4 अध्याय के आगे का मुख्य भाग (Further Main body of Text)

9.4.1 प्राचीन भारत के बंदरगाह (Port of Ancient India)

9.4.2 प्राचीन भारत के बंदरगाहों के मानचित्र (Map of Parts of Ancient India)

9.4.3 प्राचीन भारत के नगरीय केंद्र(Urban Centres of Ancient India)

9.4.4 नगरीय केंद्रों के मानचित्र(Map of Urban Centres)

9.5 प्रगति समीक्षा (Check Your Progress)

9.6 सारांश/सक्षिप्तिका(Summary)

9.7 संकेत–सूचक(Key-words)

9.8 स्व–मूल्यांकन के लिए परीक्षा(Self Assessment Test/ SAT)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर(Answer to Check your Progress)

9.10 सहायक संदर्भ ग्रंथ(References)

9-1 vf/kxe mn~ns'; **(Learning Objectives)**

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी योग्य होंगे :–

- अधिगमकर्त्ता गुप्त वंश के सर्वाधिक प्रतापी विस्तारवादी शासक समुद्रगुप्त के साम्राज्य–विस्तार का वर्णन कर सकेंगे।

- शिक्षार्थी समुद्रगुप्त के विजय अभियान पर चर्चा कर सकेंगे।

- गुप्त साम्राज्य के विस्तार में समुद्रगुप्त द्वारा जोड़े गए क्षेत्रों को मानचित्र पर पहचान सकेंगे।

- विद्यार्थी प्राचीन भारत के व्यापार–वाणिज्य में पूर्वी व पश्चिमी तट पर सक्रिय बंदरगाहों के बारे में बता सकेंगे।

- शिक्षार्थी भारत के मानचित्र पर इन बंदरगाहों को चिन्हित कर सकेंगे।

- प्राचीन भारत के नगरीय केंद्र का विद्यार्थी विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।

- भारत के मानचित्र पर इन नगरीय केन्द्रों की विद्यार्थी पहचान कर सकेंगे।

9-2 ifjp; **(Introduction)**

भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध गुप्तकाल के शासकों ने ही मौर्यों के बाद एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। मौर्योत्तर काल में स्थापित महान कुषाण वंश के पतन के बाद उभरे छोटे–छोटे राज्यों जिनमें राजतंत्रीय राज्यों के रूप में नागवंश व वाकाटक वंश के राज्य थे और गणतंत्रीय राज्यों में भागव, अर्जुनायन, लिच्छवि तथा यौद्धेय राज्य थे इनको समाप्त करके इनके अवशेषों पर जिस विशाल साम्राज्य की नींव रखी गयी वह था – गुप्त साम्राज्य। गुप्तकाल में भारतीय राजनीति व संस्कृति चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी। यद्यपि कुषाणों के सामंत के रूप में गुप्त वंश की नींव रखने वाला श्रीगुप्त था। फिर भी गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र, महान सम्राट, चंद्रगुप्त प्रथम को ही इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। चंद्रगुप्त प्रथम जिसमें माहराजाधिराज की उपाधि धारण की थी के राज्य में प्रयाग से लेकर पाटलिपुत्र तक के प्रदेश सम्मिलित थे। चंद्रगुप्त प्रथम ने विच्छवी राजकुमारी के साथ विवाह करके वैवाहिक संबंधों के द्वारा राज्य विस्तार की जो नीति आरंभ की वह गुप्त वंश के बाद के शासकों में भी देखने को मिलता है। चंद्रगुप्त प्रथम ने 319–20 ई. में गुप्त संवत् जारी करके गुप्त वंश की श्रेष्ठता को और भी अधिक बढ़ा दिया।

चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त लगभग 335 ई. में गुप्त वंश का शासक बना। समुद्रगुप्त ने दरबारी कवि हरिसेन द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के विजय द्वारा राज्य के विस्तारवादी नीति का पता चलता है। उसने आर्यावर्त तथा दक्षिणावर्त के क्रमशः 9 राज्यों तथा 12 राज्यों को पराजित किया। उसके इन्हीं विजयों के कारण इतिहासकार स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा। प्रयाग प्रशस्ति से यह पता चलता है कि समुद्रगुप्त ने गुप्त शक्ति के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण के लिए विजय की आक्रामक नीति को अपनाया।

इसलिए उसे उसके दरबारी कवि हरिसेन प्रयाग–प्रशस्ति में 'धरणि बंध' अर्थात् विजय द्वारा संपूर्ण पृथ्वी को अपने साम्राज्य में बांध लेने वाला बताया है। उसका एकमात्र उद्देश्य था छोटे–छोटे राज्यों के विघटन की प्रक्रिया को समाप्त करके एक अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना करना। प्रयाग–प्रशस्ति से पता चलता है कि समुद्रगुप्त सिर्फ विस्तारवादी नीति वाला विजेता शासक ही नहीं था बल्कि एक सुव्यवस्थित शासन कर्ता, महान कवि संगीतज्ञ और विद्या का संरक्षक भी था। यद्यपि समुद्रगुप्त की कोई रचना प्राप्त नहीं हुआ है लेकिन उसे उसके सिक्के पर वीणा वादन करते हुये दिखाया गया है जिससे उसके संगीत प्रेम का पता चलता है।

समुद्रगुप्त के बाद मजबूत गुप्त वंश को स्वर्ण युग से प्रसिद्ध करने वाला उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय लगभग 375 ई. में गद्दी पर बैठा। चंद्रगुप्त द्वितीय ने भारत से शकों की शक्ति समाप्त करके विक्रमादित्य जारी किया। इस प्रकार गुप्त वंश के पीछे के शासकों की भांति चंद्रगुप्त द्वितीय ने विजय व वैवाहिक संबंधों के द्वारा गुप्त साम्राज्य को और अधिक विस्तार दिया। लेकिन वास्तव में चंद्रगुप्त द्वितीय के शासन को विद्या एवं कला को ऊँचाई पर पहुँचाने वाले के रूप में जाना जाता है। उसके दरबार में ही नवरत्न के रूप में प्रसिद्ध विद्वानों की मंडली निवास करती थी। उसके शासनकाल में ही चीनी यात्री फाहियान भारत आया था। इस प्रकार समुद्रगुप्त के द्वारा विस्तारित राज्य को और मजबूत बनाकर चंद्रगुप्त द्वितीय ने गुप्त साम्राज्य को मजबूत स्थिति में पहुँचा दिया। चंद्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कुमारगुप्त राजगद्दी पर बैठा। उसने 414 ई. से 455 ई. तक राज्य किया। एक महान् सम्राट के रूप में उसने अपने पिता के साम्राज्य को सुव्यवस्थित करके स्थिर रखा। उसके काल में साम्राज्य की एकता तथा शक्ति पूर्व के गुप्त शासकों की तरह बनी रही। समुद्रगुप्त की भांति विजय के उपरांत कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ किया। लेकिन इसकी प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण उसके द्वारा स्थापित विश्व प्रसिद्ध बौद्ध शिक्षा केन्द्र नालंदा विश्वविद्यालय था। कुमारगुप्त के बाद उसका पुत्र स्कन्दगुप्त गद्दी पर बैठा। उसने 455 ई. से 467 ई. तक राज्य किया। स्कंदगुप्त को हूणों के विरुद्ध सफलतापूर्वक युद्ध करने और उसे परास्त करने के रूप में जाना जाता है। स्कन्दगुप्त ने न केवल विदेशी ताकतों से गुप्त साम्राज्य को सुरक्षित किया बल्कि साम्राज्य के आंतरिक विद्रोहों का सफलतापूर्वक दमन करके गुप्त साम्राज्य को ज्यों का त्यों बनाकर रखा।

स्कंदगुप्त के बाद के शासक कमजोर साबित हुये जो विशाल साम्राज्य को व्यवस्थित रखने में सफल नहीं हो सके और धीरे–धीरे यह विशाल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो गया। इस प्रकार एक स्वतंत्र शासक के रूप में चंद्रगुप्त प्रथम ने जिस विशाल गुप्त साम्राज्य की स्थापना किया और जिससे अपने आक्रामक विजय की विस्तारवादी नीति के द्वारा समुद्रगुप्त आर्यावर्त से लेकर दक्षिणावर्त तक विस्तारित किया वह 550 ई. तक आते–आते समाप्त हो गया।

9-3 v/;k; d: e[; fcUn (Main body of Text)

9-3-1 lenxlr d: lkekT; dk foLrkj (Extent of Samudragupta's Empire)

गुप्त वंश का सबसे प्रतापी शासक महान विजेता समुद्रगुप्त स्वयं एक महान सेनापति एवं कुशल योद्धा था। तीसरी सदी में आर्यावर्त ने कुषाणों तथा दक्कन में सातवाहनों के प्रभुत्व की समाप्ति के बाद एक राजनीतिक विघटन का दौर आरंभ और अनेक छोटे–छोटे राज्य अस्तित्व में आ गये। इसी परिप्रेक्ष्य में गुप्त साम्राजय का

सर्वाधिक शक्तिशाली विस्तारवादी शासक समुद्रगुप्त ने अपने आक्रामक विजय नीति द्वारा राजनीति एकता स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इसके लिए समुद्रगुप्त ने एक विशेष प्रकार की विजय नीतियाँ अपनायी थीं जो इस प्रकार की थी –

(i) jkT; i!lHkk) j.k dh uhfr & यह नीति समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान के दौरान मगध के आसपास के राज्यों के लिए अपनाई। इसके अंतगर्त राज्यों को पराजित कर उन्हें अपने राज्य में मिला लिया जाता था।

(ii) lo'djnkukKkdj.k dh uhfr & राज्य से दूर स्थित सीमांत क्षेत्रों के लिए यह नीति अपनायी गयी थी। जिसमें राज्यों को अधीनता स्वीकार कर उन्हें वार्षिक कर देने पड़ते थे तथा उनकी आज्ञा में उपस्थित होना पड़ता था।

(iii) ifjpkfjdhdr dh uhfr & अपनी इस नीति के अंतर्गत समुद्रगुप्त ने आरविक जनजातीय राज्यों को विजित करके उनको अपने सेवक के रूप में बनाकर रखता था।

(iv) xg.kHkk{kkuxg dh uhfr & इस नीति के अंतर्गत राज्यों को जीतकर उन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करवाकर पुनः उनको राज्य सौंप देते थे। समुद्रगुप्त ने दक्षिणावर्त के 12 राज्यों के प्रति यही नीति अपनायी थी।

(v) dU;kikpu & वैवाहिक संबंधों के द्वारा राज्य को जीतने की नीति। समुद्रगुप्त ने विदेशियों को पराजित कर उनके साथ यह नीति अपनायी थी।

इस प्रकार इन विजय नीतियों को अपनाकर समुद्रगुप्त ने साम्राज्य विस्तार के लिए जो विजय अभियान चलाया उनसे प्राप्त विजयों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :–

(i) vk;kor! vFkkr· mÙkjh Hkkjr dh fot;

गुप्त साम्राज्य की गद्दी पर बैठते ही समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम उत्तरी भारत के छोटे–छोटे राज्यों पर चढ़ाई की। इलाहाबाद के निकट कौशाम्बी नामक स्थान पर नागवंश के नौ राजाओं जिन्होंने उसके विरुद्ध गुट बना लिया था भयानक युद्ध हुआ जिनमें नागवंश के सभी नौ राजाओं को समाप्त करके इनके प्रदेशों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया गया। जिन नौ राजाओं और उनके प्रदेश को समुद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य में मिलाया था वे इस प्रकार थे –

रूद्रदेव (बुन्देलखण्ड), मलिल (बुलंदशहर), चंद्रवर्मा (दक्षिणी राजपुताना), नन्दी नाग (मध्यभारत), बालवर्मा (पूर्वी भारत), नागदत्त (मध्य प्रदेश), गणपति नाग (मथुरा), अच्युत (बरेली), नागसेन (पद्यावती)

इन नौ राज्यों पर समुद्रगुप्त के विजय के फलस्वरूप पश्चिमी पंजाब, कश्मीर, सिन्ध गुजरात तथा पश्चिमी राजपूताना को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तरी भारत के क्षेत्र गुप्त साम्राज्य में मिला लिये गये। उसके विजय अभियान व उसकी कठोर नीति से भयभीत होकर सीमांत क्षेत्र के कबीलों तथा छोटे–छोटे राज्यों ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

(ii)nf{k.kkor dh fot; & 'इलाहाबाद प्रशस्ति' के अनुसार आर्यावर्त पर अपने अधिकार स्थापित करने के उपरांत दक्षिणापथ विजय अभियान के दौरान समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के बारह राज्यों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। दक्षिणापथ के ये 12 राज्य इस प्रकार थे – कौशल, महाकांतार, कोराल पिष्ठपुर, कोट्टूर, एरण्डपटल, काँची, अवमुक्त, वेंगी, पालक्क देवराष्ट्र, कुस्थलपुर।

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ विजय के लिए ग्रहण अर्थात् शत्रु पर अधिकार, मोक्ष अर्थात् शत्रु को मुक्त करना तथा अनुग्रह अर्थात् शत्रु को उसका राज्य लौटाना इन तीनों प्रकार की नीतियों का प्रयोग किया था। एक चतुर राजनीतिज्ञ की भांति अपने साम्राज्य विस्तार की इन नीतियों के तहत वह परिस्थितियों को देखते हुये दक्षिण–विजय से केवल धन तथा गौरव प्राप्त करके ही संतुष्ट हो गया।

(iii) lhekUr jkT;ks dk v/khuLFk djuk

समुद्रगुप्त ने अपने विजय अभियान को आगे बढाते हुये अपने साम्राज्य–विस्तार के क्रम में सीमान्त राज्यों को गुप्त साम्राज्य के अधीन करके उन्हें सभी प्रकार के कर देने के लिए मजबूर किया था। जिनमें समतट (दक्षिण–पूर्वी बंगाल), डवाक (ढाका), कामरूप (असम) तथा नेपाल आदि के राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार की तथा उससे मैत्रीपूर्व संबंध स्थापित किये।

(iv)dchyks dk }kjk v/khurk Lohdkj djuk &समुद्रगुप्त के विजय अभियान से घबराकर उत्तर–पश्चिम के गणतंत्रीय कबीलों – मालव, अर्जुनायन, यौद्धेय, आभीर, मद्रक आदि ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की। ये सभी गणतंत्रीय कबीलों के प्रदेश अधिकतर पंजाब तथा राजपूताना में थे।

(v) taxyh tkfr;ks@tutkfr;ks dk neu

जंगली जातियाँ व जनजातियाँ जो मध्य भारत तथा उड़ीसा के जंगलों में निवास करती थीं जो प्रायः शांति तथा व्यवस्था को भंग करके साम्राज्य–विस्तार में बाधा उत्पन्न करती थी को समुद्रगुप्त पूर्ण शक्ति के साथ दबा दिया। इसी क्रम में वन प्रदेश में फैले आटविक राज्यों (उत्तर प्रदेश से मध्य प्रदेश तक) को अपना सेवक बनाया।

इस प्रकार जंगली जातियों व जनजातियों को अपने वश में लाकर उत्तर तथा दक्षिण भारत के मार्ग को सुगम बनाकर दोनों भागों का मेलजोल बढ़ा दिया। इससे साम्राज्य–विस्तार को बढ़ावा मिला।

(vi)fon'kh 'kfDr;k ls lac/k LFkkiuk }kjk lkezkT; foLrkj

समुद्रगुप्त ने अपने साम्राज्य विस्तार की नीति को बढ़ावा देने के लिए विदेशी शक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण एवं वैवाहिक संबंध स्थापित किये।

'इलाहाबाद प्रशस्ति' से पता चलता है कि देवपुत्र, शाही तथा शाहानुशाही कुषाणों ने और पश्चिमी भारत के शकों ने उसके दरबार में अपने दूतों को उपहारों सहित भेजा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महान विस्तारवादी गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने एक विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। उसका साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से लेकर पश्चिम में चम्बल नदी तक फैला हुआ था।

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर समुद्रगुप्त द्वारा विजित स्थानों और देशों को पाँच समूहों में विभाजित करके संक्षिप्त रूप में उसके साम्राज्य विस्तार को समझा जा सकता है।

प्रथम समूह के अंतर्गत गंगा–यमुना दोआब के शासक को शामिल किया जाता है, जिन्हें अधीनस्थ बनाकर उनके राज्यों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया गया।

दूसरे समूह के अंतर्गत पूर्वी हिमालय क्षेत्र के राज्यों के शासकों साथ ही नेपाल, असम व बंगाल जैसे सीमावर्ती राज्यों को शामिल किया जाता है। इन सबको अपने साम्राज्य विस्तार के क्रम में अपनी शक्ति का एहसास कराया।

तीसरे समूह में विध्य क्षेत्र में स्थित वनों के साम्राज्य को शामिल किया जाता है जिन्हें समुद्रगुप्त ने अपने अधीन कर लिया था।

चौथे समूह में पूर्वी दक्कन और दक्षिण भारत के बारह शासकों को शामिल किया जाता है, जिन्हें हटाकर अपनी अधीनता स्वीकार करने को मजबूर कर दिया था। समुद्रगुप्त की पहुँच तमिलनाडु में काँची तक हो गई थी, जहाँ पल्लवों को गुप्त अधीनता स्वीकार करने पर मजबूर किया गया।

पाँचवे समूह में शक और कुषाण आदि को शामिल किया जाता है जिन्हें समुद्रगुप्त ने सत्ता से अलग कर दिया और सबको अपनी अधीनता स्वीकार करने को मजबूर कर दिया था। अपनी विजय के पश्चात् समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और 'अश्वमेध पराक्रम' की उपाधि धारण की। इसमें कोई संदेह नहीं कि समुद्रगुप्त ने अपने

साम्राज्य विस्तार की प्रक्रिया में विजय की आक्रामक नीति को अपनाते हुये बलपूर्वक भारत के बड़े हिस्से को जीतकर छोटे–छोटे बिखरे राज्यों को गुप्त साम्राज्य में मिलाकर भारत में राजनीतिज्ञ एकता कायम की जिससे उसकी शक्ति को विजित क्षेत्र के बाहर भी बहुत बड़े क्षेत्र में महसूस की गई। यही कारण है कि समुद्रगुप्त की बहादुरी व सैन्य क्षमता के कारण उन्हें भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

9-3-2 lenqnzxqIr dk lkezkT; dk ekufp= **(Map of Samudragupta's Empire)**

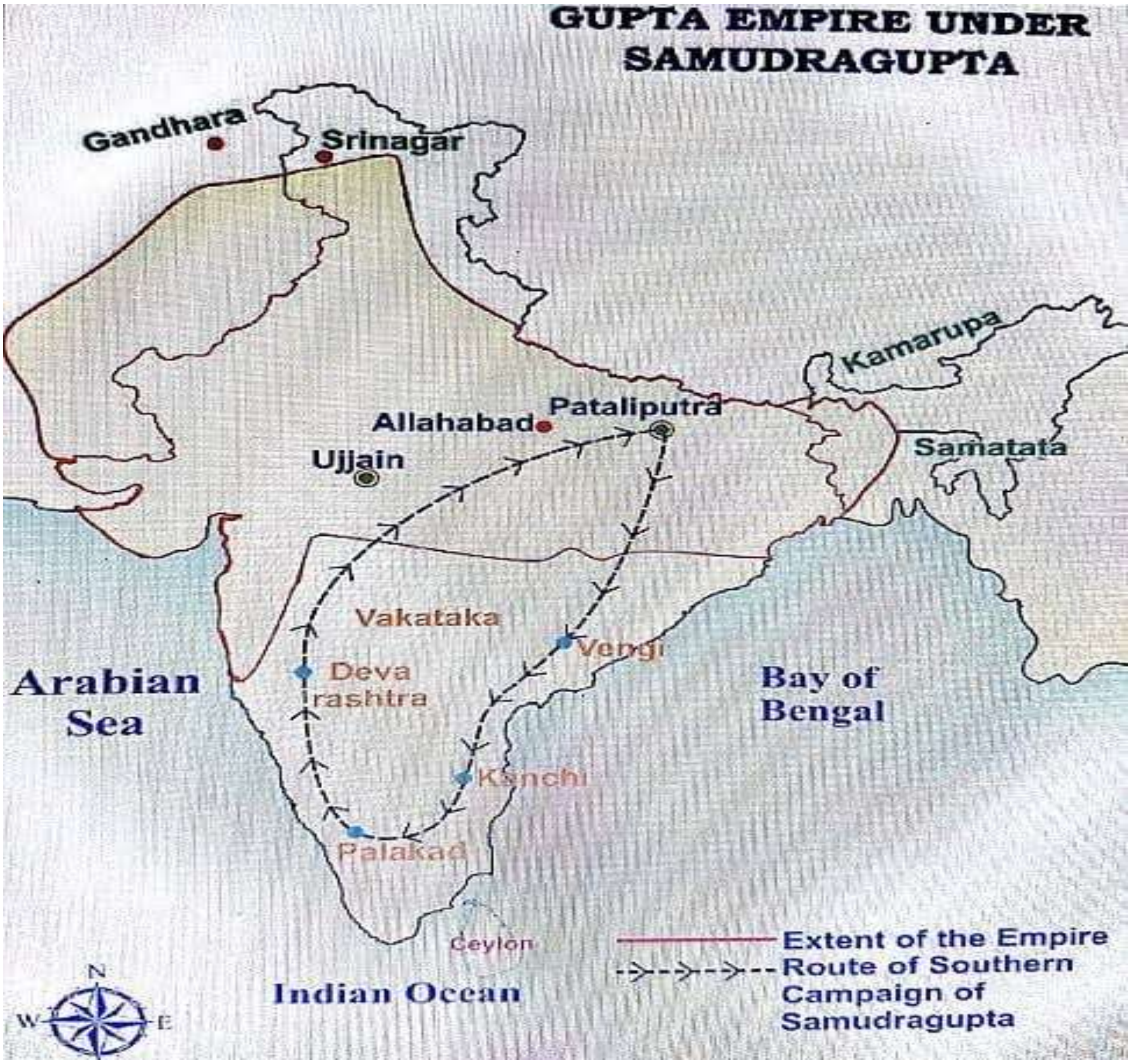

Source:- www.sansarlochan.in

9-4 v/;k; d vkx dk e[; Hkkx **(Further Main body of Text)**

9-4-1 Ákphu Hkkjr d cnjxkg **(Port of Ancient India)**

प्राचीन भारत के इतिहास में सिंधु घाटी सभ्यता जिसका सर्वाधिक उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता है कांस्य युग की मानी जाती है। हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी। उन्नत कृषि व व्यापार को इस सभ्यता की उन्नति का प्रमुख कारण माना जाता है। कृषि तथा पशुपालन के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के उद्योग–धंधे, कला–कौशल, नाप–तोल के साधन, व्यापार तथा विदेशों से संपर्क आदि का हड़प्पा–सभ्यता के उन्नति में बहुत बड़ा योगदान था। प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि सैंधव सभ्यता का व्यापार केवल सिंधु क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था बल्कि, मिस्र, मेसोपोटामिया और मध्य एशिया से इनका व्यापारिक संबंध स्थापित था। सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा

सभ्यता के प्रमुख बंदरगाह – लोथल, रंगपुर, सुरकोट्द्य, प्रभासपाटन आदि थे। ये सभी बंदरगाह नगर गुजरात में स्थित है।

सैंधव काल में गुजरात में स्थित लोथल बंदरगाह नगर के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्ध था।कांस्य युग की हड़प्पा सभ्यता के बाद भारत में कृषि व पशुपालन पर आधारित ग्रामीण सभ्यता का उदय हुआ। जिसे लौहयुगीन सभ्यता के अंतर्गत वैदिक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। इसे ऋग्वैदिक काल। पूर्व वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल नाम से दो भागों में बांटा गया है। वैदिक काल में कृषि आधारित छोटे–मोटे उद्योग धंधों का भी विकास हुआ जिससे व्यापार में तेजी आई। उत्तरवैदिक काल में लोहे व अन्य धातुओं के प्रयोग से व्यापार और अधिक बढ़ने लगे जिससे जन व जनपद के रूप में शहरों, नगरों के विकास की प्रक्रिया को जन्म दिया। अंत में आगे चलकर उत्तरवैदिक काल के अंत में जनपदों का विस्तार हुआ और ये जनपद विकसित होकर महाजनपद का रूप ले लिया। इन महाजनपदों ने ही ईसा पूर्व छठी सदी में राजतंत्र और गणतंत्र आधारित राज्यों का प्राचीन भारत में विकास किया। प्राचीन भारत इन महाजनपदों की संख्या 16 थी। इनका विवरण हमें बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय व जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से प्राप्त होता है। इन महाजनपदीय राज्यों के विस्तार के साथ ही प्राचीन भारत में धन–धान्य की समृद्धि, कला–कौशल के विकास, व्यापार–वाणिज्य का चरमोकत्कर्ष उभरकर सामने आया। इस प्रक्रिया ने शहर न्नर के विकास की प्रक्रिया को जन्म दिया। छोटे–छोटे महाजनपदों को संगठित कर एक शक्तिशाली राज्य बनाने की आवश्यकता को जन्म दिया। इससे आंतरिक व बाह्य व्यापार बढने प्रारंभ हुये।

इस प्रक्रिया में प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में एक मगध सबसे शक्तिशाली और समृद्ध था जिसके प्रथम शक्तिशाली शासक बिम्बिसार ने मगध साम्राज्य के नाम से एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। इस मगध साम्राज्य की प्रारंभिक राजधानी गिरिव्रज या राजगृह थी और बाद में इसकी राजधानी पाटलिपुत्र बनी। हर्थक वंश के बिम्बिसार से लेकर नंदवंश के धनानंद तक कई शासकों ने मगध पर राज किया किंतु नंद वंश के बाद आये मौर्यों के शासन में मगध साम्राज्य चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। मौये काल में व्यापार–वाणिज्य का स्वरूप आंतरिक से लेकर विदेशी व्यापार तक अत्यंत विस्तृत हो गया। मौर्य काल में प्रमुख व्यापारिक संगठन श्रेणी, निगम, संघ, सार्थवाह आदि के माध्यम से बड़े ही सुव्यवस्थित ढंग से व्यापार के कार्य को आगे बढ़ा रहे थे। मौर्य काल से आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार जल और स्थल दोनों मार्गों से होता था। इस समय भारत का बाह्य व्यापार रोम, सीरिया फारस, मिस्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ बड़े पैमाने पर जल मार्गों से होता था। इसके लिए राज्य की ओर से व्यापारिक जहाजों का उद्योग प्रमुख रूप से लगाया गया था। आंतरिक व्यापार के प्रमुख केंद्र पाटलिपुत्र, काशी, उज्जैन, तोसली, कौशांबी आदि नगर अपने नजदीक के बंदरगाहों से विशेष व्यापारिक मार्गों द्वारा

जोड़े गये थे। पश्चिमी भारत के व्यापारिक नगर भृगुकच्छ (आधुनिक भरुच या भड़ौच, गुजरात) बंदरगाह से जुड़े थे जबकि पूर्वी भारत के व्यापारिक नगर ताम्रलिटित (पं. बंगाल) के बंदरगाह से जुड़े थे।

आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार को समुचित तरीके से संचालित करने के लिए चार विशेष व्यापारिक मार्ग बनाये गये थे जो इस प्रकार थे –

प्रथम मार्ग उत्तरापथ उत्तर–पश्चिम पुरुषपुर (पेशावर) से पाटलिपुत्र तक जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मार्ग था।

दूसरा मार्ग पश्चिम में पाटल से पूर्व में कौशांबी के समीप उत्तरापथ मार्ग से मिलता था।

तीसरा मार्ग दक्षिण में प्रतिष्ठान (पैठन, महाराष्ट्र) से उत्तर में श्रावस्ती को जोड़ता था।

चौथा मार्ग भृगुकच्छ (भरुच, गुजरात) से मथुरा तक जाता था जिसके रास्ते में प्रमुख व्यापारिक नगर उज्जयिनी पड़ता था।

इस प्रकार मौर्यकाल में आंतरिक और बाह्य दोनों व्यापार विकसित बंदरगाहों जो आंतरिक व्यापारिक केंद्र के साथ विशेष व्यापारिक मार्गों से जुड़े थे से समुचित तरीके से होता था। इस काल में भारत से मिस्र को हाथी दाँत, कछुए, सीपियाँ, मोती, रंग, नील और लकड़ी निर्यात होता था।

मौर्योत्तर काल में भी आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार के व्यापार को संचालित करने के लिए एक मजबूत व्यापारिक संगठन सुव्यवस्थित तरीके से कार्य कर रहे थे। विशेषकर मौर्योत्तरकालीन विदेशीशासक वंशों में कुषाणों के काल में वाणिज्य एवं व्यापार की प्रगति चरम पर था। इस काल में भारत का मध्य एशिया तथा पश्चिम के देशों के साथ घनिष्ठ व्यापार शुरू हो गया था।

कुषाणों ने खासकर इस वंश का महान शासक कनिष्क ने चीन से ईरान तथा पश्चिमी एशिया तक जाने वाले रेशम मार्ग पर अपना नियंत्रण कर रखा था। यह मार्ग आय का एक बहुत बड़ा स्त्रोत था।

प्रथम शताब्दी ई. में अज्ञात यूनानी नावक द्वारा रचित 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' नामक पुस्तक में भारत से रोम व पश्चिम के देशों को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का विवरण दिया गया है।

इससे यह पता चलता है कि मौर्योत्तर काल में कुषाणों के समय में विदेशी व्यापार चरम पर था। इसके लिए देश के अंदर सुव्यवस्थित व्यापारिक मार्गों का नेटवर्क विकसित किया गया था जो पूर्वी व पश्चिमी तट के बंदरगाहों से जुड़े थे।

इस समय व्यापार मुख्यतः अरब सागर के तटवर्ती बंदरगाहों पर होता था। इस काल में बारबेरिकस (सिंधु के मुहाने पर), अरिकामेडु (पूर्वी तट पर), बेरीगाजता या भड़ौच। भरूच (पश्चिमी तट पर) महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। मौर्योत्तरकालीन भारतीय व्यापार स्पष्ट रूप से दो समूहों द्वारा संचालित होते देखने को मिलता है। उत्तर भारतीय समूह का एक व्यापार समूह पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत से और ताम्रलिप्ति या सौपारा जैसे बंदरगाहों से व्यापार में संलग्न था।

दक्षिण भारत समूह का दूसरा व्यापार समूहइ अधिकाशतः समुद्री व्यापार में ही संलग्न था और इसके लिए पश्चिमी तट मालाबाद और पूर्वी तट कोरोमंडल तट दोनों समुद्री तटों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता था।

गुप्त शासकों के अधीन राजनीतिक एकता, समस्त साम्राज्य में शांति एवं सुव्यवस्था स्थापित होने के कारण आंतरिक तथा विदेशी व्यापार दोनों को खूब प्रोत्साहन मिला और व्यापार–वाणिज्य का विकास उत्कर्ष पर था। पाटलिपुत्र, वैशाली, गया, बनारस, प्रयाग, विदिशा, उज्जैन, भरुच या भृगुकच्छ, ताम्रलिप्ति, पेशावर आदि महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर केंद्र सड़कों द्वारा एक–दूसरे से जोडे गये थे। ये नगर सड़क मार्ग द्वारा नदियों व बंदरगाहों से भी जुड़े थे ताकि आयात–निर्यात को सुगम बनाया जा सके। गंगा, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा आदि नदियों द्वारा व्यापारिक सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया करते थे।

गुप्तकाल में देशीय व्यापार के साथ–साथ विदेशी व्यापार की काफी तरक्की हुई। इस काल में भारत से कपड़ा, हीरे–मोती, नील, दवाइयां, नारियल, हाथी–दांत का सामान आदि वस्तुएं विदेशों को भेजी जाती थीं और विदेशों से सोना, चांदी, तांबा, शीशा, घोड़े आदि मँगाये जाते थे। विदेशों के साथ व्यापार दोनों ही मार्गों – स्थल तथा जल दोनों से होता था। यद्यपि इस काल तक रोमन व्यापार पतन को प्राप्त हो चुका था, लेकिन दक्षिण–पूर्व एशिया एवं चीन के साथ व्यापार में वृद्धि हुई। पश्चिम बंगाल में ताम्रलिप्ति– पूर्वी भारत का जबकि भृगुकच्छ (भड़ौच) पश्चिमी तट पर भारत का प्रमुख बंदरगाह था। इस काल में लंका, जावा, सुमात्रा, चीन आदि देशों से व्यापार ताम्रलिप्ति बंदरगाह से होता था। पश्चिमी देशों के साथ व्यापार भृगुकच्छ तथा कैम्बे बन्दरगाहों द्वारा होता था।

9-4-2 izkphu Hkkjr ds cUnjxkgksa ds ekufp= **(Map of Parts of Ancient India)**

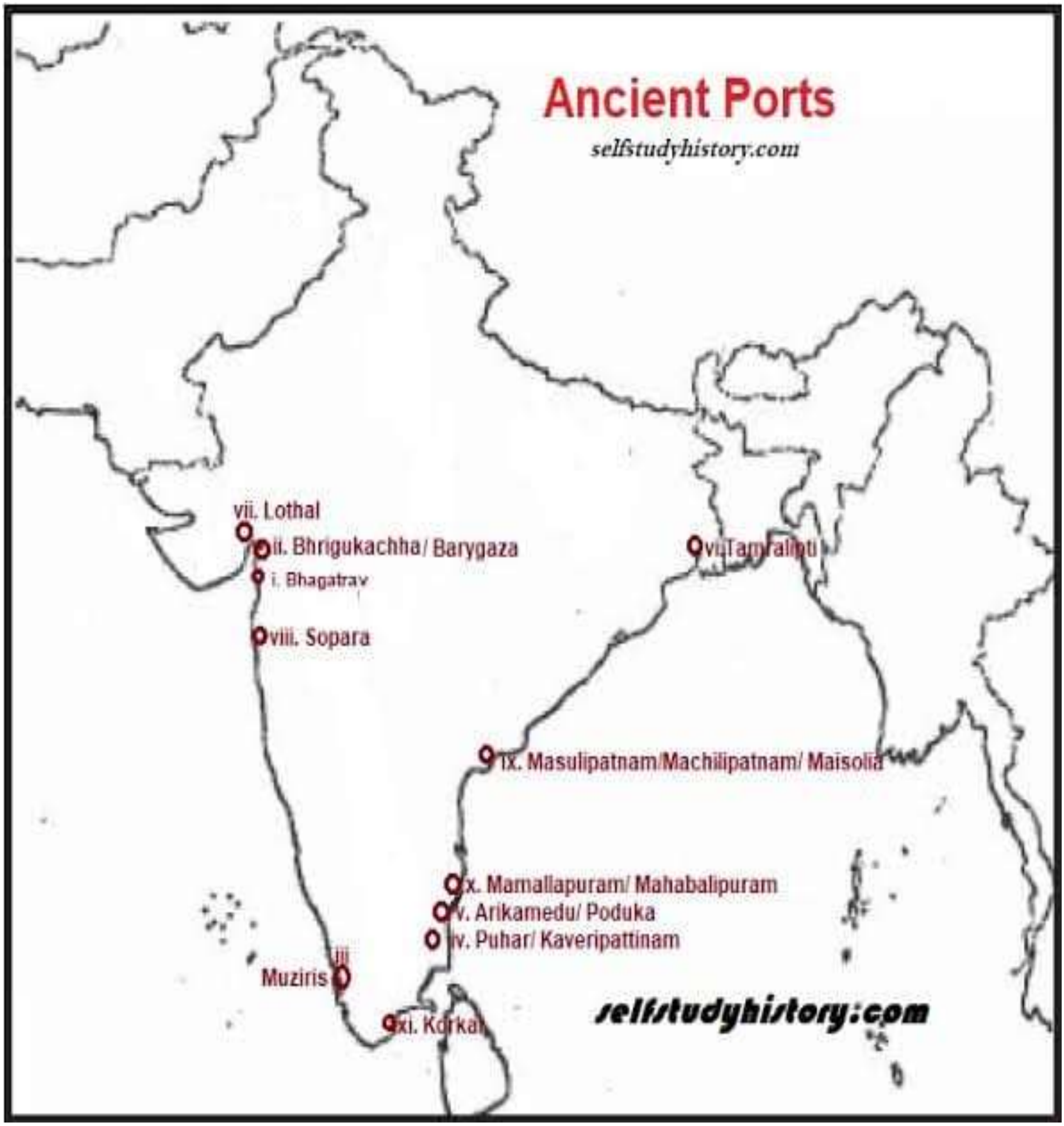

Source:-www. selfstudyhistory.com

9-4-4 uxjh; dsUnzksa dk ekufp=**(Map of Urban Centres)**

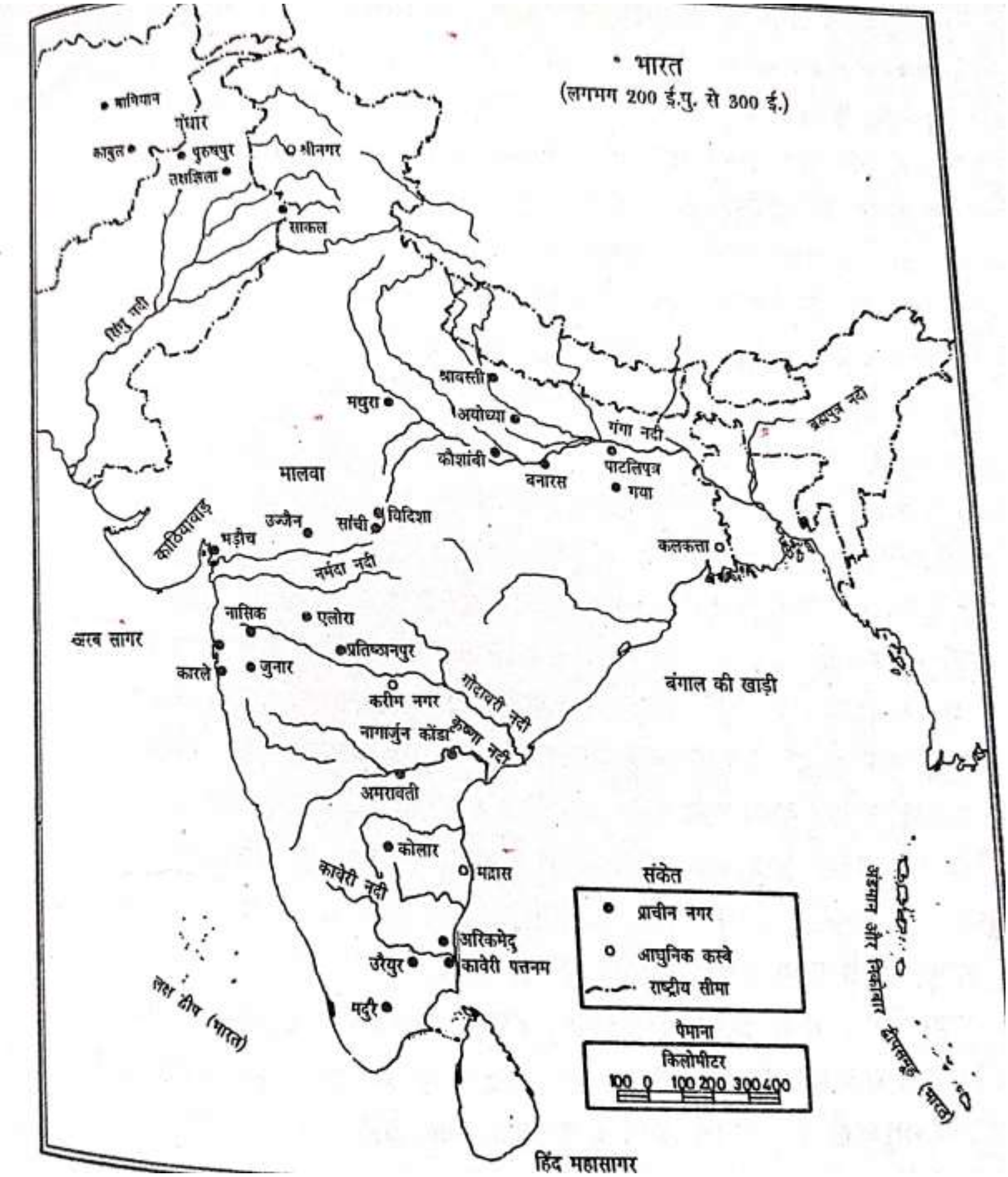

(1)

Sources:प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, D.N Jha P. 135

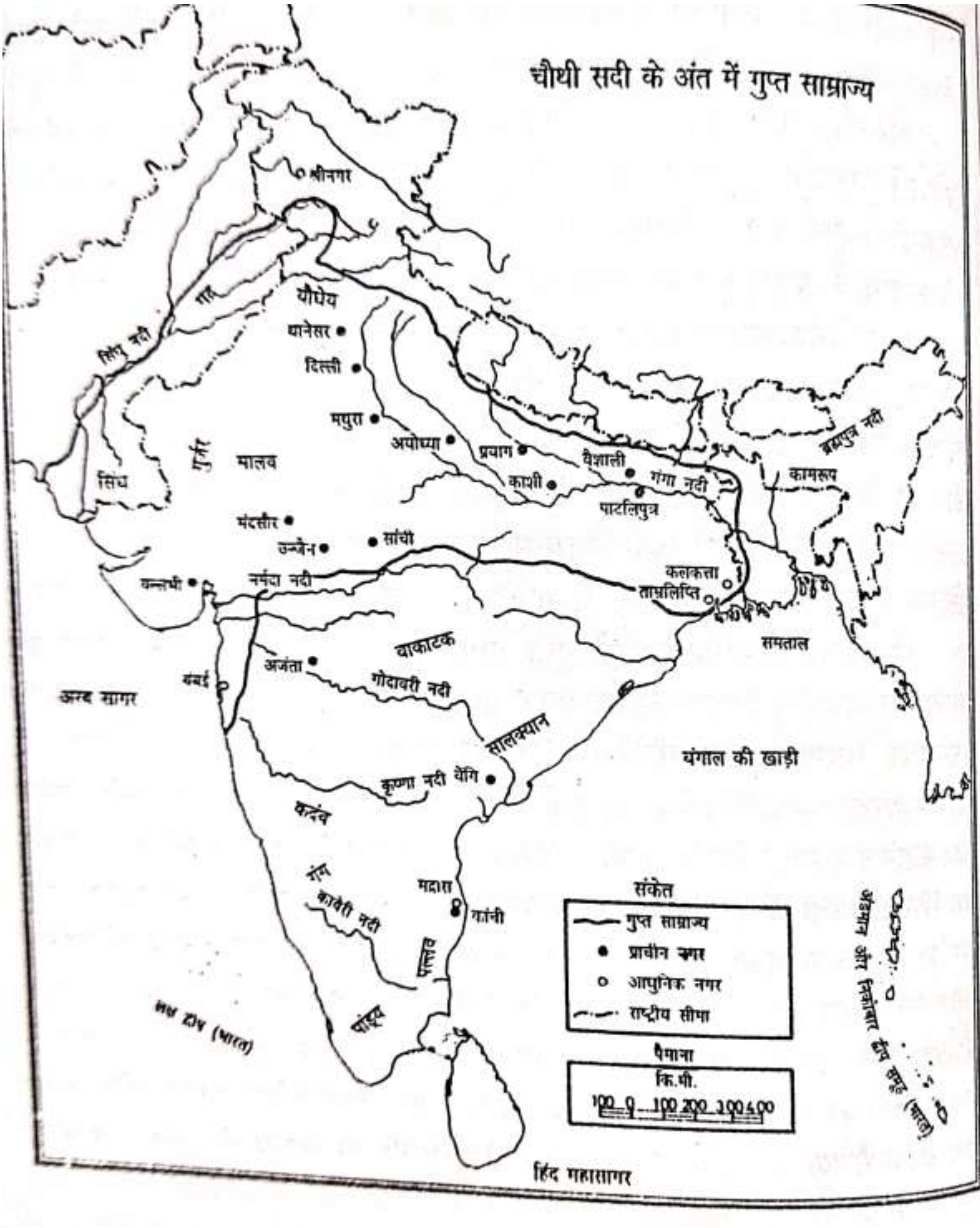

⑵Sources:प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, D.N Jha P. 168

9-4-3Ákphu Hkkjr d uxjh; dsUnz **(Urban Centres of Ancient India)**

कांस्य युग में सैंधव सभ्यता प्राचीन भारत में एक नगरीय सभ्यता थी। भारतीय उपमहाद्वीप में इसका विस्तार था। इस सभ्याता को प्राचीन भारत में प्रथम नगरीकरण की प्रक्रिया के रूप में माना जाता है। आधुनिक युग में सैंधव सभ्यता के जिस नगर की खोज सर्वप्रथम 1921 ई. में रायबहादुर रयाराम जाहनी के द्वारा किया गया वह था – पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा। इसी हड़प्पा नगर के नाम पर आज सैंधव सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से जानते हैं। हड़प्पा सभ्यता में कृषि व पशुपालन के साथ कई प्रकार के उद्योग–धंधों का कार्य होता था। इस काल में वाणिज्य–व्यापार सिर्फ देश के अंदर ही नहीं बल्कि मिस्र, मेसोपोरामिया और मध्य ऐशिया से भी होता था। लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, प्रभासपास आदि हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख बंदरगाह थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, चक्हूदड़ो, कालीबंगा, लोथल, सुरकोटदा, बनावली, रोपड़, आलममीरपुर, सुर कागेंडोर, धौलामीरा आदि इस काल के प्रमुख नगर थे। इस सभ्यता के लोगों को धातुओं को गलाने का ज्ञान था। जिससे नगरीकरण को बल मिला। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि इस सभ्यता के लोगों को लोहा धातु का ज्ञान नहीं था।

सैंधव सभ्यता के बाद जब भारत में लोहे का प्रयोग आरंभ हुआ जिसे वैदिक काल के नाम से जाना जाता है। भारत में वैदिक काल को कृषि व पशुपालन पर आधारित एक ग्रामीण सभ्यता के रूप में माना जाता है।

सामान्यतः प्राचीन भारत में लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत को उत्तर–वैदिक काल (1000–600 ई. पूर्व) से जोड़ा जाता है जिसके पर्याप्त साक्ष्य भी उपलब्ध है। इस समय सरस्वती नदी से लेकर गंगा के दोआब तक धीरे–धीरे नगरीकरण की प्रक्रिया की सूचना मिलती है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से पता चलता है कि आर्य जातियों के परस्पर मेल–मिलाप से जनपदों के विस्तार के फलस्वरूप महाजनपदों का उदय होने लगा। इसीलिये उत्तरवैदिक काल के बाद छठी शताब्दी ईसा पूर्व का भारत महाजनपद युग के नाम से प्राचीन भारत में जाना जाता है। महाजनपद युग में राज्य विस्तार की प्रक्रिया आरंभ हुई। इस काम में कला–कौशल की विकास, धन–धान्य की समृद्धि व व्यापार–वाणिज्य बढ़ने के साथ नगर व्यापार के केंद्र में बड़ी तेजी से वृद्धि होने लगे। इस काल में बौद्ध ग्रंथ अंगुन्तर निकाय व जैन ग्रंथ भगगती सूत्र 16 महाजनपदों की सूचना देते थे। ये महाजनपद दक्षिण भारत का एकमात्र महाजन पद अश्मक जिसकी राजधानी पोलना या पोटली सहित सम्पूर्ण भारत में फैले थे। महाजनपद काल में राजतंत्रात्मक व गणतंत्रात्मक दोनों प्रकार के राज्यों के विस्तार हो रहे थे। प्राचीन भारत का वैशाली का निच्छवी गणराज्य विश्व का प्रथम गणतंत्र माना जाता है। यह वैशाली वज्जि महाजनपद की राजधानी थी। इस प्रकार महाजनपद युग में दोनों प्रकार के राज्यों के शासनकाल में तेजी से नगर के विकास होने लगे। इन 16 महाजनपदों

मगध सबसे शक्तिशाली और समृद्ध जनपद था। आधुनिक पटना एवं गया जिलों के आसपास का भाग मगध जनपद में शामिल था जिसकी प्रारंभिक राजधानी गिरीब्रज या राजगृह थी।

कालांतर में मगध का विस्तार एक मजबूत मगध साम्राज्य के रूप में हुआ और इसी राजधानी पाटलीपुत्र नगर बनी। इस मगध साम्राज्य के ऊपर हर्थक वंश के बिम्बिसार से लेकर एक–से–बढ़कर एक प्रसिद्ध वंश के शासकों ने राज किया परंतु चाणक्य की सहायता से मगध पर चंद्रगुप्त मौर्य के द्वारा जिस मौर्य वंश की स्थापना की गयी उसके काल में मगध साम्राज्य का विस्तार उत्कर्ष पर था। इस वंश के शासकों ने लगभग संपूर्ण भारत में इसका विस्तार किया और आंतरिक बाह्य दोनों प्रकार के वाणिज्य–व्यापार का विस्तार किया जिसके फलस्वरूप बड़ी तेजी से नगर–व्यापार के केन्द्र विकसित होने लगे।

मौर्य काल में भारत का बाह्य व्यापार रोम, सीरीया, फारस, मिस्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ होता था। यह व्यापार पश्चिमी भारत में भुगुकच्छ अर्थात् भरूच बंदरगाह से तथा पूर्वी भारत में ताम्रलिप्ति के बंदरगाहों से किया जाता था। इससे इन बंदरगाहों नगर तथा इनके आसपास बड़ी तेजी से नगरीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत भारत में गिरिब्रज या राजगृह, वैशाली, पाटलिपुत्र, काशाी, उज्जैन, कौशांबी, तोसली, तक्षशिला आदि नगर वैभव के चरम शिखर पर था। मौर्यकाल के बाद के देशी शासक वंशों में एकमात्र सातवाहन वंश ही ऐसा हुआ जिसके शासकों ने लंबे समय तक राज किया। इन्होंने गौदावरी के तट पर स्थित प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) को अपनी राजधानी बनाई और नगर केन्द्रों का विकास किया। मौर्योत्तरकालीन विदेशी शासकों में इण्डो–ग्रीन, शक, कुषाण वंश के शासकों ने भारत में अपनी सत्ता स्थापित की। इन शासकों ने अपनी राजधानी बनाएं तथा शिक्षा, कला, संस्कृति, उद्योग–धंधे व व्यापार–वाणिज्य के विकास के लिए नगरों के विकास को प्रोत्साहन दिया। इण्डो–ग्रीक शासकों साकल (आधुनिक सियालकोट) को अपनी राजधानी बनाया। इस नगर को शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित किया। वास्तव में मौर्योत्तरकालीन विदेशी शासक–वंशों में कुषाण वंश के शासक कनिष्क के काल में भारत में नगर का विकास चरम पर था। कनिष्क के काल में कला, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा–विज्ञान, आर्थिक विकास, आंतरिक व बाह्य व्यापार–वाणिज्य का विकास व सुदृढ़ प्रशासनिक नीति ने नगर के विकास को बढ़ावा दिया।

कुषाणों के सामंत के रूप में गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त व घटोत्कच अधीनस्थ शासक के रूप में ही कार्य करते रहे, किंतु चंद्रगुप्त प्रथम ने महाराजाधिराज की उपाधि के साथ एक स्वतंत्र शासक के रूप में मौर्य साम्राज्य की स्थापना किया। चंद्रगुप्त प्रथम ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र को बनाया तथा अपनी सत्ता की दृढ़ता के लिए 319–20 ई. में गुप्त संवत् भी जारी किया। वैवाहिक संबंधों के द्वारा राज्य विस्तार को आगे बढ़ाने के लिए लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस प्रकार पाटलिपुत्र से लिच्छवि राज्य तक नगर केन्द्रों के विकास को बढ़ावा दिया।

इसके बाद समुद्रगुप्त, गुप्तवंश का सबसे प्रतापी शासक हुआ जिसने विजय की आक्रामक नीति के द्वारा गुप्त साम्राज्य का विस्तार लगभग संपूर्ण भारत में कर दिया। समुद्रगुप्त के राजकवि हरिसेन के प्रयाग–प्रशस्ति से गुप्त साम्राज्य के विस्तार की जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार गुप्त वंश के शासकों ने साम्राज्य विस्तार के साथ–साथ पाटलिपुत्र से आगे बढ़ते हुए आज के उत्तर प्रदेश में कोशाम्बी, साकेत, प्रयाग आदि नगरों का विकास किया। समुद्रगुप्त के बाद विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाला शासक चंद्रगुप्त द्वितीय के काल में शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, कला, व्यापार–वाणिज्य का विकास और भी अधिक होने से नगर केन्द्रों के विकास को बढ़ावा मिला। इस प्रकार गुप्त काल में पाटलिपुत्र, वैशाली, कौशाम्बी, प्रयाग, साकेत (आधुनिक अयोध्या), उज्जैनी, विदिशा, भड़ौच, पैठन, ताम्रलिप्ति, मथुरा, पैशावर, बनारस, गया, नालंदा, बल्लभी आदि नगर प्राचीन भारत में वैभव सम्पन्न नगरों के रूप में विकसित थे।

गुप्तकालीन इन नगरों के उत्थान के कारणों में – बड़े पैमाने पर लोहे का प्रयोग, बढ़ती जनसंख्या, आर्थिक प्रगति, बढ़ते व्यापार, धार्मिक कारण, शिक्षा गतिविधि के केन्द्र व प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में नगर केन्द्र का विकास आदि को महत्वपूर्ण माना जाता है।

9-5 Áxfr lehfkk **(Check your Progress):**

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।(Fill in the blanks)

(i) ताम्रलिप्ति............... तट का प्रमुख बंदरगाह था।

(ii) भृगुकच्छ (भड़ौच) .... तट का प्रमुख बंदरगाह था।

(iii) गुप्त वंश का .... शासक कवि, संगीतज्ञ तथा विद्या का संरक्षक था।

(iv) दक्षिणापथ के .... राज्यों को समुद्रगुप्त ने विजित किया था।

(v) गुप्तवंश के .... शासक ने सर्वप्रथम महाराजाधिराज की उपाधि धारण किया।

(vi) ईसा की पहली सदी में कनिष्क काल में .... ने अरब सागर से चलने वाले मानसून हवाओं की जानकारी दी।

(vii) कनिष्क के काल में .... नगर 'साटक' नगर वस्त्र के लिए प्रसिद्ध था।

(viii) .... द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति स्तंभलेख समुद्रगुप्त के बारे में सूचना देते है।

(ix) श्रेणी, निगम व संघ प्राचीन भारत में .... थे।

(x) प्राचीन भारत में व्यापार के लिए प्रसिद्ध सिल्क मार्ग पर .... का अधिकार था।

भाग (ख) सत्य–असत्य कथन पर आधारित प्रश्न :–

(True-False Statements bases questions)

(i) गुप्तवंश के शासक समुद्रगुप्त ने अश्वमेध पराक्रम की उपाधि धारण की । ( )

(ii) वैवाहिक संबंधों द्वारा साम्राज्य–विस्तार की प्रक्रिया का आरंभ गुप्त काल में समुद्रगुप्त के द्वारा शुरू की गई थी। ( )

(iii) इतिहासकार विंसेट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है। ( )

(iv) गुप्तकाल तक रोमन व्यापार का लगभग पतन हो चुका था लेकिन दक्षिण–पूर्व एशिया एवं चीन के साथ व्यापार में वृद्धि हुई। ( )

(v) हड़प्पा काल में लोथल बंदरगाह नगर के रूप में प्रसिद्ध था। ( )

(vi) कुषाणों ने चीन से ईरान तथा पश्चिम एशिया तक जाने वाले रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर रखा था। ( )

(vii) कनिष्क के काल में मथुरा नगर साटक नामक वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध था। ( )

(viii) प्राचीन भारत में वैशाली का लिच्छवी गणराज्य विश्व का प्रथम गणतंत्र माना जाता है। ( )

(ix) उज्जैन नगर का प्राचीन काल में नाम अंवतिका था। ( )

(x) मगध की प्रारंभिक राजधानी पाटलिपुत्र नगर थी। ( )

9-6 lkjk'k@ lf{kflr dk(Summary):-

भाग (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।(Fill in the blanks)

- गुप्त वंश के शासक कुषाणों के सामंत थे।
- गुप्त वंश के संस्थापक श्रीगुप्त था।
- गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक चंद्रगुप्त प्रथम था जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा चलाया गया गुप्त संवत् का समय 319–20 ई. है।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राज्य की राजकुमारी कुमारदेवी के साथ विवाह कर अपने साम्राज्य की शक्ति बढ़ाई।

- इतिहासकार विंसेट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है।
- प्रयाग–प्रशस्ति का रचयिता हरिषेण समुद्रगुप्त का दरबारी कवि था।
- समुद्रगुप्त को उसके सिक्के पर वीणावादन करते हुये दिखाया गया है।
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के 9 तथा दक्षिणावर्त के 12 शासकों पर विजय के पश्चात् अश्वमेध यज्ञ किया तथा अश्वमेध पराक्रम की उपाधि धारण की।
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त को 'कविराज' की उपाधि प्रदान की गई थी।
- चंद्रगुप्त द्वितीय ने उज्जयिनी के अंतिम शक शासक रूद्रसिंह तृतीय को पराजित किया और इस खुशी में चांदी के सिक्के जारी किये तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न नाम से प्रसिद्ध नौ विद्वानों की मंडली निवास करती थी जो इस प्रकार थी – कालिदास, धनवंतरी, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर एवं वररूचि।
- चीनी यात्री फाहियान चंद्रगुप्त द्वितीय के काल में (399–414 ई.) भारत आया था।
- गुप्त शासक स्कंदगुप्त हूणों को पराजित किया था।
- गुप्त शासक भानुगुप्त के एक अभिलेख (510 ई.) से सती प्रथा का प्रमाण मिलता है।
- अमर सिंह के 'अमरकोश' रचना से पता चलता है कि वस्त्र उद्योग गुप्त काल का सर्वप्रमुख उद्योग था।
- गुप्त वंश के शासकों ने ही सर्वाधिक मात्रा में सोने के सिक्के जारी किये।
- जबकि सर्वप्रथम भारत में सोने का सिक्का इण्डो–ग्रीक शासकों ने जारी किया।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने जारी किये।
- भारत में सर्वप्रथम लेखयुक्त सिक्का इण्डो–ग्रीक शासकों ने ही जारी किया।
- प्राचीन भारत में प्रमुख व्यापारिक संगठन :–

  श्रेणी – शिल्पियों का संगठन

  निगम– व्यापारियों का संगठन

  संघ – देनदारों/महानों का संगठन

सार्थवाड़ – कारवाँ व्यापारियों का प्रमुख

- मयूर, पर्वत और अर्द्धचंद्र की छापवाली आहत रजत मुद्राएँ मौर्यकाल की सामान्य मुद्राएँ थी जिन्हें पंचमार्क सिक्के कहते थे।
- मौर्य काल में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था।
- मौर्यकाल का विदेशी व्यापार रोम, सीरिया, फारस, मिस्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ होता था।
- विदेशी व्यापार पश्चिमी तट पर स्थित भृगुकच्छ अर्थात् भड़ौच बंदरगाह से होता था।
- जबकि पूर्वी भारत के विदेशी व्यापार ताम्रलिप्ति बंदरगाह द्वारा किये जाते थे।
- उत्तर–मौर्य काल में भारत के पश्चिमी तट पर भड़ौच, सोपारा तथा कल्याण और पूर्वी तट पर अरिकामेडु तथा ताम्रलिप्ति प्रसिद्ध बंदरगाहें थी।
- चीन से ईरान तथा पश्चिमी एशिया तक जाने वाले रेशम मार्ग (सिल्क मार्ग) पर कुषाणों का अधिकार था।
- प्रथम शताब्दी ई. में अज्ञात यूनानी नाविक ने अपनी 'पेरिप्लस ऑफ द एरिप्रियन सी' नामक पुस्तक में भारत द्वारा रोम को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का विवरण दिया है।
- रोम को निर्यातित प्रमुख वस्तुएँ थीं – मसाले, काली मिर्च, मलमल, हाथी दाँत की वस्तुएँ, इत्र, चंदन, कछुए की खोपड़ी, केसर, जटामासी, हीरा, रत्न, तोता, शेर, चीता आदि।
- रोम से आयातित वस्तुएँ थी – शराब के दो हत्थे वाला कलश, शराब, सोना एवं चांदी के सिक्के, पुखराज, टिन, तांबा, शीशा, लाल आदि।
- पश्चिम के लोगों को भारतीय काली मिर्च (गोल मिर्च) इतनी प्रिय थी कि संस्कृत में काली मिर्च का नाम ही 'चवनप्रिय' पड़ गया।
- मूर्ति निर्माण की गांधार कला शैली का विकास भारत में यूनानियों ने किया।
- मूर्ति निर्माण की गांधार कला तथा मथुरा कला का विकास चरम पर कनिष्क के समय में हुआ।
- कला एवं संस्कृति, शिल्प एवं उद्योग, वाणिज्य एवं व्यापार के विकास के कारण कनिष्क के काल में नगरीय केन्द्र का विकास चरम पर था।
- कनिष्क के दरबार में संरक्षय प्राप्त विद्वान थे –

- ✓ बुद्धचरित के रचनाकार अश्वघोष
- ✓ दार्शनिक व वैज्ञानिक नागार्जुन जिनकी तुलना मार्टिन लूथर व आइंस्टीन से होती है। नागार्जुन ने अपनी पुस्तक माध्यमिक सूत्र में सापेक्षता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- ✓ वसुमित्र – चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष थे। बौद्ध धर्म के विश्वकोश के नाम से प्रसिद्ध महाविभाष्य शास्त्र की रचना भी इन्होंने की।
- ✓ चरक – चरकसंहिता के रचनाकार आयुर्वेद के आचार्य कनिष्क के राजवैद्य थे।

- कुषाण शासकों की उपाधि 'देवपुत्र' थी।
- कुषाणकालीन मुद्राएँ :–
  - ✓ निष्क = सोने का सिक्का
  - ✓ शतमान = चांदी का सिक्का
  - ✓ काकणि = तांबे का सिक्का
  - ✓ कार्षापय = सोना, चांदी, तांबा एवं सीसे को मिलाकर बनाया गया सिक्का।
- भारत में सर्वप्रथम सीसे के सिक्के सातवाहन शासकों ने चलाये।
- सतवाहनों ने ही सर्वप्रथम भूमिदान देने की प्रथा आरंभ की थी।
- सतवाहनों के काल से ही भारत में सामंतवादी प्रथा की शुरूआत मानी जाती है।
- गांधार कला शैली में गहरे नीले एवं काले पत्थर का प्रयोग किया जाता था जबकि मथुरा कला में लाल पत्थर का प्रयोग होता था।
- कनिष्क की दो राजधानिया थी – प्रथम पुरूषपुट (पेशावर) तथा दुसरी मथुरा थी।
- कश्मीर में कनिष्कपुर नगर कनिष्क ने ही बसाया था।
- कनिष्क के समय में कुंडलवन (कश्मीर) में वसुमित्र की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ।
- कनिष्क के काल में बौद्ध धर्म – हीनयान व महायान दो भागों में बंट गया।
- कनिष्क माहयानवादी था।

- शक शासक रूद्रदामन प्रथम ने सर्वप्रथम संस्कृत का विशुद्ध अभिलेख जूनागढ़ अभिलेख जारी किया था।
- भारत की सीमा में प्रवेश करनेवाला प्रथम इण्डो–गीक शासक था – डेमेट्रियस प्रथम
- सबसे प्रसिद्ध इण्डो–ग्रीक शासक था – मिनाण्डर
- मिनाण्डर का विवाद प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु नागसेन से हुआ था।
- इण्डो–ग्रीक शासकों राजधानी साकल (आधुनिक सियालकोट पाकिस्तान) शिक्षा का प्रमुख केंद्र थी।
- खारवेल कलिंग के चेदि वंश का महानतम शासक था।
- खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से कलिंग युद्ध का वर्णन मिलता है।

9-7 l|d|r&l|pd **(Key-words)**

- प्रशस्ति = गुणगान, यश का गान
- हूण = हूण एक जंगली एवं असभ्य कबीला था जिसका दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में चीन के सीमावर्ती प्रदेशों में निवास स्थान था।
- आर्यावर्त = आर्य भारत के जिस प्रदेश में निवास किये उन्हें आर्यावर्त के नाम से जानते हैं।
- दक्षिणावर्त = दक्षिण भारत के प्रदेश
- दोआब = दो नदियों के बीच के क्षेत्र को दोआब कहते हैं।
- श्रेणी = शिल्पियों का संगठन
- निगम = व्यापारियों का संगठन
- संघ = देनदारों/महाजनों का संगठन
- सार्थवाह = व्यापारियों का कारवाँ का प्रमुख
- साक्ष्य = प्रमाण

9-8Lo&eY;kdu d fy, ijh{kk **(Self Assessment Test SAT):-**

भाग (क) (Part-A) बहुविकल्पी प्रश्न (Multiple Choice Questions MCQS)

(i) --------------- गुप्तकालीन शासक को कविराज कहा गया।

(क) श्रीगुप्त (ख) चन्द्रगुप्त द्वितीय (ग) समुद्रगुप्त (घ) स्कंदगुप्त

(ii) रोम के साथ व्यापार का सर्वाधिक लाभ किसे हुआ ?

(क) गुप्तों को (ख) कुषाणों को (ग) शकों को (घ) तमिलों एवं चेरों को

(iii) मौर्योत्तरकालीन प्रमुख बंदरगाहों में कौन असत्य है ?

(क) बारबैटिकम् (ख) बेरीगाजा (ग) अरिकामेडु (घ) कोचीन

(iv) सिल्क मार्ग पर .... का अधिकार था।

(क) कुषाणों (ख) शकों (ग) सातवाहनों (घ) गुप्तों

(v) गुप्तकाल में किस शासक को उसकी सैन्य कुशलता एवं कुशला प्रशासन के लिए 'भारत का नेपोलियन' कहा गया ?

(क) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (ख) समुद्रगुप्त (ग) स्कंदगुप्त (घ) रामगुप्त

(vi) समुद्रगुप्त ने पूर्वी दक्कन एवं दक्षिण भारतीय विजय अभियान के समय कुल कितने शासकों को पराजित किया ?

(क) 12 (ख) 15 (ग) 13 (घ) 14

(vii) समुद्रगुप्त के किस अभिलेख में 'भारतीय नेपोलियन' की विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है ?

(क) एरण अभिलेख (ख) प्रयोग प्रशस्ति (ग) गढ़वा अभिलेख (घ) मन्दसौर अभिलेख

(viii) गुप्त संवत् (319–320 ई.) को प्रारंभ करने का श्रेय किसे दिया जाता है ?

(क) श्रीगुप्त (ख) चन्द्रगुप्त प्रथम (ग) समुद्रगुप्त (घ) कुमारगुप्त

(ix) सर्वाधिक सोने के सिक्के किस काल में चलाये गये ?

(क) कुषाण (ख) गुप्त (ग) मौर्य (घ) सातवाहन

(x) सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के किस काल में चलाये गये ?

(क) कुषाण (ख) गुप्त (ग) शक (घ) सातवाहन

भाग (ख) (Part-B) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Type Questions)

(i) समुद्रगुप्त के काल में गुप्त साम्राज्य के उत्थान एवं विकास का विस्तार से वर्णन करें।

(Rise and growth of the Gupta Empire during Samudragupta's period in detail.)

(ii) समुद्रगुप्त की सफलता का मूल्यांकन कीजिए।

(Evaluate the Success of Samudragupta.)

(iii) समुद्रगुप्त की विजयों का वर्णन कीजिए। उसे भारत का नेपोलियन क्यों कहा जाता है ?

(Describe the conquest of Samudagupta. Why is Samudragupta called India's Napoleon?)

(iv) प्राचीन भारत के बंदरगाह का वर्णन कीजिए।

(Describe the port of Ancient India).

(v) प्राचीन भारत के प्रमुख बंदरगाहों को दिखाने के लिए मानचित्र रूपरेखा को चिन्हित कीजिए।

(Mark/Label on the outline map of the port of Ancient India)

(vi) प्राचीन भारत में नगरों के उत्थान एवं विकास का विस्तार से वर्णन कीजिए।

(Rise and growth of the Urban Centres of Ancient Indian in details.)

(vii) प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण नगरों को दिखाने के लिए मानचित्र पर रूपरेखा को चिन्हित कीजिए।

(Mark/Label on the outline map of the Urban Centres of Ancient India.)

भाग (ग) (Part-C) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) रेशम मार्ग (Silk Route) (ii) ताम्रलिप्ति (Tamraliph)

(iii) कनिष्क(Kanishka) (iv) भारत का नेपोलियन समुद्रगुप्त(India's Nepolean Samundragupta)

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखिए। (Write Short notes on the following):-

(i) रेशम मार्ग (Silk Route)

(ii) ताम्रलिप्ति(Tamraliph)

(iii) कनिष्क(Kanishka)

(iv) भारत का नेपोलियन समुद्रगुप्त (India's Nepolean Samundragupta)

(v) बंदरगाह नगर लोथल (Port city Lothal)

(vi) मौर्यकालीन प्रमुख नगर (Main Urban Centres during Maurya period)

(vii) गुप्त–काल में व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and commerce in Gupta-period.)

(viii) मौर्य काल में प्रमुख व्यापारिक मार्ग। (Main Trade Routs in Maurya period)

(ix) मौर्योत्तरकालीन प्रमुख व्यापारिक मार्ग। (Main Trade Routs in Post-Maurya Period)

(x) प्राचीन भारत में रोम के साथ व्यापार (Roman Trades in Ancient India)

9.9 प्रगति समीक्षा हेतु प्रश्नोत्तर (Answers to Check your progress)

9.5 भाग (क) :–(i) पूर्वी (ii) पश्चिमी (iii) समुद्रगुप्त (iv) बारह (v) चंद्रगुप्त प्रथम (vi) ग्रीक नालिक हिप्पॉलस (vii) मथुरा (viii) हरिषेण (ix) व्यापारिक संगठन (x) कुषाणों

9.5 भाग (क) का उत्तरः–(i) ग (ii) ख (iii) घ (iv) क (v) ख (vi) क (vii) ख (viii) ख (ix) ख (x) क

9-10 lgk;d lnHk xzFk (References)

- प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन, भारत का इतिहास, लेखकः अविनाश चन्द्र अरोड़ा, प्रदीप पब्लिकेशन, प्रताप रोड़, जालंधर शहर–144008
- भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, दृष्टि पब्लिकेशन्स 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
- सामान्य अध्ययन, स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन–दिल्ली,
- यूनीक सामान्य अध्ययन, प्रयाग पुस्तक भवन, 20–ए–युनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद–211002 (उत्तर प्रदेश)
- भारत का प्राचीन इतिहास, रामशरण शर्मा, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस